G3745

A STUOY OF THE PROSE WRITINGS OF ANAND SHANKAR MADHAVAN

Thesis Submitted to the
Cochin University of Science & Technology
for the Degree of
DOCTOR OF PHILOSOPHY

BY
K. VANAJA

Prof. & Head of the dept.
Dr. N. Raman Nair

Supervising Teacher
Dr. N. Raman Nair

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE & TECHNOLOGY
COCHIN-682 022

1987

आनंद शंकर माधवन का गद्य साहित्य : एक अध्ययन

कोचीन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के
पी-एच·डी· की उपाधि केलिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

के· वनजा

विभागाध्यक्ष
डॉ· एन· रामन नायर

निर्देशक
डॉ· एन· रामन नायर

हिन्दी विभाग

1987

CERTIFICATE

This is to certify that this THESIS is a bonafide record of work carried out by Smt. K. VANAJA under my supervision for Ph.D. and no part of this has hitherto been submitted for degree in any University.

Dr. N. RAMAN NAIR
(Supervising Teacher)

Department of Hindi,
Cochin University of
Science & Technology,
COCHIN Pin 682022

Date : 29 07 1987.

ACKNOWLEDGEMENT

This work was carried out in the Department of Hindi, Cochin University of Science & Technology, Cochin-22 during the tenure of fellowship awarded to me by the Cochin University of Science & Technology. I sincerely express my gratitude to the Cochin University of Science & Technology for its help and encouragement.

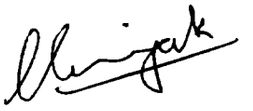

K. VANAJA

Department of Hindi,
Cochin University of
Science & Technology,
COCHIN Pin 682022,

Date : 29 07 1987.

अपनी ओर से

अपनी ओर से

भारत जैसे विस्तृत देश की भावात्मक एकता की भाषा है हिन्दी । उसका साहित्य प्रभूत मात्रा में उपलब्ध है । अनेक साहित्यकारों ने साहित्य-सृष्टि करके इसको समृद्ध किया है और अब भी करते आ रहे हैं । इन साहित्यकारों में कई राज्यों के साहित्यकार शामिल हैं, अर्थात् हिन्दी प्रदेश के और अहिन्दी प्रदेश के अनेक मनीषी सृजनशील लेखक आते हैं । अहिन्दी प्रदेश के साहित्यकारों के बीच दक्षिण भारत के साहित्यकारों को भी स्थान प्राप्त है । वे भी हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में हिन्दी देश के साहित्यकारों के समान योगदान दे चुके हैं । किंतु उनको हिन्दी साहित्य मंडल में अब भी उचित स्थान नहीं मिला है । वस्तुत: वे सर्वथा उपेक्षित ही रह गए हैं । यह उन रचनाकारों के प्रति घोर अन्याय ही नहीं, हिन्दी भाषा के विकास एवं सामस्कि रचना प्रक्रिया केलिए घातक भी है । जब हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा और राजभाषा स्वीकृत हुई है तब इस बात की बडी आवश्यकता है कि उन समग्र उपेक्षित हिन्दीतर प्रदेश के हिन्दी साहित्यकारों को प्रकाश में लावें और हिन्दी साहित्य के

इतिहास में उनको यथोचित स्थान प्रदान करें । ऐसे साहित्यकारों में एक हैं केरल के श्री॰ आनन्द शंकर माधवन जो हिन्दी केलिए अपने को समर्पित कर चुके हैं और बिहार प्रांत में नित्यवास कर रहे हैं । हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं में अपनी अमिट मुद्रा अंकित करनेवाले श्री॰ आनन्द शंकर माधवन के साहित्य पर शोधकार्य अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण कार्य है ।

केरल में जन्म लेकर हिन्दी प्रदेशों को कर्मक्षेत्र मानते हुए बिहार में विद्यापीठ चलानेवाले माधवनजी अनन्य सुलभ व्यक्तित्व और कृतित्व के अधिकारी हैं । माधवनजी ने साहित्य की प्राय: सभी विधाओं पर अपनी तूलिका चलाई है । अब भी वे अपनी अक्षुण्ण साहित्य-साधना करते आ रहे हैं । उनकी साहित्य रचना कविता, उपन्यास, कहानी, जीवनी, निबन्ध और अनेक प्रकार की अन्य रचनाओं तक व्याप्त है ।

यह शोध प्रबन्ध माधवनजी के तेईस गद्य रचनाओं पर आधारित है । कुछ और गद्य पुस्तकें प्रकाशित हैं तो भी अनुपलब्ध हैं । माधवनजी की गद्य रचनाओं में उपन्यास, कहानी, निबन्ध, जीवनी और अन्य प्रकार की कई रचनायें आती हैं ।

यह शोध प्रबन्ध सात अध्यायों पर विभाजित है । इसके साथ भूमिका, विषय सूची, परिशिष्ट और ग्रन्थ सूची भी हैं । पहला अध्याय माधवनजी के जन्म, शिक्षा, व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय देता है ।

दूसरा अध्याय है "आनन्द शंकर माधवन के उपन्यास" । यह माधवनजी के चार उपन्यासों का विवरणात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन है ।

"माधवनजी की कहानियाँ" है तीसरे अध्याय का विषय । माधवनजी के कहानी संग्रह "प्रसून पंथ" पर आधारित अध्ययन है यह । छोटी-छोटी लघु कहानियों की विशेषतायें इसमें स्पष्ट रूप से प्राप्त है ।

चौथे अध्याय में माधवनजी के निबन्धों पर विचार विमर्श है । इसमें माधवनजी के निबन्धों और निबन्ध संग्रहों का परिचय तथा सम्यक विश्लेषण एवं मंथन प्रस्तुत है ।

आनन्द शंकर माधवन द्वारा रचित जीवनियों पर आधारित अनुशीलन ही पाँचवाँ अध्याय है । माधवनजी की अपूर्ण आत्मजीवनी और ग्रीस तथा यूरोप के कुछ दार्शनिकों एवं साहित्यकारों की जीवनियों को आधार बनाकर इस अध्याय में उनकी जीवनी साहित्य पर संपूर्ण अध्ययन दिया गया है ।

छठे अध्याय में विविध विषयों पर भिन्न भिन्न शैलियों में माधवनजी द्वारा लिखी गयी कुछ रचनाओं का विश्लेषण है ।

सातवाँ अध्याय उपसंहार है । इसमें हिन्दी को माधवनजी का योगदान, हिन्दी साहित्य में उनका स्थान, साहित्यिक रचना में उनकी मौलिकता, आदि दिया गया है ।

प्रस्तुत शोध का प्रणयन कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष एवं प्रोफसर गुरुदेव डॉ॰एन॰रामन नायर के निर्देशन में हुआ । आपका सुस्पष्ट निर्देश मेरे पथ को प्रशस्त करने में अत्यधिक सहायक रहा है । मेरा स्नेह, श्रद्धा एवं कृतज्ञता की आरती में उन धन्य चरणों पर उतारती हूँ ।

इस शोधकार्य की पूर्ति केलिए श्री· आनन्द शंकर माधवन ने मुझे अनेक प्रकार की सहायतायें प्रदान की हैं । मैं उनके सामने नतमस्तक हूं और दूर रहकर उनके प्रति मैं असीम कृतज्ञता प्रकाशित करती हूं ।

मैं उन लेखकों के प्रति आभार प्रकट करती हूं जिनकी पुस्तकों का उपयोग मैं ने प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से इस शोध प्रबन्ध में यत्र-तत्र किया है ।

हिन्दी विभाग के पुस्तकालय की अध्यक्षा श्रीमती कुञ्ञिक्कावुट्टी तंपुरान तथा सहायक एम·ए· असीस के प्रति मैं तहे दिल से कृतज्ञता प्रकाशित करती हूं । वे समय-समय पर आवश्यक पुस्तकें देकर इस शोध-कार्य की पूर्ति में सहयोग देते रहे हैं । कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधिकारियों के प्रति मैं विशेष रूप से कृतज्ञ हूं । क्योंकि उन्होंने अथ से इति तक छात्रवृत्ति देकर मुझे आर्थिक संकट से बचाते हुए इस शोधकार्य की पूर्ति में सहायता की है । मेरे इस शोध-कार्य की सफलता केलिए अनेक व्यक्तियों ने मदद दी है । उन सब का नाम लेना संभव नहीं है । उन सभी के प्रति मैं अत्यंत कृतज्ञ हूं ।

वनजा, के·

हिन्दी विभाग,
कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी
विश्वविद्यालय, कोचिन पिन 682022
तारीख : 29 07 1987·

पृष्ठ-संख्या

विषय सूची

अध्याय - एक ... ... 1 - 29

माधवनजी : जीवनरेखा, व्यक्तित्व और कृतित्व

माधवनजी की जीवनरेखा - जन्म - माता पिता और बचपन - शिक्षा - दीक्षा - हिन्दी शिक्षा और राष्ट्र-सेवा गांधीजी से मुलाकात - मन्दार विद्यापीठ की स्थापना शिवधाम की स्थापना - शिक्षा संस्थाओं का लक्ष्य - साहित्य में आत्मा की खोज - विवाह एवं पारिवारिक जीवन - माधवनजी का व्यक्तित्व - व्यक्तित्व की परिभाषा - व्यक्तित्व के अध्ययन की अनिवार्यता - माधवनजी के जीवन का मनोवैज्ञानिक पक्ष - महान नेताओं का उनपर प्रभाव - प्रकृति का प्रभाव - आर्षभारत का प्रभाव - माधवनजी की मित्रमंडली - माधवनजी का बाह्य व्यक्तित्व - माधवनजी का साहित्यिक व्यक्तित्व माधवनजी का कृतित्व - माधवनजी की साहित्य-- कृतियों की सूची {कालक्रम के अनुसार} - उपन्यासकार के रूप में - कहानीकार के रूप में - निबन्धकार के रूप में पत्र सम्पादक के रूप में - निष्कर्ष ।

पृष्ठ-संख्या

अध्याय - दो ... ... 30 - 119

आनन्द शंकर माधवन के उपन्यास

भूमिका - प्रेमचन्दयुगीन मुख्य उपन्यासकार और उनकी रचनाओं का परिचय - प्रेमचन्द - जयशंकर प्रसाद - वृन्दावनलाल वर्मा - चंडीप्रसाद "हृदयेश" - विश्वंभरनाथ शर्मा {कौशिक} - चतुरसेन शास्त्री - पाण्डेय बेचन शर्मा "उग्र" - ऋषभचरण जैन - भगवती प्रसाद बाजपेयी - जैनेन्द्र कुमार - भगवतीचरण वर्मा - प्रताप नारायण श्रीवास्तव आनन्द शंकर माधवन के उपन्यास - उपन्यासों का परिचय - आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों में कथ्य अनामंत्रित मेहमान - प्रसववेदन {दो भाग} - एणाक्षी - पुरुषार्थी - आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों में पात्र और चरित्र - अनामंत्रित मेहमान - पात्र और चरित्र दत्तात्रेय - सरला - उषा - मालती - बापट साहब - मणिका - यशवन्त - साधु बाबा - रामचन्द्र - प्रसववेदना {दो भाग} के पात्र और चरित्र - सुजाता - यशवन्त - उस्ताद बशीर अली खाँ - शैला - चाटर्जी - रामू - डाॅ॰ दयाल-भामिनी - प्रोफसर कैयूम - नन्दिनी साधु बाबा - एणाक्षी के पात्र और चरित्र - एणाक्षी - गोकुलदास - नारंग - डाॅ॰ सव्यसाची - रसूलन - रमेश

पृष्ठ-संख्या

रजनी - कालू - पुरुषार्थी का पात्र और चरित्र - दिलीप राय - शान्ता - उषा - आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों में कथोपकथन का स्वरूप - अनामंत्रित मेहमान में कथोपकथन - प्रसववेदना में कथोपकथन - एणाक्षी का कथोपकथन - पुरुषार्थी का कथोपकथन आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों की शैलीगत विशेषतायें अनामंत्रित मेहमान की शैलीगत विशेषतायें - प्रसववेदना की शैलीगत विशेषतायें - एणाक्षी की शैलीगत विशेषतायें पुरुषार्थी की शैलीगत विशेषतायें - आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों का उद्देश्य - अनामंत्रित मेहमान का उद्देश्य भारतीय संस्कृति का पुनर्जागरण - आध्यात्मिकता की श्रेष्ठता - अद्वैत की स्थापना और भारतीय दर्शन के अध्ययन का आह्वान - सत्यपथ का दर्शन - प्रसववेदना (दो भाग) का उद्देश्य - आज की नारी की दयनीय स्थिति - नारि के उत्थान का प्रयत्न - धार्मिक भेद का निर्मार्जन - भारतीय संगीत की सुरक्षा - शासन तंत्र की ढिलाई और ईमानदारी का अभाव - साधु लोगों की अद्भुत शक्ति - एणाक्षी का उद्देश्य - शिव सत्य की विजय - पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति के अनुकरण से अद्भुत स्त्री का भयावह रूप - भारतीय संगीत का वैज्ञानिक गुण - सेवा और त्याग की क्षमता - पुरुषार्थी का उद्देश्य - आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों की समसामयिक उपन्यासों के साथ तुलना - निष्कर्ष - आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों के लक्ष्य - देश का सुधार - कला की सुरक्षा -

पृष्ठ-संख्या

आध्यात्मिकता - भारतीय दर्शन और संस्कृति का पुनर्जागरण - साहित्य और समाज को प्रदेय - उपन्यासकार के रूप में मूल्यांकन ।

अध्याय - तीन ... ... 120 - 156

माधवनजी की कहानियाँ

भूमिका - आनन्द शंकर माधवन की कहानियाँ - माधवनजी की कहानियों की कथा - वस्तु - चरित्र-चित्रण - संवाद या कथोपकथन - शैलीगत विशेषतायें माधवनजी की कहानियों का उद्देश्य - महासमर - सुगम उपाय - जादूगरनी - उसका वही धर्म था - सब सडे नहीं हैं - हृदय परिवर्तन - कायाकल्प - प्यार का रोग - प्रोफेसर की पत्नी - इन्टरव्यू - मुंशी पुरी - मास्टर साहब की पत्नी ने घड़ी सुधायी चारित्र्य - स्वयंवर - डाइन - ऐसे ही आँसू पोंछे जाते अकर्मण्यों का शांति पर्व - चरित्रहीन - कम्यूनिस्ट - काई कैसे धुल गई - सती - प्रेम हो गया - दादी माँ - चार पत्र - जन्म साफल्य - आधुनिक तुलसीदास - जोश ऊकेत - गाँधीजी - अनन्त की ओर - प्रसून पंथ - समसामयिक कहानियों के साथ तुलना - कहानीकार के रूप में मूल्यांकन ।

पृष्ठ-संख्या

अध्याय - चार ... ... 157 - 191

माधवनजी के निबन्ध

हिन्दी निबन्ध की गति-विधि - माधवनजी के निबन्धों का परिचयात्मक विवरण - उषा - अनलशलाका हिन्दी आन्दोलन - आरती - बृहत्तर भारती - शिवधाम - माधवनजी के निबन्धों का विषय के आधार पर वर्गीकरण - शैली के आधार पर निबन्धों का वर्गीकरण - माधवनजी के निबन्धों के विषय की दृष्टि से विवेचन - साहित्यिक निबन्ध - लेखक एवं ग्रन्थों के परिचयात्मक आलोचना सम्बन्धी निबन्ध - साहित्यिक सेवा - भाषा-सेवा - सांस्कृतिक और दार्शनिक आध्यात्मिक - धार्मिक - राजनैतिक - शैक्षिक - कलात्मक निबन्ध - अन्य कुछ निबन्ध - देश-प्रेम - माधवनजी के निबन्धों का शैलीगत विवेचन - माधवनजी के निबन्धों की क्रान्तिकारी भावनायें - कुछ विशिष्ट निबन्धकारों से तुलना - माधवनजी का स्थान ।

अध्याय - पाँच ... ... 192 - 225

आनन्द शंकर माधवन द्वारा रचित जीवनियाँ

जीवनी साहित्य का उद्भव और विकास - जीवनी - भारतेन्दु युगीन जीवनी साहित्य - द्विवेदीयुगीन

पृष्ठ-संख्या

जीवनी साहित्य - हिन्दी जीवनी साहित्य और प्रेमचन्द युग - आधुनिक काल की जीवनियाँ - माधवनजी के जीवनी ग्रन्थों का परिचय - प्रथम याम - सुकरात - प्लेटो - अरिस्तु - वालटायर - अक्षय लेखनी - फ्रान्सीस बेकण - स्पिनोजा - कांत - हेगल - स्कोपनहोवर - स्पेंसर - बेर्गसन - क्रोचे - संतयाना - रसल - आत्मकथा के रूप में "प्रथम याम" का विश्लेषण जीवनीकार के रूप में माधवनजी की सफलता ।

अध्याय - छः ... ... 226 - 241

माधवनजी की अन्य रचनायें

आध्यात्मिक ग्रन्थ - उपनिषद्सार - गीतातत्व - नैतिक ग्रन्थ - मानवीयम् - चिकित्सा - पद्धति - माधव निदान - वर्षा - माधव निदान और वर्षा की शैलीगत विशेषतायें - निष्कर्ष ।

अध्याय - सात ... ... 242 - 251

उपसंहार

हिन्दी को माधवनजी का योगदान - सांस्कृतिक योगदान भावात्मक एकता में माधवनजी का योगदान - साहित्यिक योगदान - राजनैतिक योगदान - हिन्दी साहित्य में उनका स्थान - साहित्यिक रचना में उनकी मौलिकता - माधवनजी की रचनाओं में लोकमंगल की भावना ।

परिशिष्ट ... ... 252 - 254

ग्रन्थ सूची ... ... 255 - 267

अध्याय - एक

माधवनजी : जीवन रेखा, व्यक्तित्व और कृतित्व

अध्याय - एक

माधवनजी : जीवन रेखा, व्यक्तित्व और कृतित्व

माधवनजी की जीवन रेखा

जन्म

केरल में "मावेलिकरा" नामक एक छोटा शहर है । वहीं शिवरात्री उत्सव के दिन रात के दो बजे, एक ब्राह्मण परिवार में सन् 1914 ई॰ में आनन्द शंकर माधवन का जन्म हुआ । उनके पिता श्री॰ परमेश्वरन थे और माता कार्तिका थी । उनके जन्म के कुछ दिनों के बाद उनके पिता का देहान्त हो गया । गाँव के लोगों का विश्वास यही है कि माधवन के जन्म से उनके पिता की मृत्यु हुई । इसलिए लोग उन्हें पितृ घातक राक्षस कहने लगे । उसकी माँ भी यही विश्वास रखती थी ।

माता-पिता और बचपन

माधवनजी के पिता परमेश्वरन् आध्यात्मिक जीवन बितानेवाले व्यक्ति थे । पिता की अकाल मृत्यु के कारण माधवन पर उसका प्रभाव अधिक न पड़ा । माता कार्तिका का भी आध्यात्मिक जीवन की ओर झुकाव था । माता रामायण, महाभारत आदि ऐतिहासिक ग्रन्थों और पौराणिक ग्रन्थों का अध्ययन करती थी जिनसे असाधारण ज्ञान प्राप्त कर चुकी थी । माधवनजी को माता से इन पुस्तकों में उपलब्ध साहसिक, धार्मिक आदि अनेक कथायें ग्रहण करने का अवसर मिला । माता के साथ पूजा-प्रार्थना आदि में भी वे भाग लेते थे । इस कारण माधवनजी में बचपन से ही आध्यात्मिकता और श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति का बीज पैदा हुआ था ।

माधवनजी बचपन में बहुत लज्जाशील और डरपोक थे । माँ कार्तिका ने उसे इधर-उधर घूमने का और दूसरे लड़कों से मिलने-जुलने का अवसर नहीं दिया था । क्योंकि एक ज्योतिषी के प्रवचन से कार्तिका बहुत घबराई हुई थी । प्रवचन यह था कि माधवन केलिए परदेश स्वदेश होगा, साथ ही लड़का अच्छा ज्ञानी और आध्यात्मिक चिंतन में लीन व्यक्ति होगा । इसके फलस्वरूप बचपन में माधवन को बन्धन में ही रहना पड़ा ।

बचपन से ही माधवन को अनेक कठिनाइयाँ सहनी पड़ीं । पितृविहीन माधवन को जीविका चलाने केलिए आय का मार्ग बिलकुल नहीं था । पिता की सम्पत्ति एक दूसरे आदमी के जिम्मे में थी । इसलिए माधवन की माता को अनेक कठिनाइयाँ सहकर और बहुत साहस करके माधवन का पालन-पोषण करना पड़ा ।

शिक्षा-दीक्षा

गाँव की पाठशाला में माधवन की प्रारंभिक शिक्षा हुई । शिक्षा का आरंभिक काल माधवन केलिए बहुत कष्टदायक और विरस था । उस समय के गुरु-जन बिना कारण शिष्यों को जानवरों के जैसे पीटते थे । इस कारण माधवनजी गुरुओं से भयभीत थे और माधवनजी को अब भी प्रारंभिक शिक्षा-काल भयानक स्वप्न जैसा प्रतीत होता है । मिडिल स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद हाई-स्कूल की शिक्षा ग्रहण करने केलिए "मावेलिकरा" सरकारी हाईस्कूल में वे भर्ती हुए । बचपन से ही वे पढाई में तेज़ नहीं थे । इसलिए हमेशा स्कूल मास्टरों का उन्हें परिहासपात्र बनना पड़ा । लेकिन हाईस्कूल क्लास में पढ़ते समय रंगय्यर नामक एक अध्यापक ने माधवन को समझाने की कोशिश की । माधवनजी की वास्तविक स्थिति समझकर माधवन से वे अच्छा व्यवहार करने लगे । इसके बाद माधवन अध्ययन, पठन-पाठन आदि में बहुत रुचि दिखाने लगे । रंगय्यर रेड्डियार की प्रेरणा से उपन्यास जैसी साहित्यिक रचनायें वे पढने लगे । माधवन की सभी प्रकार की उन्नति का श्रेय रंगय्यर को ही प्राप्त है ।

"मावेलिकरा" हाईस्कूल से 1930 ई॰ में मैट्रिक की परीक्षा माधवन ने पास की । आगे पढने की लालसा उनके मन में थी और आगे पढाने की लालसा माता के मन में थी । घर के आसपास कालिज नहीं था । लेकिन दूर भेजकर पढाने केलिए माता के पास पैसा नहीं था । दूर भेजने में वह डरती भी थी । क्योंकि कहीं लड़का भाग जाए तो क्या होगा ।

हिन्दी शिक्षा और राष्ट्र-सेवा

माधवन मैट्रिक पास कर बेकार समय बिता रहे थे कि भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन चल रहा था । इस आन्दोलन का प्रमुख भाग था हिन्दी प्रचार । भारत की एकता केलिए एक राष्ट्र भाषा की आवश्यकता पर नेता लोग ज़ोर दे रहे थे । नेताओं ने हिन्दी को भारत की राष्ट्र-भाषा मान लिया और हिन्दीतर प्रदेशों में इसका प्रचार करने का निश्चय किया । इसके फलस्वरूप महात्मा गाँधी के नेतृत्व में "दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा" की स्थापना दक्षिण में हुई थी । इसका लक्ष्य दक्षिण में हिन्दी की सर्वतोन्मुख प्रगति थी ।

माधवनजी ने भी इस ओर आकृष्ट होकर हिन्दी का अध्ययन किया । इससे उनमें देश-प्रेम जाग उठा और गाँधीजी आदि महान नेताओं के प्रति श्रद्धा भाव उत्पन्न हुआ । एक हिन्दी शिक्षक से प्रेरणा पाकर माधवन इधर-उधर से कुछ पैसे जुटाकर अपनी बेचारी माँ को अकेली छोड़कर काशी चले आये । काशी में अनेक मद्रासी लड़कों की सहायता से काशी विद्यापीठ से आई॰ए॰ की परीक्षा माधवन ने पास की । उस समय काशी विद्यापीठ के प्राचार्य थे आचार्य राम शरणजी । उनसे अनेक प्रकार की सहायतायें माधवनजी को प्राप्त हुई ।

1936 की लखनऊ काँग्रेस में काशी विद्यापीठ के अन्य छात्रों के साथ माधवन स्वयं-सेवक बनकर लखनऊ गये । वहाँ से उनको राष्ट्रसेवा करने की प्रेरणा मिली । माधवन को काँग्रेस के अनेक महान नेताओं से सम्पर्क स्थापित करने का अवसर भी वहीं प्राप्त हुआ । इसके बाद माधवन दिल्ली चले गये । वहाँ उनको उस समय के जामिया मिलिया के कुलपति डॉ॰ ज़ाकिर हुसैन से मिलने का अवसर मिला ।

माधवन की बहुमुखी प्रतिभा और देश-सेवा करने की इच्छा आदि देखकर उस समय जामिया मिलिया के कुलपति ज़ाकिर हुसैन ने माधवन को उस विश्वविद्यालय में भर्ती करा दिया । वहाँ से माधवन स्नातक हुए । इतिहास में एम·ए· भी वहाँ से करके बम्बई आकर कानून पढ़ने लगे ।

गाँधीजी से मुलाकात

बम्बई में कानून पढते समय माधवन को गाँधीजी से मिलने का अवसर संप्राप्त हुआ । गाँधीजी से माधवन ने एक शैक्षणिक संस्थान खोलने की इच्छा प्रकट की । तब गाँधीजी ने उनको आदेश दिया कि कानून का अध्ययन छोड़कर भारत भर पैदल ही भ्रमण करके भारतीयों को समझने का प्रयास करो । माधवन ने बिना राशि के भारत का पैदल भ्रमण किया । यह 1941 के आरंभ का समय था । जब माधवन बिहार पहुँचे तब 1942 का "भारत छोडो आन्दोलन" छिड चुका था । बिहार के भागलपुर जिले के एक काँग्रेसी के घर से पुलिस ने माधवनजी को गिरफ्तार किया । माधवन ने पुलिस अधिकारियों से शिक्षा-सम्बन्धी अपनी योजना के बारे में कहा । तब पुलिस ने उन्हें छोड दिया ।

मन्दार विद्यापीठ की स्थापना

माधवनजी जेल से मुक्त होने के बाद बिहार के देहातों में भ्रमण करने लगे । अन्त में भागलपुर जिले के सुदूर देहात में मन्दार पर्वत की तराई में पहुँचे । वहाँ योगीराज भूपेन्द्रनाथ से उसकी मुलाकात हुई । भूपेन्द्र सन्याल की प्रेरणा से 1945 एप्रिल 26 को उन्होंने मन्दार पर्वत के पूर्व प्रांगण में स्थित टूटे-फूटे मन्दिर के उपेक्षित देवता के समक्ष अपनी शैक्षणिक योजना एक लड़का और लड़की को लेकर प्रारंभ कर दी ।

उस समय माधवनजी को किसी का सहारा नहीं था । कुछ दिनों के बाद आचार्य गोविन्द प्रसाद माधवनजी का साथी बनकर वहाँ आये । उन्होंने अंग्रेज़ी में और हिन्दी में माधवनजी की इस योजना का लक्ष्य और विचारों को लिखकर अनेक अखबारों में छापने केलिए दिया । इस प्रकार धीरे-धीरे मन्दार विद्यापीठ विकास की ओर अग्रसर हुआ ।

राजेन्द्र प्रसाद आदि अनेक महान नेता लोग मन्दार विद्यापीठ आये और विद्यापीठ के विकास में इन लोगों ने यथेष्ट रुचि ली । इसके संघटन-संचालन में उस समय के बिहार के मुख्यमंत्री डॉ॰ श्रीकृष्णसिंह, श्री॰ अनुग्रह नारायण सिंह, श्रीविनोद नन्द झा, श्रीकृष्ण वल्लभ सहाय, श्री॰ कीर्तिनारायण सिंह एवं श्री॰नन्दकुमार सिंह आदि ने माधवन की भरपूर सहायता की । माधवन शिक्षादान को अपनी तपस्या मानकर मन्दार विद्यापीठ में अपना सारा समय बिताने लगे । उनको अनेक कठिनाइयाँ सहनी पड़ी । धन की कमी उस समय भी थी । लेकिन सब विघ्न-बाधाओं को हटाकर विजय का झंडा लेकर माधवनजी आगे की ओर जाते रहे । वे यश या पूंजी नहीं चाहते हैं । विद्यापीठ के संचालन केलिए अब भी वे भिक्षा मांगकर धन इकट्ठा करते हैं ।

मन्दार विद्यापीठ से उपाध्याय (मेट्रिक) मध्या (ऐ॰ए॰) और विद्याभूषण (बी॰ए॰) उपाधियाँ दी जाती हैं । ये बिहार सरकार और भागलपुर विश्वविद्यालय द्वारा पूर्ण रूप से मान्य हैं ।

शिवधाम की स्थापना

1984 में माधवनजी ने "शिवधाम" नामक एक और शैक्षणिक संस्था का आरंभ कर दिया । यह मन्दार विद्यापीठ से 15 किलोमीटर दूरी पर है ।

माधवनजी की राय में शिवधाम का लक्ष्य है - "शिवधाम की योजना शिवसंस्कृति को सर्वत्र फैलाना है, व्यक्ति, व्यक्ति में प्रत्येक मानव मानस में । यानी आदमी को अच्छा बनना है, उसे सर्वगुण सम्पन्न और सर्वप्रभुत्व सम्पन्न बनना है, उसे सर्वकला मर्मज्ञ और सर्वमंगलकारी खूबियों और श्रेष्ठतम उपलब्धियों से सुसम्पन्न करना है, उसे साधना करना है कि उसमें सुषुप्त पड़ी दिव्य प्रतिभा खिलने और विकसित होने लग जाय; उसमें ऋषित्व को दीप्त कर देना है कि वह महान सृजनकार बन समाज और विश्व को भी उत्तम दिशा दर्शाने में समर्थ हो जाय और उस ओर मानवता को अग्रसर कर देने की नेतृत्व शक्ति भी उसमें भरपूर विकसित हो जाय ।"[1]

शिक्षा संस्थाओं का लक्ष्य

इन मन्दार विद्यापीठ और शिवधाम की स्थापना द्वारा माधवनजी की अपनी शिक्षा सम्बन्धी इच्छा सफल हो गयी । इन दोनों की स्थापना शिक्षण-संस्थाओं के रूप में नहीं करके वे इन संस्थाओं का निर्माण सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में करना चाहते थे । उनकी दृष्टि में शिक्षा एक साधन है जिसके द्वारा मनुष्य की आभ्यंतरिक परिपूर्णता क्रमशः व्यक्त होती है या हो सकती है । "शिवधाम" में शिक्षा से तात्पर्य वे इस प्रकार व्यक्त करते हैं - "शिक्षा जीविकोपार्जन केलिए उपाय ढूँढने का माध्यम नहीं है । वह ज्ञानोपार्जन का माध्यम है, ऐश्वर्य को प्राप्त करने का विधि साधना है, सर्वगुण सम्पन्न और सर्वविभूति सम्पन्न बन जाना है । शिक्षा ललकार देना है । अज्ञान, दरिद्रता, पाप, रोग, नानाप्रकार की कमज़ोरियों, बुढापा और मौत को भी । शिक्षा सब प्रकार के आसुरी तत्वों से संघर्ष करते हुए समाज में और विश्व में भी पूज्य आर्ष नेतृत्व को स्थापित करना है

---

1. शिवधाम - आनन्द शंकर माधवन - पृ.45

शिक्षा महाप्राण बनना है, महायोगी बनना है । शिक्षा पुरुषोत्तम योग साधना है । थोडा ही सही इस ओर का श्रम आदमी में कल्याणकारी उदात्त परिवर्तन ला देने में समर्थ है ।"

इस प्रकार पवित्र साधना और तपस्या मानकर माधवनजी इन संस्थाओं का संचालन कार्य प्रसन्न होकर कर रहे हैं ।

साहित्य में आत्मा की खोज

माधवनजी में साहित्यिक रुचि जगानेवाले रंगय्यर नामक अध्यापक ही थे । हाईस्कूल क्लास में पढते समय इस अध्यापक ने कई प्रकार के साहित्यिक ग्रन्थ और अखबार पढने केलिए माधवनजी को प्रेरणा दी । तब से माधवनजी में साहित्य का बीज उगने लगा । मेट्रिक में पढते समय "चरवाकम्" नामक एक कहानी उन्होंने लिखी थी । मन्दार विद्यापीठ की स्थापना के बाद माधवनजी ने अपनी साहित्य-साधना अविराम गति से ज़ारी रखी । अब तक इसमें विघ्न आया नहीं है । एक सहयोगी आचार्य गोविन्द प्रसाद झा के ललकारने पर 1960 में माधवन ने हिन्दी में "अनामन्त्रित मेहमान" नामक उपन्यास लिखा । यह 1200 पृष्ठों का एक बृहत् उपन्यास है । इस उपन्यास को बिहार सरकार ने एक हज़ार रुपये का पुरस्कार दिया । इसके बाद उन्होंने उपन्यास, कहानी, कविता और अनेक प्रकार के निबन्ध प्रकाशित किए ।

---

1. शिवधाम - आनन्द शंकर माधवन

विवाह एवं पारिवारिक जीवन

माधवनजी की पत्नी हैं लिपिका सिन्हा । वे बंगाली महिला हैं । वे भी समाजशास्त्र में प्रोफसर हैं । वे सितारवादिका और संगीतप्रेमी हैं । इन दोनों का विवाह-जीवन आनन्द संपूर्ण ही है । इन्हें कोई संतान नहीं है । दोनों पति-पत्नी शिव के उपासक हैं ।

माधवनजी का व्यक्तित्व

व्यक्तित्व की परिभाषा

हिन्दी में "व्यक्तित्व" का प्रयोग अंग्रेज़ी के "Personality" शब्द के समानार्थक रूप में होता है । Personality की व्युत्पत्ति लैटिन के Persona शब्द से मानी गयी है ।"[1] आधुनिक युग में आते आते "व्यक्तित्व" व्यापक अर्थ से युक्त अमूर्त शब्द बन गया । उसका शब्दार्थ अत्यन्त सीमित है । किन्तु गुणार्थ अतिविस्तृत । उस संज्ञा का प्रयोग आधुनिक युग में एक व्यक्ति की उन सभी विशेषताओं केलिए जाने लगा जो उसे अन्य व्यक्तियों से पृथक कर देता है ।

व्यक्तित्व को परिभाषाबद्ध करना कठिन है । फिर भी कई विद्वानों ने उसकी कतिपय परिभाषायें प्रस्तुत की है । इनमें कुछ परिभाषाओं पर प्रकाश डालना अनिवार्य है । किम्बल यंग के अनुसार "व्यक्ति के मन में

---

1. An Introduction to personality study - R.B. Cattel, p.20 Edition-150

समाज एवं अपने प्रति जो विचार प्रतिक्रिया दृष्टिकोण, जीवन-मूल्य आदि होते हैं उनका व्यवस्थित रूप ही व्यक्तित्व है[1]।" आडन के अनुसार व्यक्तित्व "व्यक्ति के आन्तरिक जीवन का प्रकाशन है[2]।" ये परिभाषायें केवल व्यक्तित्व के आन्तरिक पक्ष पर ही प्रकाश डालती है। मार्टन प्रिन्स ने मानसिक पक्ष की भाँति शारीरिक पक्ष को भी महत्व प्रदान कर व्यक्तित्व की परिभाषा दी है ..... "व्यक्ति की समस्त जन्मजात शारीरिक प्रकृतियों, प्रेरणाओं, प्रवृत्तियों, आवश्यकताओं, मूल प्रवृत्तियों एवं अनुभव जन्य विकसित मानसिक दशाओं एवं प्रवृत्तियों की समन्विति ही व्यक्तित्व है[3]।"

उपर्युक्त सभी परिभाषायें थोडे अन्तर के बावजूद भी एक दूसरे से मिलती ही हैं। सभी विद्वान उसका सम्बन्ध व्यक्ति से ही जोडते हैं। अपने शब्दों में व्यक्तित्व व्यक्ति के गुणों और प्रवृत्तियों की समन्वित इकाई है। वह लक्षणों की समष्टि एवं व्यवहारों का दिशा दिर्नेश भी है। व्यक्ति का परिचय सामाजिकता से पृथक वैयक्तिक लक्षणों की संश्लिष्ट एकता में ही प्राप्त है। व्यक्तित्व का समाज से भी सम्बन्ध है। हमारी दृष्टि में व्यक्तित्व व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत संपत्ति है जो समष्टि के समुज्ज्वल आदर्श से भी संपृक्त रहता है।

---

1. Kimball Young - Personality and problem of adjustment, Second Edition-1962, p.3

   "Personality may be defined as the more or less organised body of ideas, attitudes, traits, values and responses (habits) which an individual has built into roles and statue for dealing with others and with himself."

2. Oyden - 'Personality is the expression of man's inner life." Quoted from 'Sahitya ka Vynjanik vivechan, p.229

3. Martin Prince - The unconscious, p.532.
   "Personality is the sum total of all the biological dispositions, impulses, tendencies, appe tites and instincts ofthe individual and the dispositions and tendencies acquired by experience."

व्यक्तित्व के अध्ययन की अनिवार्यता

किसी साहित्यकार के व्यक्तित्व के अध्ययन के बिना उनकी साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन अपूर्ण ही रह जाता है । व्यक्तित्व को भली भाँति समझने पर उनके साहित्य का सम्यक् बोध-संजात होना अवश्य है । लेखक अपनी रचनाओं में से अपने व्यक्तित्व को अलग रखना चाहते हैं, परन्तु इस कार्य में उन्हें पूर्णत: सफलता नहीं मिल पाती । जिस प्रकार ब्रह्म ने अपने ही तत्वों से समस्त जीवराशी की सृष्टि की है वैसे ही उपन्यास-कार अपनी आत्मा के कतिपय अंशों से प्राण रस ग्रहण कर उपन्यास का निर्माण करता है । माधवनजी ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है । साहित्यकार का जन्म जिस जाति एवं परिवार में होता है उन्हीं की देन से उनके व्यक्तित्व का निर्माण भी होता है । परिस्थितियों के कारण उनकी विचारधारा में होनेवाले विकास से भी उनका साहित्य प्रभावित हो पाता है ।

माधवनजी की संपूर्ण कृतियों में उनका व्यक्तित्व छाया हुआ है । उनके व्यक्तित्व का अध्ययन संपूर्ण अध्ययन केलिए अनिवार्य है । कृतित्व एवं व्यक्तित्व दोनों दृष्टियों से माधवनजी बेजोड कलाकार अवश्य हैं । उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा एवं व्यक्तित्व के अध्ययन के बिना उनके साहित्य का अध्ययन अधूरा ही रह जायेगा ।

व्यक्तित्व निर्माण के उपादानों पर यहाँ विचार करना चाहिए । यह धारणा रूढमूल होकर प्रचलित रहती है कि व्यक्तित्व व्यक्ति के जीवन में घटित घटनाओं के आधार पर स्थापित होता है । परिस्थिति एवं संघर्ष के झपेटे में जीवन निर्वहण करनेवाले व्यक्ति का जीवन अनेक दिशाओं में उन्मुख हो जाता है । संघर्ष जीवन को नूतन मार्ग दिखाकर उसे दृढता प्रदान करता है । व्यक्तित्व निर्माण साहचर्य, संस्कार, शिक्षा एवं देशकाल जन्य प्रभावों के परिणाम स्वरूप है । उस समय के सामाजिक, राजनीतिक, दार्शनिक तथा आर्थिक प्रभाव माधवनजी पर बहुत अधिक पडा है ।

माधवनजी के जीवन का मनोवैज्ञानिक पक्ष

महान नेताओं का प्रभाव

जब माधवनजी मेट्रिक उत्तीर्ण होकर बाहर आये, तब स्वतंत्रता संग्राम हो रहा था । स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने भाग लिया । तब अनेक महान नेताओं से सम्पर्क स्थापित करने का अवसर उनको मिला । महात्मा गाँधीजी से उनकी भेंट, उनके जीवन में बहुत परिवर्तन लाने का कारण बनी । गांधीजी ने उनको भारत भर पैदल भ्रमण करने का आह्वान दिया । उस भ्रमण से माधवनजी को भारत के जन-जीवन और भारत की स्थिति को समझने का अवसर मिला । विशेष रूप से माधवन पर महात्मा गांधी के व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव पडा । उन्होंने गांधीजी को उस ज़माने का महापुरुष माना । इसलिए उनकी विचारधारा और कार्यक्रम अपने जीवन में भी उन्होंने स्वीकार किया ।

डॉ॰ ज़ाकिर हुसेन का पितृवत् संरक्षण और स्नेह माधवन को उनके जीवन के अन्तिम क्षणों तक मिलता रहा । ज़ाकिर हुसेन से माधवनजी ने अनेक महान पाठ सीखे । माधवनजी ने उनको आदरणीय महान व्यक्ति के रूप में मान लिया ।

माधवनजी की साहित्यिक सृष्टि पर व्यासदेव का प्रभाव बहुत अधिक था । उन्होंने "महाभारत" को विश्व के सबसे महान ग्रन्थ और व्यासदेव को महान साहित्यकार के रूप में माना था । विवेकानन्द को भी बहुत महान व्यक्ति के रूप में उन्होंने स्वीकार किया । निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व को भी उन्होंने बडे सम्मान की दृष्टि से देखा ।

इसके अलावा माधवनजी पर कुछ विदेशी महात्माओं का प्रभाव भी पड़ा । इसके बारे में उनका कथन है - " आर्षग्रन्थों के बाद मुझपर सर्वाधिक प्रभाव सुकरात, कन्फ्यूशियस, टालस्टाय, ह्यूगो, रोमाँरोलाँ, कालिदास, तुलसीदास, रवीन्द्रनाथ, खलिल जिब्रान आदि साहित्यिक मनीषियों का ही पडा है । अगर मैं आर्ष-ग्रन्थों में न डूबता तो मुझे अपने जीवन केलिए कोई आधार ही प्राप्त न होता । अगर मैं इन साहित्यिक मनीषियों के सुप्रसिद्ध ग्रन्थों का अध्ययन न किया रहता तो मुझे अब तक कोई दिशा-ज्ञान प्राप्त न हुआ होता । कदाचित् मैं अभी किसी मारवाडी उधोगपति के कार्यालय में उनके कागज़ों को टाईप करने में जीवन व्यतीत करता ।[1]"

माधवनजी पर प्रकृति का प्रभाव

महान नेताओं के अलावा माधवनजी के जीवन पर प्रकृति के छोटे-छोटे जीव-जालों का भी प्रभाव पड़ा है । वृक्ष, पहाड, नदी, हवा, सूर्य आदि के अलावा घास के फूलों पर भी माधवनजी महानता देखते हैं । सूर्य के असाधारण तेज़ और निष्काम कर्म पर माधवनजी मुग्ध होते थे । माधवनजी को वृक्षों और फूलों की निष्काम सेवा ने आकृष्ट किया ।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि माधवनजी के व्यक्तित्व निर्माण में अनेक महापुरुषों के साथ प्रकृति की वस्तुओं का योगदान भी रहा है

---

1. उषा - आनन्द शंकर माधवन - पृ·244

आर्षभारत का प्रभाव

माधवनजी ने बचपन से ही आर्ष भारत के प्रति श्रद्धा भावना रखी । इसका एकमात्र कारण उनकी माँ ही थी । "रामायण", "महाभारत" आदि पौराणिक ग्रन्थों की कहानियों और घटनाओं को विस्तार के साथ उन्होंने माता से सुना । इसके फलस्वरूप बचपन से ही आध्यात्मिक विचारधारा उनके मन में दृढतर हो गयी थी । इसके बाद भारत के आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन से माधवनजी पर आर्षभारत की ओर सम्मान, प्रेम, श्रद्धा आदि उत्पन्न हुए । अपने समय की संस्कृति पर उन्होंने विशेष ध्यान रखा । इसलिए उनके ग्रन्थों में उन्होंने आर्षभारत संस्कृति, दर्शन आदि को प्रमुखता देने का प्र यत्न किया है ।

माधवनजी की मित्रमंडली

माधवनजी की मित्रमंडली बहुत व्यापक है । महान नेता से लेकर गरीब श्रमिक या कृषक भी इनके मित्र हैं । उन लोगों से बहुत ममता भरा व्यवहार माधवनजी करते हैं । बिहार उनका कर्मक्षेत्र है । इसलिए वहाँ के गरीब लोगों के साथ वे जी रहे हैं । अनेक साहित्यिक व्यक्तियों से उनका स्नेह संबन्ध ज़ारी था । डॉ॰ हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, बनारसी दास चतुर्वेदी, शिवपूजन सहाय, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह, शांतिप्रिय द्विवेदी, लक्ष्मीनारायण सुधांशु आदि का स्नेह इन्हें मिलता रहा । डॉ॰ हरिवंशराय बच्चन इनके अनन्य प्रशंसकों में एक हैं ।

माधवनजी का बाह्य व्यक्तित्व

साहित्यकार का बाह्य रूप उनकी मन:स्थिति को व्यक्त करता ही है । माधवनजी का आकार उनके जीवन की विषमताओं की ओर इशारा करता है । उनकी इस आकारगत विशिष्टता यही स्पष्ट करती है कि वे प्रतिकूल या विरोधी परिस्थिति में भी संघर्ष का सामना कर आगे बढनेवाले, जीवन सागर के क्रियाशील नाविक हैं । उनका बाह्य रूप उनकी अनोखी, गंभीर एवं गहन चिन्तन शक्ति का परिचय देता है । आडम्बरहीन सरलता उनके बाह्य व्यक्तित्व का प्रधान अंग है ।

माधवनजी के भीतरी व्यक्तित्व में चैतन्य है, ऐश्वर्य है, सत्य है, सौन्दर्य है, शुचितर और सुकोमलतर चिन्मय है जो आध्यात्मिक प्रयोजन से अनुप्राणित है । उनमें कोमलता है और साधुता है जो दूसरों को आत्म-निहित करने का कार्य करती है ।

माधवनजी की बाह्य आकृति इस प्रकार है - सामान्य लम्बा-चौडा शरीर, सिर पर रेशम जैसे स्निग्ध विरल केश-राशि, आँखों पर चश्मा, खादी कुर्ता और पायजामा जैसे सादगी दर्शानेवाली वेश-भूषा ।

माधवनजी अपनी सुख-सुविधा का ख्याल नहीं रखते हैं । अपनी निजी आकांक्षाओं और इच्छाओं को उन्होंने छोड़ दिया । उनका जीवन राष्ट्र और राष्ट्रसेवा केलिए समर्पित है । उनका मन महान बातों पर लगा हुआ है । इसलिए शारीरिक सुख का ख्याल उनको नहीं है । प्रारंभ में माधवन को धन का अभाव था । लेकिन बाद में मन्दार विद्यापीठ

माधवनजी अनेक काम एक दिन में ही करते हैं । पेड-पौधों का पालन, दिन के अधिकांश समय में करते हैं । इसके साथ मन्दार विद्यापीठ और शिवधाम का कार्यनिर्वहण, प्रूफ-रीडिंग, लेखन, अध्ययन, प्रेस की देखरेख आदि भी करते हैं । निहत्तर उम्रवाले माधवनजी रोज़ आठ घंटों तक लिखते हैं । एक समय था जब माधवन मन्दार विद्यापीठ के संचालन से लेकर "प्राच्य भारती", "मन्दार स्पीक्स", "अद्वैत समाज" आदि पत्रिकाओं का संपादन तक करते थे ।

माधवनजी को कई भाषाओं का ज्ञान है । मातृभाषा मलयालम और हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेज़ी, संस्कृत, तमिल, उर्दु और बंगला भाषा का अच्छा अधिकार है ।

माधवनजी के बाह्य व्यक्तित्व पर सब कहीं सादगी की छाप देखी जा सकती है । उनके शरीर में आज तक ऐसी साज सज्जा नहीं देखी है जिसमें अमीरी अथवा प्रदर्शन की बू आती हो । स्वार्थ से मुक्त होकर परार्थ पर भी सोच विचार करनेवाले सरल आदमी हैं माधवनजी ।

माधवनजी साहित्य में व्यक्तित्व

माधवनजी की साहित्यिक रचनायें उनके व्यक्तित्व की परिचाय हैं । सादा जीवन और उच्च विचारवाले माधवनजी का हर साहित्य इसका दृष्टान्त ही है । माधवनजी किसी का भी अन्धानुकरण नहीं करते हैं । वह स्वतंत्र व्यक्तित्ववाले हैं । भारत को उन्नति की ओर उठाना ही माधवनजी का लक्ष्य है । भारत की प्रगति केलिए पहले हमारे लोगों को ज्ञानवान बनना चाहिए । इसकेलिए माधवनजी प्रयास करते हैं । उनकी साहित्यिक रचनाओं में यह विचारगति व्यक्त होती है ।

माधवनजी इस प्रकार अपना विशेष व्यक्तित्व अपनी साहित्यिक रचनाओं के द्वारा हमारे सामने रखते हैं । अनेक नयी विधायें उनके साहित्य में होती हैं । सूक्तियाँ जैसी रचनायें आज के साहित्य भण्डार में देखी नहीं जा सकती हैं । इस प्रकार कई नयी विधाओं को स्वीकार करके साहित्यिक क्षेत्र में भी महान और अलग व्यक्तित्व रखनेवाले मनीषी हैं आनन्द शंकर माधवन ।

माधवनजी का कृतित्व

आधुनिक हिन्दी साहित्य को समृद्ध करनेवालों में माधवनजी का विशिष्ट उल्लेखनीय स्थान है । कथाकार, कवि एवं निबन्धकार के रूप में अनेक दृष्टियों से उनका महत्व असन्दिग्ध है । उन्होंने कथा-साहित्य के दोनों क्षेत्रों - उपन्यास और कहानी में विपुल साहित्य सृष्टि की है । कथा साहित्य को नूतन जीवन दर्शन, नवीन भावबोध और अभिनव रचना-शिल्प से मंडित कर नयी प्रवृत्ति का सूत्रपात करने का श्रेय गणनीय है । इस दृष्टि से देखने पर माधवनजी के कृतित्व का सामान्य परिचय देना अनिवार्य है ।

माधवनजी की साहित्यिक कृतियों की सूची (कालक्रम के अनुसार)

माधवनजी ने अनेक साहित्यिक कृतियों की रचना की । लेकिन अब तक 33 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं ।

1. बिखरे हीरे

प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन अमरावती प्रेस मन्दार विद्यापीठ से सन् 1958 में हुआ । यह 59 पृष्ठों का है । इसमें सूक्तियाँ हैं । माधवनजी के कई बिखरे-बिखरे विचार हैं इसमें । यह माधवनजी की प्रथम प्रकाशित कृति है । इसका द्वितीय संस्करण 1971 में हुआ ।

2. हिन्दी आन्दोलन

यह माधवनजी की दूसरी प्रकाशित कृति है । इसका प्रकाशन 1959 में हुआ । इसमें हिन्दी भाषा का प्रचार ही है । इसका दूसरा संस्करण 1970 में हुआ । यह 178 पृष्ठों की रचना है ।

3. उषा

यह माधवनजी का निबन्ध संग्रह है । इसका प्रकाशन 1960 में हुआ ।

4. अनामंत्रित मेहमान

"अनामंत्रित मेहमान" 1953 में लिखा गया था । लेकिन इसका प्रकाशन 1961 में ही हुआ । 854 पृष्ठों की यह पुस्तक माधवनजी का सामाजिक उपन्यास है ।

5· अनल शलाका

यह ग्रन्थ आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक लेखों का संग्रह है । इसका प्रकाशन 1962 में हुआ था । द्वितीय संस्करण 1970 में निकला ।

6· दीपाराधना

यह माधवनजी की प्रथम काव्य कृति है । इसमें 13। कविताऐं हैं । ये छन्दमुक्त कविताओं का संकलन हैं और विचारों की प्रधानता इन कविताओं में है । इसका प्रकाशन 1964 में हुआ था ।

7· संजीवनी

संजीवनी का प्रकाशन काल 1964 है । इसमें दो सौ छः कविताऐं संकलित हैं । विषय की दृष्टि से "संजीवनी" की कविताऐं नव्य आयाम की सृष्टि करती हैं ।

8· प्रथम याम

यह माधवनजी की आत्मजीवनी है । इसका प्रकाशन 1965 में हुआ । 374 पृष्ठों में माधवनजी की बाल्यकाल और किशोरावस्था की घटनायें इसमें वर्णित हैं ।

9. प्रसूनपंथ

इसका प्रकाशन 1965 में हुआ था । यह माधवनजी की 31 कहानियों का संग्रह है ।

10. वर्षा

इसका प्रकाशन 1967 में हुआ था । हिन्दी में एक नवीन प्रयोग है 307 पृष्ठों की यह पुस्तक । इस पुस्तक में 2135 सूक्तियाँ एवं सुभाषित संकलित हैं । इसमें माधवनजी का गहरा चिन्तन हम देख सकते हैं । ये सूक्तियाँ मुक्तचिन्तन परक हैं ।

11. आरती

यह कुछ लेखों का संग्रह है । इसका प्रकाशन 1967 में हुआ । इसके निबन्ध समाज, राजनीति तथा साहित्य, भाषा, कला आदि से सम्बन्धित है । इनमें माधवनजी की निर्भीक विचारधारायें प्रवाहित हुई हैं ।

12. प्रसववेदना

यह उपन्यास दो खंडों में रचित हैं । इसका प्रकाशन 1967 में हुआ । 1353 पृष्ठों का यह बृहत् उपन्यास "अनामंत्रित मेहमान" की शेष कहानी है ।

13. घास के फूल

1968 ई. में प्रकाशित इस पुस्तक में 155 मान्यताओं, चेतावनियों एवं पंक्तियों का संकलन हुआ है जिसे माधवन ने कविता कहा है। लेकिन इसे सूक्तियों का संग्रह कहा जाना अत्यधिक उपयुक्त है।

14. चित्रशाला

इस कविता संग्रह का प्रकाशन 1968 में हुआ। इसमें 255 कविताएँ संकलित हैं।

15. पल्लवी

"पल्लवी" माधवन की चौथी काव्य पुस्तक है। इसका प्रकाशन 1969 में हुआ। यह 257 मुक्तकों का संकलन है। इसमें विषय का वैविध्य होता है।

16. जाह्नवी

"जाह्नवी" का प्रकाशन भी 1969 में हुआ। इसमें प्रेमपरक कविताओं की प्रधानता है। लेकिन अन्य भावों की अभिव्यक्ति भी इसमें होती है।

17. माधव-निदान

1970 में प्रकाशित यह पुस्तक 1449 निदानों से भरा हुआ है ।

18. अद्वैत समाज

इसका प्रकाशन 1971 में हुआ था । वास्तव में यह "माधव-निदान" का एक संक्षिप्त रूप है ।

19. बृहत्तर भारती

18 पृष्ठों का यह ग्रन्थ 1973 ई. में हुआ । यह माधवनजी की कल्पना की अभिव्यक्ति है ।

20. कवि

1973 में प्रकाशित यह गद्यकाव्य हिन्दी साहित्य में एक नवीन प्रयोग है । इसमें कवि माधवन ने अपने कवि-व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति अत्यन्त ही भाव-पूर्ण शैली में की है ।

21. गीता-तत्व

इसका प्रकाशन 1975 में हुआ । इस पुस्तक में "गीता" की व्याख्या माधवन ने अपनी धारणाओं के आधार पर की है ।

22· जैन-धर्म

1976 में प्रकाशित इस छोटी सी पुस्तक में जैन धर्म के विकास पर प्रकाश डाला गया है ।

23· मानवीयम्

इसका प्रकाशन 1976 में हुआ । माधवन ने इस पुस्तक में साधना से प्राप्त अपनी अनुभूतियों को अत्यन्त ही स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है ।

24· प्लेटो

1976 में इसका प्रकाशन हुआ । प्लेटो के व्यक्तित्व और विचारों को माधवनजी इसमें प्रस्तुत करते हैं ।

25· वैतालिका

इस छोटी सी पुस्तक में 217 उक्तियाँ हैं । इसका प्रकाशन काल भी 1976 है । इसका रचना विधान "घास के फूल" जैसे हैं ।

26· उपनिषदसार

इसका प्रकाशन 1981 में हुआ । इसमें उपनिषदों का सार तत्व है । ईश, कठ, केन एवं प्रश्नोपनिषद का सार 161 पृष्ठों में प्रस्तुत करते हैं ।

27· अरिस्तु

इसका प्रकाशन 1981 में हुआ । अरस्तु के व्यक्तित्व और विचारों को हमारे सामने माधवनजी इस पुस्तक द्वारा रखते हैं ।

28· वालटायर

इसका प्रकाशन 1982 में हुआ । फ्रांस के क्रान्तिकारी साहित्यकार वाल्टायर के असाधारण महत्व को इसमें दर्शाया गया है ।

29· अक्षय लेखनी

इसमें पश्चिम के दस तत्व-चिन्तकों के व्यक्तित्व और विचारों पर प्रकाश डाला गया है । उनके नाम क्रमश: इस प्रकार है - बेकण, स्पिनोजा, कॉत, हेगल, स्कोपनहोवर, स्पेंसर, बर्गसन, क्रोचे, संतयान और रसेल । इसका प्रकाशन 1982 में हुआ ।

30· सुकरात्

सुकरात् के जीवन, व्यक्तित्व एवं विचारधारा का विस्तृत परिचय इसमें है । इसका प्रकाशन 1983 में हुआ ।

31· एणाक्षी

यह पट्ट-कथा है । इसका प्रकाशन 1984 में हुआ । इसमें विश्व संस्कृति का समन्वय है ।

32· शिवधाम

माधवनजी से स्थापित "शिवधाम" नामक शिक्षानगरी से सम्बन्धित लेख है "शिवधाम" । 45 पृष्ठों के इस पुस्तक का प्रकाशन 1984 में हुआ ।

33· पुरुषार्थी

यह भी पट्ट-कथा है । दिलीप की पुरुषार्थी साधना और उसके महत्तम आदर्श को उपस्थित करना इसका उद्देश्य है । इसका प्रकाशन 1985 में हुआ ।

उपन्यासकार के रूप में

आनन्द शंकर माधवन के उल्लेखनीय उपन्यास हैं - "अनामंत्रित मेहमान" और "प्रसववेदना" (दो भाग) । उनके दो पट्ट-कथायें "एणाक्षी" और "पुरुषार्थी" भी उपन्यास की श्रेणी में आती हैं । ये रचनायें समाज के विभिन्न क्षेत्रों को स्पर्श करती हैं । "अनामंत्रित मेहमान" में मार्क्सवादी और पूंजीवादि का संघर्ष होता है । आध्यात्मिक शक्ति की खोज भी इस उपन्यास में है । इसके अनेक कथापात्रों का चरित्र पाठकों को सद् दिशा प्रदान करता है ।

प्रसववेदना (दो भाग) में अनेक समस्यायें आती हैं । स्वतंत्रता संग्राम के समय के भारत का चित्र इसमें है । एक अबला स्त्री पर की गयी क्रूरता ही इस उपन्यास का कथा बीज है ।

उस समय भारत में उपस्थित वर्गीय संघर्ष का वास्तविक रूप इसमें है । अनेक समाज सेवक या सुधारक महान पुरुषों को भी इसमें हम देख सकते हैं । इसके साथ अद्भुत शक्तिसम्पन्न या अलौकिक शक्तिसम्पन्न कुछ देवता लोग भी है । माधवनजी का यह विशालकाय उपन्यास, उपन्यास के क्षेत्र में सफल उद्यम ही है ।

"एणाक्षी" और "पुरुषार्थी" शिल्प की दृष्टि से उपन्यास कला से ज़रा भिन्न हैं तो भी ये भी उपन्यास हैं । एणाक्षी में विश्वसंस्कृति और "पुरुषार्थी" में पुरुषार्थी साधना का महान आदर्श प्रतिपादित है ।

हिन्दी क्षेत्र के प्रमुख उपन्यासकारों के जैसे अहिन्दी लेखक माधवनजी ने हिन्दी उपन्यास को नयी दिशा देने का प्रयत्न किया है । कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देशकाल एवं वातावरण, भाषा, शैली आदि में माधवनजी के उपन्यास उच्च स्तरीयता रखते हैं । इसलिए वे पठनीय रह जाते हैं ।

कहानीकार के रूप में

माधवनजी का कहानी-संग्रह है "प्रसून-पंथ" । इस नाम में भी कुछ विशेषता द्योतित है । माधवनजी की राय में वृक्ष और पौधे निष्काम कर्म करते हैं । उनको फलेच्छा नहीं है । यह है "प्रसूनवाद" । हर प्रसून, तृण पुष्प या कमल भी अपना कर्तव्य निभाता है । इस प्रकार माधवनजी के कहानी-संग्रह की एक-एक कहानी एक-एक फूल है । वे भी मनुष्य केलिए निस्वार्थ सेवा में रत हैं । हर कहानी का गुणपाठ मनुष्य केलिए अनुकरण

शिल्प की दृष्टि से भी माधवनजी की कहानियाँ बहुत आगे हैं । इस प्रकार माधवनजी कहानी के क्षेत्रमेंभी अमिट छाप डालनेवाले लेखक सिद्ध होते हैं ।

निबन्धकार के रूप में

माधवनजी ने विविध प्रकार के निबन्ध लिखे । शिल्प और शैली की दृष्टि से वे निबन्ध बिलकुल भिन्न श्रेणी के होते हैं । उनके कई ग्रन्थ, लेखों का संग्रह हैं । कुछ जीवनियाँ और आत्मजीवनी भी होती हैं । मुक्तचिन्तनपरक सूक्तियों से भरा हुआ ग्रन्थ भी उनमें स्थान लेता हैं । इसके साथ कुछ आध्यात्मिक ग्रन्थों का सार-तत्व भी माधवनजी ने प्रस्तुत किया ।

उषा, आरती, अनलशलाका, हिन्दी आन्दोलन आदि निबन्ध संग्रह हैं । "अनलशलाका" में माधवनजी की क्रान्तिकारी भावना की छाप है । "आरती", उपनिषद्सार" मानवीयम्" आदि में निबन्धकार के उच्च विचार आये हैं । "सुकरात", "वालटायर", "अरिस्तु", "प्लेटो" "अक्षय लेखनी" आदि जीवनियाँ सराहनीय रचनायें हैं । आत्मजीवनी "प्रथम याम" भी उत्कृष्ट श्रेणी की कृति है ।

उपर्युक्त सभी ग्रन्थों में माधवनजी का व्यक्तिगत, स्वतंत्र, गहरा चिन्तन होता है । इनमें माधवनजी को अनुभूत हुए अनेक वास्तविक तथ्य विद्यमान हैं ।

पत्र सम्पादक के रूप में

माधवनजी के साहित्य जीवन के बीच उसको दीप्तिमान बनाने योग्य कुछ और साहित्यिक दिशायें भी हैं । उनमें एक है पत्रकारिता । वास्तव में उनका साहित्यिक जीवन पत्रकारिता से ही आरंभ हुआ था । अपने पत्रों द्वारा साहित्यिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक आदि क्षेत्र में परिवर्तन लाने का उन्होंने प्रयत्न किया था ।

माधवन द्वारा सम्पादित पत्र

1. प्राच्य भारती - हिन्दी मासिक (आठ वर्षों तक)
2. अद्वैत समाज - मासिक (छः मास तक)
3. मन्दार स्पीक्स - अंग्रेज़ी मासिक (अठारह मास तक)

माधवनजी ने इन पत्रिकाओं का प्रकाशन और सम्पादन बहुत कठिनाईयां सहकर कीं । लेकिन ग्राहक की संख्या बहुत कम होने के कारण धन की समस्या आगे आयी । इसलिए ये तीनों पत्र बीच में बन्द हो गए । इन तीन पत्रिकाओं के सम्पादन में बहुत अधिक कुशलता माधवनजी ने दिखाई है । "हिन्दी निर्माण परिषद्"की मुख पत्रिका के रूप में प्रकाशित "प्राच्य भारती" का सम्पादन उनकी सम्पादन कला का निदर्शन है ।

निष्कर्ष

साहित्यकार का व्यक्तित्व अपनी रचनाओं में सूक्ष्म रूप से मुद्रित होता है । जाने अनजाने अपने जीवन में भोगे हुए बहुत सारे अनुभव तथा घटनाओं के सिलसिले काव्यरूप में प्रसंग पाकर अनावृत हो जाते हैं ।

रचनाकार का अनुभव जितना विशाल होता है उतना उसकी रचनाओं में निरूपण होता है । माधवनजी भी ऐसे व्यक्तित्व के स्वामी है । जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अपना सर्वस्व समर्पण किया था एवं कठिनाईयों को झेलते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढते रहे । उनमें निहित अध्यापक,उपदेशक, शिक्षाशास्त्री का स्वरूप परम्परा से प्राप्त उनकी आध्यात्मिक चेतना के साथ उनकी सभी रचनाओं में अभिव्यक्त हुई । भारतीयता का एक लघु निदर्शन भी इनकी कृतियों में व्याप्त था । आदर्श ही उनकी मुखमुद्रा है । इसलिए उनके सामाजिक जीवनदर्शन तथा साहित्यिक दर्शन समुचित समीक्षात्मक और शोधपरक अध्ययन केलिए सहायक हैं ।

अध्याय - दो

आनंद शंकर माधवन जी के उपन्यास

अध्याय - दो

आनन्द शंकर माधवन के उपन्यास

भूमिका

माधवन जी के समय के उपन्यास

प्रेमचन्द का "सेवासदन" हिन्दी उपन्यास में एक नवीन दिशा का सूचक होकर आया । प्राय: बीस वर्षों तक प्रेमचन्द का हिन्दी उपन्यास साहित्य पर एकच्छत्र राज्य रहा । इस अवसर पर अन्य समर्थ लेखक भी इस क्षेत्र में आये और इस साहित्य-रूप को प्रौढता प्राप्त हुई । उस वक्त, हमारे देश में, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में महात्मा गांधी अवतीर्ण हुए । इसलिए स्वतंत्रता-आन्दोलन को नया बल और नयी दिशा मिली । हमारे भीतर अन्याय-उत्पीडन के विरोध की एक गौरवमयी शक्ति जगी । मार्क्स एवं फ्रायड की आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक स्थापनायें, विज्ञान के आविष्कारों आदि का भी हमारे जन-जागरण पर पर्याप्त प्रभाव पडा । इस अवधि में प्रणीत उपन्यासों में इन युगीन प्रभावों की स्पष्ट छाप पड़ी है ।

प्रेमचन्द और उनके युग के अन्य उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में जन-जागरणवादी आन्दोलन के विभिन्न पक्षों को अपने चित्रण का आधार बनाया । अर्थात् तात्कालीन युग जीवन उन उपन्यासों के मुख्य विषय बन गया । सम्मिलित कुटुम्ब की विषमतायें, नारी वर्ग की विभिन्न समस्यायें, धर्म एवं जातिगत भेदभाव, परम्परागत सामाजिक कुरीतियाँ तथा अन्धविश्वास, धार्मिक-नैतिक बाह्याडम्बर, किसान-मज़दूर की शोचनीय आर्थिक-सामाजिक स्थिति, ज़मीन्दार-पूंजीपति की निरंकुशता, सरकारी कर्मचारियों के अन्याय-अत्याचार तथा विभिन्न राष्ट्रीय आन्दोलन आदि में से एक या अनेक उस समय के उपन्यासकारों के उपन्यासों की कथा वस्तु बनी ।

पुरातन काल में सम्मिलित कुटुम्ब हमारी समाज-व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंश था । इसके द्वारा परिवार में सहयोग, सद्भाव, स्नेह एवं समानता की भावना आई । लेकिन नयी शिक्षा, औद्योगिक विकास आदि के कारण वैयक्तिक स्वार्थ प्रबल होने लगा । इससे सम्मिलित कुटुम्ब में अनेक समस्यायें पनपने लगीं और यह व्यवस्था टूटने लगी । इस विषय को आधार बनाकर प्रेमचन्द और इस युग के अन्य उपन्यासकारों ने भी उपन्यास लिखा ।

इस युग की मुख्य समस्या थी, नारी की । नारी हमारे समाज के सबसे अधिक पीड़ित, प्रताड़ित एवं बन्धनग्रस्त थी । स्त्री की हर समस्या को इस युग के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों का विषय बनाया विधवा-विवाह इसमें एक था । विधवा-विवाह के निषेध से अनेक युवतियाँ मानसिक दमन अनुभव कर रही थीं । इसलिए विधवा-विवाह का समर्थन करते हुए इन उपन्यासकारों ने तूलिका चलाई । इसके अलावा परिस्थितियों से बाध्य होकर वेश्या-जीवन ग्रहण करनेवाली स्त्रियों की समस्यायें और

अनमेल विवाह के जहरीले अनुभव आदि भी इस युग के उपन्यासों में चर्चित हुए । हिन्दू समाज में कुमारी कन्याओं के विवाह की समस्या, प्रवृत्तिजन्य प्रेम तथा यौन-सम्बन्ध, गर्भधारण, गर्भपात के प्रयत्न, कायर प्रेमी द्वारा पलायन, समाज की कुत्सा, आत्महत्या आदि समस्यायें भी इस युग के उपन्यासकारों द्वारा स्वीकृत हुई । इसी प्रकार नारी पर अनेक प्रकारके अनाचार और बलात्कार भी हुये थे । इसलिए नारी को जागृत करने केलिए स्त्री-शिक्षा ही उचित मार्ग मानी गयी । इस कारण नारी विषयक अनेक समस्याओं का विस्तृत चिन्तन प्रेमचन्दयुगीन उपन्यासों में प्राप्त है ।

शोषण, दमन एवं दासता का वातावरण ब्रिटीश शासन के कारण भारत में व्याप्त हुआ था । ज़मीन्दार और किसान के बीच की समस्या विदेशी शासन में और भयंकर बनी । ज़मीन्दार, किसान लोगों के श्रम और पसीने की कमाई हडप लेते थे । इसके अतिरिक्त इजाफा-लगान, भोजन दिए बिना काम कराना, बहू - बेटियों की इज्जत लूट लेना आदि ज़मीन्दारों की क्रूर और हीन प्रवृत्तियाँ थीं । ये सब साहित्यकारों के उपजीव्य बनीं । सरकारी अफसर और कर्मचारी, शोषकों एवं अत्याचारों का दूसरा वर्ग था । वे ज़मीन्दारों के सहायक थे । एक अन्य वर्ग था साहूकारों एवं महाजनों का । वे किसानों का खून चूस लेते थे । इस प्रकार के दमित लोगों की मनोवृत्ति एवं उनके आचार-विचार, ज़मीन्दारों एवं उद्योगपतियों के विभिन्न रूप, स्वभाव-संस्कार, रहन-सहन आदि प्रेमचन्द के उपन्यासों में ही नहीं इस युग के अन्य उपन्यासकारों के उपन्यासों में भी देखा जा सकता है ।

स्वच्छन्द प्रेम या रोमानी प्रेम का चित्रण भी समस्या के रूप में प्रेमचन्दयुग के उपन्यासकारों ने स्वीकार किया । सैकड़ों वर्षों की दासता के दीर्घकालीन अवकाश में समाज में अनेक प्रकार की विकृतियाँ जमती

चली आयीं । अशिक्षा, अज्ञान एवं अन्धविश्वास के पारावार में ग्रामीण एवं मध्यवर्गीय समाज डूबा हुआ था । स्त्रियों केलिए नैतिकता के कठोर बन्धन थे । अनेक धार्मिक आडम्बर और अन्धविश्वास समाज में उपस्थित हुए । इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रेमचन्द और इस युग के अन्य उपन्यासकारों ने उपन्यास को सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया । इसलिए प्रेमचन्दयुगीन उपन्यास समाज का सच्चा प्रतिबिम्ब रहा ।

प्रेमचन्द युगीन मुख्य उपन्यासकार और उनकी रचनाओं का परिचय

प्रेमचन्द

प्रेमचन्दयुग के सबसे सशक्त और युग-प्रवर्तक साहित्यकार प्रेमचन्द ही थे । उनके आगमन से हिन्दी उपन्यास सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति का श्रेष्ठतम साधन बना । "उन्होंने जीवन को अत्यधिक निकट से जाना था और स्वयं संघर्षों के बीच से गुज़रकर, परिस्थितियों के थपेडे खाकर, समाज के विष को पचाकर, साहित्य में शिव की प्रतिष्ठा की थी ।"[1] हिन्दी उपन्यास को साहित्यिक क्षेत्र में सप्राणता प्रदान करनेवाले प्रथम लेखक थे प्रेमचन्द ।

प्रेमचन्द ने ग्यारह उपन्यास लिखे थे । वे थे - सेवासदन, वरदान, निर्मला, गबन, प्रतिज्ञा, गोदान, रंगभूमि, कर्मभूमि, प्रेमाश्रम, कायाकल्प तथा मंगलसूत्र । इन उपन्यासों की विषयवस्तु सामाजिक थी । निम्नवर्ग से लेकर उच्चवर्ग की अनेकानेक कठिनाईयों और समस्याओं को प्रेमचन्द ने हृदयंगम करके अपनी तूलिका उनपर चलायीं । संकीर्ण घरेलू परिस्थितियों से लेकर समाज और राष्ट्र का कोई भी पक्ष उनकी दृष्टि से

---

1. हिन्दी उपन्यास - शिवनारायण श्रीवास्तव, पृ.72

परे न था । अत्याचार, अनाचार एवं शोषण के विरुद्ध उनके मन में बड़ी घृणा थी और उसकेलिए विभिन्न उपन्यासों में विविध प्रकार के दण्डों का विधान भी उन्होंने किया । इस प्रकार प्रेमचन्द ने समाज से उपेक्षित-नियति से वंचित अति सामान्य मानवों को विषय बनाकर साहित्य को एक नवीन दिशा दी । वे साहित्य को केवल मनोरंजन की सामग्री नहीं मानते थे किन्तु मानव-मंगल एवं मानव-मन परिष्कार का एक श्रेष्ठतम साधन समझते थे ।

जयशंकर प्रसाद

कविवर "प्रसाद" जी ने उपन्यास साहित्य को भी एक नवीन रूप दिया, नूतन चेतना दी । "कंगाल" उनका प्रथम उपन्यास है । "कंगाल" में सामाजिक बन्धनों एवं व्यक्ति की सहज प्रवृत्तियों के संघर्ष से उद्भूत विषमताओं का मार्मिक अंकन किया गया है । "प्रसाद" जी की एक अन्य उपन्यास है तितली" । "तितली" भारतीय नारीत्व का प्रतीक है जिसके रूप में प्रसाद का नारी आदर्श प्रतिफलित हुआ है । इसमें प्रेम के आदर्श स्वरूप एवं आत्मसंयम के वर्णन का प्रयास है । प्रसादजी का एक अधूरा ऐतिहासिक उपन्यास है "इरावती" । जयशंकर प्रसाद भी प्रेमचन्दयुगीन उपन्यासकारों में सशक्त थे ।

वृन्दावनलाल वर्मा

प्रेमचन्दयुग के उपन्यास लेखकों में ऊँचा स्थान वृन्दावनलाल वर्मा को भी प्राप्त है । उन्होंने ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यास लिखे । दोनों को मिलाकर प्राय: दो दर्जन उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं । हिन्दी में उच्चकोटि के ऐतिहासिक उपन्यास लिखनेवालों में सर्वप्रथम वर्माजी हैं ।

इसलिए उनके ऐतिहासिक उपन्यासों को अधिक ख्याति मिली । इनके ऐतिहासिक उपन्यास है - "गढकुण्डार", "विराट की पद्मिनी", "झाँसी की रानी", "मुसाहिब जू", "कचनार", "सत्रह सौ उन्नीस", "माधवजी सिन्धिया", "मृगनयनी", "टूटे काँटे", "अहल्याबाई", "भुवन विक्रम" आदि सामाजिक कहानियों में "संगम" "लगन", "प्रत्यागत", "कुण्डलीचक्र", "प्रेम की भेंट", "अचल मेरा कोई" तथा "अमरबेल" आदि उल्लेखनीय है ।

इन ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यासों में वर्माजी ने लोकसत्य पर अधिक बल दिया गया है और जीवन की वास्तविक घटनाओं का अधिक उद्घाटन किया गया है । इनमें उनका मानसिक स्वास्थ्य एवं संतुलन प्रतिबिम्बित हुआ है और जीवन को समग्र रूप में देखने का प्रयास भी मुखरित हुआ है ।

चंडीप्रसाद "हृदयेश"

"हृदयेश" जी उपन्यास के क्षेत्र में एक शैलीविशेष के प्रवर्तक के रूप में सदैव स्मरण किये जायेंगे । उनके दो उपन्यास है "मनोरमा" तथा "मंगल प्रभात" ।

विश्वम्भरनाथ शर्मा (कौशिक)

प्रेमचन्द के सच्चे अनुयायी हैं कौशिक । उन्होंने प्रेमचन्द के जैसे सामयिक जीवन के यथार्थ का अपने उपन्यासों में अंकन किया । समाज, देश एवं जीवन की अनेकमुखी समस्याओं के चित्रण में उनका प्रयास श्लाघनीय है । "मा" और "भिखारिणी" कौशिक के दो प्रसिद्ध उपन्यास हैं ।

चतुरसेन शास्त्री

चतुरसेन शास्त्री की लेखनी उपन्यास के क्षेत्र में अधिक गतिशील हुई है । उन्होंने ऐतिहासिक उपन्यास ही अधिक लिखे । इनके उपन्यासों में ऐतिहासिक तथा मन को रमा लेनेवाले कल्पनाप्रसूत प्रसंग तथा जीती-जागती मानवमूर्तियों की उपलब्धि होती है । शास्त्रीजी का पहला महत्वपूर्ण उपन्यास "वैशाली की नगर-वधू" है । "हृदय की परख", "व्यभिचार", "हृदय की प्यास", "अमर अभिलाषा", "पूर्णाहुति", "रक्त की प्यास", "बहते आँसू", "चरमेध", "अपराजिता", "मन्दिर की नर्तकी", "दो किनारे", "वयं रक्षाम:{दो भाग}", "सोमनाथ", "आत्मगीत" आदि उनके उपन्यास हैं ।

पांडेय बेचन शर्मा "उग्र"

प्रेमचन्दयुगीन उपन्यासकारों में एक अतुल्य प्रतिभावाले उपन्यासकार थे उग्रजी । उनके उपन्यास थे - "दिल्ली का दलाल", "बुधुवा की बेटी", "शराबी", "सरकार तुम्हारी आँखों में", "जीजी जी" । उग्रजी की भाषा उन्हें उपन्यास क्षेत्र में अमर कर देने केलिए पर्याप्त थी ।

ऋषभचरण जैन

जैनजी ने सामाजिक वास्तविकता का नग्न चित्रण ही अपने उपन्यास में किया है । उन्होंने "मास्टरसाहिब", "वेश्यापुत्र", "गदर", "सत्याग्रह", "बुकेवाली", "भाग्य", "भाई", "रहस्यमयी", "चाँदनी रात", "मधुकरी", "मन्दिरदीप", "बुरदा फरोश", "चम्पाकली", "मयखाना", "दिल्ली का व्यभिचार", "हर हाइनेश", "तीन इक्के", "दुराचार के अड्डे" आदि अनेक उपन्यास लिखे हैं । सबके सब सामाजिक समस्याओं को उद्घाटित

भावती प्रसाद बाजपेयी

प्रेमचन्द के जैसे सामाजिक आशय को बाजपेयीजी ने भी अपने उपन्यास केलिए अपनाया । उनके कुछ उपन्यास है "मीठी चुटकी", "अनाथ पत्नी", "प्रेमपथ", "लालिमा", "पतिता की साधना", "पिपासा", "दो बहनें", "त्यागमयी", "गुप्त धने", "चलते चलते", "पतवार", "यथार्थ से आगे", "सूनी राह" ।

जैनेन्द्र कुमार

प्रेमचन्द की युग-सीमा के भीतर ही जैनेन्द्र कुमार ने एक नितान्त नूतन मार्ग का प्रवर्तन किया । कथावस्तु के चयन, पात्र-कल्पना, जीवन-दृष्टि आदि में बिलकुल नवीनता है । प्रेमचन्द के विशालकाय समस्याओं के स्थान पर कतिपय वैयक्तिक समस्याओं एवं जीवन-स्थितियों के चित्रण को ही अपनी कला का ध्येय बनाया । उन्होंने व्यक्ति के अन्तर्भावों को एक मनोवैज्ञानिक की कुशलता के साथ उपन्यास में व्यक्त करने का प्रयास किया । जैनेन्द्र के उपन्यास है - "परख", "तपोभूमि", "सुनीता", "त्यागपत्र", "कल्याणी", "तपोभूमि", "सुनीता", "सुखद", "विवर्त", "व्यतीत" आदि ।

भावतीचरण वर्मा

कविवर भावतीचरण वर्मा एक यथार्थवादी उपन्यासकार के रूप में मशहूर हुए । प्रथम उपन्यास "पतन" एक ऐतिहासिक उपन्यास था । इसके बाद "चित्रलेखा", "तीन वर्ष", "टेढेमेढे रास्ते", "आखिरी दाँव" प्रकाशित हो चुका । उन्होंने केवल जीवन का सच्चा चित्र इन उपन्यासों में

दिया है - अच्छा या बुरा कहने का प्रयत्न नहीं किया है ।

प्रताप नारायण श्रीवास्तव

साधारण जनता से दूर रहकर, अंग्रेज़ी सभ्यता का कर्णधार एक रहस्यव्यूह हमारे समाज में था । इन नामधारियों को जन-मानस के समक्ष लाने का प्रथम प्रयास प्रताप नारायण श्रीवास्तवजी ने किया और उसमें उन्हें सफलता भी खूब मिली । "विदा", "विजय और विकास", "बयालीस", "विसर्जन", "आशिर्वाद", "नवयुग" आदि उपन्यास उन्होंने लिखे । "बेकसी का मज़ार" नामक ऐतिहासिक उपन्यास की सृष्टि भी उन्होंने की ।

उपर्युक्त उपन्यासकारों के अलावा प्रेमचन्दयुगीन उपन्यासकार अनेक थे । कविवर सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सियारामशरण गुप्त, राधिका रमण प्रसाद सिंह, श्रीनाथ सिंह, अवधनारायण, गोविन्द वल्लभ पंत आदि इस युगीन उपन्यासकारों में उल्लेखनीय हैं ।

प्रेमचन्द युगीन उपन्यासों में जैसी विस्तार-व्यापकता, समग्र जीवन-दृष्टि, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक समस्याओं के प्रत्यक्षीकरण की क्षमता मिलती है; वह अपूर्व है । इन्हीं कारणों से अन्य युगों के उपन्यासों से अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होता है ।

आनन्द शंकर माधवन के उपन्यास

केरल में जन्म लेकर हिन्दी प्रदेशों को कर्मक्षेत्र माननेवाले माधवनजी की औपन्यासिक कला अत्यंत सराहनीय है ।

हिन्दीतर भाषी हिन्दी लेखकों में अकेले श्री. माधवन जी ही प्रेमचन्दयुगीन उपन्यासकारों की श्रेणी में आते हैं । गांधीजी की विचारधाराओं से प्रभावित होकर माधवनजी ने जीवन में सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाया । इसका प्रतिस्फुरण इस कर्मयोगी के उपन्यासों में हो जाता है । भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण चाहनेवाले माधवनजी ने दो विशालकाय सामाजिक उपन्यासों की रचना की । वे हैं - "अनामंत्रित मेहमान" और "प्रसववेदना" (दो भाग) इन उपन्यासों के अतिरिक्त "एणाक्षी" और "पुरुषार्थी" नामक दो पट-कथाओं की रचना भी उन्होंने की । ये पट कथायें भी उपन्यास साहित्य के अन्तर्गत आती हैं, यद्यपि उपन्यास के सारे तत्व उनमें नहीं है । पट कथाओं में वार्तालाप की अधिकता है । वे दृश्य प्रधान अधिक हैं ।

आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों में कथ्य

अनामंत्रित मेहमान

आनन्द शंकर माधवन के आठ सौ चौवन पृष्ठों का विशालकाय उपन्यास "अनामंत्रित मेहमान" सामाजिक उपन्यास है । यह उपन्यास साधु बाबा के भाषण से शुरू होता है । महाराष्ट्र के बळगाँव नामक गाँव में साधु महाभाग आये । उनके भाषण सुनने केलिए गाँव के सभी लोग शामिल हुए । साधु ने अपने भाषण में आध्यात्मिक जीवन की आवश्यकता पर ज़ोर दिया । यह सांसारिक जीवन व्यर्थ है, इसलिए इस मायारूपी संसार से पार करने को उन्होंने आदेश दिया । पुरुषों को पथभ्रष्ट करने का मुख्य कारण स्त्री है । इसलिए साधु ने पुरुषों से स्त्रियों को छोड़कर ईश्वर की खोज में निकलने का आह्वान दिया । साधु महाभाग के भाषण से प्रभावित होकर रामचन्द्र नामक युवक अपनी प्रिय पत्नी और दो बच्चियों को छोड़कर साधु के साथ ईश्वर की खोज में निकला ।

उषा रामचन्द्र की पत्नी थी । अपने पति के विरह में रो-रोकर वह दिन बिताने लगी । मालती और दत्तात्रेय उषा के पड़ोसी थे ।

दत्तात्रेय अपनी उषा भाभी की करुण दशा देखकर रामचन्द्र की खोज में निकला । दत्तात्रेय के मुँह से अपनी पत्नी और बच्चों की बुरी हालत सुनकर रामचन्द्र घर वापस आया और सांसारिक जीवन में पुन: लीन हो गया । उसके एक पुत्र हुआ । उस पुत्र के जन्म के बाद, सांसारिक जीवन की व्यर्थता पर सोचने लगा और अपना सर्वस्व छोड़कर सत्यान्वेषण के लिए फिर निकल पड़ा ।

दत्तात्रेय साम्यवादी युवक था । वह एम·ए· पास करने के बाद साम्यवाद का प्रचार कर रहा था । अपने आदर्शों और विचारों को पहले ही अपने घरवालों के बीच प्रचार करने को उसने प्रयास किया । एक दिन दत्तात्रेय सभा में जाति-पाँति के विरुद्ध भाषण दे रहा था । उस समय कुछ पूँजीपति समूह के युवकों ने उसके भाषण पर रुकावट डाली । सरला नामक शिक्षित युवति दल का नेता थी । उन पूँजीपतियों ने दत्तात्रेय पर आक्रमण किया । दत्तात्रेय किसी न किसी प्रकार वहाँ से बचकर निकला और रात को अपने घर पहुँचा । घर का दृश्य देखकर वह चकित हो गया । वहाँ वह देखता है कि वही सरला नामक युवती दत्तात्रेय की माँ के पास लेटकर सो रही थी । सवेरा होते ही उन दोनों के बीच वाद-विवाद शुरू हुआ । पहले दत्तात्रेय ने सरला के साथ अयोग्य पुरुष के जैसे व्यवहार किया । अंत में दत्तात्रेय ने अपनी गलतियाँ समझकर सरला से क्षमा माँगी । कुछ दिन दत्तात्रेय के घर में रहने के बाद सरला नागपूर की ओर चल पडी ।

सरला, बापट नामक जज की इकलौती बेटी थी । वह अच्छी पढी-लिखी महिला थी । महाराष्ट्र की संस्कृति की गरिमा पर उसे अभिमान था । वह चाहती थी कि भारत भर में महाराष्ट्रीय संस्कृति और मराठी भाषा को फैलाया जाय । उस घटना के बाद सरला दत्तात्रेय से प्रभावित हो गयी । उसके मन में दत्तात्रेय के प्रति मृदुल कोमल भावना जाग उ

फिर भी उसके मन में यह आशंका थी कि यह साम्यवादी शायद प्यार को भी पूँजीपतियों का खास प्रकार का हृदय-रोग कहेगा तथा उस पर दया और घृणा से हँसेगा । सरला ने दत्तात्रेय के बारे में अपने पिताजी से कहा । दत्तात्रेय के आदर्श आदि गुणों के बारे में सरला के मुँह से सुनकर बापट साहब को उसे देखने की और उससे बातें करने की इच्छा पैदा हुई ।

एक दिन समाचार पत्र द्वारा उन लोगों को खबर मिली कि पुलिस ने दत्तात्रेय को गिरफ्तार किया है । यह समाचार सुनकर दत्तात्रेय से मिलने केलिए वे जेल आये । दत्तात्रेय से बातें करते ही उनकी स्वभाव, महिमा, निपुणता, वाक्पटुता आदि पर बापट साहब आकृष्ट हो गये । उन्होंने निर्णय किया कि यह पुरुष अपनी पुत्री केलिए योग्य वर रहेगा । कई बार जज साहब जेल में आकर दत्तात्रेय से मिले । एक दिन दत्तात्रेय केलिए कुछ फल आदि जज साहब ने भेज दिया । लेकिन दत्तात्रेय ने उनको स्वीकार करने से इनकार किया ।

इसी बीच सरला कई बार बड़गाँव गयी । सरला, मालती, केलिए लाडली बच्ची और उषा केलिए प्यारी बहन बन गयी । उषा के बच्चे को "यशवन्त" नाम देकर सरला ने उसे अपने बच्चे की तरह देखरेख की । लेकिन दत्तात्रेय की चिन्ता उसके मन को सदा झकझोर कर रही थी । इस विषम परिस्थिति से बचने केलिए कालिफोर्निया जाकर पी-एच·डी· की उपाधि लेने का उसने निश्चय किया ।

दत्तात्रेय छः महीने के जेलवास के बाद घर वापस आया और घर में खुशी मनाने लगे । पतिविहीन उषा को आनन्द प्रदान करने केलिए दत्तात्रेय उसके घर जाकर उसे पढाने लगा ।

सरला कालिफोर्निया से पी-एच·डी· की उपाधि लेकर अंग्रेज़ी पुरुष गोवान्स के साथ भारत लौट आयी । बापट साहब को यह रुचिकर नहीं लगा । लेकिन मालती के प्रभाव से सरला का मन-परिवर्तन हुआ । अंत में उषा और मालती की प्रेरणा से दत्तात्रेय के साथ सरला का विवाह हो गया । विवाह के दिन ही दत्तात्रेय को जेल जाना पडा । क्योंकि स्थानीय ऐ·जी· ने बापट साहब से बदला लेने केलिए फायल में दत्तात्रेय को ~~खतरनाक~~ खतरनाक कम्युनिस्ट लिखकर रखा और विज्ञप्त किया कि उसे खुला छोड़ने से व्यवस्थित राजशासन केलिए खतरनाक साबित होगा । इसलिए बापट साहब के घोर प्रयत्न के बावजूद भी दत्तात्रेय मुक्त नहीं हुए । आखिर सरला और बापट साहब निराश होकर वृन्दावन गये और प्रार्थना में दिन बिताने लगे ।

इसी बीच बळगाँव में हैजा नामक महामारी फैल गयी । इस महामारी से मालती उषा और उषा की दो बच्चियां मर गयीं । यशवन्त मात्र इससे बच गया । यशवन्त के पालन पोषण केलिए घर में कोई नहीं था । अन्त में बळगाँव के ज़मीन्दार ने यशवन्त के पालन पोषण का भार अपने ऊपर ले लिया । शुरू में ज़मीन्दार से यशवन्त को अनेक कठिनाइयां सहनी पड़ीं । लेकिन यशवन्त के प्रति ज़मीन्दार की छोटी पुत्री का कल्मषहीन प्यार, उस दुष्ट पिता की आंखें खोलने को पर्याप्त था ।

इसी बीच दत्तात्रेय जेल से बाहर आकर अपनी भाभी और मां से मिलने केलिए बळगाँव आया । घर की स्थिति जानकर वह बेहोश हो गये । अंत में दत्तात्रेय, यशपाल को लेकर बम्बई आया । वहाँ कई दिन रहकर उसको वहाँ कोई काम नहीं मिला । पुलिस ने दत्तात्रेय को वहाँ भी रहने नहीं दिया । दत्तात्रेय ने यशवन्त को सरला के पास भेजने का निश्चय किया । दत्तात्रेय ने यशवन्त के हाथ में सरला के नामचिट्ठी देकर

सरला के पास उसे भेजा । पुलिस ने यशवन्त को मथुरा की ओर रेलगाडी द्वारा भेजा । आठ वर्षीय यशवन्त मथुरा में उतरने के बदले दिल्ली पहुँचा । उसके जेब के रुपये और सरला को दत्तात्रेय के द्वारा लिखा हुआ पत्र कोई पोकेटमार ने छीन लिये । रेलवेस्टेशन की भिखारिन मणिका से यशवन्त ने अपनी करुण कहानी कही । यशवन्त को देखने मात्र से मणिका को यशवन्त पर दया आई । कई भिखमंगों से पैसा एकत्र कर उसने यशवन्त की यात्रा केलिए आवश्यक राशी बनायी ।

यशवन्त मथुरा में उतरकर किसी न किसी प्रकार सरला के घर पहुँचा । पहले सरला यशवन्त को पहचान नहीं सकी । फिर यशवन्त, दत्तात्रेय आदि नाम सुनकर सरला को मालुम हुआ कि यह अपना यशवन्त ही है । उसका भागी, माँ आदि की करुण कहानी सुनकर सरला दुःख से व्यथित हो गयी ।

अंत में सरला शक्ति संभालकर प्रार्थना, आराधना आदि को मूर्खता समझकर दत्तात्रेय को जेल से मुक्त करने केलिए महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के पास आयी । तब उसको मालुम हुआ कि दत्तात्रेय को छुडाने का अधिकार देश के गृहमंत्री को ही था । इस प्रकार सरला के कठिन प्रयास से दत्तात्रेय रिहा हुआ। जेलवास दत्तात्रेय पर बहुत परिवर्तन लाया था । अपने जीवन के कटु अनुभवों के कारण ईश्वर के कट्टर विरोधी दत्तात्रेय अब "राम-राम जपने लगा । उसने समझा कि राम जबरदस्त शक्ति के रूप में इस घोर कलियुग में भी क्रियाशील हैं । दत्तात्रेय, सरला के साथ बहुत हर्षोल्लास से घर आया । लेकिन अपने यशवन्त को वहाँ न देखने के कारण सरला बेहोश हो गयी । तब दत्तात्रेय वेदनापूर्ण अपने जीवन के बारे में सोचकर ईश्वर को गालियाँ देने लगा । यही "अनामंत्रित मेहमान" में प्राप्त असफल जीवन की कहानीहै।

प्रसववेदना (दो भाग)

माधवनजी द्वारा रचित बृहद् उपन्यास "प्रसववेदना" (दो भाग) "अनामंत्रित मेहमान" की शेष कथा ही है । यह मार्मिक उपन्यास स्त्रीजनों पर पुरुष की क्रूरता और जाति-पाति के विरुद्ध उठाई हुई आवाज ही है । साथ ही इसमें भारतीय संगीत की गरिमा और जन-सेवा में तत्पर कुछ कर्मयोगियों की कहानी भी है । एकप्रकार से सुजाता, संघमित्रा बन जाने केलिए जो वेदना सहती है उस वेदना की करुण कथा है माधवनजी का "प्रसव वेदना" नामक उपन्यास ।

ढाका विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, विश्वविख्यात दार्शनिक और लेखक डॉ॰सतीशचन्द्र चक्रवर्ती की इकलौती बेटी थी सुजाता । उसने ढाका विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र में प्रथम दर्जे से एम॰ए॰ पास किया था और उसके उपलक्ष्य में गोल्ड मेडल भी हासिल किया था । बाद में उसने उसी विश्वविद्यालय से डाक्टरेट भी ली थी । एक दिन रात को उसके घर में चार पाँच पठान घुस आये और उन लोगों ने सुजाता को ज़बरदस्ती ही पकडना चाहा । उनके इस कार्य में मददगार के रूप में कुछ हिन्दू भी थे जो उनसे काफी पैसे खा चुके थे । उसी समय वह किसी तरह भागकर बच निकली । पर बाद में बहुत रात बीतने पर चालीस-पचास पठान एक साथ आये । उस समय उसके घर में हिन्दू भी चालीस पचास जमे थे । क्योंकि उनको इसकी आशंका पहले से थी । खूब जमकर मारा-मारी हुई । उसके सामने ही उसके माता-पिता को उन्होंने मार डाला । हिन्दू बहुत मरे, पठान भी बहुत मरे । पर आखिर उन राक्षसों ने सुजाता को पकड ही लिया । हाथ-पैर बाँधकर मुँह में कपडा ठूँसकर, बुरका पहनकर वे उसको ले गये ।

उन लोगों ने ढाका में दो महीने तक सुजाता को एक काल कोठरी में रखकर उसका उपभोग किया । बाद वे लोग उसको पेशावर ले गये । वहाँ एक पठान ने उनके साथ विवाह कर लिया और उससे एक बच्चा भी पैदा किया । उसने उस बच्चे को अपने ही हाथों से उस नर-पशु के सामने ज़मीन पर फेंक दिया । वह पूरी पगली जैसे स्वाँग करने लगी । हर वक्त पेशाब पीने, पाखाना शरीर पर पोतने और बिलकुल नग्न होकर कूदने लगी । उन लोगों ने उसको पगली समझा और उससे जल्द ही तंग आ गये । आखिर परेशान होकर उन लोगों ने उसको पेशावर लाकर एक गाडी में बिठा दिया और अपने घर चल दिये । वहाँ से दिल्ली तक आने का उसका किस्सा और भी भयानक था । पहले उसका अरमान था कि स्त्री के प्रति केवल मुसलमान पिशाच रहेंगे । इसलिए वह नये अरमान लेकर हिन्दुस्तान आयी थी । किन्तु हिन्दू और भी दैत्य निकले । हिन्दुओं ने उसके बेहोश मृतप्राय शरीर पर भी अत्यन्त पैशाचिक हमला किया ।

दिल्ली रेलवे-स्टेशन से उस मृतप्राय स्त्री शरीर को साधु बाबा अपने डेरे में ले आए । नन्दिनी नामक भिखारिन के देखभाल में वह स्वस्थ बन गयी । सुजाता ने मणिका नामकरण स्वीकार किया और वह पुरुषों से बचने केलिए कोढी जैसे स्वाँग करके रेलवे स्टेशन में जीविका चलाने केलिए भीख माँगने लगी । उसकी एकमात्र अभिलाषा थी कि प्रधानमंत्री से मिलकर अपनी कहानी सुनायी । एक दिन यह अभिलाषा सफल हो गयी । उसकी करुणकहानी सुनकर प्रधान मंत्री नेहरूजी का बुरा हाल हो गया । कहानी कहने के बाद अपनी जीवन लीला समाप्त करने का उसने निर्णय किया । लेकिन नेहरूजी के आह्वान से उसने संघमित्रा बनने का निर्णय किया क्योंकि वही उसके पिताजी का अरमान था । नेहरू जी के साथ रहने का उनका निमंत्रण मणिका ने स्वीकार नहीं किया । वह अपनी ही तपस्या, साधना और बल पर खडी हो जाना चाहती थी ।

दो-तीन वर्ष और बीत गये । एक दिन मणिका जब दिल्ली रेलवे स्टेशन में भीख माँग रही थी तब यशवन्त से भेंट हुई । वह अपनी दीदी से मिलने केलिए मथुरा जा रहा था । यशवन्त को देखने मात्र से मणिका के दिल में उसके प्रति अपार दया और प्यार उमड़ आया । जब यशवन्त मथुरा गया, तब उसने सौगन्ध खायी कि वह मणिका के पास ज़रूर वापस आयेगा । उस दिन से मणिका के मन में यशवन्त को देखने की इच्छा प्रबल हो गयी । इस उत्कट अभिलाषा के कारण वह रोगिणी बन गयी । यशवन्त कुछ दिन के बाद वापस आया । यशवन्त के मिलन से मणिका आनन्द समुद्र में डूब गयी ।

यशवन्त रोगिणी माता को दवा खरीदने केलिए दयाल नामक डाक्टर के आस्पताल गया । बिना पैसे से दवा देने को वे तैयार नहीं थे । जब यशवन्त बहुत हताश होकर वापस आया तब उसने रामू नामक गुण्डे को देखा । यशवन्त की करुण दशा देखकर रामू ने दवा केलिए पैसा दिया । लेकिन रोग बढता ही रहा था । रामू और यशवन्त ने डाक्टर दयाल से घर आकर मणिका की इलाज करने की प्रार्थना की । बिना पैसे के घर आने को वह लालची डाक्टर तैयार नहीं हुआ । डाक्टर की क्रूरता देखकर रामू क्रुद्ध हो और आस्पताल की दवा की शीशियाँ बाहर फेंकने लगा । डाक्टर ने रामू और यशवन्त पर मुकद्दमा चलाया । उन दोनों को पुलिस ने गिरफ्तार किया । इस आघात से क्रुद्ध होकर संघमित्रा दयाल के अस्पताल में घुसकर सब चीज़ों का नाश करने लगी । दुष्ट दयाल ने बडे दण्ड से उस दुर्बल स्त्री को मारा । मणिका के सिर से खून बहने लगा और सड़क पर वह बेहोश होकर गिर पड़ी । किसी न किसी प्रकार कुछ भिक्षुभगिनों ने उसको आस्पताल पहुँचाया । आस्पताल के अधिकारियों ने पहले उस पर ज़रा भी ध्यान नहीं रखा । बाद में घटना की वास्तविक स्थिति जानकर पुलिस इनस्पेक्टर ने डाक्टरों को डाँटा । नर्स गीता, डॉ॰वाटर्जी और

डॉ॰सिंह के परिचरण से मणिका धीरे-धीरे पूर्वस्थिति में आयी । शुरू में मणिका अपनी वास्तविक स्थिति उन लोगों से कहने को तैयार नहीं थी । लेकिन अंत में उनसे अपनी पूरी कथा कह सुनानी पड़ी ।

डॉ॰ चाटर्जी सद्पुरुष थे । मणिका को वे अपने पास रहने को तैयार हुए । मणिका ने यह स्वीकार किया । उसने शिरोमुंडन करके, गेरुआ वस्त्र पहनकर, संघमित्रा नाम स्वीकार करके, चाटर्जी, गीता, सिंह आदि से मिलकर जनसेवा करने का निश्चय किया । वह नन्दिनी भिखारिन संघमित्रा की पहली शिष्या बनी ।

इसी बीच यशवन्त एक वर्ष का जेलवास पूरा करके बाहर आया । रामू को दो वर्ष की सजा मिली थी । अकेले यशवन्त बहुत दु:खी होकर मणिका की खोज में इधर-उधर भटकने लगा । अन्त में साधु बाबा उसकी रक्षा केलिए पहुँचा । वह उसको संघमित्रा के पास लाया । रेलवे स्टेशन में रक्षक के रूप में प्रत्यक्ष हुये उस बाबा को संघमित्रा ने देखने मात्र से पहचान लिया । बाबा ने अपनी दिव्य दृष्टि से यशवन्त के भविष्य के बारे में प्रवचन किया कि यशवन्त एक महान योगी, अद्भुत गायक बनेगा, समाज केलिए अपना जीवन कुर्बान करेगा और संघमित्रा केलिए एक महान पुत्र साबित होगा । यह कहकर बाबा वहाँ से गायब हो गया ।

इसी बीच मध्यप्रदेश में नन्दन नामक आस्पताल वहाँ की सरकार की अनुमति से संघमित्रा के नेतृत्व में खोला गया । इसका कार्य-संघमित्र संचालन संघमित्रा और चाटर्जी दोनों मिलकर करने लगे । गीता और डॉ॰ सिंह भी उनके मददगार थे । संघमित्रा ने अपनी लक्ष्यपूर्ति केलिए चाटर्जी आदि की सहायता से "संघमित्रा मिशन" की स्थापना की । मिशन का प्रमुख कार्य था भारत के सर्वतोमुखी विकास केलिए योजनाबद्ध काम करना और उसमें भी खासकर स्त्रियों के विकास की ओर विशेष ध्यान देना ।

वे एक पत्रिका और प्रेस भी चलाने लगे । संघमित्रा ने चाटर्जी के अनुरोध पर "मक्का काशी एक साथ" नामक अपना जीवनचरित् लिखा । इस ग्रन्थ से संघमित्रा की ख्याति व्यापक हो गई । लोग इस पुस्तक से मुग्ध होकर इसको रामायण या कुरान जैसे हर दिन पढने लगे ।

रामू भी जेल से बाहर आया । अपनी माँ, यशवन्त और बूढी माँ को देखे बगैर रामू इधर-उधर घूमा । लोगों से रामू को पता चला कि मणिका दयाल साहब से मारा गया था और शायद मर गया होगा । रामू ने यह सुनकर क्रुद्ध होकर दयाल साहब के आस्पताल में प्रवेश कर दवा आदि फेंका और उनको बुरी तरह मारा । चाटर्जी की निपुणता के कारण दयाल साहब की जान बच गई । संघमित्रा ने अपनी दुश्मनी भूलकर दयाल की सेवा बहुत प्यार से की । यह घटना दयाल के मन परिवर्तन केलिए कारण बन गयी । उसने संघमित्रा से क्षमा माँगी । रामू के विरुद्ध मुकद्दमा चलाने से उसने इनकार किया । वह भी जन-सेवा केलिए नन्दन आ गया ।

प्रोफेसर भामिनी, डॉ· दयाल की पुत्री थी । वह भी संघमित्रा से प्रभावित होकर उसके साथ संघमित्रा मिशन के संचालन की मदद करने लगी ।

संघमित्रा और चाटर्जी ने रामू और यशवन्त को पढाने का प्रयास किया । लेकिन पढाई में यशवन्त ने रुचि नहीं दिखाई । उसने भारतीय गान-विद्या सीखने का आरंभ किया । जल्दी वह अच्छा गायक बना । इसी बीच उसको फकीर बाबा से मिलने का अवसर मिला । फकीर बाबा यशवन्त का गान सुनकर चकित हो गया । त्रुटिरहित ताल, लय और राग के साथ यशवन्त ने गीत गाया था । उस समय भारतीय संगीत के सम्राट के रूप में उस्ताद बशीर अली खाँ प्रसिद्ध थे । वे एक योग्य शिष्य की खोज में थे । फकीर बाबा यशवन्त को बशीरजी के पास लाया । यशवन्त को देखने मात्र से वे आनन्द नृत्त करने लगे ।

बशीर उद्भुत शक्ति के गायक और योगी थे । यशवन्त को अपना योग्य चेला मानकर उन्होंने अपनी सभी सिद्धियाँ यशवन्त को दे दीं ।

बशीर उस्तादजी धर्म के नाम पर कोलाहल करनेवालों के विरुद्ध थे । धार्मिक भेद समाप्त करने केलिए "अल्लाहू-राम" मंत्र जपने का आह्वान उन्होंने दिया । उस्तादजी और यशवन्त यह मंत्र मस्जिद और मन्दिर में जाकर जपने लगे । मुस्लीम और हिन्दू लोगों ने क्रुद्ध होकर उनको मारा और उनपर पत्थर फेंका । इस उधम में पहला शहीद उस्तादजी बन गये ।

बशीर उस्तादजी की दत्तक् पुत्री थी शैला । उस्तादजी ने दस वर्षीय शैला को यशवन्त के हाथ दिया । उसके पालन पोषण का कर्तव्य संघमित्रा पर आया । इसी बीच पर्यटन केलिए संघमित्रा अमेरिका गयी । शैला और रामू ने उसका अनुधावन किया । रामू गेरुआ वस्त्र पहनकर घूमनेवाले योगियों और साधुओं के विरुद्ध था । वह अपने देश की प्रगति केलिए कारखाना आदि का निर्माण करना चाहता था । संघमित्रा, रामू और शैला को उच्च शिक्षार्थ अमेरिका में छोड़कर वापस आयी । संघमित्रा की पुस्तक "मक्का-काशी एक साथ" को अमेरिका में व्यापक ख्याति मिली ।

डॉ॰दयाल की एकमात्र अभिलाषा यही थी कि पुत्री केलिए चाटर्जी, पति के रूप में प्राप्त हों । लेकिन चाटर्जी इसकेलिए तैयार नहीं थे । यह जानकर दयाल साहब बहुत हताश होकर वहाँ से गये । नन्दिनी भिखारिन भी अपना रहस्य खोलने केलिए पत्र संघमित्रा को लिखकर रखने के बाद वहाँ से गायब हो गयी । भामिनी चाटर्जी का अपमान सह नहीं सकी । इसलिए भामिनी ने संघमित्रा की तरह गेरुआ वस्त्र पहनकर सिर मुंडन करके साध्वी बनी ।

यशवन्त ने उस्तादजी के कब्र पर छोटे से मन्दिर का निर्माण किया और उसका "बशीर-धाम" नाम रखा । यशवन्त का वासस्थान अब वह

शैला अपने पति की याद में अमेरिका में दिन काट रही थी । उसके भारत लौटने पर अपने पति से मिलने केलिए बहुत लालायित होकर वह यशवन्त के पास आयी । यशवन्त ने शैला के साथ विवाह करने का निश्चय किया । लेकिन मुस्लीम लोगों ने इस पर आपत्ति उठायी । अंत में इन लोगों ने यशवन्त के विरुद्ध मुकद्दमा चलाया । इसके फलस्वरूप शैला को उसकी मामी के साथ रहना पडा । शैला ने यशवन्त का नाम जपते-जपते दिन बिताया । उसकी मामी को वह बोझ बन गयी । मुस्लीम नवाब के प्रयत्न से शैला का विवाह केयूम नामक प्रोफेसर के साथ हुआ था । शैला ने केयूम से अपनी वास्तविक स्थिति पर संकेत किया । जब केयूम ने शैला पर बलात्कार किया तब शैला "यशवन्त-यशवन्त" पुकारकर रोयी । फिर वह ध्यान निमग्न हो गयी । तब उसके पिताजी का अशरीरी वचन सुनाई पड़ा कि शैला को एक बच्चा पैदा हो जायेगा और उसका पिता यशवन्त ही होगा । शैला की असाधारण हालत देखकर केयूम पश्चात्ताप विवश हो गया । शैला ने अपनी दिव्य अनुभूति के बारे में केयूम से कहा । उसको चेतावनी मिली कि पुत्र, यशवन्त से भी ऊँचे स्तर का गायक और महान बनेगा तथा पुत्र-जन्म के बाद शैला की मृत्यु भी होगी । नौ महीने अपने पुत्र केलिए प्रार्थना-पूजा, व्रतानुष्ठान आदि से शैला ने दिन काटा । उस दुबली-पतली शैला ने चाटर्जी के आस्पताल में पुत्र को जन्म दिया और अपनी इच्छा के अनुसार यशवन्त की गोद में सिर रखकर मर गयी ।

केयूम का सिर पश्चात्ताप से झुका था । यशवन्त "शैला-शैला" पुकारकर रो रहा था । "अशीर धाम" के बायें तरफ उसका कब्र भी यशवन्त ने तैयार किया । रात-दिन यशवन्त वहाँ रहकर शैला के प्रति रो रहा था । यह सब देखकर हताश और दुखी होकर केयूम भी वहाँ रोज़ बैठा रहा ।

इसी बीच चाटर्जी और भामिनी के बीच प्रेम पुष्पित हुआ । भामिनी ने गेरुआ वस्त्र छोड़कर डाक्टर चाटर्जी की सेवा-शुश्रूषा करने का निश्चय किया । गेरुए वस्त्र का यह अपमान संघमित्रा सह नहीं सकी । उसने क्रुद्ध होकर भामिनी से बुरा व्यवहार किया । संघमित्रा से बचने केलिए भामिनी, यशवन्त, चाटर्जी और गीता के साथ दक्षिण भारत में घूमा । वहाँ की जनता के रीति-रिवाज़, वेष-भूषा आदि समझने का अवसर उन लोगों को मिला । कई स्थानों पर यशवन्त का स्वागत सत्कार हुआ और उसने अनेक स्थानों पर भाषण भी दिया ।

संघमित्रा घर में अकेले रहकर अपनी दयनीय हालत पर सोचने लगी । उसके प्रियतम की खोज में उसका मन इधर-उधर भटकने लगा । लेकिन अन्त में उसने, अपना पति-रूप ईश्वर में देखा । रामू अमेरिका से वापस आया । अमेरिका में रीना नामक युवती के प्यार में वह बँधा हुआ था । रामू के साथ संघमित्रा भी अमेरिका गयी ।

भारत सरकार के अनुरोध पर यशवन्त गायक के रूप में यूरोप गया । तब तक केयूम भी धार्मिक एकता के अथक प्रयत्न करते करते शहीद हो गया । पागल धर्मावलम्बियों ने बशीर-धाम का सर्व नाश किया । यशवन्त वापस आते ही यह दृश्य देखकर और केयूम का समाचार सुनकर बहुत क्रुद्ध हुआ और मस्जिद और मन्दिर में घुसकर "अल्ला-राम" मंत्र जपने लगा । हिन्दू और मुस्लीम दोनों ने मिलकर उसका अन्त कर दिया । इस प्रकार चार लोग धर्म के नाम पर शहीद हुए ।

संघमित्रा यशवन्त की ख़बर सुनकर जल्दी भारत लौट आयी । यशवन्त उसका सर्वस्व था । इसलिए यशवन्त की मृत्यु अपनी मृत्यु के समान उसको अनुभव हुई ।

"एको रस: करुण एव" की अभिनव रसमान्यता ही इस उपन्यास में स्थापित कर दी है । इस उपन्यास में सुजाता पर जो अत्याचार एवं क्रूरकर्म हुआ उससे उसकी कराह एवं अन्तर्वेदना को सुनकर पत्थर भी विदीर्ण हो गया होगा। यह एम॰ए॰, पी-एच॰डी॰ की उपाधि से विभूषित, परिस्थिति-प्रपीडता भारतीय कुमारी सुजाता की कहानी नहीं, अपितु एक विवश और असहाय सरस्वती की वरद पुत्री की अस्तित्वहीनता की प्रताडना के पत्थरों में जीवन की खोज की कहानी है । माधवनजी की इस नवीन कलात्मक कृति में सोचने-समझाने केलिए बहुत हैं ।

एणाक्षी

"एणाक्षी" श्री॰आनन्द शंकर माधवन की सुन्दर पट-कथा है । यह सामाजिक कहानी, उदात्त भावबोध, कर्मानुष्ठान एवं कर्तव्यबोध द्वारा विचलित युगबोध को ललकार रही है । ?

"एणाक्षी" का कथ्य संक्षेप में इस प्रकार है - वाराणासी कैंट रेलवे स्टेशन प्लाट-फारम यात्रियों से भरा हुआ था । कलकत्ता से अपर इन्डिया एक्सप्रेस आनेवाली थी । उस गाडी की प्रतीक्षा में गोकुलदास नारंग वेयटिंग रूम की कुर्सी पर बैठे थे । उम्र करीब पचास साल की थी । बिलकुल वह स्वस्थ था । चेहरे का उच्च स्तरीय अभिजात्यता आदि से किसी बडे घर के स्वामी लगते थे ।

अपर [illegible] इन्डिया एक्सप्रेस प्लाटफार्म पर पहुँचा । दूसरे दर्जे के साधारण डब्बे से एक मुसलमान उतरा । उसका नाम कालू था और उसकी उम्र करीब चालीस वर्ष की थी । उसके पीछे बहुत खूबसूरत, गोरी युवती भी उतरी । उसका नाम रसूलन था । कालू अपना पुराना मालिक गोकुलदास को वहाँ देखकर खुश हुआ । उन दोनों ने परस्पर उनके अतीत की कहानियाँ कहीं । कालू ने रसूलन का गोकुलदास से परिचय कराया । गोकुलदास का एक पुत्र हुआ था

उसका जन्म होते ही उसकी माँ चल बसी । फिर गोकुलदास ने शादी नहीं की । अब वे रात-दिन संगीत और साधु-सन्तों के पीछे पड़े रहे थे ।

रसूलन का पिता मुसलमान था और माँ हिन्दू थी । वे दोनों ज़िंदा नहीं थे । मरते समय वे वाराणसी में थे । माता-पिता के निधन के बाद रसूलन का देखभाल कालू ने किया था । रसूलन निर्मल पुष्प थी । फिर भी सब लोगों ने उसको वेश्या मानी । क्योंकि उसकी माँ नर्तकी थी । इसलिए उसकेलिए सुयोग्य पति की प्राप्ति असंभव थी । कालू ने रसूलन से संकेत किया कि उस स्थान के महान व्यक्ति और सर्वगुण सम्पन्न गोकुलदास से सन्तान प्राप्त करने से बढ़कर दूसरा भाग्य नहीं है ।

गोकुलदास के पुत्र रमेश के उपनयन के दिन उसके घर में उत्सव मनाया गया । गोकुलदास का निमंत्रण स्वीकार करके रसूलन और कालू भी वहाँ पहुँचे । रसूलन का नृत्य हुआ था । नृत्य समाप्त करके रसूलन ने गोकुलदास के पाद पर अपना सिर रखकर प्रणाम किया । गोकुलदास ने उसको उठाकर आशीर्वाद दिया । रसूलन ने गोकुलदास से एक सन्तान की अभिलाषा प्रकट की । पहले गोकुलदास ने यह अभिलाषा स्वीकार नहीं की । रसूलन ने पौराणिक कथापात्र शर्मिन्दा जैसे उसको मानने की प्रार्थना की । अन्त में उसकी इच्छा सफल हो गयी । कुछ दिन गोकुलदास के घर में रहने के बाद वह कालू के साथ वहाँ से निकल पड़ी ।

कई वर्ष बीत गये । गोकुलदास को अपना जीवन बहुत भारी अनुभव होने लगा । उसका एकमात्र बेटा रमेश अमेरिका में प्राध्यापक का काम कर रहा था । वहाँ से काश्मीरी लड़की रजनी से उसकी शादी हो चुकी थी

रसूलन ने एक पुत्री का जन्म दिया । उसको "एणाक्षी" नाम दिया गया । रसूलन ने उसको शिवप्रसाद माना । एणाक्षी सुन्दरी थी । वह शिव की आराधना और पूजा में अपना दिन बिता रही थी । जब एणाक्षी युवावस्था में पहुँची तब रसूलन और कालू उसको लेकर वाराणसी आये । उन्होंने वहाँ की वेश्यागली में वासस्थान चुन लिया ।

रसूलन ने गोकुलदास के पास आकर उनकी पुत्री की आदत्, रूपल शिवभक्ति आदि के बारे में वर्णन कर कह सुनाया । उसने गोकुलदास से कहा कि एणाक्षी रात में नहीं सोती थी और हमेशा शिव की आराधना में लीन रहती थी । तब गोकुलदास ने उसको सव्यसाची नामक डाक्टर के पास भेजने का आदेश दिया ।

सव्यसाची ने एणाक्षी को देखने मात्र से पहचान लिया । एक दिन काशी विश्वनाथ मन्दिर के पास जब एणाक्षी स्नान कर रही थी तब सव्यसाची को उस अनुपम दिव्य सुन्दरी को देखने का अवसर मिला । एणाक्षी ने अपनी समस्या सव्यसाची के सामने प्रस्तुत की । एणाक्षी वेश्या बनना नहीं चाहती थी । इससे बेहतर मृत्यु को श्रेष्ठ मानती थी । इसलिए वह हमेशा शिव से प्रार्थना कर रही थी । उसकी दयनीय दशा देखकर डॉ॰ सव्यसाची ने उसके प्रति सहानुभूति प्रकट की । उसने उसको सितार वादन सिखाने का निश्चय किया ।

इसी बीच एक दिन कालू कुछ लोगों के साथ घर आया । पैसा देकर स्त्रियों के खरीदनेवाले थे वे । एणाक्षी केलिए बहुत पैसा देने को वे तैयार थे । इसलिए कालू ने जबरदस्ती एणाक्षी को लोगों के सामने पहुँचाया तब एणाक्षी बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी । सव्यसाची यह सुनकर एणाक्षी को अपने घर लाया । बहुत देर होने पर भी एणाक्षी के होश वापस नहीं आये

चिकित्सा बन्द करके डाक्टर सव्यसाची सितार बजाने लगा । सितार वादन सुनकर एणाक्षी धीरे-धीरे होश में आयी ।

इस घटना के बाद एणाक्षी सव्यसाची के घर में रहने लगी । रसूलन और कालू के जीवन-यापन केलिए अवश्यक धन देने का भी फैसला किया । एणाक्षी ने अपने कमरे को "विश्वमन्दिर" नाम दिया । उसमें बैठकर डाक्टर ने एणाक्षी को शिक्षा देना प्रारंभ किया । एणाक्षी दो-तीन वर्षों के अन्दर अच्छी पढी-लिखी लडकी बन गयी । अंग्रेज़ी में उस की तीन पुस्तकें प्रकाशित हो गयीं । सव्यसाची उसकी कर्मशक्ति और लेखनशक्ति देखकर दंग रह गया । गोकुलदास एणाक्षी की पुस्तकें देखकर संतुष्ट हो गये । इन पुस्तकों के प्रकाशन से एणाक्षी को काफी ख्याति मिली । तरह-तरह के लोग उससे मिलने केलिए आने लगे । इधर-उधर भाषण देने का निमंत्रण भी उसे मिला । उसके साथ विवाह करने केलिए भी बहुत लोग तैयार हुए । अमीर लोगों के साथ एणाक्षी का विवाह कराने की इच्छा कालू को थी । लेकिन एणाक्षी ने सव्यसाची को अपने पति के रूप में पहले ही स्वीकार किया । उसने सव्यसाची की प्राप्ति केलिए रात-दिन शिव से प्रार्थना की । अंतत: एणाक्षी का विवाह सव्यसाची के साथ हुआ ।

गोकुलदास अब रोगशय्या में पड़े थे । इसलिए रसूलन और कालू गोकुलदास के घर में रहने लगे । अमेरिका से गोकुलदास का पुत्र रमेश अपने पिताजी को देखने केलिए उसकी पत्नी रजनी को लेकर आया । दोनों अमेरिका में अध्यापन का कार्य कर रहे थे । दोनों दर्शन शास्त्र के विद्वान थे । रमेश अत्यधिक भद्र और सरल मिजाज का युवक था । उसमें सादगी कूट-कूटकर भरी थी । पर उसकी पत्नी रजनी उसके ठीक विपरीत मिजाज की थी । वह अत्यधिक आधुनिक ढंग की थी । सिगरेट बहुत अधिक पीती थी और ड्रिंक भी करती थी ।

रजनी को पति के घर में रहना मन-पसन्द कार्य नहीं था । उसने रोगग्रस्त पिताजी के पास खडे होकर रमेश से दार्जलिंग जाने को जिद्द किया । उसका वेष, फैशन, मुंह का सिगरेट आदि देखकर डा॰सव्यसाची, रसूलन, कालू, गोकुलदास, घर के सभी नौकर आदि ने उस को घृणाभरी दृष्टि से देखा । रमेश को रजनी सदा सताती ही रही थी । रमेश उसको संभालने में असमर्थ निकला । एणाक्षी के आगमन से परिस्थिति बदल गयी । रजनी उस अभौम सौन्दर्यमूर्ति पर आकृष्ट हुई थी । उसने पत्नी का कर्तव्य एणाक्षी से पढा । एणाक्षी का विश्वमन्दिर और उसकी पुस्तकें आदि पर वह मुग्ध हो गयी । रजनी में खूब परिवर्तन आया । रजनी खुद दार्जलिंग गयी । वहाँ रहते वक्त वह पति का अभाव अनुभव करने लगी । उसने अपनी गलतियाँ समझकर अनेक पत्र रमेश को भेजे । लेकिन रमेश ने जवाब नहीं दिया ।

इसी बीच गोकुलदास की मृत्यु हुई । अब रसूलन उस घर की मालिकिन बन गयी । गोकुलदास की वसीयत् से रमेश ने समझा कि एणाक्षी गोकुलदास की पुत्री थी ।

एणाक्षी ने अपने विश्वमन्दिर की योजना आरंभ की । मानव के प्रत्येक कर्मक्षेत्र में व्याप्त होने केलिए ही यह योजना थी । वह अपने लक्ष्य को चरितार्थ करने केलिए, राजनीति में, शिक्षाक्षेत्र में, साहित्य में, कला में, अध्यात्म में, व्यापार में, उद्योग में, सभी प्रकार के आचार-विचार में भी व्याप्त होना चाहती थी । रमेश भी एणाक्षी की सहायता करने को तैयार होकर आगे बढा ।

रजनी दार्जलिंग से रमेश के पास वापस आयी । रमेश ने उसपर कोई ध्यान नहीं दिया । रजनी इस अपमान से घायल होकर एणाक्षी के घर की ओर भागी । रसूलन और कालू ने रमेश से रजनी को स्वीकार करने की प्रार्थना की । अंत में एणाक्षी की प्रेरणा से रजनी और

पुरुषार्थी

आनन्द शंकर माधवन की दूसरी पट-कथा है "पुरुषार्थी" । यह कहानी एक ऐसे ही युवक का जीवनवृत्त है जिसने अपने भीतर के कूटस्थ सर्वविभूति सम्पन्न आत्मदेव पर भरोसा करते हुए अपने उस परम पवित्र लक्ष्य की प्राप्ति केलिए संघर्ष और साधना कर विजयश्री प्राप्त कर ली ।

घनघोर बीहड जंगल से गायेन की आवाज़ सुनाई देने लगी थी । पुरुष स्वर था । एक मन्द दीपक के प्रकाश में एक देवीमूर्ति दिखाई पड़ी थी । उस देवीमूर्ति के समक्ष एक क्षीणकाय युवक अकेला बैठा, आर्तस्वर में गा रहा था । दिलीप राय नामक युवक किसी भारी समस्या को लेकर आधीरात को अकेले अपनी इस आराध्य देवी के समक्ष पहुँचा था । चौथी बार भी बी·ए· में वह असफल हो गया था । भारत को संसार के सर्वाधिक ऐश्वर्य सम्पन्न, सर्वविभूति सम्पन्न, सर्वश्रेष्ठ देश के रूप में परिणत करना चाहता था । लेकिन उस महान यज्ञ का पौरोहित्य करने केलिए शिक्षा की आवश्यकता थी । उसका करुण क्रन्दन सुनकर देवि ने संतुष्ट होकर उसको वरप्रसाद दिया । उस युवक का नाम दिलीपराय था ।

दिलीपराय को माता-पिता नहीं थे । उसका देखभाल एक सितार बजानेवाला उस्ताद कर रहा था । उस्ताद उसको सदा सितार वादन करने का आदेश दे रहा था । लेकिन दिलीप राय इसके साथ बी·ए·, एम·ए· आदि पास करना भी आवश्यक माना था ।

दिलीप अच्छा खिलाडी था । लेकिन वह पढाई में सफल नहीं था । वाराणसी हिन्दू विश्वविधालय के आर्ट्स कालेज में बी·ए· फाइनल के क्लास में डा·माथुर ने सबके आगे दिलीप राय का मजाक उठाया ।

माथुर ने दिलीप को प्रतिभा सम्पन्न, सच्चरित्र, अध्ययनशील और मेहनती छात्र बनने को आह्वान दिया । दिलीप ने यह ललकार के रूप में स्वीकार किया । आहत और अपमानित शेर जैसे उसने शपथ खायी कि वह संघर्ष करके, तेजस्वी बनेगा, भगवान की कृपा भी हासिल करेगा ।

कलकत्ता के एडन गार्डनस के सुप्रसिद्ध फुटबाल स्टेडियम में अखिल भारत अन्तर्विश्वविद्यालय फुटबाल प्रतियोगिता की फाइनल मैच बी॰एच॰यू॰ और कलकत्ता विश्वविद्यालय के बीच हो रही थी । मैच में बी॰एच॰यू॰ की विजय हुई थी । बी॰एच॰यू॰ का विजयशिल्पी दिलीप राय था । इसलिए सब लोगों की आँखें दिलीप पर पड़ीं । कलकत्ता टीम का नेता शरत् था । मैच के बाद शरत् ने दिलीपराय का अभिनन्दन किया और उससे अनेक बातें की । दिलीप की कहानी सुनकर उसको लेकर शरत् अपने घर आया ।

शरत् के पिता कलकत्ता विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के रीडर थे । उनका नाम भास्कर बैनर्जी थे । जब दिलीप और शरत घर पहुँचे तब शरत् की बहन सितार बजा रही थी । दिलीप सितार लेकर मधुर ढंग से बजाने लगा । यह सुनकर घर के लोग मुग्ध हो गये । शरत ने दिलीप का परिचय सबको दिया । भास्कर बैनर्जी और उसकी पत्नी ने उसे अपना मरा हुआ लड़का मान लिया ।

लखनऊ विश्वविद्यालय के वाइसचाँसलर डॉ॰ ईश्वरी प्रसन्न की कृपा से दिलीप को वहाँ एम॰ए॰ अर्थशास्त्र में प्रवेश मिला । दिलीप ने उनके सामने कसम खायी कि परीक्षा में अब तक का रिकार्ड मैं ज़रूर तोड़ डालूँगा । प्रथम क्लास में कुछ विद्यार्थियों ने उसको रागिंग किया । उन छात्रों ने उषा नामक सुन्दरी लड़की के कपोल पर चुम्मा देने की आज्ञा दी ।

इससे बचने केलिए कुछ मार्ग न था । आखिर उस लड़की के कपोल पर उसने चुम्बन दिया । इसकी सजा भी उसको भोगनी पड़ी । कालेज के सभी लोगों के सामने उषा का पैर पकड़कर उसने क्षमा मांगी । तब उषा ने चप्पल से उसको मारा । इस घटना के बाद कालेज पुस्तकालय केलिए पुस्तक खरीदने केलिए दिलीप के नेतृत्व में विविध कला कार्यक्रम रखकर पैसा एकत्रित किया गया । दिलीप के कलाकार की प्रशंसा सबने की । यह सब देखकर अपराध बोध से उषा का सिर झुका । दिलीप की ताकत पर वह प्रभावित हो गयी । अन्त में दिलीप ने उस समय तक का रिकार्ड्स तोड़कर एम·ए· में प्रथम स्थान हासिल किया । अनेक लोगों ने उसकी प्रशंसा की और गोल्ड मेडल भी उसको प्राप्त हुआ ।

एम·ए· पास करने के बाद उसने शान्तिनिकेतन में प्राध्यापक का काम स्वीकार किया । वहाँ उसकी छात्रा शान्ता के साथ उसका विवाह हो गया । इसी बीच ऐ·ए·एस· और ऐ·एफ·एस· में भी उसने विजय हासिल की और दिल्ली में गृहमंत्रालय में उसको काम भी मिला । शान्ता और दिलीप दिल्ली आकर रहने लगे । शान्ता जर्मन लड़की थी, तो भी भारतीय आचार-विचार और वेष-विधा की लड़की थी । वह भारतीय संस्कृति की उपासिन थी ।

दिलीप और शान्ता दम्पतियों का एक पुत्र हुआ जिसका शिव नाम रखा गया । मध्यप्रदेश में डकैत उच्चकोटी पर थी । एक डकैत संघ के नेता को फाँसी की सजा मिली । उसको बचाने के उद्देश्य से उस संघ ने गृहमंत्रालय के अफसर दिलीप के पुत्र शिव को किडनाप किया । पुत्र के बिना शान्ता जी नहीं सकी । वह एक पगली की तरह कलकत्ता की ओर गयी । दिलीप पुत्र की खोज में इधर-उधर घूमने लगा । अन्त में मैनासिंह नामक डाकू की सहायता से दिलीप को पुत्र वापस मिला । इसके बाद दिलीप ने मध्यप्रदेश के डाकुओं की समस्याओं को सुलझाने की कोशिश की ।

विनोबाजी के आदेशानुसार डाकुओं का प्यार उसने हासिल किया । इसके बाद वह पार्लियमेंट का सदस्य और मिनिस्टर भी बन गया ।

जब दिलीप मध्यप्रदेश में था तब दिलीप के घरवालों को तार मिला कि किसी डाकू की गोली से दिलीप की मृत्यु हुई । यह समाचार सुनकर उसकी माँ दुख से मर गयी । कुछ महीनों के बाद भास्कर बैनर्जी का भी देहान्त हुआ । तब शान्ता, दिलीप की बहन सन्ध्या को अकेले छोड़कर शिव को लेकर कहीं चली गई । दिलीप यह सुनकर शान्ता की खोज में निकला । लेकिन कुछ फायदा नहीं हुआ ।

एक दिन जब दिलीप फस्टक्लास कम्पार्टमेंट में यात्रा कर रहा था तब अपनी पुरानी क्लासमेट उषा को देखने का अवसर मिला । दिलीप को देख वह बहुत पश्चात्ताप विवश हो गयी । वह बिलख बिलखकर रोयी । उषा का विवाह हो चुका था । लेकिन पति ज़िंदा नहीं था । उषा ने हमेशा दिलीप की याद में ही दिन काटा । दिलीप के जीवन की प्रत्येक घटना वह जानने की कोशिश कर रही थी । शान्ता के अभाव का दुःख दिलीप ने उषा को कह सुनाया । यह सुनकर उषा शान्ता की खोज में यूरोप गयी । उषा ने इंग्लैंड के एक पार्क से शान्ता और बच्चे को देखा । तीनों भारत वापस आये । यहाँ आकर उन्होंने दिलीप के साथ खुशी मनायी ।

दिलीप को मालूम हुआ कि उसका लक्ष्य अब तक पूर्ण नहीं हुआ था । उसके मन में विश्वविद्यालय स्थापित करने की बडी अभिलाषा थी । उषा, शान्ता, शिव और दिलीप वाराणसी के उस घनघोर जंगल की देवी मूर्ति के पास आये । दिलीप का भाव जल्दी बदल गया और दिलीप सब कार्य संभालने का भार उषा के हाथ में देकर जंगल की ओर यथार्थ सत्य की खोज में निकल पड़ा ।

आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों में पात्र और चरित्र

अनामंत्रित मेहमान - पात्र और चरित्र

"अनामंत्रित मेहमान" के प्राय: सभी पात्र सद्चरित्रवाले हैं । इस उपन्यास के पुरुष और स्त्री कथापात्र बहुमुखी दर्शन के बीच अपने चरित्र के आलोक में सत्य पथ का दिग्दर्शन कराते हैं । जीवन में सदा सुख और शान्ति के दर्शन से वे वंचित थे । वे अपने लघुत्व सिद्धान्त की संकीर्णता से व्यथित होते हैं और एक विराट सत्य की राह पाने केलिए व्यग्रता अनुभव करते हैं ।

इस उपन्यास के पात्रों में विविधता एवं उदात्तता है । उनको मुख्य रूप से दो विभागों में बाँटा जा सकता है । एक ओर मालती, सरला, उषा और दत्तात्रेय जैसे पात्र पारिवारिक जीवन के रस की वर्षा करते हैं और दूसरी ओर रामचन्द, साधु बाबा जैसे पात्र हैं किसी अदृश्य और अद्भुत वस्तु की खोज में भटकते रहते हैं ।

दत्तात्रेय

इस उपन्यास का नायक दत्तात्रेय एक साम्यवादी युवक है । वह उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद साम्यवाद का प्रचार करता रहता है । वह इस समाज को समझने केलिए कोशिश करता है । तब उसको मालूम हुआ कि मनुष्य के मन में अटूट रूप में उपस्थित जीर्ण रूढियों और अनाचारों को मिटाना चाहिए । इसके साथ समाज को एकदम बदलकर एक शोषणहीन समाज व्यवस्था का निर्माण भी करना चाहिए । इस लक्ष्य से वह हमेशा अपनी माता और बन्धुओं से समाज के कुसंस्कार और कुरीतियाँ आदि के बारे में कहता रहता है ।

दत्तात्रेय एक नास्तिक है । इसलिए वह आराधना मन्दिरों, गेरुआ कपडे और भजन कीर्तन आदि को, तथा भटकनेवाले साधुओं, मन्दिरों के पंडों और पुरोहितों को हास्य भरी दृष्टि से देखता है । वह मन्दिरों में आस्पताल खोलना चाहता है । इन पंडों और पुरोहितों को हल जुतवाने योग्य मानता है । इस प्रकार वह काल्पनिक भगवत् शक्ति पर विश्वास करनेवालों की हँसी उडाता है । आराधना आदि केलिए बेहिसाब समय व्यर्थ करने के बदले युग प्रवर्तक कार्य करने को वह आह्वान देता है ।

जातिभेद को खतम करने केलिए वह कोशिश करता है । वह ब्राह्मण के घरों में हरिजन लडकियों और हरिजन घरों में ब्राह्मण लडकियों का व्याह करना चाहता है । वह स्वयं एक चमार कुमारी को बहु के रूप में स्वीकार करने केलिए शपथ खाता है ।

दत्तात्रेय पूँजीपति वर्ग का पूरा दुश्मन है । पूंजीपति लोग गरीब लोगों का पसीना और खून पीकर मौज उड़ाते हैं । वे धन और सौन्दर्य का आदर करते हैं और इसके साथ वे बाह्याडम्बर को भी पसन्द करते हैं । बाह्याडम्बर शक्तिक्षय का परिचायक है और हीनता की ओर ले जानेवाला है । इसलिए ये लोग समाज का दुश्मन और राष्ट्र के पाप हैं । उसकी राय में इन लोगों को खतम करने से मात्र देश का उद्धार संभव है ।

दत्तात्रेय सरकारी कुर्सी पर बैठकर शासन करनेवाले शासक वर्गों और अफसरों को हास्यदृष्टि से देखता है । ये लोग सुख भोगने केलिए मात्र आये हैं । दत्तात्रेय सुखसुविधा का जीवन छोड़कर देश के अन्दर प्रचलित सब प्रकार के शोषणों को बन्द करने केलिए उन्हें आदेश देता है ।

विद्याध्ययन की ओर दत्तात्रेय बहुत अधिक ध्यान देता है । उसकी राय में विद्याध्ययन से बढकर न कोई धार्मिक आचरण है, न कोई राष्ट्रसेवा है । उसके ख्याल में मर्द नहीं पढे तो कोई बात नहीं । विद्याविहीन स्त्री एक गाय जैसी है । प्रत्येक घर को वह एक-एक विश्व-विद्यालय देखना चाहता है ।

दत्तात्रेय साम्यवादी संस्कृति में कुरूपता और निर्धनता की प्रतिष्ठा देखता है । वह वर्ग-चेतना पर आधारित स्वच्छ ज्ञान-चेतना जनता में जगाना चाहता है । वह अपना एक-एक बून्द खून शोषितों की सेवा केलिए और गरीबों को सुखी बनाने केलिए उत्सर्ग करना चाहता है । वह अपने को एक आदमी जैसे नहीं मानता है, एक प्रतिष्ठान, एक अनुष्ठान और एक आन्दोलन जैसे मानता है । उसकेलिए दीन-दुखिया ही परमेश्वर है । वह उनके समाज की महान शक्ति बनाना चाहता है ।

दत्तात्रेय साम्यवादी विचारधारा को रूस की उपज के रूप में या मार्क्स की विचारधारा के रूप में नहीं मानता है । महान और सर्वजन हितकारी विचारधारा मानता है । ये विचारधारायें अन्धकार में टटोलनेवाले क्षीण एवं असहाय मानवों को शक्ति एवं प्रकाश प्रदान करती हैं। इसलिए दत्तात्रेय ने इस विचारधारा को स्वीकार किया ।

साम्यवाद के एक प्रचारक होने के कारण दत्तात्रेय को पुलिस गिरफ्तार करती है । लेकिन जनसेवा केलिए सजा भोगना वह शान की बात मानता है । इसलिए उससे बचने की फिक्र करना मरण और अहित की बात समझता है । वह सजा भोग-भोगकर संसार के सारे साम्यवादियों की इज्जत को बढा देना चाहती है । लेकिन जीवन के अधिकांश भाग जेल में बिताने से उसकी विचारगति में परिवर्तन आता है । वह बेमतलब सिद्धान्त के पीछे दौडता है । अंत में जेल से मोचन पाने केलिए ईश्वर से वह प्रार्थना करता है ।

भारत की मिट्टी साम्यवाद के बढाव केलिए योग्य नहीं है । एक ही व्यक्ति अकेले इसकेलिए प्रयास करें तो कोई प्रयोजन नहीं है । जो व्यक्ति समाज को समझने और बदलने का प्रयत्न करता है, समाज और सरकार उसको समूह से अलग करती है । यहाँ सदकर्म करनेवाले कर्मयोगियों को स्थान नहीं है । उसको साम्यवादी कहकर सभी लोग उसका सर्वनाश करना चाहते हैं । सरकार और समाज व्यक्ति की जनोपयोगी प्रवृत्ति को स्वीकार नहीं करते । वे सोचते यही है, क्या, वह साम्यवादी है ? या नहीं ?

दत्तात्रेय की पत्नी के प्रयत्न से उसको जेल से मुक्ति मिलती है । जेल से बाहर आते वक्त उसका विचार है कि इस घोर कलियुग में भी राम एक जबरदस्त शक्ति के रूप में क्रियाशील है । इसलिए वह राम का असली रूप और तत्व जनता को समझाने केलिए देशभर घूमना चाहता है । इस प्रकार वह नास्तिक युवक अन्त में आस्तिक बन जाता है । ईश्वर का अस्तित्व इस ब्रह्मांड में व्याप्त है । इस संसार में एक ही सत्य है, वह है ईश्वर । लेकिन हम परिस्थितियों का गुलाम बनकर यह नहीं समझते हैं । यह भारत भूमि आध्यात्मिकता का निवास स्थान है । यहाँ रहनेवाले हर व्यक्ति के खून में यह सत्ता लीन है । इसलिए कोई भी इससे अलग होकर जी नहीं सकता ।

दत्तात्रेय ने जीवन में दु:ख ही दु:ख भोगा । वह उससे मुक्त होना चाहता है । लेकिन कभी संभव नहीं होगा । कई वर्ष के जेलवास के बाद बहुत खुशी के साथ जब वह बाहर आता है तब अपनी प्रिय भाभी का पुत्र यशवन्त, घर में नहीं रहा । यशवन्त का यह तिरोधान, दत्तात्रेय और उसकी पत्नी केलिए दुस्सह आघात सिद्ध होता है । दत्तात्रेय ईश्वर की निर्दयता पर ईश्वर को कोसता है । विषम परिस्थितियों में मनुष्य का विश्वास दृढ नहीं रहता । यहाँ दु:खियों केलिए दु:ख मात्र मिलता है ।

शोषित फिर भी शोषित बन जाता है । भारत में उसकेलिए मोचन का मार्ग ही प्राप्त नहीं है ।

आनन्द शंकर माधवन इस उपन्यास के नायक द्वारा दो विशेष बातें हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं कि साम्यवादी सिद्धान्त भारत में अप्रायोगिक है और हर व्यक्ति अंत में ईश्वरीय सत्ता की ओर उन्मुख होता है ।

सरला

सरला, जापट नामक जज की पुत्री है । वह अच्छी पढ़ी-लिखी लड़की है । महाराष्ट्र संस्कृति की गरिमा पर उसे अभिमान है । वह भारत भर में महाराष्ट्र संस्कृति और मराठी भाषा को फैलाना चाहती है शिवाजी को वह अपना नेता मानती है । महाराष्ट्र युवक-सम्मेलन में दत्तात्रेय इस देश में व्याप्त प्रान्तीयता, जातीयता आदि के खिलाफ आवाज़ उठाता है यह सरला सह नहीं सकती । लेकिन दत्तात्रेय की वाक्पटुता, ताकत, आदर्श आदि पर सरला प्रभावित हो जाती है । इसलिए उसको भी अपने रास्ते पर लाने केलिए वह प्रयत्न करती है । इसकेलिए वह दत्तात्रेय के घर आती है दत्तात्रेय उससे बुरी तरह व्यवहार करता है । आत्मसम्मान रखनेवाली सरला केलिए यह अपमान बहुत असहनीय हो जाता है । अपने पिता की प्रतिष्ठा पर भी वह गर्व करती है ।

सरला दत्तात्रेय के प्रति अपने मन में उत्पन्न कोमल भावना छिपाकर रखती है । उसका विचार है कि उसे खोलने से आत्माभिमान या व्यक्तित्व की च्युति होगी । किसी के सामने अपना सिर झुकाने केलिए वह तैयार नहीं होती । जब दत्तात्रेय जेल में था तब उससे मिलने केलिए कई बार सरला जेल जाती थी । लेकिन अपने मन की वह मृदुलकोमल भावना

उसने प्रकट नहीं की । दत्तात्रेय के स्नेहशून्य व्यवहार से उसके मन में निराशा पैदा होती है । अत्यधिक वेदना के साथ वह दत्तात्रेय के घर जाती है । दत्तात्रेय की माता, उषा और उषा के बच्चे के साथ बहुत प्रसन्नतापूर्वक वह बड़ागाँव में कई दिन रहती है । मालती को एक माँ जैसे और उषा को एक भाभी जैसे वह मानती है । अपनी स्त्री सहज सभी इच्छाओं को उषा के सामने वह प्रकट करती है । उषा के पुत्र को प्यार-दुलार करते समय एक माँ बनने का आग्रह उसके मन में पैदा होता है । अपने मन की वेदना हलका करने केलिए छोटे यशवन्त से वह दत्तात्रेय के प्रति अपने मन में छिपी बातें खोलती है ।

दत्तात्रेय की चिन्ता सरला को सदा झकझोर करती रही । इससे मोचन पाने केलिए उसने भारत छोड़ा है । कालिफोर्निया जाकर पी-एच·डी· की उपाधि ली । पिता के विरुद्ध अपना मत प्रकट करने को भी कम्को साहस उसने दिखाया ।

दत्तात्रेय और सरला के विवाह के दिन ही अपने पति दत्तात्रेय को पुलिस गिरफ्तार करती है । लेकिन एक धीर भारतीय पत्नी की तरह दत्तात्रेय को जेल जाने का साहस सरला देती है । वह अपने पति के मोचन केलिए अपने पिता के साथ वृन्दावन जाकर प्रार्थना आदि में संलग्न हो जाती है । इससे कुछ लाभ नहीं मिलता । प्रार्थना और मन्दिरों की सारहीनता वह समझ लेती है । इसलिए दत्तात्रेय के मोचन केलिए मंत्री को निवेदन समर्पित करती है ।

सरला स्नेह और त्याग का मूर्तिभाव है । अपनी भाभी के पुत्र यशवन्त का तिरोधान उसको दुःख समुद्र में डुबाता है । अपने पिताजी, मालती, उषा, दत्तात्रेय और यशवन्त से वह बहुत प्यार करती है । ऐसी स्नेहमयी नारी भारतीय नारीत्व का प्रतीक ही है ।

उषा

जीवन के अन्त तक विरह दु:ख सहकर जीनेवाली यथार्थ भारतीय नारी को उषा में हम देख सकते हैं । वह पति को ईश्वरतुल्य मानती है । लेकिन उसका पति इस सांसारिक जीवन में सुख नहीं देखता है । इसलिए वह अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़कर परिवार का उत्तरदायित्व उषा को देकर ईश्वर की खोज में निकलता है । इस प्रकार जब उषा बहुत व्यथित होकर जीवन बिता रही थी तब मालती, सरला और दत्तात्रेय उसके जीवन में प्रवेश करते हैं । ये, उसका दु:ख कम करने केलिए बहुत सहायक बनते हैं । सरला और दत्तात्रेय को वह बहन और भाई जैसे मानती है । वह मालती में माँ को देखती है । स्नेहसम्राट और भावुक हृदयवाली उषा अपनी मृत्यु के वक्त भी दत्तात्रेय और सरला का नाम लेकर मरती है।

उषा, स्त्री का सम्मान चाहती है । उसकी राय में जिस देश में स्त्रियों का आदर प्राप्त नहीं, जिस घर में कुलवधुओं को पर्याप्त सम्मान नहीं मिलता, वह देश और घर रसातल की ओर बढ रहा है । भारतीय संस्कृति स्त्री को समाज में सबसे ऊँचा स्थान देती है । इसलिए इस युग में भी वह चाहती है कि स्त्रियों को सच आदर करे और उसका शोषण समाप्त करे ।

मालती

दत्तात्रेय की माता मालती को जीवन में सुख भोगने का अवसर नहीं मिलता है । वह पुत्र को अपने सामने सदा देखना चाहती है और उसका लाड़-दुलार करना चाहती है । लेकिन पुत्र उसको हमेशा दु:ख ही दु:ख दे रहा है । वह स्नेहमयी माँ पुत्र की उच्च विचारगति और निष्णता में गर्व करती है । उसका स्नेह प्रवाह भागीरथी जैसा है ।

उषा और सरला केलिए वह माँ है । बापट साहब भी मालती के सामने आश्रय केलिए पहुँचते हैं । यह स्नेह स्वरूपिणी माँ निस्सन्देह भारतीय माता का प्रतीक है।

बापट साहब

बापट साहब जज हैं । वे अपने उच्च स्थान पर गर्व करते हैं । मातृविहीन अपनी पुत्री केलिए वह एक माता भी है । वे साम्यवाद के खिलाफ है । फिर भी दत्तात्रेय से वे प्रभावित होते हैं । वे दत्तात्रेय को अपनी पुत्री के अनुरूप पुरुष मानते हैं । पुत्रीके साथ एक अंग्रेज़ी पत्रकार युवक को देखकर वे व्याकुल चित्त बन जाते हैं । उस अवसर पर वे अपनी प्रिय पुत्री की ओरबन्दूक उठाते हैं । उनके जीवन में सुख कमी प्राप्त नहीं हुआ था । दत्तात्रेय को मुक्त करने केलिए वे भी बहुत कोशिश करते हैं । अंत में प्रार्थना आदि में तल्लीन होकर वे वृन्दावन जाते हैं । इनमें भारतीय पिता का यथार्थ रूप हम देख सकते हैं ।

मणिका

मणिका एक भिखारिन है । वह इस उपन्यास का लघु कथापात्र फिर भी सबके मन में उसकी याद हमेशा हो रही है । उसमें विद्यमान मानविकता की गहराई निस्सीम है । मथुरा की ओर जानेवाला छोटा यशवन्त दिल्ली में पहुँचता है । यशवन्त की निसहाय अवस्था देखकर मणिका भोजन आदि देती है । मथुरा की ओर जाने केलिए यशवन्त के पास पैसा नहीं था । मणिका भीख मांगकर पैसा लाती है । वह एक टिकट केलिए पर्याप्त नहीं था । इसलिए वह अनेक भिखारियों से कर्ज लेकर यशवन्त को पैसा देती है । वह भावुक हृदयवाली मणिका यशवन्त के जाते समय बहुत रोतीहै । यह स्त्री सहज हृदय का अद्भुत नमूना है ।

यशवन्त

इस उपन्यास में आठ वर्षीय यशवन्त ही अनमंत्रित मेहमान है । छोटी उम्र में ही उसकी माँ, दादी, बहनें आदि मर गयीं । इसलिए उसकी देखभाल केलिए कोई नहीं रहा । गाँव के जमीन्दार के घर में बहुत कठिनाईयाँ सहकर उसको जीना पड़ा । इस प्रकार छोटी उम्र में बहुत दु:ख वह भोगता है । अंत में किसी से कुछ कहे बिना वह गायब होता है ।

साधु बाबा

बड़गाँव नामक महाराष्ट्र के गाँव में आकर आध्यात्मिकता पर बाबा भाषण देते हैं । वे इस सांसारिक जीवन में सुख के दर्शन करनेवालों का मजाक उड़ाते हैं । उसकी राय में यह सांसारिक जीवन व्यर्थ है । इसके द्वारा उसको कुछ भी नहीं मिलता है । हम सबको ईश्वर की खोज में निकलना चाहिए । उसकी राय में इस प्रकार प्राप्त सुख स्त्री जन्य सुख से करोडों गुना अधिक है । इसलिए मायारूपी स्त्री को छोड़कर अदृश्य शक्ति की सत्ता को समझने केलिए वे आदेश देते हैं । साधु के प्रभावोत्पादक भाषण से अनेक पुरुष इसकेलिए तैयार होते हैं ।

साधु बाबा हमको भारतीय गान-विद्या और अभिनय शास्त्र को समझने केलिए आह्वान देते हैं । उसकी राय में धर्म सिर्फ राम जपना ही नहीं है । मनुष्य का प्रत्येक आचरण परमेश्वर प्राप्ति का रूप है । उदाहरण केलिए गायक गाते समय, राजा शासन करते समय, इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने आचरण के समय उसे ईश्वर प्राप्ति का एक कदम समझता है । भारतीय दर्शन का एक अभिन्न अंश है आध्यात्मिकता । इसलिए भारत के लोग इस विद्या को शान्ति और गंभीरता के साथ अध्ययन करने केलिए वे आह्वान देते हैं

भारतीय संस्कृति केलिए साधु लोगों का योगदान महनीय है । बाबा इस पर गर्व करते हैं । लेकिन आज साधुओं की स्थिति लज्जाजनक है । लोग साधुओं को ठग या चोर आदि कहकर उनकी हँसी उड़ाते हैं । लेकिन साधु बाबा में श्रेष्ठ साधु के सभी गुण निहित थे ।

इस कथापात्र के द्वारा माधवनजी भारतीय साधु जीवन का आध्यात्मिक जीवन यापन का सरल रूप हमको सिखाने का प्रयत्न करते हैं ।

रामचन्द्र

साधु बाबा के भाषण से आकृष्ट होकर अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़कर रामचन्द्र अदृश्य शक्ति की खोज में निकलता है । लेकिन अपनी पत्नी की शोचनीय स्थिति जानकर सांसारिक जीवन की ओर वह वापस आता है । पत्नी की प्रसववेदना देखकर वह पुन: लौकिक जीवन की व्यर्थता पर विचार करता है और शेष जीवन ईश्वर को समर्पित करने केलिए शपथ खाता है तथा घर छोड़कर आध्यात्मिक जीवन स्वीकार करता है ।

रामचन्द्र की राय में शादि-विवाह, बाल-बच्चे ये सब साधारण मनुष्यों के दैनिक व्यापार हैं । इनमें महत्वपूर्ण ईश्वरीयता निहित नहीं है । पारस्परिक श्रद्धा भावना और चरणवन्दना को ही वह विवाह मानता है । उसके मत में पुरुष को स्त्री की विचारगति और भावानुभूति से परिचय होना चाहिए । भले आदमी केलिए अपनी पत्नी बहुत कीमती चीज़ है ।

अपनी संतान केलिए धन, भूमि आदि इकट्ठा करनेवाले पिता को वह घृणा की दृष्टि से देखता है । उसकी राय में व्यक्ति की वास्तविक पूँजी उसका चिरसंचित संस्कार है । इसलिए प्रत्येक पिता को अपने पुत्र केलिए ऐसी संपत्ति को कमाना चाहिए । यह पूँजी जिनमें उज्ज्वल है वे ही संसार के महापुरुष हैं । उसके मत में महानता को प्राप्त करना ही ज़िन्दगी का ध्येय है ।

उसकी राय में जीवन में निराश होने की कोई बात नहीं है । आत्मसाक्षात्कार केलिए ज्ञान प्राप्त करना जीवन का परम लक्ष्य है । हमें स्नेहमूर्ति बन जाना चाहिए । प्यार की गति में आँसू और वेदना के अलावा कुछ नहीं हाथ आता । यह बड़ी कठिन तपस्या है, आध्यात्मिक तपस्या है ।

इन कथापात्रों के अलावा इस उपन्यास में गोवान्स, ज़मीन्दार आदि लघु कथापात्र भी हैं । गोवान्स एक अँग्रेज़ी पत्रकार है । भारतीय संस्कृति के बारे में अध्ययन करने केलिए वह भारत आया । यहाँ की स्त्री की शोचनीय स्थिति और स्त्री-पुरुष सम्बन्ध के बारे में उपस्थित गलत धारणाएँ उसे असहनीय लगा । इसलिए वह अपने देश की ओर वापस जाता है । दुष्ट ज़मीन्दार और उसकी पत्नी का मन अपनी पुत्री के अतुल्य प्यार के कारण बदल जाता है । बापट साहब से बदला लेने केलिए दत्तात्रेय को जेलवास की सजा देनेवाला दुष्ट ऐ॰जी॰ आदि भी इस उपन्यास के अन्य पात्रों में आते हैं ।

उपर्युक्त चरित्र-चित्रण से स्पष्ट है कि इस उपन्यास का प्रत्येक कथापात्र उच्च विचारधारा और सद्चरित्र का अधिकारी है । प्रत्येक व्यक्ति जीवन रूपी दुःख समुद्र को पार करने केलिए यत्न करनेवाला है । लेकिन उसको मुक्ति का मार्ग कहीं नहीं सूझता । एक दुःख के बाद दूसरा आ रहा है । वे जीवन के सुख केलिए लालायित रहते हैं । माधवनती के सभी स्त्री कथापात्र स्नेह और त्याग की मूर्तिमान देवियाँ हैं ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि माधवनजी अपने कथापात्रों की सृष्टि में अपने को या अपनी विचारधाराओं को प्रतिष्ठित करने का अथक प्रयत्न ही करते हैं । इसमें उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई है ।

प्रसववेदना (दो भाग) के पात्र और चरित्र

दो भागों में, पूरे इकतीस अध्यायों में प्रस्तुत "प्रसववेदना" (दो भाग) उपन्यास के सभी पात्र अपने आचरणों की सहजता के द्वारा अपने ढंग से पाठकों के मन को आकृष्ट करते हैं । लेकिन उपन्यास के पूरे परिवेश में बलि-विवश पात्री, अकाल वृद्धा सुजाता और पुलिस के प्रहारों से पृष्ठपीठ यशवन्त - ये दो पात्र हैं । माधवनजी ने अन्तर्मन से विश्व-रहस्य को प्रकट करने केलिए महत्वपूर्ण असाधारण मनोदशाओं की प्राण-प्रतिष्ठा की है । पाठकों के साधारणीकृत मनोभावों को सुख-दुख, आशा-निराशा और आत्मविश्लेषण - आत्मोत्पीडन के कारण सांगीतिक आरोह अवरोह में उन्होंने परिवर्तन किया है । इस तरह की विभूतियों से सम्पन्न अन्य चार पात्र हैं - बशीर उस्ताद, उसकी पुत्री शैला, साधु बाबा और केयूम । इन कथापात्रों के अलावा इन लोगों के संपर्क में रहकर उनके प्रभाव से कर्म-निरत कुछ सदूजनों को भी हम इस उपन्यास में देख सकते हैं । चाटर्जी, मार्मिनी, गीता, रामू, सिंह आदि पात्र इस विभाग में आते हैं ।

सुजाता

"प्रसववेदना" की नायिका सुजाता है। ढाका विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, विश्वविख्यात दार्शनिक और लेखक डॉ॰ सतीशचन्द्र चक्रवर्ती की इकलौती बेटी थी सुजाता । उसने ढाका विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में प्रथम दर्जे में एम॰ए॰ पास किया और गोल्ड मेडल हासिल किया ।

बाद में उसने उसी विश्वविद्यालय से डाक्टरेट भी ले ली । उसके पिता की एकमात्र अभिलाषा थी कि मेरी पुत्री अशोक की बेटी संघमित्रा जैसे बने । सुजाता ने यह अभिलाषा पूर्ण करने का निश्चय किया ।

उस समय भारत में हिन्दू-मुस्लीम संघर्ष उच्च कोटि पर था । सुजाता का परिवार भी इसका शिकार हुआ । सुजाता के सामने ही उसके माता-पिता को मुस्लीम लोगों ने मार डाला । सुजाता ने भी साहस के साथ दो-तीन मुस्लीमों को मार डाला । लेकिन उसको जबरदस्त पकड़कर वे लोग ले गये । बाद का उसका जीवन बहुत शोचनीय रहा । हर नर-पिशाच का आक्रमण उसने सहा । अपनी अभिलाषा पूरा करने की अदम्य इच्छा से उसने पगली का स्वाँग किया । अन्त में उसने भारत के प्रधानमंत्री के समक्ष अपनी करुण कहानी रखी । पेशवार से दिल्ली तक की यात्रा में कितनी वेदना उसने सही इसकी सीमा नहीं रही । अपने पिता के वचन मात्र को मानकर आत्महत्या नहीं की । उसकी कहानी भारतवर्ष की प्रत्येक कौमी झगडे की शिकार-स्त्री की कथा है ।

सुजाता ने दिल्ली पहुँचकर, प्रधानमंत्री से अपनी मार्मिक कहानी कह सुनाकर कुतुब्-मीनार के ऊपर से कूदकर आत्माहूति करने का फैसला किया । लेकिन अपने पिताजी का अरमान उसे सदा सताता रहा । प्रधानमंत्री नेहरू जी ने संघमित्रा को अपने घर में ठहराने का सारा प्रबन्ध किया लेकिन उसने यह स्वीकार नहीं किया । उसने अपनी ही तपस्या, साधना और परिश्रम के बल पर खड़ी होना चाहा ।

पुरुष वर्ग से बचने केलिए उसने कोढी जैसा स्वाँग किया । भीख माँगते हुए नन्दिनी भिखारिन के साथ वह जीवन बिताने लगी ।

नन्दिनी को उसने अपनी माँ माना । यशवन्त के मिलन से उसके जीवन में परिवर्तन आया । उसने यशवन्त को अपना पुत्र जैसे लाड़-प्यार किया । यशवन्त के द्वारा रामू नामक क्रान्तिकारी लड़का उसके जीवन-चक्र में घुस आया । उन दोनों के प्रति उसकी वात्सल्य भावना अपार थी, अपनी माँ की इलाज करने को इनकार करनेवाले दुष्ट डाक्टर दयाल से रामू और यशवन्त ने झगडा किया । तब पुलिस ने उनको गिरफ्तार किया । यह समाचार सुनकर उस दुबली पतली, वात्सल्य मूर्ति · माँ ने डाक्टर पर हमला किया । उस दुष्ट डाक्टर की मार खाने से उसकी हालत बुरी हो गयी । अपना लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयत्न उसने शुरू किया । नर्स गीता, डॉ·चाटर्जी और डॉ· सिंह ने मणिका के साथ स्त्री शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठायी । उसने गेरुआ वस्त्र पहनकर, सिर मुंडन करके, संघमित्रा नाम स्वीकार करके जन-सेवा करने केलिए तैयार हुई । उसने चाटर्जी के साथ रहकर मध्यप्रदेश में "नन्दन" नामक आस्पताल खोला । उसने संघमित्रा मिशन की स्थापना की और एक पत्रिका का संचालक कार्य भी आरंभ किया । अपनी जीवनी "मक्का-काशी एक साथ" शीर्षक से प्रकाशित की । इसे लोक व्यापक ख्याति भी मिली ।

देश की स्थिति का अध्ययन करने से उसके मस्तिष्क में अनेक विचार लहराने लगे । उसका सारा व्यक्तिगत मोह मिट गया । उसके भीतर का प्यार संपूर्ण देशवासियों केलिए समर्पित था । उसकी राय में इस ब्रह्माण्ड में सिर्फ प्रेम ही एक सार तत्व, एक सार शक्ति है । अन्य सभी शक्तियाँ, ज्ञान-विज्ञान भी, सभी तरह की कलायें भी प्रेम ही को प्राप्त करने केलिए क्रियाशील हैं, प्रेमप्राप्ति के विभिन्न माध्यम स्वरूप मात्र है । इसलिए संघमित्रा ने अपने प्रत्येक कार्य में, बोली में, भाव में, विचार में, अपने रक्त की बून्द-बून्द में प्रेम-तत्व को प्रदर्शित किया ।

रामू और यशवन्त को भी उच्च बनाने की इच्छा मणिका के मन में थी । लेकिन यशवन्त ने पढने की ओर खास रुचि नहीं दिखायी । इसलिए रामू और उस्तादजी की पुत्री शैला को अमेरिका भेजकर उसने पढाया । भामिनी गेरुआ वस्त्र छोडकर इसका अपमान करती है तो संघमित्रा बहुत दु:खी हो गयी । उसने गेरुए वस्त्र को पवित्र स्थान दिया, उसका कलंकित करना बुरा समझा ।

संघमित्रा को रात-दिन मानवता की ही फिक्र थी । कैसे मानव को सही मार्ग में संचालित करेगा, कैसे उसके सारे कार्य-क्षेत्र को उचित और स्वस्थ दिशा दिखायेगा, कैसे व्यक्ति के मनस्तत्त से असुर तत्व को हटा सकेगा, यही उसका फिक्र के विषय था । भारत में संघमित्रा ने शिक्षित और सुसंस्कृत नागरिक को प्रजातांत्रिक सरकार के बल के रूप में माना ।

संघमित्रा कभी-कभी अपनी प्रियतम की खोज में व्यस्त रही । उसके मन में अपने माथे पर सिन्दूर डलवाने की इच्छा थी । प्रियतम को उसने ईश्वर में देखा । यशवन्त की असामयिक मृत्यु से उसका मिशन अधूरा रह गया ।

एक महान लक्ष्य पर पहुँचने केलिए संघमित्रा ने असीम त्याग सहा । "संघमित्रा के स्तर तक पहुँचने में कुमारी कन्या सुजाता को जो "प्रसववेदना" सहनी पड़ी उसमें "कामायनी" की इड़ा के अवतारक जयशंकर प्रसाद की मानवतावादी धारा, मार्क्स वादी प्रभाव को साथ लेती हुई, माधवनजी की आत्मग्रस्तता से टकराती है और यह टकराहट उनके स्नायुतन्त्र के किसी असामान्य तनाव या कुण्ठा को संकेतित करती है[1]।"

---

1. श्री·आनन्द शंकर माधवन एक विरल व्यक्तित्व - सम्पादक आनन्द प्रिय उत्तम, श्रीरंजन सूरिदेव,

माधवनजी के उपन्यास की असुलझ और असाधारण युवती सुजाता अपने ग्लानी गलित हृदय के दुर्वह भार से कभी उद्धार नहीं पाती है । फिर भी उसकी विशेषता इसमें है कि वह अपने हृदय में एक अनूठा अनुराग पालते हुए भी किसी अवांछित के पीछे नहीं दौड़ती ।

यशवन्त

"अनामंत्रित मेहमान" नामक उपन्यास में यशवन्त ही अनामंत्रित मेहमान है । उसमें माधवनजी यशवन्त के बारे में भविष्यत्-वाणी देते हैं । उसका जन्म-लक्ष्य, उसकी महानता आदि के बारे में माधवनजी इसमें संकेत करते हैं । लेकिन मुख्य कथापात्र के रूप में यशवन्त का उद्घाटन इसमें नहीं होता है । पर माधवनजी महान यशवन्त का पूरा चित्र "प्रसववेदना" में देते हैं ।

यशवन्त और मणिका भास्करिन के मिलन को अलौकिक मिलन जैसे माधवन जी ने चित्रित किया है । उन दोनों के मिलन के बाद उनके जीवन में परिवर्तन आया । यशवन्त ने मणिका को अपनी माता मान लिया । मणिका केलिए यशवन्त ने डाक्टर दयाल की मार खायी और कई दिन रामू के साथ जेलवास भी भोगा । उसने पढाई में कोई रूचि नहीं दिखायी । इसके बदले भारतीय गान-विधा सीखने में उन्होंने विशेष ध्यान दिया । यशवन्त ने भारतीय गान-विधा के राग, ताल, लय इन तीनों का ठोस ज्ञान हासिल किया । गाना सुनने मात्र से उसके राग ताल आदि वे बता सकते थे । यशवन्त की राय में संगीत से बढकर कोई साइन्स नहीं था और साधु से बढकर कोई विद्वान भी नहीं था । उसने एक महान गायक और योगी बनने का फैसला किया ।

दिल्ली के प्रशस्त गायक और महान योगी थे उस्तादजी । अपना अनुष्ठान और निष्ठा से उन्होंने अनेक दिव्य शक्तियाँ हासिल कीं । उन्होंने यशवन्त को अपना योग्य शिष्य मानकर अपनी सब सिद्धियाँ उसको प्रदान कीं । उस्ताद के सम्पर्क से यशवन्त महान गायक बन गया । उनके साथ मिलकर यशवन्त भारत में जर्जर रूप से रूढमूल धार्मिक पागलपन मिटाने को आगे बढा । बशीर के "अल्ला-राम" मंत्र उसने भी स्वीकार किया। उसने उस्तादजी के कब्र पर एक मन्दिर बनाकर "बशीर-धाम" नाम दिया । यशवन्त उस मन्दिर में स्थिरवास करने लगा ।

बशीर की दत्तक पुत्री शैला को बशीर ने पहले ही यशवन्त को दिया । लेकिन धर्म के नाम पर संघर्ष उपस्थित हुआ और शैला का विवाह केयूम नामक प्रोफेसर के साथ हुआ । शैला के गर्भ में यशवन्त की दिव्यशक्ति से उसका ही पुत्र उत्पन्न हुआ । शैला को उसने बहुत प्यार किया । उसकी मृत्यु से उसका बुरा हाल हो गया । उसकेलिए वह दिन-रात रोया । जब यशवन्त ने धर्म भेद को खतम करने का प्रयास किया, तब लोगों की मार खाकर वह मर गया । इस प्रकार वह महान गायक शहीद बन गया ।

यशवन्त संसार की विभूति, भारतवर्ष के अन्यतम कलाकार, परमेश्वर प्रतिनिधि-कवि, ऋषि श्रेष्ठ और आदि-अन्त विहीन अनहद नाद का गायक था । उसके मुँह से वागेश्वरी सुनने या भैरवी सुनकर अमेरिका के लोग भी पागल हो जाते थे । उस विश्वविख्यात राग गायक को अन्य देश के लोग माथे पर रखकर पूजते थे, पर भारत में इस प्रकार के कर्मयोगियों केलिए कोई स्थान नहीं है । यहाँ लेखक यह भी संकेत करते हैं कि भारतवर्ष के ऋषि-मुनियों की ताकत असाधारण और अतुल्य थी ।

उस्ताद बशीर अली खाँ

उस्तादजी वयोवृद्ध संगीताचार्य थे । उनके अनेक शिष्य थे । लेकिन उनको उनमें से कोई विशेष पसन्द नहीं आया । उसकी राय में उत्तम गुरू केलिए अधिकारी शिष्य से बढकर कोई दौलत नहीं । इसलिए वे अधिकारी शिष्य की खोज में थे । जब यशवन्त शिष्य के रूप में प्राप्त हुआ, तब वे बहुत संतुष्ट हुये । अपने दिव्यचक्षु से यशवन्त को देखने मात्र से उसकी तात्पर्य उन्होंने समझ ली । उसकी बडी तपस्या की फलप्राप्तिथा यशवन्त । संगीत के सब रहस्य, उस्तादजी ने यशवन्त को समझा दिये । उस्तादजी ने अपनी सारी सिद्धियाँ यशवन्त को दीं । अपनी पुत्री शैला को भी यशवन्त केलिए उन्होंने समर्पित किया ।

उस्तादजी की राय में शुद्ध स्वस्थ शास्त्रीय राग गायन का विकास किये बगैर संगीत की प्रतिष्ठा नहीं होगी । उन्हें भारतीय संस्कृति पर गर्व था । संपूर्ण साहित्य, कला, धर्म, दर्शन, विज्ञान आदि की उद्भव भूमि भारत देश में जाति के नाम पर लोग संघर्ष कर रहे हैं । यह देखकर बहुत दु:खी होकर इस धर्मभेद को हटाने का उन्होंने प्रयास किया । राम और अल्ला को उन्होंने एक तत्व के रूप में माना । बशीरजी अपना प्राण देकर भी जनता को यह सिद्धान्त समझाने का निश्चय किया । लेकिन धार्मिक लोगों ने उसको मार डाला ।

शैला

बशीर उस्ताद अली खाँ की दत्तक् पुत्री थी शैला । जब शैला की उम्र दस वर्ष की थी तब से वह यशवन्त की पत्नी थी ।

शिक्षा प्राप्त करने केलिए शैला अमेरिका गयी । अमेरिका में उसने यशवन्त की चिन्ता में दिन काटा । भारत लौट आते समय शैला का विश्वास था कि यशवन्त महायोगी बन जाने के कारण उसको पत्नी के रूप में नहीं स्वीकार करेगा । लेकिन महायोगी यशवन्त शैला के साथ विवाह करने का निश्चय किया । कट्टर धार्मिकतावादियों के कारण उसका विवाह केयुम नाम्क प्रोफेसर के साथ हुआ था । लेकिन हमेशा वह "यशवन्त-यशवन्त" ही जप रही थी । इस पातिव्रत्य के कारण ही उसके गर्भ में यशवन्त के बीज ने प्रवेश किया । गर्भ में स्थित अपने पुत्र केलिए ध्यान, व्रत आदि अनुष्ठान उसने किया । यशवन्त से महान एक बच्चे के जन्म देने के बाद, वह अपना पति यशवन्त की गोद में लेटकर मर गयी ।

शैला भारतीय सतीत्व का प्रतीक थी । माधवनजी ने शैला को यथार्थ भारतीय-पत्नी के रूप में चित्रित किया ।

चाटर्जी

डाक्टर चाटर्जी अपने कर्तव्य निर्वहण में बहुत ध्यान देनेवाला आदमी था । उसने भरसक कोशिश करके रोगियों को मृत्यु से बचा रहा था । "संघमित्रा मिशन" का कार्यवाहक के रूप में उसने अतीव कुशलता दिखाई । मणिक्का को संघमित्रा बनने की रास्ता तैयार करनेवालों में मुख्य था चाटर्जी । यामिनी दयाल के साथ विवाह करने के पहले उसने इनकार किया । लेकिन अन्त में यामिनी के प्रति प्यार की कोमल भावना उसके मन में जाग उठी ।

चाटर्जी ने संघमित्रा को भी दिशा - निर्देश दिया । चाटर्जी ने इस युग को धर्मोपदेश का युग नहीं माना । उसके मत में, हमको अब काम करके दिखाना चाहिए । यहाँ की मूल समस्या मानवता की है ।

खासकर भारतीयों का कष्ट निवारण करना चाहिए । इसलिए उसने देश की बहुमुखी समस्याओं का समाधान ढूँढकर उसको हल करने का प्रयास किया । उसने आध्यात्मिक अनुष्ठान इन सारी समस्याओं को सुलझाकर देश को स्वस्थ और सुखी दिशा देने का माध्यम माना । उसने स्त्रियों की समस्या के रूप में रोग, भोजन और अज्ञान को माना । इन तीनों के सफल निवारण केलिए "संघमित्रा-मिशन" नामक संस्था की स्थापना की । उसकी राय में इसकेलिए देश के कोने कोने में आस्पताल खोलना चाहिए, फिर नाना तरह के उद्योग धन्धों की स्थापना करनी चाहिए और फिर अनेक स्तर के विद्यालयों और महाविद्यालयों की स्थापना करनी चाहिए । इस प्रकार कर्म के माध्यम से परमेश्वर तत्व का परिचय जनमानस तक पहुँचाने को उसने आह्वान दिया । उसने रोगियों की सेवा को सबसे पुण्य कार्य माना । निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि डॉ॰ चाटर्जी ज़रूर कर्मनिरत सेवनतत्पर मनुष्य स्नेही था ।

रामू

रामू रेलवे-स्टेशन में घूमनेवाला गुण्डा था । उसके माँ-बाप नहीं थे । वह परिस्थिति का गुलाम बनकर गुण्डा बन गया । लेकिन उसने यशवन्त और संघमित्रा को अपनी माँ और यशवन्त को छोटा भाई माना । यशवन्त को दुष्ट डॉ॰दयाल ने जब मारा तब रामू ने क्रुद्ध होकर डाक्टर पर टूट पडा । इसलिए उसको दो वर्ष की सजा भोगनी पड़ी । अपनी माँ और भाई के प्रति उसका प्यार असीम था ।

रामू ने पढाई के प्रति बहुत रुचि दिखाई । उसने पढ़कर देश केलिए उपयोगी काम करना चाहा । शिक्षा प्राप्त करने केलिए वह अमेरिका गया । रसायन शास्त्र में डिग्री लेकर वह भारत लौट आया ।

भारत में रासायनिक कारखाना की स्थापना थी रामू का लक्ष्य । संघमित्रा और यशवन्त जैसे गेरुआ वस्त्र पहनकर, योगी बनकर, बेज़रूरत जीवन व्यर्थ करने-वालों को घृणा की दृष्टि से उसने देखा । उसने भारत में व्यवस्थित धार्मिक अनाचारों पर रोष प्रकट किया । उसकी राय में भारत की शोचनीय स्थिति को दूर करने केलिए साम्यवाद ही एकमात्र मार्ग था ।

अमेरिका की युवती रीना के साथ रामू का विवाह हुआ था उसने अन्त तक संघमित्रा पर अनर्गल स्नेहप्रवाह की वर्षा की ।

डॉ॰ दयाल

डॉक्टर भवानी दयाल दिल्ली के विख्यात डाक्टरों में से एक थे । उनका मकान उत्तरप्रदेश के आजमगर जिले में था और वे बडे प्रतापी जमीन्दारों में एक थे । डाक्टरी के ज़रिये भी वे हजारों कमा चुके थे । इसके अलावा, उनके महाजनी का कारोबार भी चला था । वे बूढे हो चले थे । फिर भी अच्छे तन्दुरुस्त थे । पैसे का लोभ इस अवस्था में भी कम नहीं हुआ था । उनकी पत्नी मर चुकी थी । मगर सेवा केलिए एक नर्स उनके पास थी । बच्चे बहुत हुए थे । लेकिन अब एक ही संतान शेष थी । वह लड़की अंग्रेज़ी में एम॰ए॰ पास करके दिल्ली के इन्द्रप्रस्था कालेज में प्राध्यापिका का काम करती थी ।

डॉ॰ दयाल के पैसे की लालच असाधारण थी । इसलिए मणिका को दवा देने से उन्होंने इनकार किया और रामू और यशवन्त के विरुद्ध व्यर्थ मुकद्दमा चलाया । रामू के आक्रमण से डाक्टर साहब का सारा दुश्चरित्र दूर हुआ । चाटर्जी ने सरसक प्रयत्न करके उसको मृत्यु-वक्त्र से बचाया । इस घटना के बाद डाक्टर दयाल भी जन-सेवा तत्पर बन गया और डाक्टरी का काम करने केलिए नन्दन गया ।

सद्मनुष्य के सम्पर्क में आने से दुष्ट भी बदल सकता है इस कथन को डॉ॰दयाल नामक पात्र चरितार्थ करते हैं ।

भामिनी

डॉ॰भवानी दयाल की एकमात्र लड़की थी भामिनी दयाल । अंग्रेज़ी में एम॰ए॰ पास करके दिल्ली के इन्द्रप्रस्था कालेज में प्राध्यापिका का काम करती थी । वह स्वभाव से बहुत ही कोमल और मधुर थी । अपने पिता के प्रति प्यार और सम्मान रखती थी । भामिनी को अन्त में यह मालूम हुआ कि अपना पिता, डाक्टर दयाल नहीं था, वह अपने पिता का भाई मात्र था, उसकी माता भिखारिन नन्दिनी थी और उसके पिता के धन-दौलत सब दयाल ने लूट लिया था । इस कारण दयाल को वह नफरत की दृष्टि से देखने लगी ।

भामिनी "संघमित्रा-मिशन" के संचालकों में एक बनी । डॉ॰चाटर्जी ने इसका विरोध किया । इसलिए वह साधुनी बन गयी । अन्त में चाटर्जी का मन भामिनी केलिए तरसने लगा । तब भामिनी अपना गेरुआ वस्त्र छोड़कर चाटर्जी की सेवा-शुश्रूषा केलिए तैयार हो गयी ।

प्रोफसर केयूम

प्रोफसर केयूम एम॰ए॰ पास थे और देखने में सुन्दर और सुदर्शन थे । मुस्लीम नवाब के आदेशानुसार शैला के साथ उसका विवाह हुआ । शैला ने उसका पैर पकड़कर कहा कि उसका विवाह पहले ही यशवन्त के साथ हो चुका था । इसलिए उसको शैला के प्रति सहानुभूति उत्पन्न हुई ।

लेकिन शैला को सामने देखकर केयूम का विकार तीव्र हो गया । उसने शैला का बलात्कार किया । उसके बाद शैला की दयनीय स्थिति, "यशवन्त-यशवन्त" पुकारते हुए उसका मूर्छित होना आदि देखकर वह पश्चात्ताप विवश हो गया । उसको मालूम हुआ कि उसने गलती की । उसने शैला से क्षमा मांगी और उसकी हर अभिलाषा को पूरा करने का निश्चय किया । उसका विश्वास था कि शैला की मृत्यु का कारण वह स्वयं था । वह अपनी गलतियाँ यशवन्त से कहकर उसका शिष्य बन गया और धर्म के नाम पर शहीद बन गया ।

नन्दिनी

नन्दिनी आदि से अंत तक रहस्य भरा जीवन बिताती आई । पहले पहल वह भिखारिन और रंडी के रूप में हमारे सामने आती है । मणिका से मिलने पर अपनी माँ का हृदय उसने खोल कर रखा । जब मणिका संघमित्रा बन गयी, तब वह भिखारिन भी संघमित्रा की पहली शिष्या । "संघमित्रा-मिशन" के कार्य संचालन केलिए पैसा का अभाव पड़ने पर उसने अपनी सुनहली माला दी । उस माला में "नन्दिनी" नाम दिखाई पड़ा तो उसका नाम प्रकाश में आया । भामिनी से उसने अपने को "मां" पुकारने केलिए कई बार उसने कहा । लेकिन यह इच्छा सफल नहीं हुई । इस दु:ख के कारण वह एक पत्र संघमित्रा को लिख रखकर कहीं गायब हो गयी । इस पात्र से उसका रहस्य खुल गया । वह भामिनी की माता थी । अपनी पुत्री केलिए उसने उस समय तक भिखारिन जैसे स्वांग किया था ।

इस बूढी भिखारिन के द्वारा माधवनजी एक माँ का वात्सल्य और कर्तव्यनिष्ठा का प्रमाण हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं ।

साधु बाबा

अद्भुत शक्ति सम्पन्न बाबा की बातें बहुत आश्चर्यजनक थीं । ईश्वर से भूमि की ओर भेजे हुए एक अतिमानुष को हम बाबा में देख सकते हैं । जब लाहोर से मृतप्राय सुजाता दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पहुँची तब उसको बचाकर नन्दिनी भिखारिन के पास उसने पहुँचाया । अवश्य समय पर सज्जनों की रक्षा केलिए वह प्रत्यक्ष होता था । जब यशवन्त संघमित्रा को देखे बगैर इधर-उधर भटका तब बाबा ही यशवन्त को संघमित्रा के घर लाया । यशवन्त की वास्तविकता समझाने केलिए अपनी दिव्यशक्ति से यशवन्त को बेहोश में लाया और यशवन्त ने निद्रावस्था में अपनी कहानी कही । यशवन्त के भविष्य के बारे में भी बाबा ने चेतावनी दी ।

माधवनजी इस कथापात्र के द्वारा योगियों का अतुल्य और अभौम बल पाठकों को विदित कराना चाहते हैं ।

इन कथापात्रों के अलावा और अनेक कथापात्र इस उपन्यास में हैं । पुरुष के प्रेम केलिए पागल होकर जीनेवाली गीता के प्रति डाक्टर सिंह के मन में प्यार है । फिर भी व्याह करने का भीरुत्व दिखानेवाला डॉ॰ सिंह, धर्मनिरत इनस्पेक्टर साहब आदि पात्र यहाँ विशेष उल्लेखनीय हैं ।

इस प्रकार माधवनजी इस उपन्यास के द्वारा कुछ कर्मयोगी कथापात्रों को ही हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं । नरक-यातना अनुभव करनेवाली स्त्री ही कथापात्रों में मुख्य है । कुछ पात्रों की सृष्टि में ज़रा नाटकीयता हम अनुभव करते हैं । लेकिन इन कथापात्रों के द्वारा माधवनजी मानवता के सद्प्रेरणा और सद् दिशा देते हैं । ये महान विभूतियां ही माधवनजी की कथापात्र सृष्टि की विशेषता है ।

एणाक्षी के पात्र और चरित्र

एणाक्षी

आनन्द शंकर माधवन की "एणाक्षी" नामक पट-कथा का मुख्य पात्र शिवसत्यस्वरूपिणी एणाक्षी है । रसूलन नामक एक सुन्दरी युवती की बडी तपस्या के फलस्वरूप गोकुलदास नामक महान पुरुष से जन्म प्राप्त शिवप्रसाद थी एणाक्षी । एणाक्षी सब गुणों का साकार रूप थी । वह भगवान का पवित्र सत्य थी ।

एणाक्षी बहुत सुन्दर युवती बन गयी । परन्तु उसको न गाना बजाना मालूम था, न लिखना पढना । वह कुछ भी सीखना नहीं चाहती थी । न वह किसी से बोलती, न बाहर निकलती । रात-दिन चुपचाप एक कोने में बैठी रहती थी । खाने-पीने, पहनने सजने आदि में उसे शौक नहीं था । वह असत्य से घोर संघर्ष कर रही थी । वह सचमुच शिव की बेटी थी, शिव की दुलारी कन्या थी ।

गोकुलदास के अनुरोध पर एणाक्षी, सव्यसाची नामक डाक्टर के पास अपनी बीमारी की इलाज करने केलिए आयी । सव्यसाची ने उसको सितार वादन पढाया । साथ ही उसको सव्यसाची से उच्च शिक्षा भी मिली । उसने अंग्रेज़ी में किताबें भी लिखीं । अपनी कठोर तपस्या के फलस्वरूप सव्यसाची जैसा पति उसको प्राप्त हुआ । सव्यसाची के मिलने पर उनके जीवन में बड़ा परिवर्तन आया । वह "विश्वमन्दिर" की स्थापना करके जन-सेवा केलिए आगे बढी । इस योजना से मानव के प्रत्येक कर्मक्षेत्र में उसने व्याप्त हो जाने का निश्चय किया । अपने लक्ष्य को चरितार्थ करने के उद्देश्य से, राजनीति में, शिक्षा क्षेत्र में, साहित्य में, कला में, अध्यात्म में,

व्यापार में, उद्योग में तथा सभी प्रकार के आचार-विचार में भी वह फैल गयी । उसने धर्म के नाम पर संघर्ष करनेवालों के विरुद्ध भी आवाज़ उठायी ।

अतुल्य प्रतिभा सम्पन्न नारि एणाक्षी ने अपने पति को ईश्वर तुल्य माना । सब लोगों पर प्रेम की वर्षा की । एणाक्षी से प्रभावित होकर फैशनवाली घमंडी रजनी भी सद्चरित्रवाली बन गयी । हम उसकी ज्ञान-राशि की गहराई नाप नहीं सके । उसने भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण केलिए प्रयत्न किया । आर्षभारत की सीमा रेखाओं को उसने क्षितिज मान लिया । उसकी राय में संस्कृति का तात्पर्य आदमी के चारित्र्य से था । इसलिए उसने परस्पर प्रेम करने को और हर भारतीय से स्वतंत्र व्यक्तित्व दिखाने को आह्वान दिया ।

एणाक्षी को पति-पत्नी सम्बन्ध के बारे में और पति और पत्नी के कर्तव्य के बारे में भी गहरा ज्ञान था । अपने भाई रमेश से पति का कर्तव्य और पत्नी रजनी से पत्नी का कर्तव्य उसने जता दिया । उसने इस भारत में व्याप्त आसुरी तत्व को हटाने की इच्छा प्रकट की ।

इस प्रकार माधवनजी अनुपम गुणों से युक्त स्त्री का चित्र एणाक्षी के द्वारा हमको देते हैं । शिव-तत्व का साकार रूप थी एणाक्षी । एक आदर्श पुत्री, एक आदर्श पत्नी, एक आदर्श बहन या सभी दृष्टियों से एक आदर्श महिला थी एणाक्षी ।

गोकुलदास नारंग

वाराणसी के एक धनिक, उच्चस्तरीय, आभिजात्य संपन्न औ जन-सेवक थे गोकुलदास । उनका एक ही पुत्र था रमेश । उसका जन्म होते ही उसकी माँ चल बसी । फिर उन्होंने शादी नहीं की । रात-दिन उन्होंने संगीत और साधु - सन्तोंके साथ अपना समय व्यतीत किया ।

भारतीय संगीत का उपासक और भारतीय संस्कृति में ध्यान रखनेवाले आदमी थे गोकुलदास ।

वेश्या रसूलन ने गोकुलदास से एक सन्तान की अभिलाषा प्रकट की । उसकी स्वीकृति का परिणाम "एणाक्षी" थी । अपनी पुत्री एणाक्षी पर वह गर्व अनुभव करता था । उसके पुत्र रमेश ने अमेरिका में एक काश्मीरी लड़की से शादी की । इसलिए स्नेहमयी पिता, गोकुलदास बहुत दुखी होकर जी रहे थे । अपने अन्तिम समय तक उसको दु:ख ही दु:ख मिला । पुत्र-वधु के बुरे व्यवहार में वह हमेशा फिक्र कर रहा था । एक पिता के सब गुण उसमें विराजमान थे ।

डॉ॰ सव्यसाची

काशी के विश्वनाथ मन्दिर के पार्श्व भाग में दशाश्वघाट की ओर जाने की सड़क पर डॉ॰ सव्यसाची का भव्य विलनिक् एवं औषधालय था । डॉ॰ सव्यसाची बंगाली थे । पर दीर्घकाल से उनके बाप-दादे के स्थायी रूप से वाराणसी में ही रह जाने के कारण सव्यसाची में वाराणसी संस्कृति की अच्छी छाप पड़ी थी । हिन्दी का भी उन्हें अच्छा अभ्यास था । हिन्दी में कविता-कहानियाँ आदि भी रची थीं । पर उन्हें साहित्य से अधिक संगीत में ही रुचि थी । सितार पर उन्हें कमाल हासिल था । एक संगीत मर्मज्ञ सितारिये के रूप में वाराणसी में ही नहीं, वाराणसी के बाहर भी उनकी अच्छी ख्याति फैली थी । मगर डाक्टरी ही उनकी जीविका थी । सेवावृत्ति के और आध्यात्मिक चित्तवृत्ति के होने के कारण वाराणसी निवासियों में वे बहुत ही लोकप्रिय व्यक्ति भी थे ।

प्रति दिन गंगा स्नान और विश्वनाथ की आराधना करना उनके दैनिक कार्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किये हुये थे । देखने में बहुत ही खूबसूरत थे, लम्बा-चौड़ा अत्यन्त बलिष्ठ शरीर, शुभ्र गौर वर्ण, बहुत ही भव्य मुखाकृति, लम्बी नासिका, विशाल तेजस्वी ललाट प्रदेश, तीक्ष्ण दृष्टि आदि उनकी कुछ ऐसी विशेषतायें थीं जो सभी को आकृष्ट करती थी ।

सव्यसाची ने वेश्या पुत्री एणाक्षी को सितार पढाया । इसके अलावा अक्षर ज्ञानविहीन उस लड़की को उन्होंने विद्या दी । सव्यसाची के प्रयास के फलस्वरूप एणाक्षी पढी-लिखी साहित्यिक विदुषी बन गयी । एणाक्षी की सभी प्रकार की उन्नतियों का कारण पति सव्यसाची ही थे ।

रसूलन

रसूलन की माँ हिन्दू थी और पिता मुस्लीम था । बचपन से ही माता और पिता का देहान्त हुआ था । उन दोनों के निधन के बाद कालू नामक मुसलमान ने उसका पालन-पोषण किया । उसने जीवन में कभी भी वेश्या-वृत्ति नहीं की । उसकी माँ नर्तकी थी । इसलिए लोग रसूलन को भी वेश्या मानते थे । इस कारण उसको सुयोग्य वर मिलना कठिन हो गया । उसने कालू के उपदेश के अनुसार सर्वगुण सम्पन्न गोकुलदास से एक सन्तान की अभिलाषा प्रकट की । गोकुलदास से उसकी सन्तान हुई थी । रसूलन ने अपनी पुत्री एणाक्षी को अपना सर्वस्व मान लिया । उसने रात-दिन उसपर ध्यान रखा ।

सब लोगों के प्रति उसके मन में प्रेम की भावना ही थी । रसूलन ने गोकुलदास के अन्तिम निमिष में पत्नी की तरह उसकी सेवा-शुश्रूषा की । रमेश और रजनी को भी अपनी सन्तान जैसे मानकर उसके सद्भविष्य केलिए उसने प्रयास किया ।

रमेश

गोकुलदास नारंग का एकमात्र पुत्र था डॉ॰ रमेश नारंग । रमेश और उसकी पत्नी दोनों अमेरिका में प्राध्यापक का कार्य कर रहे थे । दर्शनशास्त्र का अगाध पंडित था रमेश । वह अत्यधिक भद्र, नम्र और सरल मिजाज का युवक था । उसमें सादगी कूट कूटकर भरी थी । उसके आचार व्यवहार में और पोशाक में, खाने-पीने में भी सादगी थी । लेकिन उसकी पत्नी रजनी उसके ठीक विपरीत मिजाज की थी । इसलिए दोनों के बीच हमेशा वाद-विवाद और झगड़े भी होते थे । एक-दो बार तालाक की भी चर्चा चली थी । मगर रमेश ने हमेशा सोचा कि उसको मुकरात जैसे महानता का परिचय देना चाहिए । इसलिए वह दब जाता था और चुप हो जाता था ।

रमेश पिता के परम भक्त थे । अपने पिता से पूछे बगैर रजनी की मेधाशक्ति देखकर उसकी ओर आकृष्ट हुआ था और उसके साथ विवाह भी किया था । इसका अनुताप उसे सदा सताता रहा । पिताजी की बीमारी की खबर मिलते ही पिताजी के दर्शन कराने केलिए रजनी को भी साथ लेकर वह आया । लेकिन रजनी के स्वभाव से वह बहुत दु:खी हो गया । अन्त में रजनी का स्वभाव रणादी से प्रभावित होने से बदल गया । फिर भी न जाने रमेश ने रजनी से घृणा की ।

रजनी

रमेश नारंग की पत्नी थी रजनी । वह काश्मीरी थी । उसमें असाधारण मेधाशक्ति थी । अंग्रेज़ी भाषा में अद्भुत कमाल हासिल था । पी-एच॰डी॰ हो चुकी थी । वह भी रमेश की यूनिवेर्सिटी की प्राध्यापिका थी । किन्तु वह रमेश के ठीक विपरीत मिजाज की थी ।

वह अत्यन्त आधुनिक थी, दंभी और कर्कश स्वभाव की थी । बात-बात पर बहुत ही उग्र टेंपर में आ जाती थी और तब उसे करीब होश ही नहीं रह जाती थी । क्रोध आने पर वह एकदम पागल जैसे हो जाती थी और तब वह कुछ भी बोल सकती थी, और कुछ भी कर सकती थी । जब क्रोध नहीं रहा, तब भी उसकी मिजाज और बोली कर्कश हो रही थी । सिगरेट पीती थी और ड्रिंक भी करती थी । कपड़े कुछ इस तरह से पहनती थी कि लगता अर्धनग्न ही थी ।

रमेश के पिताजी के यहाँ रहने को उसने पसन्द नहीं किया । इसीलिए सब लोगों के सामने रमेश से उसने झगडा किया । कोई भी उसको संभाल नहीं सका । रमेश और उसके बीच हमेशा झगड़ा ही झगड़ा रहा । अंत में वह एणाक्षी से प्रभावित हो गयी । पत्नी का कर्तव्य उसने समझ लिया और फिर वह पश्चात्ताप करने लगी ।

माधवनजी इस पात्र के द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त भारतीय नारी का भयानक रूप हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं । उस प्रकार की युवती फैशनवाली बन जाती है और मिथ्या धारणा से युरोपीय संस्कार का अन्धानुकरण भी करती है ।

कालू

आदि से अंत तक सबकी सेवा में लगा हुआ व्यक्ति था कालू । माता-पिता विहीन रसूलन, कालू के हाथ से ही पला । रसूलन के उन्नमन ही उसका लक्ष्य था । लेकिन कालू को धन की लालच थी । एणाक्षी को भी धन केलिए बेचने को वह तैयार था । रोज़ शराब पीने केलिए किसी भी मार्ग से धन इकट्ठा करता था । इसकेलिए वह जो भी बुरा काम करने को तैयार था । लेकिन अपने मालिकों से उसका प्यार असीम ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रस्तुत पटकथा में पात्रों का चित्र माधवनजी ने खींचने का प्रयास किया है जो यथार्थ और जीवंत है ।

पुरुषार्थी का पात्र और चरित्र

दिलीप

"पुरुषार्थी" का प्रधान पात्र दिलीप राय ही था । अपने लक्ष्य केलिए इस कहानी के आदि से अन्त तक वह संघर्ष कर रहा था ।

दिलीप राय की एकमात्र अभिलाषा भारत का पुनर्जागरण थी । इसकेलिए उसने शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया । इसलिए उसने उच्च शिक्षा प्राप्त करने की कोशिश की । उसके माता-पिता बचपन से ही मर गये थे । उसकी देखभाल एक सितार बजानेवाला उस्ताद कर रहा था । उस्ताद ने बी·ए· या एम·ए· का कुछ अर्थ न समझा । उसने दिलीप को गान-विद्या सीखने का आदेश दिया । शिक्षा प्राप्ति केलिए एक देवी मूर्ति के पास जाकर प्रार्थना करके देवी के प्रसाद से उसने शक्ति हासिल की । तब से उसको मालूम हुआ कि उसका जन्म, जन-सेवा केलिए ही हुआ था ।

देवी की कृपा मिलने के बाद, दिलीप राय एक-एक करके विजय सोपान पर चढने लगा । एक दिन बी·ए· क्लास में अध्यापक ने सब लोगों के सामने दिलीप राय को एक बुद्धु जैसे चित्रित कर उसका अपमान किया । उसने एक आहत और अपमानित शेर जैसे प्रतिभा सम्पन्न और सच्चरित्र बनने का निश्चय किया । एक महान खिलाड़ी होने के कारण उसे एक दिन भास्कर बैनर्जी के घर आना पड़ा और सबका प्रेम-पात्र बन गया ।

दिलीप के मन में पढने की बड़ी अभिलाषा थी । इसलिए उसने लखनऊ विश्वविद्यालय के वाईस-चान्सलर की कृपा से एम॰ए॰ (अर्थशास्त्र) में एक सीट हासिल किया । तब उसने कसम खायी कि अब तक के सभी रिकार्डों को वह परीक्षा में तोड़ेगा । वहाँ के लड़कों की रागिंग का पात्र भी वह बन गया । रागिंग के कारण उषा नामक लड़की के कपोल पर उसको चुम्बन देना पड़ा । इसकी सजा भी उसको भोगनी पड़ी । यूनिवेर्सिटी के सब लोगों के सामने उस लड़की के पैर पकड़कर उसने क्षमा माँगी । लड़की ने चप्पल से उसको मारा । इस घटना से वह बहुत दुःखी हो गया ।

अर्थशास्त्र विभाग केलिए पुस्तकें खरीदने का पैसा दिलीप ने अपनी होशियारी से इकट्ठा किया । उसके कला-कार्यक्रमों ने लोगों को आकर्षित किया । उषा भी उससे प्रभावित हो गयी । एम॰ए॰ में उसने अब तक का रिकार्ड तोड डाला और प्रथम स्थान हासिल किया ।

उसके बाद शान्तिनिकेतन में प्राध्यापक का काम स्वीकार किया । तब उसकी एक जर्मन छात्रा शान्ता उसपर आकृष्ट हुई । शान्ता के साथ दिलीप का विवाह हुआ । दिलीप एक आदर्श अध्यापक और एक आदर्श पति के रूप में प्रशस्त हुआ ।

दिलीप साहसी युवक था । समुद्र की गहराई में से एक बार उसने एक युवक को बचाया । उसने ऐ॰ए॰एस॰ और एम॰एस॰एफ॰ में भी विजय हासिल की । इसलिए भारत के गृहमंत्रालय में उसको काम मिला । उसी समय उसके पुत्र को कुछ डाकुओं ने किडनाप किया । उन डाकुओं के नेता को फाँसी की सजा से बचाने के उद्देश्य से गृहमंत्रालय के अफसर दिलीप राय के पुत्र को किडनाप किया । डाकुओं का निश्चय था कि दिलीप उनके नेता को छोड़ दें और पुत्र को प्राप्त करें अन्यथा पुत्र को मार डालने की

उन्होंने धमकी दी । लेकिन कर्तव्य निर्वहण में कर्कश स्वभाववाले दिलीप ने अपनी नौकरी छोड़ दी । पुत्र-स्नेह के कारण वह पुत्र की खोज में इधर-उधर घूमा और पुत्र को बचाया ।

विनोबाजी का आदेश पाकर डाकुओं के बीच उतरकर दिलीप ने उन लोगों की समस्याओं को सुलझाने की कोशिश की । उन डाकुओं का सम्मान उसने प्राप्त किया । इस कारण वह मंत्री भी बन गया । सर्वकला वल्लभ दिलीप ने अनेक ग्रन्थों की रचना भी की ।

अनेक लोकोपयोगी काम करने पर भी दिलीप को मालूम हुआकि अपने लक्ष्य की पूर्ति अब तक नहीं हुई । इसलिए वह अपनी देवी मूर्ति के पास गया । तब उसका भाव जल्दी बदल गया और उसका सर्वस्व छोड़कर घनघोर वन की ओर यथार्थ सत्य की खोज में निकल पड़ा ।

इस कथापात्र के द्वारा माधवनजी यह दिखाते हैं कि जिसने अपने भीतर के कूटस्थ सर्वविभूति सम्पन्न आत्मदेव पर भरोसा करते हुए अपने उस परम पवित्र लक्ष्य की प्राप्ति केलिए संघर्ष और साधना की, उसने विजय लक्ष्मी प्राप्त कर ली ।

शान्ता

शान्ता जर्मन लड़की थी । उसने भारतीय आचार-विचार और वेश-भूषा स्वीकार कीं । वह भारतीय संस्कृति की उपासिन थी । यह सुन्दरी दिलीप पर आकृष्ट हुई । पत्नी का कर्तव्य उसने समझ लिया और इसके अनुसार अपना एक-एक क्षण अपने पति केलिए उसने बिताया ।

जब उसने गर्भ धारण किया तब वह बहुत कमज़ोर हो गयी । फिर भी अपने पति की हर बात पर उसने ध्यान रखा । पुत्र उसका सर्वस्व था । इसलिए पुत्र को बिड़नाप करने पर वह बिलकुल पगली बन गयी । पुत्र की वापसी पर वह आनन्द समुद्र में डूबी । अपने पति के निधन का समाचार सुनकर उसने अपने पुत्र के साथ भारत छोड़ दिया । लेकिन पति की मृत्यु की खबर गलती से हुई थी । यह जानकर वह वापस आयी । अपने पुत्र की दूसरी माता के रूप में दिलीप की पुरानी साथिन उषा को मानने की हृदय-विशालता शान्ता को थी । लेकिन दिलीप ने उन लोगों को छोड़ दिया जिसपर शान्ता बहुत दु:खी हो गयी । उसका हृदय सदा दिलीप केलिए तड़पता रहा । एक स्त्री-हृदय की संपूर्ण भाव भंगिमा उसकी उद्भावना के साथ माधवनजी ने उनपर लादने का प्रयास किया है, यह सराहनीय है ।

उषा

उषा घमंड लड़की थी । रागिंग के कारण दिलीप को उसके कपोल पर चुम्बन देना पड़ा । वह यह सह नहीं सकी । इसकेलिए दिलीप को सजा मिली । जब दिलीप ने उषा का पैर पकड़कर क्षमा मांगी तब उसने अपने चप्पल से उसको मारा । फिर भी उसका गुस्सा कम नहीं हुआ । दिलीप के प्रति उसके मन में विद्वेष की भावना थी । उसने सोचा कि उसकी ताकत के सामने दिलीप बिलकुल कुछ नहीं है । लेकिन दिलीप की कला-निपुणता, अध्ययन-पटुता आदि देखकर वह दिलीप से प्रभावित हो गयी । अपनी गलती समझकर वह पश्चात्ताप विवश हो गयी । दिलीप ने एम॰ए॰ में गोल्ड मेडल हासिल किया । बाद में शान्तिनिकेतन में प्राध्यापक बन गया । उषा ने दिलीप की याद में बहुत वर्ष बिताये । उसका विवाह हो चुका था । लेकिन पति कुछ महीनों के बाद मर गया । उसको दिलीप का हर समाचार मिलता रहा । कई वर्षों के बाद दिलीप को रेलगाडी में देखते वक्त पश्चाताप से बिलख-बिलख कर वह रोयी और दिलीप के चप्पल लेकर उसने खुद कपोल में

उषा दिलीप की सेवा केलिए तैयार होकर उसकी पत्नी और पुत्र की खोज में निकली । अंत में दिलीप की महान लक्ष्य-प्राप्ति केलिए उसने मूल्यक सहायता की ।

इन प्रमुख कथापात्रों के अलावा माधवनजी के "पुरुषार्थी" में अनेक लघुपात्र भी है । हर पात्र सद्गुण संपन्न और सत्यपथ की खोज में निकलनेवाले है ।

माधवनजी यथार्थत: हमारे सामने कुछ कर्मयोगियों को ही "अनामंत्रित मेहमान" और "प्रसववेदना" (दो भाग), पटकथा "एणाक्षी" और "पुरुषार्थी" के द्वारा प्रस्तुत करते हैं ।

आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों में कथोपकथन का स्वरूप

अनामंत्रित मेहमान में कथोपकथन

"अनामंत्रित मेहमान" में अधिकांश कथोपकथन स्वाभाविक, सरल और चुस्त हैं, किन्तु अनेक स्थानों पर माधवनजी ने लम्बे-लम्बे संवाद प्रस्तुत किये हैं । इस उपन्यास की शैली वर्णनात्मक है और पात्रों की मानसिक विचारधाराओं को उद्घाटन करनेवाली है । इस कारण ये लंबे संवाद भी कथोपकथन के गुणों से रहित नहीं है, प्रासंगिक और यथार्थ लगते हैं ।

लंबे कथोपकथनों द्वारा माधवनजी ने पात्रों की भावनाओं और उनके मानसिक क्रिया-व्यापारों का मार्मिक अंकन किया है । आदर्श के उपस्थापन और व्यक्तित्व के प्रकाशन में ये सहायक सिद्ध होते है । दत्तात्रेय, रामचन्द्र , सरला, साधु बाबा आदि के लंबे-लंबे वार्तालाप इन लोगों के आदर्श, व्यक्तित्व, मानसिक व्यापार आदि समझने केलिए योग्य है ।

उदाहरण केलिए दत्तात्रेय का यह वार्तालाप देखिए "मैं दीन-दुखियों के आँसू पोंछने जन्मा हूँ । आपके जैसे सरकारी कुर्सी पर बैठकर शासक वर्ग के रोब को कर्ज लेकर इस प्रकार के निम्न स्तर के सुख भोगने नहीं आया हूँ । ऐसे निम्न स्तर के सुख का मुक्त समाज में, स्वतंत्र पुरुषों के बीच, विद्वानों और साधकों के समक्ष कोई मूल्य नहीं होता । ....
मेरा सुख और प्रतिष्ठा रोब और बड़प्पन विधवा को सधवा बनाने में है, मूर्ख को विद्वान बनाने में है, रोगी को स्वस्थ करने में है और सारे समाज को एक धर्म-सूत्र में बाँधने में है । ....
मैं लाख-लाख बार नरक में जाकर भी मेरे इस दुखी देशवासियों को सुख देना चाहता हूँ । .... मुझे न यश लेना है, न श्रद्धा कमानी है, न पैसा जमा करना है, न व्याह करना है, न घर-गृहस्थी जमानी है । मैं साधारणों से एकदम भिन्न हूँ । मैं एकदम असाधारण हूँ ।"[1] इस प्रकार के लम्बे कथोपकथन द्वारा कथा का विकास भी होता है ।

संवाद बड़े ही रोचक और पात्रानुकूल हैं । संवादों की यह स्वाभाविकता चरित्र-चित्रण केलिए सहायक सिद्ध हुई है । पात्र के सरल, स्वाभाविक और सहज संभावित प्रश्न और अनुकूल जिज्ञासा और मनोभाव पाठकों को सीधे प्रभावित करते हैं । साधु बाबा और रामचन्द्र के संवाद आध्यात्मिकता, भारतीय दर्शन आदि पर आधारित हैं । लेकिन दत्तात्रेय का वार्तालाप इससे भिन्न है ।

इस उपन्यास में स्वाभाविक और लघु कथोपकथनों के अनेक उदाहरण प्राप्त हैं । छोटे-छोटे वाक्यों में माधवनजी बड़ी ही सुन्दरता के साथ सरल और स्वाभाविक कलात्मकता लाते हैं जिसे पढ़ कर पाठक आगे की कथा को जानने केलिए उत्सुक हो उठते हैं । इसके साथ इस छोटे वाक्यों की

---

1. स्वाभिक्त मेहमान - आनन्द शंकर माधवन, पृ.242

अर्थव्याप्ति भी अपार है । जैसे - "प्रत्येक भारतीय साम्यवादी मूलत: एक गांधीवादी है ।"

कथोपकथन द्वारा ही माधवनजी अपने मौलिक विचारों को प्रकट करते हैं । वातावरण के अनुकूल हैं संवाद । कथोपकथन की नाटकीयता उपन्यास को सजीव एवं प्रभावोत्पादक बनाती है ।

प्रसववेदना में कथोपकथन

"प्रसववेदना" की कथोपकथन शैली भी स्वाभाविक, सरल और चुस्त है । इसमें लम्बे-लम्बे कथोपकथन के साथ लघु कथोपकथन भी होते हैं । ये लम्बे कथोपकथन उपन्यास के विकास और पात्रों के चरित्र को व्यक्त करने योग्य हैं ।

उपन्यास में सर्वत्र संवाद बडे ही रोचक और पात्रानुकूल है । संवादों की यह स्वाभाविकता चरित्र-चित्रण केलिए सहायक सिद्ध हुई है । पात्र के सरल, स्वाभाविक और संभाव्य प्रश्न और अनुकूल जिज्ञासा और मनोभाव पाठकों को सीधे प्रभावित करते हैं । यशवन्त और संघमित्रा की वार्तालाप उच्च स्तरीय है । छोटे-छोटे वाक्यों में माधवनजी बडी ही सुन्दरता के साथ सरल और स्वाभाविक विचारविमर्श को स्थापित करते हैं ।

एणाक्षी का कथोपकथन

"एणाक्षी" पट-कथा है । इसलिए इसमें कथोपकथन की सर्वाधिक प्रधानता है । उपन्यासकार के द्वारा कथन बिलकुल नहीं है ।

---

1. अनामंत्रित मेहमान - आनन्द शंकर माधवन, पृ.115

इसलिए लंबे-लंबे कथोपकथन और लघु कथोपकथन का मणिकांचन योग इसमें सर्वत्र दर्शनीय है । यही इस रचना को रोचक बनानेवाला तत्व भी है ।

पुरुषार्थी का कथोपकथन

"पुरुषार्थी" की कथोपकथन शैली भी "एणाक्षी" की जैसी है । कथोपकथन केलिए इसमें स्तुत्यर्ह स्थान होता है । इसमें कथोपकथन के द्वारा ही कथा को आगे बढाया जाता है । लम्बे-लम्बे कथोपकथन के साथ लघु कथोपकथन की छटा इसमें भी है । इन रोचक वार्तालापों के द्वारा कथाको आगे पढने की इच्छा पाठकों के मन में पैदा होती है ।

माधवनजी ने कथोपकथन की सिद्धि ही पायी है जिससे अपने उपन्यासों को रोचक बनाने में वे समर्थ रहे । कथावर्णन की एकरसता केलिए कथोपकथन कितना सहायक है वह इस ग्रन्थ से सुव्यक्त होता है । इसमें सन्देह नहीं कि कथोपकथन की सुचारु योजना से माधवनजी के उपन्यासों का सौन्दर्य बढ गया है ।

आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों की शैलीगत विशेषतायें

अनामंत्रित मेहमान की शैलीगत विशेषतायें

हिन्दी एक विस्तृत क्षेत्र की भाषा है । उसमें विभिन्न स्तरों के लेखक आगे बढ रहे हैं । विभिन्न प्रदेशों के लेखक इस भाषा में लेखनी चल रहे हैं । इसलिए भाषा और भाषा की शैली में भिन्नता का होना अनिवार्य है । आनन्दशंकर माधवन दक्षिण भारतीय है ।

G3745

इस कारण उनकी भाषा और शैली एक दक्षिणी हिन्दी रचनाकार के अनुकूल रहती है । माधवनजी का भाषा और शैली के प्रयोग कुशलता और अधिकार प्राप्त है, यह उनकी रचनाओं से प्रमाणित है ।

वर्णनात्मक शैली में लिखा हुआ माधवनजी का उपन्यास "अनामंत्रित मेहमान" भाषा की दृष्टि से देखने पर बहुत सरल है । उसकी नाटकीय शैली के कारण उपन्यास बहुत रोचक बना है । एक उदाहरण देखिए "मालती से अब एकदम रह नहीं गया । फिर आँसू पोंछने और कातरता से सरला की ओर देखने लगी । वह भावावेश में कहती गयी, "सरला बेटी, यह बूढी तुम्हारे बगैर रह नहीं सकती । मेरे ऊपर रहम करो सरला, वह आगे कुछ कह नहीं सकी । सरला केलिए यह भाव आश्चर्यजनक रहा । उसको लगा दौड़कर क्यों नहीं इसकी गोद में बैठ जाय । फिर सोची, मैं बच्ची तो हूँ नहीं । बडी हूँ । लोग क्या समझेंगे ? फिर सोची यहाँ कौन बैठा है समझने केलिए । मैं गोदी में बैठूँगी ही, ज़रूर बैठूँगी । वह दौड़कर मालती की गोद में जाकर गिर गयी और नाना तरह के खेल करने लगी मालती को मानों निधि मिल गयी । वह हर प्रकार से उसे दुलार करती हुई वहीं बैठी रही ।"[1]

कुछ स्थानों में तत्व-चिन्तन है । उदाहरणकेलिए - "नींद तो उन्हीं को आ सकती है, जिनके माथे में कोई समस्या नहीं ।"[2] कुछ स्थान दार्शनिकता से कूट कूट कर भरा हुआ है । देखिए - "हिन्दुओं के जितने देवी-देवता है, वस्तुत: एक-एक विचार के प्रतीक मात्र है ।

---

1. अनामंत्रित मेहमान - आनन्द शंकर माधवन, पृ.112
2. वही, पृ.87

इतना ही नहीं, भारतीय संगीत की जितनी राग और रागिणियाँ हैं सब एक-एक भाव और रस के प्रतीक मात्र हैं[1]।"

इस प्रकार अनेक स्थानों में हम देखते हैं कि कथाकथन की शैली आध्यात्मिक बन जाती है। मातृभाषा न रहते हुए भी माधवन की हिन्दी में मुहावरों का प्रयोग सुगमता से होता है। शब्द चयन में वे यथेष्ट उदार हैं। माधवनजी का उपन्यास "अनामंत्रित मेहमान" शैली की दृष्टि से श्रेष्ठ ही कहा जा सकता है।

प्रसववेदना की शैलीगत विशेषतायें

"प्रसववेदना" की शैली भी वर्णनात्मक है। फिर भी इस उपन्यास में भी नाटकीयता, तत्वचिन्तन, दार्शनिकता, आध्यात्मिकता का पुट मिल जाता है। कहीं कहीं समुचित मुहावरों का प्रयोग भी मिलता है। मुहावरों का कुछ उदाहरण देखिए - "पिंजडे का पंछी पिंजडे का पंछी ही रह गया", "काबू में रखना", "फाँसी पर झूला देना", "माथा खाना" आदि।

"मणिका फिर कुछ नहीं बोली। चाटर्जी भी चुप रहे। पर चाटर्जी बहुत व्यथित हो रहे थे। गीता जो बगल में खडी थी अब तक, बुरी तरह रोने लग गयी थी[2]।" इसमें नाटकीयता देख सकते हैं। तत्व-चिन्तन का उदाहरण देखिए - "मर्द सभी एक है, एक ही स्वभाव के हैं, चाहे वह किसी भी धर्म के कहलावें, किसी भी देश के जन्मे हो[3]।"

---

1. अनामंत्रित मेहमान - आनन्द शंकर माधवन, पृ.138
2. प्रसववेदना (भाग - I) - आनन्द शंकर माधवन, पृ.357
3. वही

आध्यात्मिकता और अलौकिकता भी इसमें कूट कूट कर भरी हुई है । कथाकथन की शैली को भी माधवनजी ने इस उपन्यास में स्वीकार किया है ।

एणाक्षी की शैलीगत विशेषताएँ

"एणाक्षी" पट-कथा होने के कारण दृश्यप्रधान है । इसलिए इसकी घटनायें चित्र जैसे माधवनजी ने खींची हैं । उदाहरण देखिए - "तारापुर केंट रेलवे स्टेशन । प्लाटफारम नम्बर एक । कलकत्ता से अपर इन्डिया एक्सप्रेस आनेवाली है । प्लाटफारम यात्रियों से भरा है । फस्टक्लास वेयटिंग रूम के आगे गाडी की प्रतीक्षा करते हुये एक सज्जन एक कुर्सी पर बैठे हैं । उम्र करीब पचास वर्ष की । बिलकुल स्वस्थ । लगता नहीं कि पचास वर्ष का है । गौर वर्ण, तेजस्वी आंखें, हृष्टपुष्ट मनमोहक लावण्य अंग अंग में ।"[1] नाटकीयता भी इस पट-कथा में प्रचुर मात्रा में है । नाटकीयता का एक उदाहरण देखिए - "तेरे बगैर मैं कैसे जीउँ ? और क्यों जीउँ ? मरना है तो हम दोनों एक साथ मरे । वही अच्छा है । जहाँ भी तुम जाओ मुझे भी साथ ले चली । मौत में भी ।"[2] इसके साथ तत्व-चिन्तन भी है । उदाहरण देखिए - "सत्य सत्य है । उसे छिपाना मूर्खता है[3] ।"

इसमें सरल भाषा का उपयोग होता है । कहीं कहीं मुहावरे छटा भी देखने को मिलती है ।

---

1. एणाक्षी - आनन्द शंकर माधवन, पृ.।
2. वही,
3. वही,

पुरुषार्थी की शैलीगत विशेषतायें

"पुरुषार्थी" भी पट-कथा है । इसलिए इसमें पात्रों के वार्तालाप द्वारा ही कथा का अधिकांश विस्तार होता है । इसमें तत्व-चिन्तन, चित्रात्मकता, अलौकिकता आदि हैं । चित्रात्मकता का उदाहरण देखिए - "घनघोर बीहड जंगल । डरावना वातावरण । पर मनमोहक और श्रीसम्पन्न प्राकृतिक छटा की चारों ओर । आधी रात का समय । एक अजीब नीरवतासर्वत्र । रह रहकर उल्लुओं और अन्य वन-पक्षियों की आवाज़ें सुनाई दे रही हैं । अन्धकार का भी अपना एक एक रहस्यमय प्रकाश है । उस मन्द प्रकाश में यत्र तत्र वन्य पशु स्वच्छन्द विचरण करते दिखाई देते हैं । फिर भी कुछ भी साफ दिखाई नहीं दे रहा है[1]।"

"पुरुषार्थी" में अलौकिकता भी है । उदाहरण स्वरूप देखिए - "एकाएक उसे लगा दूर कहीं से गायन की आवाज़ सुनाई दे रही है, बहुतही दूर कहीं से, ठीक वही राग वागेश्वरी जो वह गा रहा है । युवक आश्चर्य चकित हो चुप हो जाता है और एकाग्रचित्त से उस ओर ध्यान देता है । जैसे जैसे उसका ध्यान उस गायन की ओर केन्द्रित हो जाता है, वैसे वैसे उसे लगता है वह गायन निकट आता जा रहा है । उसे लगता है वह अब एकदम बुलन्द आवाज़ में एकदम नज़दीक सुनाई देने लगी है । वह चारों ओर देखने लगता हैं कहीं कोई है तो नहीं । उसे लगता यह आदमी नहीं हो सकता, क्यों कि लगता है समस्त अन्तरीक्ष ही गा रहा है[2]।"

---

1. पुरुषार्थी - आनन्द शंकर माधवन, पृ.1
2. वही, पृ.7

इसमें तत्व-चिन्तन सर्वत्र है । उदाहरण केलिए देखिए "अनादि काल से पुरुष के प्रति स्त्री की यह अनंत अमिट चाह । यह पागल तड़प, यह मर मिटने की भी तैयारी, यह क्या है प्रभु क्या, कभी पुरुष इस दर्द और तड़प का मर्म और रहस्य समझ सकेगा ।"[1]

इसके अलावा माधवनजी अपने उपन्यासों में चरित्रों के परिवेश, वातावरण, रहन-सहन और वेश-भूषा आदि का ऐसा सूक्ष्म चित्रण करते हैं कि पाठक के सम्मुख पात्र, वातावरण आदि का चित्र सजीव हो उठता है ।

आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों का उद्देश्य

अनामंत्रित मेहमान का उद्देश्य

माधवनजी ने "अनामंत्रित मेहमान" की सृष्टि कुछ सद्लक्ष्य से की है । उपन्यास के मुख्य लक्ष्य ये हैं - §1§ भारतीय संस्कृति का पुनर्जागरण §2§ आध्यात्मिकता की श्रेष्ठता अभिव्यक्त करना §3§ अद्वैत की स्थापना और भारतीय दर्शन के अध्ययन का आह्वान §4§ सत्य पथ का दर्शन कराना ।

1. भारतीय संस्कृति का पुनर्जागरण

भारत को ऋषि-मुनियों की साधना द्वारा प्राप्त अक्षय और अमूल्य संस्कृति ~~प्राप्त~~ है । यह संस्कृति अंग्रेज़ों के आगमन से खोई हुई स्थिति में है

---

1. पुरुषार्थी - आनन्दशंकर माधवन, पृ.394

भारत को स्वतंत्रता मिली । फिर भी अंग्रेज़ों का अनुकरण छोड़ने को भारतीय जनता तैयार नहीं हैं । स्वतंत्र भारत को अपनी स्वतंत्र संस्कृति पर ज़ोर देना चाहिए । इसलिए माधवनजी ने इसमें हमारी संस्कृति को पुनर्जागृत करने का प्रयत्न किया है ।

2· आध्यात्मिकता की श्रेष्ठता

भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता को महत्वपूर्ण स्थान है । इसलिए इस उपन्यास में हम आध्यात्मिकता की झलक स्पष्ट रूप से देख सकते हैं । ईश्वर की शक्ति या ईश्वर की सत्ता का परामर्श इस उपन्यास में सब कहीं है । नास्तिक भी आस्तिक बन जाता है । लेकिन ईश्वर की खोज केलिए मन्दिर, गिरजाघर, मस्जिद आदि में जाने के विरुद्ध आवाज़ इसमें है । ईश्वर हर जगह में व्याप्त है । माधवनजी यह दिखाना चाहते हैं कि इस घोर कलियुग में भी ईश्वर ज़बरदस्त रूप में क्रियाशील है ।

3· अद्वैत की स्थापना और भारतीय दर्शन के अध्ययन का आह्वान

भारतीय दर्शन का मूलाधार है अद्वैत दर्शन । शंकर के अद्वैत दर्शन की झलक माधवनजी के विचारों में विद्यमान है । पूरा संसार एक ही सत्य, एक ही स्थिति का अद्वैत रूप है । भिन्न समझना भ्रम है । इस दुनिया की वास्तविकता समझने केलिए सब लोगों को भारतीय दर्शन के अध्ययन करने का आह्वान माधवनजी देते हैं ।

4. सत्य पथ का दर्शन

संकीर्ण परिधियों में आबद्ध दलगत राजनीति, सम्प्रदायगत रूढियों से जर्जरित धर्म, मनुष्य को शान्ति और सुख नहीं दे सकता है । अगर आदमी जीवन का सच्चा निखार चाहता है, वह धनी होने के बदले धन्य होना चाहता है तो सत्य पहचानने की चेष्टा करनी होगी । "अनामंत्रित मेहमान" में माधवनजी ने इसी सत्य को पहचानने की दिशा में प्रकाश फैलाया है जिससे इनसान तथ्य को देखकर अर्थ को सही रूप में समझे, जीवन की दिशा को सही मार्ग पर चला सके । जीवन को विराट् पृष्ठभूमि पर यथार्थ काँटों के बीच से निकालकर मनुष्य किस प्रकार सत्यान्वेषण करने में समर्थ हो सकता है, इसीकी प्रेरणा देना "अनामंत्रित मेहमान" का मुख्य लक्ष्य है ।

प्रसववेदना (दो भाग) का उद्देश्य

"प्रसववेदना" (दो भाग) का मुख्य लक्ष्य आज की स्त्रियों की शोचनीय स्थिति दिखाना है । इसके साथ स्त्रियों का उद्धार, भारतीय संगीत की सुरक्षा, धार्मिक भेद मिटाने का श्रम, शासन तंत्र की ढिलाई, साधु लोगों की अद्भुत शक्ति आदि का संकेत भी माधवनजी इसमें करते हैं ।

आज की नारी की दयनीय स्थिति

"प्रसववेदना" की मुख्य समस्या है भारतीय नारी की शोच्यावस्था । संसार का सबसे अधिक शोषित वर्ग स्त्री ही है । मर्द स्त्रियों को अपने शौक के लिए इस्तेमाल करते आये हैं । स्त्री कितने ऊँचे दर्जे की या उच्च शिक्षावाली रहे तो भी कोई प्रयोजन नहीं है ।

इसका उदाहरण है इस उपन्यास की सुजाता । ढाका विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, विश्वविख्यात दार्शनिक और लेखक की बेटी थी सुजाता । ढाका विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में प्रथम दर्जे से उसने एम·ए· पास किया था और गोल्ड मेडल भी हासिल किया था । बाद में उसने उसी विश्वविद्यालय से डाक्टरेट भी ली थी । सुजाता चक्रवर्ती, एम·ए·, पी-एच·डी· गोल्ड मेडलिस्ट की कहानी हर भारतीय स्त्री की दर्द भरी कहानी है ।

मुस्लीम पठानों ने सरस्वती की उस वरद पुत्री को इच्छा के अनुसार काल कोठरी में बन्द करके इस्तेमाल किया । पेशवार से दिल्ली तक रेलगाडी में आते समय उस दुर्बल-दुर्गन्धित मृतप्राय स्त्री शरीर को भी दुष्ट मर्दों ने नहीं छोड़ा । इस प्रकार की दयनीय स्थिति केवल भारतीय स्त्री की है ।

नारि के उत्थान का प्रयत्न

सुजाता की कहानी सुनकर चाटर्जी, सिंह आदि ने सुजाता से मिलकर स्त्रियों के उत्थान केलिए "संघमित्रा-मिशन" की स्थापना की । स्त्रियों की समस्यायें आज प्रधान रूप से तीन हैं - रोग, भोजन और अज्ञान । इन तीनों समस्याओं में भी प्राथमिक महत्व रोग को दिया गया । इसलिए "संघमित्रा मिशन" ने सबसे पहले देश में सर्वत्र चिकित्सा मन्दिर की स्थापना की । बाद में उन्होंने सर्वत्र नाना प्रकार के उद्योग धन्धों की स्थापना करने केलिए प्रयास किया । इसके द्वारा भोजन की समस्या हल हो यह आशा रखी गई । अनेकों स्तर के विद्यालयों और महाविद्यालयों की स्थापना करके अज्ञानान्धकार से स्त्रियों को मुक्त करने का प्रयास भी किया गया । यह "संघमित्रा मिशन" नारी के उद्धार के साथ समाज के उद्धार का लक्ष्य करके स्थापित की हुई संस्था है ।

धार्मिक भेद का निर्मार्जन

धर्म के नाम पर संघर्ष करनेवालों को मिटाने का उद्यम इस उपन्यास में देखा जा सकता है । संसार में एक ही धर्म है और सब धर्मों का लक्ष्य भी एक है । राम और अल्लाहू एक है । इस जाति भेद को समाप्त करने केलिए उस्तादजी, यशवन्त, केयूम, शैला आदि ने प्रयास किया । इसलिए वे शहीद भी बन गये ।

भारतीय संगीत की सुरक्षा

भारतीय संगीत को माधवन जी इस उपन्यास में श्रेष्ठ स्थान देते हैं । वे भारतीय संगीत को आध्यात्मिक अनुष्ठान के रूप में देखते हैं । भारतीय संगीत संसार के परम सत्य को समझने का मार्ग है । सिनेमा गीतों के विरुद्ध हैं माधवनजी । यशवन्त, उस्ताद आदि भारतीय शास्त्रीय संगीत की अनगिनत प्रतिभायें हैं ।

शासनतंत्र की ढिलाई और ईमानदारी का अभाव

कर्मचारी और अफसर लोग आज अपने लाभ मात्र केलिए शासन कार्य चलाते हैं । पैसा कमाना उन लोगों का मुख्य लक्ष्य है । इसको समाप्त करके ईमानदारी से शासन तंत्र चलाने का आदेश इस उपन्यास में मुखरित है ।

साधु लोगों की अद्भुत शक्ति

अपनी तपस्या और साधना से साधु लोग अद्भुत शक्ति हासिल करते हैं । इस उपन्यास के साधु बाबा अपनी इस शक्ति से यशवन्त के भूत और भविष्य के बारे में उनको संकेत देता है । उसी प्रकार की अद्भुत विभूतियाँ हैं यशवन्त और बशीर अली खाँ । इस प्रकार के अनेक महान लक्ष्य इस उपन्यास में सर्वत्र प्राप्त होते हैं ।

एणाक्षी का उद्देश्य

आनन्द शंकर माधवन ने कुछ महत् लक्ष्य रखकर "एणाक्षी" नामक नट-कथा की रचना की है । शिव सत्य की विजय, पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति से उत्पन्न मनुष्य का भयावह रूप, भारतीय अतीत का वैज्ञानिक गुण, सेवा और त्याग की क्षमता आदि को पाठकों को समझाना ही प्रस्तुत रचना से माधवनजी का उद्देश्य है ।

शिव सत्य की विजय

एणाक्षी शिवसत्य है । शिव के प्रसाद रूप में रसूलन को गोकुलदास द्वारा प्राप्त पुत्री है एणाक्षी । वह शिव सत्य एणाक्षी शिव की पूजा-आराधना में लगी रहती है । वह सद्गुण सम्पन्न, सकलकलावल्लभा है । उससे प्रभावित होकर कई लोग सद्कार्य की ओर बढते हैं। इस प्रकार शिवसत्य की विजय दिखाने केलिए ही माधवनजी इस उपन्यास की नायिका "एणाक्षी" को चित्रित करते हैं ।

पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति के अनुकरण से उद्भूत स्त्री का भयावह रूप

हम भारतीय पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण करते हैं । इसका दृष्टान्त है इस पट-कथा की रजनी नामक लड़की । अपने पति से हमेशा झगड़ा करके सिगरेट पीकर, ड्रिंक्स लेकर, क्लब आदि में घूमनेवाली उस काश्मीरी लड़की का भयावह रूप माधवनजी हमको दिखा देते हैं ।

भारतीय संगीत का वैज्ञानिक गुण

माधवनजी भारतीय संगीत को विज्ञान मानते हैं । जब एणाक्षी बेहोश होकर पड़ी रही तब सव्यसाची के सितार वादन से एणाक्षी को होश वापस आते हैं ।

सेवा और त्याग की क्षमता

"एणाक्षी" के पात्र सेवा-तत्पर और त्याग सम्पन्न हैं । सव्यसाची, गोकुलदास, कालू, रमेश, एणाक्षी आदि के द्वारा माधवनजी ने यह गुण दर्शाया है ।

पुरुषार्थों का उद्देश्य

लक्ष्य प्राप्ति केलिए प्रयास करते समय हमको ज़रूर फल मिलता इस पट-कथा का मुख्य उद्देश्य भी यह है । दिलीप राय हमारे देश को सुधार करने की या बृहत्तर भारत के सृजन करने की कोशिश करता है ।

लेकिन वह बी॰ए॰ में कई बार फेल हो जाता है । इस से दु:खी होकर देवी के सामने अपनी समस्याओं को समर्पित करके बिलख-बिलख कर रोकर वह प्रार्थना करता है । तब उसको देवी से अपना लक्ष्य निभाने की शक्ति प्राप्त होती है । वह अपनी परम पवित्र लक्ष्य केलिए संघर्ष और साधना करने को तैयार होता है और विजय श्री प्राप्त करता है ।

एक योग्य पत्नी का धर्म माधवनजी शान्ता के सहारे चित्रित करते हैं । उसी के द्वारा माधवनजी यह दिखाना चाहते हैं कि हमारी गलती केलिए हमें ज़रूर पश्चात्ताप करना चाहिए । मध्यप्रदेश के डाकुओं की कुछ समस्या और उसके हटाने का श्रम भी इस पट-कथा के द्वारा माधवनजी करते हैं ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सद् लक्ष्यों से संपन्न और भारतीयता की परंपरा एवं संस्कृति से ओत-प्रोत है आनन्द शंकर माधवन के समस्त उपन्यास ।

आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों की सममामयिक उपन्यासों के साथ तुलना

आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों के विशेष अध्ययन से हमको ज्ञात होता है कि प्रेमचन्दयुगीन उपन्यास की प्राय: सब विशेषतायें उनके उपन्यास में हैं । माधवनजी भी गांधी-विचारधारा से प्रभावित होकर प्रेमचन्द युगीन उपन्यासकारों का अनुसरण करते हैं । प्रेमचन्दयुग में सुधारवादी दृष्टिकोण को अधिक सूक्ष्म एवं कलात्मक रूप मिला है । माधवनजी का सबसे बड़ा लक्ष्य है भारत का सुधार । प्रेमचन्दयुगीन उपन्यासकारों के जैसे नारी-वर्ग की विभिन्न समस्यायें, धर्म एवं व्यक्तिगत भेदभाव, परम्परागत सामाजिक कुरीतियाँ और अन्धविश्वास, धार्मिक-नैतिक बाह्याडम्बर, ज़मीन्दार पूंजीपति की निरंकुशता, सरकारी कर्मचारियों का अन्याय-अत्याचार,

आध्यात्मिकता, दार्शनिकता एवं भारतीय संस्कृति का पुनर्जागरण आदि प्रेमचन्दयुगीन तथ्य माधवनजी के उपन्यासों में भी स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं ।

फिर भी माधवनजी एक अलग व्यक्तित्व रखते हैं । वे उपन्यास में शिल्पगत सौन्दर्य से बढकर वास्तविकता पर तथा जीवन लक्ष्यों को व्यक्त करने पर अपनी सार्थकता अनुभव करते हैं।

निष्कर्ष

आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों के लक्ष्य

आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों के लक्ष्य ये हैं - §1§ देश का सुधार §2§ कला की सुरक्षा §3§ आध्यात्मिकता की रक्षा §4§ भारतीय दर्शन और संस्कृति का पुनर्जागरण ।

1. देश का सुधार

भारत का नव सृजन यज्ञ ही है आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों का लक्ष्य । देश के सुधार केलिए शिक्षा की आवश्यकता, स्त्रियों का उद्धार, शासन तंत्र की ढिलाई दूर करने के उपाय, धार्मिक संघर्ष का निवारण, अन्धविश्वास और सामाजिक कुरीतियों का निर्मार्जन, ज़मीन्दार-पूँजीपतियों के अच्छे सम्बन्ध आदि की आवश्यकता है । माधवनजी को अपने उपन्यासों में इन सभी को उद्घाटित करने के सफल प्रयास करते हुए देख सकते हैं ।

"अनामंत्रित मेहमान"का दत्तात्रेय, "प्रसववेदना" की सुजाता और यशवन्त, "एणाक्षी" की एणाक्षी, "पुरुषार्थी" का दिलीप राय आदि की ज़िन्दगी देश केलिए अर्पित है ।

भारत में स्त्री कीस्थिति बहुत शोचनीय है । उन लोगों के सुधार केलिए पहले उनको शिक्षा देने का मार्ग ढूंढना चाहिए । शिक्षाविहीन स्त्री पशु जैसी है । प्रत्येक माता को एक-एक विश्वविद्यालय बनना होगा । बच्चे का भविष्य माता के हाथ में निर्भर रहता है । इसलिए स्त्री शिक्षा केलिए अनेक विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की स्थापना आवश्यक है । साथ ही रोगियों की इलाज केलिए आस्पताल खोलना चाहिए और बेकारी की समस्या दूर करने केलिए कारखानें स्थापित करने चाहिए । "प्रसववेदना" उपन्यास का यही ध्येय है । "अनामंत्रित मेहमान" में दत्तात्रेय द्वारा उषा को शिक्षा मिलती है । उसी प्रकार "एणाक्षी" में एणाक्षी को डॉ·सव्यसाची सिखाता है । इस तरह प्रत्येक उपन्यास में स्त्री शिक्षा का स्वरूप विद्यमान है

स्त्री को शिक्षा मिले तो हर परिस्थिति के साथ ललकार कर वह जीने की ताकत पायेगी । उदाहरण केलिए "प्रसववेदना" में सुजाता कितनी कठिनाईयाँ सहती है । लेकिन शिक्षित होने के नाते उन सबको पार करने की शक्ति उसको प्राप्त होती है । देश के सुधार केलिए काम करने की प्रबल इच्छा भी उसमें है । दिलीप राय कई बार बी·ए· में फेल हो जाताहै । निराश न होकर वह देवी से प्रार्थना करके शक्ति हासिल करता है । "एणाक्षी" की एणाक्षी, "अनामंत्रित मेहमान" का दत्तात्रेय आदि शिक्षित होने के कारण देश की समस्याओं को समझने की ताकत उनको प्राप्त होती है

समाज को एक धर्म-सूत्र में बाँधने का प्रयास माधवनजी के सब उपन्यासों में होताहै । "प्रसववेदना" के यशवन्त, शैला, उस्ताद और केशव इसी केलिए शहीद बन गये । "अनामंत्रित मेहमान" में दत्तात्रेय ,

"एणाक्षी" में एणाक्षी और "पुरुषार्थी" में दिलीप राय आदि इस धार्मिक भेद को समाप्त करने केलिए आवाज़ उठानेवाले हैं ।

सामाजिक कुरीतियों और अन्धविश्वासों के निमर्जिन का प्रयास माधवन जी के उपन्यासों में हम देख सकते हैं । माधवनजी ने "अनामंत्रित मेहमान" के दत्तात्रेय का चित्रण इसी उद्देश्य से किया है । वह सारे अनाचारों को दूर करने की कोशिश करता है । गेरुआ वस्त्र पहनकर इधर-उधर घूमनेवाले और धोखेबाज साधुओं के विरुद्ध मूर्तिपूजा, मन्दिर, छुआ-छूत आदि के विरुद्ध दत्तात्रेय आवाज़ उठाता है । दत्तात्रेय का कथन देखिए - "समाज को उसके कुसंस्कार और दुर्वृत्ति से उबारकर उसे सत्य के दर्शन कराना है, सत्य केलिए जीने देना है । इसके लिए आप लोगों के गेरुआ कपडे, भजन-कीर्तन आदि व्यवस्था को मिटा देना पडेगा । मेरा दृढ मत है कि काल्पनिक भागवत् शक्ति पर विश्वास करने से व्यक्ति कभी भी आत्मनिर्भर नहीं हो सकेगा । वह सदा ईश्वरीय कृपा के भरोसे पर बैठा रहेगा, उठकर काम में नहीं लगेगा । भक्ति कमज़ोरी की ही परिचायक है । वह कभी मनुष्य को खड़ा होने नहीं देगी । वस्तुत: इस ईश्वर और भक्ति मार्ग ने ही देश को निर्वीर्य और निस्तेज कर दिया ।"[1]

इस भारत देश की मुख्य आपत्ति शासन तंत्र की ढिलाई है । अफसर लोग उनके सुख और उनकी इच्छा के अनुसार देश का काम चलाते हैं । इसलिए लोग बहुत कठिनाईयाँ अनुभव करते हैं । शासन के अवगुण के कारण दत्तात्रेय को कई वर्ष जेल-जीवन बिताना पड़ा । कर्मचारी नीति और कर्तव्य निर्वहण में ध्यान नहीं रखता है । कौन रुपये देता है या कौन शासक दल का होता है, यह देखकर वे कर्तव्य निर्वहण करते हैं । "अनामंत्रित मेहमान" के ऐ·जी·साहब की कहानी इसका दृष्टांत है । दत्तात्रेय इसका विरोध करता

1· अनामंत्रित मेहमान - आनन्द शंकर माधवन

दत्तात्रेय का कथन देखिए "आपके जैसे सरकारी कुर्सी पर बैठकर शासक वर्ग के रोब को कर्ज लेकर इस प्रकार के निम्न स्तर के सुख भोगने नहीं आया हूँ । ऐसे निम्न स्तर के सुख का मुक्त समाज में, स्वतंत्र पुरुषों के बीच, विद्वानों और साधकों के कोई मूल्य नहीं होता ।"

ज़मीन्दारों और पूँजीपतियों की कुरीतियाँ भी माधवनजी के उपन्यास में वर्णित है । "अनामंत्रित मेहमान" में ज़मीन्दार की दुष्टताके कारण यशवन्त भारी वेदना सहताहै । "प्रसववेदना" के दुष्ट डाक्टर की क्रूरता अगणित है । "अनामंत्रित मेहमान" का दत्तात्रेय इन पूँजीपतियों का कट्टर विरोधी है । वह शोषणहीन समाज-व्यवस्था स्थापित करना चाहता है । "प्रसववेदना" का रामू भी इस प्रकार का युवक है ।

माधवनजी देश के सुधार केलिए सेवा-निरत और कर्म निरत लोगों को चाहते हैं । इसलिए उनके उपन्यासों के प्राय: सभी पात्र इस लक्ष्य को लेकर आते हैं ।

2· कला की सुरक्षा

माधवनजी कला की सुरक्षा चाहते हैं । उनके प्रत्येक उपन्यास में यह लक्ष्य हम देख सकते हैं । भारतीय संगीत पढने को वे आदेश देते हैं । वे इसकेलिए लोगों को तप और साधना करने का आह्वान देते हैं । भारतीय संगीत के अध्ययन को माधवनजी आध्यात्मिक अनुष्ठान मानते हैं । भारतीय संगीत एक-एक राग हमारे एक-एक देवी देवता है और इसलिए वास्तविक आध्यात्मिकता समझाने को संगीत का अध्ययन आवश्यक है ।

1· अनामंत्रित मेहमान - आनन्द शंकर माधवन, पृ·242

माधवनजी के प्रत्येक उपन्यास का मुख्यपात्र भारतीय संगीत का उपासक है । "अनामंत्रित मेहमान" और "प्रसववेदना" का यशवन्त भारतीय संगीत की आत्मा को हासिल करता है । वह संगीत सम्राट है । इस प्रकार "प्रसववेदना" के उस्तादजी, "एणाक्षी" की एणाक्षी, सव्यसाची और गोकुल दास "पुरुषार्थी" का दिलीप राय आदि भी संगीत के अनन्य उपासक हैं ।

भारतीय संगीत का अध्ययन परमेश्वर-तत्व को सिद्ध करने के समान है । इससे सब प्रकार के ज्ञान मिलते हैं । इसीलिए शिक्षाविहीन यशवन्त भी महान बन जाता है । संगीत से बढकर कोई साईन्स माधवनजी नहीं देखते हैं । संगीत से बेहोश में पड़ी हुई एणाक्षी को होश वापस मिलती

आज गवैयों की इज्जत नहीं होती । शास्त्रीय संगीत का मान इन दिनों नहीं रहा, न उसके गायकों का ही । सिनेमा और रेडियो से सुगम संगीत के पीछे दुनिया पागल है, खासकर पढे-लिखे लोग । माधवनजी इस पर बहुत दु:खी होते हैं । इसलिए वे भारतीय संगीत को ऊँचा उठाने के प्रयत्न में हैं ।

3. आध्यात्मिकता

हमारे भारत देश में आध्यात्मिकता को अनन्य स्थान प्राप्त है । माधवनजी के उपन्यास इस आध्यात्मिकता की कुंजी हैं । एक अदृश्य शक्ति या एक परम सत्य इस संसार में विद्यमान है । उसकी खोज में लोग इधर-उधर भटकते हैं । मन्दिर में, मूर्तिपूजा में या गेरुए वस्त्र में इस शक्ति को हम देख नहीं सकते हैं । इस प्रकार का मिथ्या मार्ग ईश्वर को जानने केलिए फलप्रद नहीं है । "अनामंत्रित मेहमान" का रामचन्द्र और पुरुषार्थी का दिलीपराय इस लक्ष्यप्राप्ति केलिए निकलते हैं । "प्रसववेदना" की

सुजाता अपने उस प्रियतम केलिए बिलख बिलख कर रोती है । इस प्रकार माधवनजी के उपन्यास में इस अदृश्य शक्ति की खोज और उसपर भरोसा प्रत्यक्षवत् चित्रित है । इस सत्यपथ की खोज ही आनन्द शंकर माधवन के उपन्यास का मुख्य लक्ष्य है ।

4· भारतीय दर्शन और संस्कृति का पुनर्जागरण

आर्ष संस्कृति क्या थी, क्या क्या उसकी सूक्ष्मियाँ और उपलब्धियाँ थी, कैसे उन सबका लोप हो गया, पुनरुत्थान संभव है या नहीं, अगर है तो कैसे, इन सबका अन्वेषण अनुसन्धान होता है आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों में । भारत ऋषि प्रधान देश है । यहाँ की जो कुछ भी कामयाबी हासिल रही है, सभी यहाँ के पुरातस्मरणीय ऋषियों की आजन्म तपस्या और साधना से उपजी सिद्धियों, निष्कर्षों और अनुभवों के फलस्वरूप हुई है । वे सभी अनुष्ठान सत्यान्वेषण साधना के रूप में हुए थे । परमेश्वर प्राप्ति के विभिन्न पन्थ के रूप में ही ऋषियों को सब प्रकार के विषय, विधा, क्रिया और प्रक्रिया, भाव और विचार दिखाई देते थे ।

माधवनजी इसी अद्भुत आर्ष संस्कृति को अपनाने केलिए हमें आह्वान देते हैं । उनका आदेश है कि आर्ष जीवन ही हमें व्यतीत करना है पूर्वकाल के ऋषि ही इसकेलिए आदर्श हैं । वे सामाजिक भी थे, गृहस्थ भी थे, साथ ही ऋषि भी थे । उन्होंने साहित्य सृजन भी किया, शिक्षण संस्थायें भी चलायीं, वैज्ञानिक अन्वेषण भी किया, प्रशासन व्यवस्था की रूपरेखा भी बाँधी । पर उनके सभी कार्यों का लक्ष्य स्वयं सत्य को प्राप्त करने केलिए साधनाशील करना रहा है ।

साहित्य और समाज को प्रदेय

माधवनजी दक्षिण भारतीय हिन्दी साहित्यकार हैं । हिन्दीतर प्रदेश के इन साहित्यकार ने अपनी विशिष्ट साहित्यिक सृष्टियों द्वारा हिन्दी साहित्य मण्डल में गणनीय स्थान क्रगत किया । भारतीय संस्कृति के उन्नायक आनन्द शंकर माधवन की साहित्यिक देन अक्षय है । दक्षिण भारतीयों की हिन्दी-सेवा इस साहित्यकार के द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर पहुँचता है । सरल शैली में बहुत उच्च उद्देश्यों से लिखे हुए उनके उपन्यास समाज केलिए अनुकरणीय हैं । सेवा-निरत, समाज-सुधारक, ईश्वर भक्त आदि बनने केलिए ये कृतियाँ सहायक हैं । लोगों में नैतिक बोध उत्पन्न करने की क्षमता उनको प्राप्त है । इस वैज्ञानिक युग में हमारी संस्कृति और कला के बारे में सोचने का अवसर ये रचनायें प्रदान करती है । पाश्चात्य देशों का अन्धानुकरण करनेवाले भारतीयों को इस गुलामी से मुक्त करने का प्रयत्न भी उनके उपन्यासों में होता है ।

इस आधुनिक युग की यांत्रिकता को छोड़ने साहित्य, कला आदि को जीवन में प्रमुख स्थान देकर जीने केलिए प्रेरणात्मक उपादेय है माधवनजी का उपन्यास साहित्य । साहित्य और समाज केलिए समान रूप से ये अमूल्य निधि हैं ।

उपन्यासकार के रूप में मूल्यांकन

आनन्द शंकर माधवन के उपन्यासों से स्पष्ट हो जाता है कि माधवनजी ने भारतीय संस्कृति का पुनर्जागरण तथा देश के सुधार को अपनी कला का उपकरण बनाया । उसमें वे सफल भी रहे । इस सफलता का प्रधान कारण उनकी सामाजिक अनुभव की प्रचुरता थी । संपूर्ण देश का तीर्थाटन करके

इन कर्मयोगी ने भारत को भलीभाँति पहचाना था । उनके उपन्यासों की प्रत्येक घटना, प्रत्येक पात्र एवं प्रत्येक परिस्थिति उनकी लक्ष्यपूर्ति की बीज़ें हैं ।

वस्तु-विन्यास की दृष्टि से भी उनके उपन्यास सराहनीय है । व्यक्ति अथवा घटना-विशेष को केन्द्र बनाकर सभी उपन्यासों में कथा अग्रसर हुई है और सारी प्रासंगिक कथायें मुख्य कथा की पूरक एवं पोषक बनी हैं । उनके उपन्यास, देश का सुधार, आध्यात्मिकता, भारतीय संस्कृति और दर्शन पर आधारित है । विभिन्न रूप - रंगवाली अनेक कथाओं को एक सूत्र में पिरोकर भी माधवनजी ने उनमें सम्बन्ध-सूत्र की स्थापना की है और उनमें कहीं भी विशृंखलता होने नहीं दी । रचना-कौशल की दृष्टि से भी इनका महत्व है ।

वस्तु-विन्यास अथवा घटनाओं के संघटन में माधवनजी के पात्रों का सक्रिय सहयोग होता है । इसलिए उनके उपन्यासों को न तो चरित्र-प्रधान कहा जा सकता है और न घटना-प्रधान।परिस्थितियों का मानव पर क्या प्रभाव पड़ता है ? तथा मानव जिस तरह स्वयं नयी परिस्थितियों की सृष्टि करता है, इसका माधवनजी ने बहुत सुन्दर परिचय दिया है । चरित्र-चित्रण की उनकी कला एक विशेष प्रकार की है । उनके उपन्यासों के नायक सर्वगुण सम्पन्न, सकल कला वल्लभ, पण्डित, साहित्यकार आदि होते हैं । वे बहुत त्याग सहकर भी अपने लक्ष्य पर पहुँचते हैं । पुराने भारतीय ऋषियों के जैसे वे जीवन बिताते हैं । कुछ कथापात्र असाधारण या दैविक शक्तिसंपन्न होते हैं । कुछ दुष्ट कथापात्र भी होते हैं । लेकिन सद्जनों के सम्पर्क के कारण वे भी सद्गुण सम्पन्न बन जाते हैं । किन्तु परिस्थिति के अनुसार मनुष्य के भीतर किस प्रकार छोटे-छोटे भाव-विचार बुदबुदें उठते करते हैं और विलीन होते रहते हैं इसके चित्रण की क्षमता माधवनजी में अद्भुत है ।

चरित्र-चित्रण केलिए माधवनजी वर्णन एवं वार्तालाप दोनों ही का बड़ी कुशलता से उपयोग करते हैं । वर्णन के द्वारा पात्र की आकृति एवं चरित्रगत विशेषताओं का रेखा परिचय देने के बाद माधवनजी वार्तालाप एवं क्रियाकलाप के द्वारा रेखाओं में रूप भरते हैं । इस प्रकार चरित्र की विशेषताओं को प्रदर्शित करने में माधवनजी अद्वितीय है । उनके कथोपकथन लम्बे से लम्बे होते हैं । लेकिन वे सरस हैं । उनके पात्रों की बातचीत स्वाभाविक, उपयुक्त और चुस्त है ।

दक्षिणी होने के कारण भाषा पर उनका अधिकार अन्य उत्तर भारत के साहित्यकारों से कम है । इस कारण कहीं कहीं भाषा की शिथिलताउनके उपन्यासों में मिलती है । लेकिन हिन्दीतर साहित्यकार होने से सरल हिन्दी भाषा स्वीकार करते हैं । यह अखिल भारतीय हिन्दी का प्रमाण बनती है ।

निष्कर्षत: यही कहा जा सकता है कि दक्षिण भारतीय हिन्दी साहित्यकार होते हुए भी माधवनजीसशक्त उपन्यासकार हैं । इस महान उपन्यासकार के उपन्यासों को ज़रूर हिन्दी उपन्यास जगत् में गणनीय स्थान मिलेगा, सन्देह नहीं ।

अध्याय - तीन

माधवन जी की कहानियाँ

अध्याय - तीन

माधवनजी की कहानियाँ

भूमिका

कला तथा प्रयोजन की दृष्टि से कहानी गद्य-साहित्य की समस्त विधाओं में श्रेष्ठ है । "कहानी कला वह कला है जो मानव की बहस जीवन और उसके अन्त:स्थल में बनते-बिगड़ते हुए भाव-समूहों और समस्याओं को क्षणिक विद्युत-प्रकाश की भाँति हमारे सामने ला छोड़ती है और पाठक का मन एवं मस्तिष्क उसके भावों से घनीभूत हो जाता है ।"[1] इतिहास और अतीत के स्वर्णिम पृष्ठों, संवेदनाओं से लेकर आधुनिक युग की समस्त समस्यायें कहानी के वर्ण्य विषय में आती हैं ।

---

1. हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास - डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल, पृ.293

"रानी केतकी की कहानी" से लेकर कहानी की जैत्र-यात्रा ज़ारी रहती है । इसके बीच अनेक युग-प्रवर्तक कहानीकार आये और कालक-वलित हुए । उन्होंने अपनी परिस्थिति के अनुसार कहानी की सृष्टि की । स्वतंत्रता आन्दोलन के समय कहानी के क्षेत्र में आये हुए कहानीकारों की कहानी में उस समय के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आदि गति-विधियाँ देखी जा सकती हैं । महात्मागांधी, दयानन्द आदि के प्रयासों से भारतीय जीवन की सामाजिक विसंगतियों और कुरीतियों के विरुद्ध वातावरण बनना शुरू हुआ । भारतीय जनता जड़ता, अन्धविश्वास और अज्ञान की पकड़ से छूटने लगी । आज़ादी बहुत बड़ा मूल्य बन कर सामने आयी । अनेक पुरातन रूढ़ियाँ लड़खड़ाने लगीं, कुछ टूट गयीं । नये जीवन मूल्य सामने आये । अहिंसा, सत्य, प्रेम, समानता, सेवा, शोषण का विरोध आदि मूल्यों के पुष्ट होने का अवसर मिला । इस युग के प्रेमचन्द जैसे कहानीकारों ने इस सुधारवादी दृष्टिकोण को अपनाकर अपनी कहानी के द्वारा परिवर्तन का शंखनाद बजाया । ऐसे हिन्दी कहानिकारों में दक्षिण भारत से एक कहानीकार भी जुड़े हुए थे; वे हैं आनन्द शंकर माधवन ।

आनन्द शंकर माधवन की कहानियाँ

माधवनजी ने नित्य जीवन में जो कुछ आकर्षक, प्रभावान्वित, सुरूप और कुरूप घटनायें आयीं और दृश्य आये कहानी की कथा-वस्तु के रूप में उनको स्वीकार किया । इसके भीतर विचित्र प्रकार के पदार्थ, विषय, भाव, घटना, अनुभूति, दृश्य, रूप, आकार, बनावट, सज्जा, वातावरण; प्रकृति सभी कुछ मिल जाते हैं । लेकिन माधवनजी की इन सामाजिक कहानियों में जीवन-मूल्यों को प्रधानता मिलती है । राष्ट्र-प्रेम, समाज-प्रेम, मानवता, अहिंसा, त्याग, दया, आध्यात्मिक मूल्य, दाक्षिण्य, पवित्रता, धर्म, सत्य,

शान्ति, क्रान्ति और समन्वय की कामनाओं से उत्पन्न मूल्य आदि इन सामाजिक कहानियों में प्रस्फुटित है । अर्थात् मानव को सद्दिशा की ओर लाने को उस समय की प्रत्येक कहानी सहायक रही ।

आनन्द शंकर माधवन का कहानी संग्रह "प्रसून-पंथ है । हर पंथ गतिशील है । वह किसी न किसी दिन अपने लक्ष्य पर पहुंचेगा । प्रसून-पंथ भी उसी प्रकार का पंथ है । यहाँ कई प्रकार के कुसुम होते हैं । कुछ पुष्प अपनी खुशबू बिखेरते हैं । लेकिन कुछ पुष्पों को खुशबू नहीं है । कमल-पुष्पों से कितने भिन्न हैं तृण-पुष्प । लेकिन उन दोनों का लक्ष्य समान है । वे दोनों अपनी लक्ष्य-प्राप्ति के बाद मिट जाते हैं । किसी का भी प्रतिवाद या प्रतिरोध किये बगैर सबों पर अमृत वर्षा करनेवाले ऋषी हैं तरु-लतायें । उन मुनि-श्रेष्ठों से उत्पन्न हुई कुसुम-कन्यायें कितनी श्रेष्ठ हैं । माधवनजी की प्रत्येक कहानी प्रत्येक कुसुम कन्या है । प्रत्येक कहानी का अपना लक्ष्य है । प्रत्येक कहानी मानव केलिए निस्वार्थ सेवा करती है । इसलिए माधवनजी का "प्रसून-पंथ", "प्रसूनवादी" रचना ही है । "प्रसूनवाद" में महत्व कमल पुष्प जैसे ख्याति का नहीं, तृणपुष्प होते हुये भी कार्य का है ।

माधवनजी की कहानियों की कथा-वस्तु

माधवनजी का कहानी-संग्रह "प्रसून-पंथ" की पहली कहानी है "महासमर" । इस कहानी में दो विभाग की पिपीलिकायें मृत कीडे केलिए महासमर करती हैं । लेकिन उस मृत कीडे को उन दोनों के बीच से मैना पंछी लेकर उड़ जाता है । तब कहानीकार का मित्र ताड़-वृक्ष कहता है कि इस अनावश्यक समर का कारण ज्ञानी नेतृत्व का अभाव है । उसकी राय में मनुष्य की हालत इस कीड़े से भी बिगड़ी हुई है । वह मानव से अपने अहंकार रूपी कूप से बाहर आकर समस्त जड़-चेतन की सेवा करने को और इस ब्रह्माण्ड के अति रहस्यमय और आनन्दमय विभूति-तत्त्व को समझने का आदेश देता है ।

माधवनजी की दूसरी कहानी "सुगम उपाय" में माधवनजी आज का युवक धन-सम्पादन केलिए सुगम उपाय ढूँढने के बारे में इशारा करते हैं । राजपूत युवक अपने धर्म में गर्व करके कोई भी काम किये बिना व्यर्थ बैठ रहा है । पत्नी और पति भूख से मरने लगे । तब युवक नौकरी की खोज में निकलता है । उसको खलासी का काम मिलता है तो अपने धर्म केलिए अयोग्य काम समझकर वह उसे छोड़ता है । सन्यासी के प्रभाव से वह भी झूठा साधु बनकर धन इकट्ठा करने लगता ।

"प्रसूनपंथ" की तीसरी कहानी है "जादूगरनी" । अनपढ राजनीतिक नेता का मित्र है, विद्वान कालेज प्राध्यापक । एक दिन उन दोनों की मुलाकात हुई । तब प्राध्यापक अपने पद के गुरुत्व-बोध को प्रदर्शित करने लगा । पांडित्य प्रदर्शन सुनते-सुनते नेता से अब एकदम रहा नहीं जाता है । वह कहता है कि पढे लोगों से अधिक धनी, सुखी, जनप्रिय और हर प्रकार से हर क्षेत्र में आदरणीय है वह । सब विद्वान लोग और महान लोग उसके सामने सिर झुकाते हैं । यह सुनकर विद्वान प्राध्यापक चकित होकर चुप रहता है । चौथी कहानी है "उसका वही धर्म था" । ब्राह्मण धर्म के अनुसार मांस-मछली आदि खाना धर्म विरुद्ध है । इसलिए ब्राह्मण युवक अपने ईसाई मित्र के घर में आकर सदा छिपकर मांस-मछली खाता है । तब ईसाई मित्र कहता है कि इस तरह का बन्धन वास्तव में धर्म नहीं है और सब प्रकार की स्वतंत्रता ही वास्तविक धर्म है ।

"सब सडे नहीं है" कहानी में माधवनजी यह दिखाना चाहते हैं कि महापुरुषों का मूल्यांकन उनकी लिखी पुस्तकों से या दिये भाषणों से या किये सार्वजनिक कार्यों से न होकर उनकी व्यक्तिगत ज़िन्दगी की साधारण घटनाओं से ही होना चाहिए । इसमें खादीधारी सज्जन को उसके घर रिक्शेवाला जल्दी ही रिक्शे द्वारा पहुँचाता है ।

आठ अने मज़दूरी पूछने पर चार अने देकर, वहाँ खडे सब लोगों की सहायता से उसको वहाँ से भगाते हैं। दूसरा सज्जन इसी प्रकार रात में जब रिक्से में यात्रा करता है तब रिक्से का एक पहिया टूट जाता है। वह उस रात रिक्सेवाले के घर में रहने का निश्चय करता है। घर की दयनीय स्थिति देखकर वह किसी से कुछ कहे बिना अपने हाथ के रुपये वहाँ छोड़कर अपना कोट और चादर ठंढ में सोये पडे बच्चों को ओढ़ाकर वहाँ से जाता है। "हृदय-परिवर्तन" पश्चात्ताप-विवश पत्नी के हृदय परिवर्तन की कथा है।

"कायाकल्प" कहानी में टी·बी· से आक्रान्त ब्राह्मण युवक सन्यासी के प्रभाव से योग विद्या आदि सीखकर तन्दुरुस्त बनने की कथा है। "प्यार का रोग" कहानी में स्त्री के पागलपन के बारे में माधवनजी कहते हैं। मंजुला नामक लड़की, मुसलमान युवक के फेर में पड़ती है। माँ-बाप इसके विरुद्ध है। मंजुला मुसलमान लड़के केलिए मरने को भी तैयार है। लेकिन जब वह उस युवक से भी श्रेष्ठ अन्य युवक को देखती है तब वह उस युवक से प्यार करने लगती है और उसके साथ विवाह करती है। "प्रोफसर की पत्नी" नामक कहानी में प्रोफेसर अपनी पत्नी से बदला लेने केलिए वेश्या-गली में कमरा किराये में लेकर वहाँ पत्नी के रहने का प्रबन्ध करते हैं। वह बेचारी उनका पैर पकड़कर क्षमा माँगती है। फिर भी कोई प्रयोजन नहीं होता। उस वेश्या-गली की वेश्याओं के सहारे से वह वहाँ एक पाठशाला खोलकर सभी वेश्याओं केलिए शिक्षा देना शुरू करती है। प्रोफेसर की पत्नी उस प्रोफसर से भी विख्यात सृजनात्मक यज्ञकारी भिक्षुणी बन जाती है।

"इन्टरव्यू" नामक कहानी में वयोवृद्ध तपोधनी पत्र-सम्पादक के पास एक बार मद्रासी युवक नौकरी माँगने को आता है। वह वयो-वृद्ध, चरित्र-सम्पन्न ज्ञानी युवक की तलाश में रहा है। उस युवक को इन्टरव्यू करने पर उसको मालूम हुआ कि वह युवक ईमानदार युवक है।

वह उसको और उसके देश को सबसे महान और श्रेष्ठ मानता है । वह गुलाम बनकर जीना नहीं चाहता है । वह हमेशा देवत्व का अनुशीलन करने को और आध्यात्मिक अनुष्ठान पर विश्वास रखना चाहता है । वह वयो-वृद्ध बहुत प्रसन्न होकर देश-प्रेमी मद्रासी युवक को नौकरी देता है । "मुंशीपुरी" में कांग्रेस लोगों की आदर्श च्युति के बारे में माधवनजी इशारा करते हैं । आज के कांग्रेसी लोग मात्र अधिकार केलिए लालायित हैं । वे वास्तविक कांग्रेसी का काम भूल जाते हैं ।

"मास्टर साहब की पत्नी ने घडी सुधारी" नामक कहानी में माधवनजी पति-पत्नी के परस्पर समझने का और इच्छानुसार, जी भर आपस में मिलने का आह्वान देते हैं । "चारित्र्य" नामक कहानी में माधवनजी अंग्रेज़ पुरुषों के चरित्र-चित्रण द्वारा यह दिखाते हैं कि पत्नी की गलती का जिम्मेदार उसका पति ही है । एक आदमी कुत्तिया को बडे प्यार से पालता है । वह कुत्तिया सयानी बन जाने से उनकी मन पसन्द पुरुष के साथ कहीं भी जाती है । "स्वयंवर" नामक कहानी में इस प्रकार कुत्तिया के चरित्र के द्वारा मानव की स्थिति की ओर माधवन जी संकेत करते हैं ।

स्त्री केलिए उसका सौंदर्य ही उसका काल बन जाता है । "डाइन" नामक कहानी में माधवनजी उपर्युक्त तथ्य दिखाना चाहते हैं । मंजु सुन्दरी लड़की है । इसलिए ससुराल के लोग उसको घृणास्पद दृष्टि से देखते हैं । घर की सभी दुर्घटना की जिम्मेदारी परिवार के लोग उसपर रखते हैं । अंत में वे उसको मार डालने का षड्यंत्र करते हैं । लेकिन अंग्रेज़ डाक्टर साहब उसको बचाते हैं । तब सब राजनीतिक लोग इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने लगे । "ऐसे ही आँसू पोंछे जाते" नामक कहानी में सतीश नामक युवक मालिनी को अपनी इच्छा के अनुसार इस्तेमाल करने के बाद छोड़ देता है ।

बेचारी मालिनी, सतीश के माता-पिता के पास आकर अपनी स्थिति पर संकेत करती है । तब वे लोग उसको सतीश की वधु के रूप में स्वीकार करते हैं. "अकर्मण्यों का शांति-पर्व" में कर्म-विमुख बैल की कथा माधवनजी सुना रहे हैं । इस बैल के जैसे भारतीय लोग भी हमेशा अकर्मण्य रहना चाहते हैं ।

"चरित्रहीन" नामक कहानी में कुछ अमीर लड़के गरीब लड़की पर आक्रमण करते हैं । उस लड़की का पति उन लड़कों को पकड़कर उनकी खूब मरम्मत कर देता है । तब लड़कों के कालेज के सब विद्यार्थी मिलकर लड़की के परिवार का नाश कर डालते हैं । "कम्यूनिस्ट" नामक कहानी वृद्ध कम्यूनिस्ट आदमी का सयानी लड़कियों के प्रति पागलपन की कथा है । "काई कैसे धुल गई" कहानी में युवक, माँ-बाप के अत्याचार से इकट्ठा हुआ धन, डायन जैसे सुन्दरी पत्नी आदि को छोड़कर देश-सेवा केलिए फौज में जाता है । "सती" नामक कहानी में शान्ति के पति का देहान्त हो चुका था । वह फौज में था । इसलिए शान्ति पति की लक्ष्य-पूर्ति केलिए नेफा जाकर देश सेवा करती है । इस प्रकार पति के लक्ष्य को आगे की ओर बढाना ही "सती" का यथार्थ अर्थ है । पुरुष स्त्री-सौन्दर्य के पीछे पागल होता है । वह स्त्री शरीर केलिए शौकीन रहता है । "प्रेम हो गया" नामक कहानी का सार यही है कि अपनी पत्नी का शरीर और अन्य स्त्रियों का शरीर समान ही है और परस्त्री की कामना पाप ही नहीं सामाजिक भ्रष्टाचार भी है ।

"दादी माँ" नामक कहानी में माधवनजी यह दिखाना चाहते हैं कि स्त्री का शरीर एक ही पुरुष केलिए है । एक बार स्त्री का शरीर किसी पुरुष को दिया गया है तो फिर हमेशाकेलिए यह उसकी चीज़ हो जाती है । बूढी माँ की कहानी के द्वारा माधवनजी उपर्युक्त बात हमारे सामः

प्रस्तुत करते हैं । "चार पत्र" नामक कहानी की जया के द्वारा माधवनजी यह दिखाना चाहते हैं कि स्त्री केलिए माता, पिता, पति, ससुर, बाल-बच्चे सभी व्यर्थ हे, एकदम धोखे की चीज़ें हैं । जो स्त्री पढ़ लिखकर विदुषी नहीं हो पाती और अपने गर्व केलिए आत्मनिर्भर नहीं हो पाती, उसकी ज़िन्दगी बेकार है, बिलकुल नरक है । माधवनजी की कहानी है "जन्म साफल्य" । इसमें दूसरों के अश्रुप्रवाह रोकने को तैयार होकर आगे बढ़नेवाली स्त्री की कथा है । "आधुनिक तुलसीदास" में प्रकाश नामक बदमाश युवक अपनी प्रेमिका को प्राप्त करने केलिए सद्व्यक्ति बन जाता है ।

"जोश" में युवक अपने जोश से गरीब आदमी पर आक्रमण करता है । लेकिन उसको सद्-दिशा मिलने पर वह भी पारिजात पुष्प बन जाता है । "ऊँचे" में जब अत्याचारी व्यापारी डाकुओं के आक्रमण से मर रहा है तब वह पछताता है और ईश्वर की खोज में भटकता है । गाँधीवादी" कहानी में मूढस्वर्ग में रहनेवाले कलक्टर को निज स्थिति में लाने को गाँधीवादी प्रयास करता है । वह गाँधीवादी इसकेलिए कूली का और नौकर का वेष धारण करता है । "अनन्त की ओर" कहानी में राजपूत अपने धर्म के लोगों केलिए खूनी बन जाता है । जब वह जेल जाता है तब उसको बचाने केलिए कोई सामने आता नहीं है । जज साहब के अनुरोध पर वह ईश्वर से प्रार्थना करता है और अन्त में उसको जेल से मुक्ति मिलती है । वह अपनी गलती पर पछताता है और एक महान योगी बन जाता है ।

"प्रसून पंथ" नामक कहानी कुसुम कन्या की कहानी है । पति-परायण पत्नी को पति छोड देता है । लेकिन वह कुसुम कन्या महान फल के प्रसव करने के बाद या सन्तान के जन्म देने के बाद संसार से मिट जाता है तब उसका पति प्रोफसर पश्चात्ताप विवश हो जाता है ।

माधवनजी की कहानियों की कथा-वस्तु का विश्लेषण करने पर हमको मालूम होता है कि छोटी-छोटी आकार की कहानी होने के नाते वे अत्यन्त मूल्यवान है । कथा की श्रेष्ठता के साथ-साथ कथा-वस्तु की योजना का सुधारवादी दृष्टिकोण भी बहुत आकर्षक है । उनकी प्राय: सभी कहानियों में यह स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है अच्छे आरंभ से ही कहानी आकर्षक बन जाती है । माधवनजी की प्रत्येक कहानी का प्रारंभ विशेष कौशल के साथ पाठकों की जिज्ञासा को जगाता है । वैदग्ध्यपूर्ण और जिज्ञासा को जगानेवाले संवादों से ही कई कहानियों का आरंभ होता है और इस कारण बहुत आकर्षक भी बन जाती है । उदाहरण केलिए "जन्म साफल्य" का आरंभ देखिए -

"क्या मैं आपकी शिष्टता और सहृदयता का भरोसा कर सकती हूँ ?"

"नहीं"

"आप खादीधारी हैं, इसलिए मैं ने इन चीज़ों की उम्मीद की थी ।"

"ओ खादी ! यह तो मात्र एक नक़ाब है ।"

"तो क्या आप कम से कम किसी सहृदय पुरुष से मेरा परिचय करा दे सकते हैं ? क्योंकि मैं मुसीबतों से मारी हूँ ।"

"क्या मुसीबत है ?"

इस प्रकार का कुतूहलपूर्ण आरंभ "काई कैसे धुल गई", "ऐसे ही आँसू पोंछ जाते", "स्वयंवर", "चारित्र्य", "मुंशीपुरी आदि में होता है ।

कुछ कहानियों में ऐसा भी देखा जाता है कि किसी विशेष कुतूहलता की सृष्टि के साथ कहानी का आरंभ होता है । इन आरंभिक स्थलों में जिज्ञासा, आश्चर्य और रोमांचिकता दिखाई पडती है । "डकैत" नामक कहानी का आरंभ देखिए - "डकैत लोग ज्यों ही उस मृतप्राय व्यक्ति को

---

1. प्रसूनपंथ-आनन्द शंकर माधवन, पृ.187

गंगाजी में फेंकने लगे कि उन्होंने अतिक्षीण आवाज़ सुनी[1]।" "प्रेम हो गया" "प्रेफोसर की पत्नी", "महासमर" आदि कहानियों में भी ऐसा ही कुतूहलता-पूर्ण प्रारंभ हम देख सकते हैं ।

कुछ कहानियों का आरंभ साधारण और सामान्य रूप में है । वे इतिवृत्त और विवरण प्रधान होती है । "इन्टरव्यू", "प्रसून-पंथ, "जोश", "कम्यूनिस्ट", "अकर्मण्यों का शांतिपर्व", "डाइन", "मास्टर साहब की पत्नी ने घडी सुधाई", "हृदय परिवर्तन", "उसका वही धर्म था", "जादुगरनी" आदि का आरंभ इस प्रकार का है । उदाहरण स्वरूप "इन्टरव्यू" का आरंभ देखिए - "उत्तर भारत के एक वयोवृद्ध तपोधनी पत्र सम्पादक के पास एक बार एक मद्रासी युवक नौकरी मांगने गया[2]।"

इसके विरुद्ध कुछ कहानियों का आरंभ तत्व-चिन्तन से होता है । "अनन्त की ओर", "गाँधीवादी", "चरित्रहीन", "कायाकल्प", "सब सडे नहीं हैं" आदि कहानियां इसका उदाहरण है । "अनन्त की ओर" का आरंभ देखिए - "परमेश्वर जब किसी व्यक्ति को अपनी किसी खास योजन को कार्यनिरत करने केलिए चुनना चाहते हैं तो उसे सर्वप्रथम तत्सम्बन्धी आवश्य प्रशिक्षण देने लगते हैं[3]।"

माधवनजी की कहानियों का अन्त प्रत्येक उपदेश या अनुकरण करने योग्य तत्व-चिन्तन से होता है । "महासमर" का अन्त देखिए -

---

1. प्रसूनपंथ - आनन्द शंकर माधवन, पृ·213
2. वही, पृ·213
3. वही, पृ·214

"वृक्ष ने उत्तर दिया- तुम लोग अपने अहंकार रूपी कूप से बाहर आओ, तब तो संसार नज़र आयेगा । धुएँ को बादल समझ जिन्होंने नीर-वर्षा की उम्मीद की उन्होंने धोखा खाया है । ज्ञान हासिल करो मित्र । ज्ञानानुशीलन करो । तभी मुक्ति और शक्ति प्राप्त कर सकोगे । समस्त जड-चेतन की सेवा और शुद्धि करना जानो मुझ जैसा । यही वास्तविक ज्ञान-साधना है । तुम मानवों को हम वृक्षों का शिष्यत्व स्वीकार कर लेना चाहिए ।"

प्रारंभ एवं अंत ही नहीं कथा का समस्त रूप माधवनजी पाठकों को आकृष्ट करने के उद्देश्य से ही रचते हैं । इस कारण माधवनजी की कहानियों की कथा-वस्तु विशेष कुतूहलपूर्ण रहती है ।

चरित्र-चित्रण

माधवनजी की कहानियों के कथापात्र मनुष्य ही नहीं है, बल्की कीडे वृक्ष, बेल, सारमेय आदि होते हैं । माधवनजी स्वयं भी किसी-किसी कहानी में कथा-पात्र के रूप में आते हैं । माधवनजी का हर पात्र एक-एक सिद्धान्त, उपदेश, नैतिकबोध या समष्टिगत मूल्यों को प्रकाश में लाने का सहायक है ।

माधवनजी अपनी कहानियों में सर्वाधिक प्रभावशाली और व्यवहारोपयोगी चरित्रांकन पद्धति को अपनाते हैं । कहानी में संवादों के अंतराल में पात्र स्वयं अपने मुख से अपने चरित्र के प्रकाशक, विविध गुण-धर्मों, विचारों, अनुभूतियों, आशाओं - निराशाओं, आकांक्षाओं, आदर्शों अथवा

---

1. प्रसून पंथ - आनन्द शंकर माधवन, पृ.5

अपनी रुचि-अरुचि, मन्तव्यों और भावनाओं का विवरण उपस्थित करता है अथवा परिचय देता है । पात्र अपने विषय में स्वयं बोलता है और अपने मन्तव्यों का इस प्रकार कथन करता है कि उसके अन्त:करण का स्वयमेव और भली-भाँति उद्घाटन हो जाता है । इसके अतिरिक्त पात्र अपने क्रिया-कलापों के माध्यम से अपनी भावना और अपने विचार को झलक देते हैं । इस ढंग से अपने विचार-द्योतन अथवा क्रियायोग के द्वारा पात्र अपने चरित्र को स्वयं उपस्थित कर देता है ।

"महासमर" नामक कहानी के कथा-पात्र दो विभाग की पिपीलिकायें एक ही कीडे केलिए युद्ध करती हैं । लेकिन उस कीडे को पंछी आकर ले उडता है । तब कहानीकार को ज्ञानी-वृक्ष, उपदेश देता है । वृक्ष कहता है - "समस्त जड-चेतन की सेवा और शुद्धि करना जानो मुझ जैसा[1]।" इसमें वृक्ष की महानता दिखाने को माधवनजी प्रयास करते हैं । लेकिन माधवनजी इन पिपीलिकाओं को मनुष्य से बेहतर मानते हैं । "सुगम उपाय" का राजपूत लडका आज के युवक का प्रतिनिधि है । अपने धर्म की महिमा कहकर कुछ भी काम किये बिना धर्म-लाभ केलिए हरिनाम संकीर्तन और ब्राह्मण-सेवा में वह लगा हुआ है । अंत में पत्नी से बिगडकर वह नौकरी की तलाश में निकलता है । उसको खलासी का काम मिलता है । लेकिन राणा प्रताप के वंशज को यह काम लज्जाजनक लगता है । फिर वह साधु का वेश पहनकर धन इकट्ठा करता है । "जादूगरनी" में प्राध्यापक की ज्ञान-राशी अनपढ राजनीतिक नेता के सामने हतप्रभ हो जाती है । "सब सडे नहीं है" कहानी में दो विभिन्न चरित्रों का उद्घाटन माधवनजी करते हैं - सज्जन जैसे

---

1. महासमर - आनन्द शंकर माधवन, पृ.5

अभिनय करनेवाले आदमी की क्रूरता और एक अन्य व्यक्ति का सद् व्यवहार । पहले में क्रूरता निहित है तो दूसरे में दया, पवित्रता आदि रूढमूल हैं । "हृदय परिवर्तन" में पति अपनी पत्नी से मधुर ढंग से बदला देता है । पत्नी अन्य पुरुष के साथ सम्पर्क जोड़ती है । पति यह जानकर बहुत मधुर ढंग से पत्नि से व्यवहार करता है । पत्नी वेदना से पछताती है । "कायाकल्प" में योगाभ्यास से रोग का निवारण करनेवाले युवक को देखा जा सकता है ।

एक पुष्प से दूसरे पुष्प की ओर भ्रमण करनेवाले भ्रमरों की जैसी एक स्त्री का उदाहरण "प्यार का रोग" नामक कहानी में मिलता है । मंजु नामक युवती मुसलमान पुरुष के फेर में पड़ती है । जब वह उससे भी श्रेष्ठ पुरुष को देखती है तब मंजु उस पुरुष के प्रेम में फँस जाती है ।

खादी वस्त्र, गाँधी टोपी आदि पहनकर काँग्रेसी नाम से चलनेवाले कुछ लोगों का चरित्र कई कहानियों में मिलता है । वे लोग काँग्रेसी लोगों केलिए अपमान है । वे अधिकार मात्र चाहते हैं । पतिपरायण भारतीय स्त्री के उदाहरण हैं "प्रसून पंथ" की पार्वती, "सती" की शांती, "दादी माँ" की बूढी माँ आदि । अपने दुष्कर्म पर पश्चात्ताप करके आध्यात्मिक पथ की ओर आनेवालों के उदाहरण हैं "अनन्त की ओर" का सागर सिंह, "केतु" का व्यापारी, "हृदय परिवर्तन" के इनस्पेक्टर साहब की पत्नी आदि । स्त्री-शोषण से वेदना अनुभव करनेवाली स्त्रियाँ भी माधवनजी के पात्र हैं जैसे - "चार पत्र" की जया, "डाइन" की मंजु, "चरित्रहीन" की भोली लड़की आदि ।

इनके अलावा सद् दिशा-निर्देश मिलने पर अच्छे आदमी बन जानेवालों का उदाहरण भी है "आधुनिक तुलसीदास" का प्रकाश, "जोश" का युवक आदि । देश-प्रेम, ईमानदारी, आत्मसम्मान आदि रखनेवाले मद्रासी

युवक का चित्रण "इन्टरव्यू" में होता है । गाँधीवाद के सभी सिद्धान्तों का पालन करनेवाला युवक है "गाँधीवादी" का रामा । अपने उच्च पद पर गर्व करनेवाले कलक्टर साहब और उनके परिवार को संसार की वास्तविकता समझाने को वह युवक कूली और नौकर का काम करता है । माधवनजी "अकर्मण्यों की शान्ति पर्व" में बैल की अकर्मण्यता का चित्रण करके मानव से उसकी तुलना करते हैं और अकर्मण्य मानव की खिल्ली उडाते हैं ।

इस प्रकार माधवनजी अनेक कथापात्रों के द्वारा एक-एक अमूल्य जीवन सिद्धान्त हमारे सामने उपस्थित करते हैं । प्रत्येक पात्र जीवन की सरल, सामान्य, यथार्थ स्थितियों का उद्घाटन करता है । लेकिन माधवनजी प्राय: सभी कहानियों में पात्र को सिद्धान्त की प्रतिमा बना देते हैं । उनका इसलिए अलग अस्तित्व नहीं रहता ।

संवाद या कथोपकथन

माधवनजी की कहानियों का संवाद या कथोपकथन बहुत कुशलतापूर्ण ढंग से संवारा हुआ है । माधवनजी जिज्ञासा और कुतूहल को जगाने केलिए कहानी का आरंभ लघु और गतिशील, पर प्रकृत और औचत्यपूर्ण संवादों से प्रारंभ करते हैं । इसलिए पाठकों का ध्यान विषय की ओर इसी प्रकार केन्द्रित हो जाता है जैसे रंगमंच पर होनेवाले किसी अभिनय की ओर दर्शकों की दृष्टि केन्द्रित होती है । उदाहरण केलिए "स्वयंवर" नामक कहानी का आरंभ देखिए -

"यह क्या उठा लाये बापू आप ?"

"सारमेय - संतान है जी"

"फेंकिये"

"हरि हरि, क्या कह रहे हो ? मैं इसे पोसूँगा और युक्ती हो जाने पर इसका

स्वयंवर करा दूँगा ।"

"स्वयंवर अपना वह स्वयं कर लेगी । आपको फिक्र करने की ज़रूरत नहीं । पशु-पक्षी लोग अपने अभिभावक का बोझ कभी नहीं बनते ।"

"कटाक्ष क्यों करते हो जी ?"

"कटाक्ष है ?"

"मनुष्य को पशु-पक्षी से भी गया - गुज़रा जो दिखला दिया ।"

"पशु-पक्षी लोग बेहतर हैं ही ।"

इस प्रकार का आरंभ "जन्म साफल्य", "काई कैसे धुल गई", "ऐसी ही आँसू पोंछ जाते", "चारित्र्य", "मुशीपुरी" आदि कहानियों में भी हम देख सकते हैं ।

कथोपकथन द्वारा व्यक्तित्व विधायक प्रवृत्तियों और अभिरुचियों का स्वाभाविक परिचय माधवनजी देते हैं । जो व्यक्ति अपनी चरित्रगत विशेषताओं के कारण अन्य से पृथक मालूम पड़ता है उसकी वाणी और संवाद भंगिमा में भी कुछ अपनापन होना आवश्यक है । उसकी बातचीत करने की पद्धति भी उसके व्यक्तित्व को उभारने में पूरी सहायता कर सकती है । मानसिक दशा के संपूर्ण उतार-चढाव का परिचय कहानी में होता है । कहीं तो संवादों से पात्रों की आंतरिक वेदना व्यंजित होती है, कहीं निवेदन विषयक विनती प्रकट होती है और कहीं आंतरिक उद्वेग गरजता मिलता है । "प्रसून पंथ" नामक कहानी का यह उदाहरण देखिए - "स्वामी, आज की यह रात आप मेरे साथ बिताइये । सिर्फ यही एक रात । फिर कभी मैं आपसे यह भिक्षा नहीं माँगूँगी । सिर्फ एक समागम से मुझे आशीर्वाद दीजिए । फिर कभी मैं इस घर में लौटूँगी नहीं ।" इस संवाद में विनती का स्वर है । "सम्मान्य, जिस गले में लाख-लाख पुष्प मालायें गिरी हैं और

---

1. प्रसून पंथ - आनन्द शंकर माधवन, पृ.263

प्रतिदिन गिरती रहती हैं उस कण्ठ पर मेरे भाई ने तरकारी की तश्तरी की माला पहना दी । और उस हाथ को रस्से से बन्धवाया जिस हाथ से लाख-लाख कलक्टरों को फरमान लिखा जाता है । सर, हम सबों को आप गिरफ्तार करावें, हमें सजा दें, हम यही चाहते हैं ।"[1] गाँधीवाद" कहानी की गीता के इस वार्तालाप में वेदना और क्षमा याचना का स्वर मुखरित है ।

"भारत सदा से एक योजना रहा है, एक खास किस्म का अनुसन्धान रहा है और इस स्तर पर ही इस का महत्व भी रहा है । मगर वह राजनैतिक दृष्टि से दूसरों का गुलाम रहा है । राजनैतिक प्रभुत्व सत्ताखोरों का प्रभुत्व है । ज्ञानियों पर राक्षस-शासन सदा से रहा है । अन्यथा सुकरात को विष पीना नहीं पड़ता । भारत का सदा से संसार पर एक सूक्ष्म प्रभुत्व रहा है और आगे भी रहेगा[2] ।" "इन्टरव्यू" नामक कहानी के इस संवाद में देशप्रेमी युवक की आवाज़ गूंज उठती है ।

लम्बे-लम्बे संवादों से अधिक लघु-संवाद होता है । यह लघु-संवाद सारगर्भित है । "इन्टरव्यू" का उदाहरण देखिए - "भारत से तुम्हारा क्या तात्पर्य है ?" "एक धार्मिक अनुसन्धान, एक वैचारिक अन्वेषण[3] ।"

इस प्रकार हम अनुभव करते हैं कि माधवनजी अपनी सारी कहानियों के संवादों में सजीवता और यथार्थता को मुखरित करने का प्रयास करते हैं

---

1. प्रसून पंथ - आनन्द शंकर माधवन, पृ.240
2. वही, पृ.67
3. वही, पृ.67

मभी प्रकार के पात्र, व्यावहारिक और दैनिक जीवन में कुछ ऐसे विषयों पर और ऐसे सहज ढंग से बातचीत करते हैं कि संवाद का सहज और व्यवहार-ज्ञान-संपृक्त रूप में खडा हो जाता है ।

शैलीगत विशेषतायें

माधवनजी की कहानियों की शैली विविध प्रकार की है । अधिकतर कहानियां उपदेशात्मक शैली में हैं । कुछ कहानियां आत्मचरितात्मक शैली में मिलती हैं और एक कहानी पत्रात्मक शैली में है । इन शैलीगत कहानियों के अन्तर्गत अनेक प्रकार की और भी शैलीगत विशेषतायें होती हैं । अनेक तत्व-चिन्तन, कथोपकथन, मुहावरें, उपदेश, व्यंग्य आदि से भरी हुई माधवनजी की कहानियां, सरल भाषा में लिखी हुई होती है ।

जैसे ऊपर कहा गया है, माधवनजी की अधिकांश कहानियां उपदेशात्मक हैं । कथानक के उत्तम रूप को प्रस्तुत करने से बढकर लक्ष्य की पूर्ति निभाने का प्रयास है इन कहानियों में । समाज का सुधार ही माधवनजी की कहानियों का लक्ष्य है । उदाहरण केलिए "महासमर" का अंतिम भाग देखिए - "वृक्ष ने उत्तर दिया - तुम लोग अपने अहंकार रूपी कूप से बाहर आओ, तब तो संसार नज़र आयेगा । धूयें को बादल समझ जिन्होंने नीर वर्षा की उम्मीद की उन्होंने धोखा खाया है । ज्ञान हासिल करो मित्र । ज्ञानानुशीलन करो । तभी सुख और शक्ति प्राप्त कर सकोगे । समस्त जड़-चेतन की सेवा और शुद्धि करना जानो मुझ जैसा । यही वास्तविक ज्ञान-साधना है । तुम मानवों को हम वृक्षों का शिष्यत्व स्वीकार कर लेना चाहिए[1]

1. प्रसून पंथ - आनन्द शंकर माधवन, पृ.5

इस प्रकार उपदेशात्मक या लक्ष्यात्मक है माधवनजी की अधिकतर कहानियाँ ।

उपदेशात्मक होते हुए भी आत्मचरित्रात्मक ढंग से लिखी हुई कहानियों के उदाहरण हैं - "सब सडे नहीं हैं", "काया-कल्प", "मुंशी-पुरी", "मास्टर साहब की पत्नी ने घडी सुधारी" आदि । इसमें विषय लेखक के माध्यम से उपस्थित होता है । कहानीकार इसमें अपने जीवन से संबद्ध घटनायें और स्मृतियाँ स्वयं कह रहे हैं । इसलिए प्रतिपाद्य का प्रभाव बलवत्तर और अधिक संवेदनाशील तथा सहज रहता है ।

माधवनजी का "चार पत्र" नामक कहानी पत्रात्मक शैली में है । इसमें दो पात्र, इस रूप में कथा का आरंभ, विकास और अंत करते हैं कि सारा विषय पत्रों के माध्यम से उपस्थित होता है । दो मित्र सुदूर स्थानों में बैठे हुए आपस में इस प्रकार पत्र-व्यवहार या पत्रालाप करते हैं कि कोई कथा खडी हो जाती है, अथवा उनकी अनुभूतियाँ और मन्तव्य इस रूप में सामने आते हैं कि सारा विवरण सुसंबद्ध हो जाता है ।

माधवनजी कुछ कहानियों में दूसरों के द्वारा कथा कहलाते हैं । उदाहरण केलिए "दादी माँ" में दादी माँ के कथन के द्वारा कहानी हमारे सामने प्रस्तुत होती है । तत्त्व-चिन्तन भी माधवनजी की कहानियों में अनेक स्थान पर हैं । इसका उदाहरण "उसका वही धर्म था नामक कहानी में देखिए - "मन की प्रसन्नता में ही सत्य और ज्ञान भी छिपे हैं[1]।"

---

1. प्रसून पंथ - आनन्द शंकर माधवन, पृ.18

अनेक मुहावरों से कहानी को सजाने में माधवनजी सिद्ध हुआ हैं । "पिंजडे की चिडिये को पिंजडे में ही शांति थी", "जिनका बाल बनाया उन्हीं से पैसा भी लिया करना" आदि अनेकानेक सार्थक एवं प्रभावशाली मुहावरें माधवनजी की कहानियों में मिलते हैं ।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि माधवनजी ने सरल भाषा में सुन्दर प्रभावात्मक शैली में अपनी कहानियों की रचना कर हिन्दी साहित्य को विभूषित किया है ।

माधवनजी की कहानियों का उद्देश्य

माधवनजी का प्रसून-पंथ पाठकों को उदात्त दिशा ज्ञान कराने योग्य है । उन्होंने अपनी कहानियों के उद्देश्य को खुलकर समझाया है । प्रत्येक प्रसून निस्वार्थ सेवा केलिए यहाँ जन्मता है । उसी प्रकार माधवनजी की प्रत्येक कहानी समाज के निस्वार्थ सेवा कार्य को जगाने केलिए विरचित है । इस कहानियों द्वारा माधवनजी अपनी ख्याति नहीं चाहते हैं, बल्की उसका सद् परिणाम ही चाहते हैं । इसलिए माधवनजी की हर कहानी के उद्देश्य पर विशेष अवलोकन अनिवार्य है ।

महासमर

माधवनजी "महासमर" में यह दिखाना चाहते हैं कि मानव से बेहतर हैं इस संसार के सब जीवजाल । आज का मानव अपनी स्वार्थेच्छा केलिए परस्पर संघर्ष करते हैं । मानव को सभी प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हैं । लेकिन इन शक्तियों का सद्-कर्म केलिए वे उपयोग नहीं करते हैं ।

आज हम देख सकते हैं कि वैज्ञानिक प्रगति में गर्व करके प्रत्येक देश परस्पर संघर्ष कर रहा है । हर देश अपना अधिकार या सत्ता अन्य देशों के ऊपर जमाने की इच्छा रखता है । लेकिन यह वास्तविकता हम भूल जाते हैं । इसलिए इस संसार के मानव को माधवनजी यही उपदेश देते हैं कि मानवों तुम अपना अहंकार छोड दो । सेवानिरत बनो । अपनी सबकी मिथ्या धारणायें त्याग दो । ज्ञान-मार्ग स्वीकार करो । यथार्थ सत्य को पहचानने का प्रयत्न करो । अपनी बुद्धि का इस आनन्दमय सत्य स्वरूप को समझने और उसके साक्षात्कार करने को उपयोग करो ।

सुगम उपाय

इस कहानी के द्वारा माधवनजी यह संकेत करते हैं कि आज मानव धन इकट्ठा करने के सुगम उपाय ढूँढते हैं । बिना कुछ कठिनाई के या बिना काम करके हम जीना चाहते हैं । इसकेलिए हम किसी भी प्रकार का निम्न मार्ग स्वीकार करने को तैयार हैं । हम लोग अपना वंश, धर्म आदि में गर्व करते हैं । उन लोगों का ख्याल है कि उच्च धर्म के लोगों को छोटा-छोटा काम करना अपमान है । वे भूख से मरने को भी तैयार हैं । लेकिन काम करना नहीं चाहते हैं । इसीलिए वे सुगम उपाय ढूँढते हैं । माधवनजी इस कहानी के द्वारा यह भी इँगित करते हैं कि आज के साधु लोग पुराने ऋषिश्रेष्ठों के विरुद्ध हैं । वे गेरुआ वस्त्र, भस्म आदि अपनी जीविका के मार्ग के रूप में स्वीकार करते हैं ।

जादूगरनी

प्राध्यापक लोग सोचते हैं कि वे देश के सर्वश्रेष्ठ विद्वान हैं । इसीलिए दूसरों को हमेशा हँसी भरी दृष्टि से देखते हैं । लेकिन इन डरपोकों के सामने अज्ञ लोग भी अधिकार हासिल कर सकते हैं । क्योंकि वे धीरज के साथ काम करते हैं और बोलते हैं । आज के राजनैतिक लोग प्राय: अशिक्षित हैं । लेकिन वे लोग साहसी होने के कारण देश का कार्य संचालन बहुत सरलता से करते हैं । इसीलिए उन्हें लोग महान और विद्वान् मानते हैं । आज विद्वान लोग अयथार्थ के चक्कर में पड़कर रोने, कलपने, आँसू बहाने लगते हैं और उत्पीड़ित होकर निरर्थक कविता और कला का सृजन करने लगते हैं । राजनीतिज्ञ लोग ही इस संसार में सबसे अधिक सुख भोगनेवाले हैं । वे सभी चीज़ों को अपनी इच्छा के अनुसार अपने सुख-मौज के लिए इस्तेमाल करते हैं । यही तथ्य लेखक प्रस्तुत कहानी में उद्घाटित करते हैं

उसका वही धर्म था

मनुष्य जिस कार्य को छिपाकर रखता है उसकी ओर उसका दिल सदा पागल सा आसक्त रहता है । ब्राह्मण धर्म के अनुसार माँस खाना इसके विरुद्ध है । लेकिन ब्राह्मण लोग माँस खाने को इच्छुक हैं । इस प्रकार का बन्धन वास्तविक धर्म नहीं है । सब प्रकार की स्वतंत्रता ही वास्तविक धर्म है । हम भारतीय, धर्म के नाम पर अन्धविश्वासों के पीछे चलते हैं । इस अन्धविश्वास और अनाचारों को छोड़ने को माधवनजी इस कहानी के द्वारा हमको उपदेश देते हैं ।

सब सड़े नहीं हैं

माधवनजी इस कहानी के द्वारा यह दिखाना चाहते हैं कि संसार के अधिकांश लोग सड़े हैं । गांधी-टोपी आदि पहनकर जनसेवा के नाम पर इधर-उधर घूमनेवाले सज्जन धोखेबाज़ हैं । ऐसे सस्ते आदमी कहीं नहीं देखे जा सकते । उनकेलिए सब दिखावट मात्र है । इस तरह के लोग गांधी केलिए अपमान हैं । लेकिन इन लोगों के बीच भी कुछ सद्-पुरुष होते हैं । वे जनसेवा केलिए ही जन्मे हैं । वे जनोपकारी काम करके ईश्वर की पूजा-पुष्प बन जाते हैं । यहाँ माधवनजी कांग्रेसी लोगों में व्याप्त धोखेबाजी और कपटता का परिचय देकर उन्हें यथार्थ जनसेवक बनने को बाध्यस्थ कर रहे हैं ।

हृदय परिवर्तन

माधवनजी इस कहानी में स्पष्ट करना चाहते हैं कि अगर एक व्यक्ति कुछ गलती करे तो उसको मारने से या डाँटने मे कुछ फायदा नहीं है । इसके विरुद्ध मधुर वचन, मन्द मुस्कान, प्रेम, सेवा-कार्य आदि से उससे बदला लेना चाहिए । तब वह पश्चात्ताप करने लगता है । दुनिया की नीचता का परिचय जब तक समझ में नहीं आता तब तक मनुष्य परमेश्वर की ओर मुड़ता नहीं है । मनुष्य दुनिया की वास्तविक स्थिति समझने पर आध्यात्मिकता की ओर आकृष्ट होगा । इसलिए पापी को नहीं उसके पाप को दूर करने का प्रयत्न ही समाज में आवश्यक है, यह लेखक समझाना चाहते हैं ।

कायाकल्प

"कायाकल्प" में माधवनजी यह दिखाना चाहते हैं कि बहादूर लोग सब खतरों से बचते हैं । वे रोगों को भी जीत सकते हैं । रोग से हताश होने की आवश्यकता नहीं है । हम धीरज से उसे पार कर सकते हैं । दवा के बिना शीर्षासन, योगासन आदि का अभ्यास करने पर शरीर सुदृढ बन जाता है और भयानक रोगों से भी आदमी विमुक्त हो जाता है । अशक्त शरीर पढे-लिखे लोगों के हैं । श्रमिकों के शरीर मज़बूत है ।

माधवनजी सन्तानों केलिए बहुत सम्पत्ति जमाकर छोड़नेवाले माता-पिताओं के विरुद्ध हैं । क्योंकि वे माता-पिता सन्तानों का नाश ही करते हैं भलाई नहीं । संपत्ति बहुत होने पर सन्तान स्वावलम्बी नहीं बन सकते । स्वयं काम करके अपनी जीवनी चलाने की शक्ति सब युवकों और युवतियों को होना चाहिए ।

प्यार का रोग

कुछ लोग संसार की सबसे रसभरी चीज़ स्त्री शरीर को ही मानते हैं । ऐसे पुरुष स्त्री के पीछे पागल हो घूमते हैं । कुछ लड़कियाँ ऐसी होती हैं कि जब वे अपने प्रेम-पात्र से बेहतर या सुयोग्य पुरुषों को देखती हैं तब वे उनकी फेर में पड़ती हैं ।

विभिन्न धर्म के लोग परस्पर प्रेम करने से, माता-पिता औ समाज इसके विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं । मनुष्य एक ही धर्म के हैं ।

लेकिन हम मानव कई वर्ग या धर्म का निर्माण करके लोगों का विघटन करते हैं । स्नेह एक ही धर्म के बीच न होकर वह विशाल रहे तभी उसकी सच्चाई रहती है विभिन्न धर्मों में भरोसे रखनेवालों के बीच विवाह होने से कोई आपत्ति नहीं है ।

प्रोफेसर की पत्नी

पुरुष हमेशा स्त्री को अपनी इच्छापूर्ति की वस्तु मानते हैं । गुस्सा आने पर अपनी स्त्री को वेश्यागली में छोडने को भी वे तैयार होते हैं । इस प्रकार के पुरुषों से स्त्री, जब शारीरिक पीडा न देकर, सद्कर्म करके बदला लेती है तब यथार्थ बदला हो जाता है ।

माधवनजी की राय में वेश्यागली की वेश्यायें भी बहुत भली स्त्रियाँ हैं । वे परिस्थिति की गुलाम बनकर वेश्यायें बन जाती हैं । उनको भी दिशा-निर्देश देनेवाले मिलें तो वे भी भली स्त्रियाँ बन जाएंगी । यह पाठ लेखक "प्रोफेसर की पत्नी" कहानी से पाठकों को देना चाहते हैं ।

इन्टरव्यू

"इन्टरव्यू" में माधवनजी अनेक सद्लक्ष्य हमारे सम्मुख रखते हैं । ये हैं - हमारे काम में हमको ईमानदार होना चाहिए । सदा देवत्व का अनुशीलन करना चाहिए । आध्यात्मिक अनुष्ठान पर विश्वास रखना चाहिए । हम भारतीय अब भी गुलाम बनकर जीना चाहते हैं । हमको स्वतंत्र होना चाहिए और इसकेलिए हमको स्वतंत्र व्यक्तित्व रखना चाहिए । हमको अपने

देश और देशवासियों को सबसे महान और श्रेष्ठ बनाना चाहिए । इसीमें देश की भलाई होगी देशवासियों की प्रगति होगी, यही "इन्टरव्यू" कहानी द्वारा प्रदत्त गुणसार है ।

मुंशीपुरी

माधवनजी कांग्रेस की शोचनीय स्थिति से परेशान होते हैं। कांग्रेस लोगों का लक्ष्य अब अपना स्वार्थ-लाभ मात्र है । हर कांग्रेसी बड़ा बड़ा अधिकार पाने को प्रयास करता है, देश की प्रगति नहीं चाहता है । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन्नत स्तर के कांग्रेसी लोगों को मंत्री-पद मिला । उपनेताओं को एम·एल·ए· का पद मिला । उनसे भी छोटे दर्जे के लोगों ने सरकारी कामों में प्रवेश किया । इस प्रकार वे एक-एक पद पर अपना प्रताप प्रकट करने लगे । जिनको यह सब अच्छा न लगा, उन लोगों ने भूदान, सर्वोदय, खादी आदि संस्थाओं में काम करना पसन्द किया । कुछ ऐसे कांग्रेसी भी होते हैं जो किसी पद के इच्छुक नहीं होते । कुछ ऐसे हैं जिन्हें कोई पद नहीं मिला तो इधर-उधर घूमकर गरीबों पर व्यर्थ मुकद्दमा आदि चलाने लगे । इस प्रकार कांग्रेसी लोगों ने महात्मा गांधी जैसे आदर्शवान नेताओं से स्थापित बड़ी और श्रेष्ट संस्था को हतप्रभ कर दिया । आज सभी मान्यतायें एवं मूल्य तहस नहस हो गए हैं । कांग्रेसी नाम लेकर बहुत से लोग देश का नाश करने में निरत है । इस प्रकार के बेईमान लोग हमारे राष्ट्र केलिए खतरनाक हैं ।

भारत में सब प्रकार का अधिकार राजनीतिज्ञों के हाथ में है । साहित्यकारों, वैज्ञानिकों या गायकों को यहाँ कोई स्थान नहीं है ।

इसलिए हमको समझदार होकर इन असुर-वृत्तिवालों का नाश करना चाहिए। हमको ज्ञानवान बनना चाहिए। सब मिथ्याभिमानों या स्वार्थेच्छाओं को छोड़कर देश-भक्ति, त्याग, ज्ञान चेतना और सेवाकार्य में लीन होकर हमको सर्वश्रेष्ठ बनना चाहिए। हमको इसकेलिए तपस्या करनी चाहिए। हमारे देश का उद्धार हमारे ही हाथों में है। कांग्रेसी के नाम पर चलनेवाले धूर्तों को इस समाज से उखाड़ फेंकने केलिए हमको अग्रसर होना चाहिए। यही प्रस्तुत कहानी का आह्वान है।

मास्टर साहब की पत्नी ने घड़ी सुनायी

माधवनजी इस कहानी में यही उपदेश देते हैं स्त्री-पुरुष के विवाह के बाद इच्छानुसार, जी भर आपस में बातें करो। नहीं तो अन्त में पछताना पड़ेगा। स्त्री पुरुष का पारस्परिक सम्बन्ध, पारस्परिक मिलन, बर्ताव तथा परस्पर जानने में हैं।

चारित्र्य

अँग्रेज़ कुछ का कुछ सुनकर क्रोध या जोश में आनेवाले नहीं है। लेकिन भारतीय इसके उलटे मिजाज के हैं। अँग्रेज़ अपनी पत्नी को गुलाम नहीं मानते हैं। पत्नी को सब प्रकार की आज़ादी देते हैं। उनकी राय में पत्नी की गलती का जिम्मेदार पति है। पत्नी नासमझी और अज्ञता के कारण गलती करती है। इसलिए पति का कर्तव्य है कि पत्नी को समझदार बनाना इस कथा द्वारा लाखों भारतीयों को माधवनजी ही यही समझाना चाहते हैं कि तुम पत्नी को मर्यादा रखो, उसकी पूजा करो, उसे गुलाम या द्रव्य की तरह इस्तेमाल न करो।

स्वयंवर

माता-पिता अपनी लड़की का पालन-पोषण बड़ी अभिलाषा से करते हैं । वह सयानी बन जाने पर वे उसके सुयोग्य वर की खोज में लग जाते हैं । लेकिन लड़की अपना मन-पसन्द पुरुष के साथ विवाह करना चाहती है । पिता-माता के विरोध के रहते हुए भी वह ऐसा करती है । पति के चुनाव में पुत्री की इच्छा को तुच्छ माननेवाले माता-पिताओं केलिए उचित सबक ही इस कहानी द्वारा माधवनजी प्रस्तुत करते हैं ।

डाइन

माधवनजी की राय में स्त्री केलिए उसका सौन्दर्य ही उसकी विनाशकारी वस्तु है । स्त्री सुन्दरी है तो ससुराल के सब लोगों का घृणा-पात्र वह बन जाती है । पति हिम्मतवार या ताकतवार नहीं है तो उस स्त्री की स्थिति ज़रूर दयनीय ही रह जाती है । भारत में स्त्री की स्थिति ऐसी है कि औरतों के घर से बाहर निकलने से वे खतरे मोल लेती है । स्त्री की इस प्रकार की दयनीय दशा को सुधारने केलिए कोई व्यक्ति आता नहीं है । अगर आता तो उसके विरुद्ध सब राजनीतिज्ञ या संस्थायें आवाज़ उठाते हैं । भारतीय स्त्री के उद्धार केलिए यहाँ कोई तैयार नहीं है । माधवनजी इस कहानी में स्त्री के सुधार की आवश्यकता की ओर संकेत करते हैं और भारतीय नारी की दुर्दशा का चित्रण सच्चे रूप में प्रस्तुत करते हैं ।

ऐसे ही आँसू पोंछे जाते

आज का युवक अपनी प्रतिष्ठा मात्र चाहता है । वह स्त्री को अपनी इच्छा के अनुसार इस्तेमाल करने के बाद छोड देता है । इसलिए स्त्री के शोषण का कारण पुरुष ही है । कहीं कहीं कुछ देवतायें भी हैं, जो स्त्री की आँसू पोंछने को तैयार होते हैं ।

अकर्मण्यों का शांति पर्व

आज मानव काम करने में रुचि नहीं दिखाते हैं । खासकर हिन्दुस्तान का युवक नहा-धोकर, खा-पीकर, गप्पें लड़ाते हुए, ताश खेलते हुए या पर-निन्दा करते हुये बैठते हैं । वे अच्छा वस्त्र पहनना चाहते हैं, नयी-नयी फैशन के पीछे दौड़ते हैं ।

यहाँ अमीर की हालत सुधर रही है । गरीब फिर भी गरीब बन जाता है । यहाँ के लोग इसकी ओर आखें नहीं खोलते हैं । भारत पर कितने लोगों ने आक्रमण किया । अनेक लातें पड़ने पर भी भारतीय हिले नहीं । वे हमेशा अकर्मण्य रहना चाहते हैं । माधवनजी हमको कर्मनिरत होकर देश का सुधार करने का आह्वान इस कहानी में देते हैं ।

चरित्रहीन

माधवनजी की "चरित्रहीन" नामक कहानी से हमको मालूम होता है कि समाज के सब प्रकार के पापी, चरित्रहीन, शराबी, व्यभिचारी और दुराचारी उच्च वर्ग के या उन्नत शिखर पर आसीन लोग हैं ।

वे गरीबों पर जितना चाहे अत्याचार या दुराचार करें तो भी समाज उसको सम्मान की दृष्टि से देखता है । वे न्याय की दृष्टि से भी दोषी नहीं निकलते हैं । गरीब लोग हमेशा सजा भोगते हैं । वे हमेशा शोषित ही रह गये हैं । अधिकारी वर्ग भी अमीर या उच्च वर्ग के लोगों के साथ हैं ।

कम्यूनिस्ट

आदमी वृद्ध होने पर भी सयानी लड़कियों के पीछे पागल रहता है । अपनी बूढी पत्नी पर बूढे को कोई शोक नहीं है । वह नये-नये फूलों की खोज में लग जाता है । उसको कल की इच्छा नहीं है । कम्यूनिस्ट या साम्यवादी आदि कहने से भी कोई फायदा नहीं है । फूल और फल को समान रूप से देखने केलिए माधवनजी इस कहानी में उपदेश देते हैं और भारतीय सामाजिक धर्मों का पालन करने केलिए आह्वान देते हैं ।

काई कैसे धुल गई

वास्तविक देशप्रेमी युवक माँ बाप के धन से ज़िन्दगी बिताना नहीं चाहता है । ड्रायन जैसे सुन्दरी पत्नी को भी पुरुष नहीं चाहता है । सेवा-तत्पर स्त्रियों को वह पसन्द करता है । फौज में जाना महान देश-सेवा है । कुछ लोग इच्छा से फौज में जाते हैं । इन लोगों से प्रेरित होकर अनेक लोग देश - सेवा केलिए आगे बढते हैं ।

हमारे परिवार में कुलवधु का सम्मान होना चाहिए । कुल वधु घर की लक्ष्मी है । उसका अपमान परमेश्वर का अपमान है । यही भारतीय धर्म है ।

सती

"सती होने" का तात्पर्य मर जाना नहीं है । जब पति देश-सेवा में व्यापृत हुआ तब वह मर गया तो उस लक्ष्य को आगे बढाना ही स्त्री का कर्तव्य है । इस प्रकार पति के लक्ष्य की पूर्ति करना ही सती का सच्चा अर्थ है । यहाँ माधवनजी सती शब्द की नयी व्याख्या प्रस्तुत कर नया अर्थ ढूँढ रहे हैं ।

प्रेम हो गया

पुरुष लोगों का ख्याल है कि राणी या उन्नत कुल की स्त्री के शरीर में लक्क अधिक है । इसलिए पुरुष विशेष स्त्री-शरीर देखने पर लालायित हो जाता है । अपनी पत्नी का शरीर और अन्य स्त्रियों का शरीर समान ही है । लेकिन पुरुष यह नहीं समझता है ।

दादी माँ

स्त्री का शरीर एक ही पुरुष केलिए है । इसलिए स्त्री को सद् पुरुष से प्रेम करना चाहिए । एक बार उसका शरीर किसी पुरुष को दिया तो फिर हमेशा केलिए वह उसकी चीज़ हो जाती है । स्त्रियाँ उन्हें हमेशा केलिए अपना सर्वस्व समझ लेती हैं । माधवनजी कहते हैं कि सद्पुरुष उस स्त्री को कभी भूल नहीं सकता जो उसको माफ करती है और एक बार ही सही सच्चा सुख देती है । इस सनातन भारत धर्म के कारण ही भारत की नैतिकता अब तक बची हुई है ।

चार पत्र

"चार पत्र" में माधवनजी स्त्री के शोषण के बारे में वर्णन करते हैं । सुन्दरी स्त्री को मूर्ख पति शंकाभरी दृष्टि से देखता है । स्त्री का अपमान करने को यहाँ अनेक लोग तुले हुए हैं । माधवनजी प्रस्तुत कहानी में साम्यवादियों की प्रशंसा करते हैं । साम्यवादी लोग स्त्री शिक्षा चाहते हैं और यहाँ के सब दुराचारों को मिटाना चाहते हैं । लेकिन सरकार इन लोगों को दुश्मन मानती है । भारत अब भी इस प्रकार के उच्च आदर्शों को स्वीकार करने को तैयार नहीं है ।

माधवनजी इस में यह भी अभिव्यक्त करना चाहते हैं कि स्त्री केलिए माता, पति, ससुर, बाल-बच्चे सभी व्यर्थ हैं, एक धोखे की टट्टी हैं । जो स्त्री पढ लिखकर विदुषी नहीं हो पाती और अपने खर्च केलिए आत्म निर्भर नहीं हो पाती, उसकी ज़िन्दगी बेकार है, बिलकुल नरक है ।

जन्म साफल्य

माधवनजी "जन्म साफल्य" कहानी में संकेत करते हैं कि दूसरों के अश्रुप्रवाह को रोकने केलिए तैयार होकर अनेक शिक्षित स्त्रियाँ यहाँ हैं । लेकिन पुरुष उनको शंकाभरी दृष्टि से देखते हैं । उन कुसुम कन्याओं को सद् दिशा देना पुरुष का ही कर्तव्य है । इस कहानी के द्वारा माधवनजी यह लिखना चाहते हैं कि हम मानवों के दिल में मुलायम, हृदय में भाव, दीन-दुखियों के प्रति दर्द आदि होना चाहिए । जब हम दूसरों का उद्धार करते हैं तब हमारा भी उद्धार होता है ।

आधुनिक तुलसीदास

तुलसीदास को "रामचरितमानस" लिखने का प्रेरणास्रोत उसकी प्रिय पत्नी था । वस्तुत: पुरुष की शक्ति स्त्री ही है या यही कहा जा सकता है कि पुरुष की विजयशिल्पी स्त्री है । यह तत्त्व इस कहानी में आद्यंत प्राप्त है ।

जोश

प्रस्तुत कहानी द्वारा माधवनजी जोश नामक मानव प्रकृति को सद् कार्य केलिए उपयोग करने का उपदेश देते हैं न कि गरीबों को लूटने केलिए । जोशवाले व्यक्ति को सद् दिशा देने पर वे पारिजातपुष्प बन जायेंगे, यही लेखक का तात्पर्य है ।

ऊकेत

"ऊकेत" में माधवनजी यह समझाना चाहते हैं कि लोग परिस्थिति का गुलाम बनकर डाकु आदि बन जाते हैं । वे भी आदमी हैं । उनके भी अच्छे दिल होते हैं । यह बात हम बहुधा भूल जाते हैं । इस कारण समाज में डाकुओं की संख्या बढ़ती है ।

साथ ही लेखक याद दिलाना चाहते हैं कि अत्याचारी लोग आफत के समय पछताते हैं । मनुष्य अपने सुख के समय ईश्वर की याद नहीं करते हैं और सद्कर्म भी भूल जाते हैं । आफत में ईश्वर की खोज में हम फटकने लगते हैं ।

गाँधीवादी

माधवनजी इस कहानी में गाँधीवाद के कुछ सिद्धान्तों को हमारे सामने उपस्थित करते हैं । गाँधीवाद की नीति है कि अपनी गलती समझकर पश्चात्ताप करना । कुछ लोग ऐसे होते हैं जो उच्च पद मिलते ही समस्त बीती बातें भूलकर गर्व से अपना अधिकार सब लोगों पर जमाना चाहते हैं । वे वस्तुत: मूर्ख हैं । उनका ख्याल है कि यह महानता की बात है । इस प्रकार के मूढ स्वर्ग में रहनेवालों को वास्तविकता के धरातल पर लाने को कुछ गाँधीवादी प्रयास करते हैं । यह सराहनीय है । उच्च पदों में रहते हुए भी सभी प्रकार के काम करने केलिए वे तैयार रहते हैं । वे लोग पद, सौन्दर्य , धन या यश को सम्मान के परिचायक नहीं मानते हैं ।

माधवनजी की राय में मानव की वास्तविक दौलत उसकी साधना है । किसी उदात्त लक्ष्य को सामने रख उसे चरितार्थ करने को रात-दिन परिश्रम करना चाहिए ।

अनन्त की ओर

कुछ लोग अपनी गलती समझकर पछताते हैं । तब वे संसार के सार - तत्त्व अर्थात् ईश्वर के पथ पर प्रवेश करते हैं । उस समय वे इस संसार का सुख-भोग आदि छोड़कर ईश्वर की खोज में निकलते हैं । "अनन्त की ओर" में माधवनजी समझाते हैं कि यही मानव का अंतिम लक्ष्य है ।

प्रसून पंथ

कुसुम कन्यायें ऐसी हैं वे अपना सुख नहीं चाहती हैं, वे दूसरों केलिए जीती हैं । वे सूर्यदेव की प्रार्थना करती हैं । लेकिन उसके फल का बीज और किसी का है । वे अपने फल से और अपने सौरभ्य से संसार में प्रकाश फैलाती हैं । दूसरों का अपमान या क्रूरता सहकर भी वे जी रही हैं । इस प्रकार की कुसुम कन्यायें ही हमारे समाज की देवतायें हैं । लेकिन यहाँ अधिकांश लोग अपना सुख मात्र चाहते हैं । तब इस प्रकार की कुसुम कन्याओं को समझने का अवसर नहीं मिलते हैं ।

माधवनजी की उपर्युक्त कहानियों के अध्ययन से यही निष्कर्ष निकलता है कि माधवनजी की हर कहानी फल प्रसविनी है । भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता आदि कूट कूट कर भरी हुई माधवनजी के 'प्रसून-पंथ' की कहानियाँ ज़रूर निस्वार्थ सेवा करनेवाली कन्यायें ही हैं ।

सम-सामयिक कहानियों के साथ तुलना

स्वतंत्रता आन्दोलन के समय की कहानियों में उस समय के राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि की झलक है । महात्मा गाँधी का प्रभाव भी उस समय की कहानियों में पड़ा है । प्रेमचन्द, उग्र, सुदर्शन आदि कहानिकारों की कहानियों में इसका स्पष्ट उदाहरण देखा जा सकता है उस समय के युग-प्रवर्तक कहानीकार प्रेमचन्द ही हैं । प्रेमचन्दयुगीन कहानियों में राष्ट्रीय-जागरण, दासता-विरोधी चेतना, शोषण-विरोधी-चेतना, भारतीय जीवन की सामाजिक विसंगतियों और कुरीतियों के विरुद्ध वातावरण, नारी की मुक्ति की छटपटाहट, देश-प्रेम, आज़ादी का मूल्य, ईमानदारी, जीवन में आध्यात्मिकता का स्थान आदि अनेकानेक भारतीय मूल्यों पर

गहराई से विचार हुआ है । संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि उस समय की कहानियों में सुधारवादी दृष्टिकोण की अधिकता है ।

आनन्द शंकर माधवन की कहानियाँ भी इस युग की कहानियों से समानता रखती है । उनकी कहानियों का भी मुख्य लक्ष्य समाज सुधार ही है । समाज में रूढमूल अन्धविश्वास, कुरीतियाँ आदि का संकेत करके उनके विरुद्ध वे आवाज़ उठाते हैं । उनकी प्राय: सभी कहानियाँ इस उद्देश्य पूर्ति का साधन हैं । "उसका वही धर्म था", "सुगम उपाय" आदि इसके उदाहरण हैं । दासता विरोधी चेतना तथा आज़ादी का मूल्य निर्धारण माधवनजी की कहानियों में सर्वत्र प्राप्त है । हम भारतीय अनेक आघातों के धक्के लगने पर भी कोई सबक नहीं पढते हैं । विदेशियों ने हमें कितनी बार कुचाला दिया । हम सहते रहे । अकर्मण्यता के कारण हमें कई कष्ट सहने पड़े । अंतत: गुलाम बने । माधवनजी भारतीयों की अकर्मण्यता का वर्णन "अकर्मण्यता का शांती पर्व", "इन्टरव्यू" आदि कहानियों में करते हुए हमें समझाते हैं कि हम स्वतंत्रता का मूल्य समझे और स्वतंत्र व्यक्तित्व को बनाये रखें ।

भारतीय समाज में स्त्री हमेशा शोषित ही रही है । उसकी हालत को सुधारने की आवश्यकता पर माधवनजी अपनी "डाइन", "चार-पत्र", "प्रसून-पंथ", "ऐसे ही आँसू पोंछे जाते" आदि कहानियों में ज़ोर देते हैं ।

प्रेमचन्द पुरानी कहानियों में जो देश-प्रेम, ईमानदारी आदि का वर्णन प्रचुर मात्रा में है वही "इन्टरव्यू" "काई कैसे धुल गयी", "सती", आदि कहानियों में देखा जा सकता है । इसी तरह माधवनजी आध्यात्मिक मूल्य को भी अपनी कहानियों में प्रमुख स्थान देते हैं । इस संसार के जीवन की

व्यर्थता को समझकर आध्यात्मिकता की ओर आनेवाले अनेक पात्र उनकी कहानियों में हैं । इसका सर्वोत्तम उदाहरण "हृदय परिवर्तन", "अनन्त की ओर" आदि कहानियाँ हैं ।

माधवनजी की प्राय: अधिकांश कहानियाँ जीवन मूल्यों और नैतिक मूल्यों की आवश्यकता समझानेवाली है । "सब सडे नहीं हैं", "गाँधीवाद", "इंकेत", "जोश", "दादी मा" आदि कहानियों में इसका परिचय प्राप्त होता है ।

कहानी का लक्ष्य, विषय-वस्तु आदि सभी दृष्टियों से देखने पर प्रेमचन्दयुगीन कहानियों से माधवनजी की कहानियाँ समता रखती हैं ।

कहानीकार के रूप में माधवनजी

माधवनजी अहिन्दी भाषी साहित्यकार है । इस परिधि में रखकर माधवनजी की हिन्दी कहानियों का मूल्यांकन करने पर हमको मालूम होता है कि माधवनजी उच्च कोटि के कहानीकार हैं । कथावस्तु, पात्र, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, शैली, उद्देश्य आदि समस्त कथा के तत्व उनकी कहानियों में हूबहू नियोजित है ।

छोटी-छोटी कहानियों में बहुत विचारणीय कथा को प्रस्तुत करने में माधवनजी ने कमाल हासिल किया है । उन्होंने अपने लक्ष्यों को पाठकों तक पहुँचाने केलिए कई प्रकार की शैलियों को स्वीकार किया । माधवनजी की कहानियाँ आत्मचरितात्मक, पत्रात्मक, उपदेशात्मक आदि अनेक शैलियों में सरल भाषा में लिखी हुई हैं । उद्देश्यप्रधान होते हुए भी उनकी कहानियाँ यथार्थबोध उत्पन्न करनेवाली तथा जीवनोपयोगी हैं ।

उनकी प्रत्येक कहानी एक एक प्रसून ही है ।

पात्रों की सृष्टि और चरित्र-चित्रण में भी माधवनजी ने कुशलता दिखाई है । पात्र स्वयं अपने कर्म और संवाद के द्वारा अपने चरित्र को व्यक्त करते हैं । इन पात्रों के द्वारा ही माधवनजी अपने काव्य लक्ष्य पर पहुँचते हैं । पात्रों के संवाद में भी माधवनजी बहुत ध्यान देते हैं ।

इस प्रकार कहानी कला की दृष्टि से देखने पर माधवनजी की कहानियाँ उच्च स्तर की तथा जीवनोपयोगी साबित होती हैं । इस कारण माधवनजी निस्सन्देह हिन्दी कहानी साहित्य में अनन्य स्थान के अधिकारी सिद्ध होते हैं ।

अध्याय - चार

माधवन जी के निबन्ध

अध्याय - चार

माधवनजी के निबन्ध

हिन्दी निबन्ध की गति-विधि

हिन्दी साहित्य में निबन्ध-रचना पृथक् और महत्वपूर्ण स्थान रखती है । आधुनिक युग में वैचारिक प्रगति के साथ-साथ गद्य की साहित्यिक शैलियों और विविध विधाओं का समुत्कर्ष हुआ । भारतीय परम्परायें क्रमश: विकसित हुई, पर नवोत्थानवादी प्रवृत्तियाँ उदारतापूर्वक पाश्चात्य प्रभावों को निरन्तर आत्मसात् करती गयी । यह सांस्कृतिक नव-जागरण समन्वयात्मक और विकासोन्मुख वस्तु थी । हिन्दी-निबन्ध के साहित्यिक विकास के मूल में यही प्रेरणा और परिस्थिति सक्रिय रही ।

संस्कृत साहित्य में निबन्ध का प्राचीन रूप उपलब्ध होता है वहाँ वह मुख्यत: शास्त्रीय एवं दार्शनिक रचना को गद्य-बन्ध के रूप में व्यवहृत हुआ है । हिन्दी के विचार प्रधान या विषयनिष्ठ निबन्धों की परम्परा

इसी पद्धति से सम्बन्धित ज्ञात होती है । संस्कृत के निबन्ध प्राय: सामान्य विषयों पर कभी नहीं लिखे गये, पर हिन्दी में यह बात आवश्यक नहीं समझी गयी ।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के युग को हिन्दी-निबन्ध का अभ्युत्थान काल माना गया है । इस युग में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन निबन्धों केलिए अनुकूल वातावरण की सृष्टि कर सका । उस समय के हिन्दी निबन्धों पर पाश्चात्य "ऐसे" का प्रभाव पडा, पर विचारात्मक अधिकरण पद्धति का भी अनुवर्तन हुआ । सामयिक परिस्थितियों के कारण व्यंग्य विनोदात्मक रोचक निबन्ध लिखे गये । द्विवेदी युग परिमार्जन का काल है, इस युग में आलोचनात्मक निबन्ध लिखे गये और ज्ञान-राशि का निबन्ध-रूप में आकलन करने केलिए श्रम-साध्य प्रयास हुए ।

शुक्ल-युग हिन्दी निबन्ध की उत्कर्षावस्था का द्योतक है, आचार्य शुक्ल के मनोवैज्ञानिक निबन्ध एक नया प्रतिमान स्थापित कर सके । हिन्दी साहित्य में इसी समय व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों का उन्मेष हुआ, अतएव वैयक्तिक अथवा आत्माभिव्यंजक निबन्ध भी लिखे जाने लगे । शुक्लोत्तर युग हिन्दी-निबन्ध की प्रसरणावस्था का निदर्शक है । इस युग में बुद्धि-निष्ठ और तथ्यप्राय निबन्ध भी लिखे गये । वैयक्तिक निबन्धों का पृथक् सौष्ठव और सर्जना-व्यापार अपनी आकर्षक भंगिमायें भी दिखा सका । कतिपय निबन्धकार व्यक्ति और विषय की उभय रेखाओं को समीप लाने का उपक्रम करते रहे । आज हिन्दी-निबन्ध रचना की व्यक्ति सापेक्ष और विषय-सापेक्ष धारायें अपना पृथक्त्व विज्ञापित कर रही हैं ।

हिन्दी निबन्ध का यह क्रम विकास उत्कर्षाभिमुख रहा है । अनेक रचना पद्धतियाँ और गद्य शैलियाँ अपना साहित्यिक सौकर्य सिद्ध कर चुकी

आत्मोन्मुखी प्रवृत्तियाँ ललित निबन्धों की रचना करने में सफल हुई हैं और समाजोन्मुखी प्रवृत्तियाँ विषय-प्रधान निबन्ध लिखने में सक्षम रही हैं । भारतीय जीवधारा में आत्मकेन्द्रित मन:स्थिति प्राय: गौण रही है, इसी कारण हिन्दी में ललित निबन्धों की रचना गुण और परिमाण में अपेक्षाकृत क्षीण स्थिति ही बना पायी । इनकी सृष्टि केलिए व्यक्तिवादी जीवन-पद्धति को अनिवार्य समझा गया है । हिन्दी-साहित्य में निबन्ध की विधा इस प्रकार क्रमश: परिष्कृत, परिपुष्ट और प्रतिष्ठित हुई, यह क्रम-विकास भविष्य में उसकी समृद्धि की अमित संभावनाओं का पूर्व-संकेत ज्ञात होता है ।

माधवनजी के निबन्धों का परिचयात्मक विवरण

जीवन और इससे इतर सम्पूर्ण जड़-चेतनमय जगत् किसी भी अंग को हम निबन्ध का विषय बना सकते हैं । सम्पूर्ण सृष्टि अपने मुग्धकारी रूप में अपने व्यापारों के माध्यम से अपनी शक्ति का संकेत देती है । इसके निकट आकर हम सुखी होते हैं, दु:खी भी होते हैं । हमारे जीवन के सारे कार्य-व्यापार इससे प्रभावित हैं । साहित्य, संस्कृति, धर्म की प्रकृति की सानुकूलता से अपने अस्तित्व को सुरक्षित पाते हैं । ऐसी विराट प्रकृति में निबन्धों केलिए विषय का अभाव नहीं । अनुभूति के आह्लादकारी उद्दाम तरंगोंवाला उत्स अपने असंख्य जल शिशुओं को साहित्यकार की अन्तश्चेतना के पटल पर स्वच्छन्द निरापद छोड देता है जहाँ मंगलमयी कल्पना और युग की उदात्त भावनाओं के अपूर्व दुलार के मध्य वे जल-शिशु विकास पाते हैं । कालान्तर में ये ही साहित्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के अंग बनते हैं ।
निबन्धकार विषय चुनते समय अपनी रुचि एवं माँग के प्रति सजग रहता है । वह विषय के महत्त्व को ध्यान में रखकर उस पर अपनी शक्ति लगा देता है । इस प्रकार निबन्धों का कार्यक्षेत्र व्यापक होने के कारण उनका वर्गीकरण कई आधारों पर किया जाता है । सामान्यत: निबन्धों को कसौटी पर रखने केलिए दो ही मानदण्ड हैं एक तो विषय की दृष्टि, दूसरी शैली की दृष्टि ।

माधवनजी के निबन्ध संग्रह हैं - उषा (प्रकाशन 1968), आरती (प्रकाशन 1967) और अनलशलाका (प्रकाशन 1962) । हिन्दी आन्दोलन (1970), बृहत्तर भारती (1973) और शिवधाम (1984) माधवनजी के निबन्ध हैं ।

उषा

श्री. आनन्द शंकर माधवन के कतिपय भाषणों, पत्रों एवं निबन्धों का संग्रह है "उषा" । यह पुस्तक सत्य को ढूंढने और समझने में पाठकों को सहायक सिद्ध होगी । इसमें संस्कृति, दर्शन, साहित्य, शिक्षा, धर्म आदि पर लिखे गये निबन्ध होते हैं । माधवनजी भारत की वर्तमान स्थिति में दु:खी होते हैं । वह स्वतंत्र होते हुए भी स्वतंत्र नहीं है । माधवनजी कहते हैं "वह दुनिया के बीच उतरकर आज चिल्ला रहा है - "मैं भाड़े पर हूँ, जो चाहे मुझे ले लें, हर कार्य केलिए मैं प्रस्तुत हूँ ।" यही तो भारत की आज की लज्जत है । इस स्थिति से उसे ऊपर लाकर प्रतिष्ठा के साथ जीने मरने केलिए उसको योग्य बनाने की ओर यह पुस्तक इशारा करती है ।

अनलशलाका

"अनलशलाका" को हिन्दी वाङ्मय का क्रांतिकारी प्रयास समझा जाता है । इसमें युग-चेतना की दुन्दुभी के निनाद सुनायी पड़े हैं । इसमें हार्दिकता तथा बौद्धिकता का अलभ्य समन्वय पाया जाता है । प्रगतिशील विचारों की झाँकी-झाँकी देखी जाती है । चिन्तन की गहराई को मानवतावादी मार्ग पर सेतु निर्माण करते देखा जाता है । इसमें देश में व्याप्त गरीबी, बेकारी, अत्याचार, उत्पीडन, अन्धविश्वास, जातिप्रथा और

1. उषा - आनन्द शंकर माधवन - भूमिका

शोषण के प्रति एक स्थिर निर्भीकता के साथ खुला विद्रोह आदि देखा जा सकता है । यह पूर्ण भावात्मक, पूर्ण विचारात्मक और पूर्ण आत्मात्मक है । इस अनलशलाका की रचना पर, जिसमें गंभीर बातों को विनोदपूर्ण ढंग से या व्यंग्य रूप से कहते हुए हृदय के क्षोभ-दु:ख को प्रवाहपूर्ण ढंग से व्यक्त करने की कला भरी हुई है । लेखक में जो दर्द है, वह अपनी संस्कृति की भ्रष्टता पर है, अपने देश के सम्मिलित जीवन की कटुता पर है, दुर्दशा पर है । इसकी शैली में भावुकता, व्यंग्य एवं विनोद का सुन्दर सामंजस्य दिखाई देता है

हिन्दी आन्दोलन

"हिन्दी आन्दोलन" माधवनजी की देश-भक्ति, हिन्दी-प्रेम एवं उच्च आदर्श के प्रति सतत् प्रयत्नशीलता है । माधवनजी की राय में हिन्दी की समस्या या राष्ट्रभाषा की समस्या और आन्दोलन आज की अनेक राष्ट्रीय समस्याओं से अलग नहीं । "हिन्दी आन्दोलन" हिन्दी तथा अन्य राष्ट्रीय समस्याओं पर चिन्तन करने की प्रेरणा देता है ।

आरती

आरती 31 निबन्धों का संग्रह है । हर निबन्ध में बौद्धिकता एवं हार्दिकता का समन्वय तथा चिन्तन की गहराई देखी जा सकती है । इनके स्वरों में भ्रष्टाचार, अत्याचार, उत्पीडन एवं शोषण के प्रति निर्भीक खुला विद्रोह ध्वनित हो रहा है । भारत के पढे-लिखे भ्रष्टाचारियों की, धूर्त राजनीतिज्ञों की, व्यापारियों तथा साहित्यकारों की और सभी प्रकार के, सभी क्षेत्र के, सभी धन्धे के, स्वार्थियों, लोभियों, कामियों और ढोंगियों की लेखक आरती उतारने चाहते हैं । इन लेखों में पुष्ट एवं सुनियोजित, मांगलिक सन्देश है, मनुष्य को प्रकाश देने की क्षमता है ।

बृहत्तर भारती

माधवनजी "बृहत्तर भारती" को एक महान और दीर्घकालीन यज्ञ कहकर सम्बोधित करते हैं । इस यज्ञ का मुख्य उद्देश्य एक ऐसी विभूतिमय प्रतिभा को जगाना है जो समस्त विश्व पर शासन कर सके । माधवनजी सत्य और ज्ञान के प्रसार हेतु समस्त विश्व को एक इकाई मानकर चलते हैं । उनकी इस कल्पना में "वसुधेव कुटुम्बकम्" तथा "यत्र विश्वं भवत्येक नीड" की सत्यता अन्तर्निहित है ।

शिवधाम

"शिवधाम" एक मातृका शिक्षा नगरी है । बिहार में भागलपुर जिले के बौंसी लक्ष्मीपुर रोड पर बौंसी से करीब पन्द्रह किलोमीटर दूरी पर कहलाजोर नामक आदिवासी गाँव के निकट इस महान शिक्षा नगरी "शिवधाम" की स्थापना हुई । माधवनजी की राय में आदमी को अच्छा बनाने से बढ़कर कुछ भी शिक्षाकारी संभव नहीं है । यह शिक्षानगरी माधवनजी की भावना से युक्त है ।

माधवनजी के निबन्धों के विषय के आधार पर वर्गीकरण

उपर्युक्त निबन्धों को पढने पर हमको मालूम होता है कि माधवनजी ने विविध विषयों पर निबन्धलिखने का प्रयास किया है । उनके निबन्धों को विषय की दृष्टि से साहित्यिक एवं भाषापरक, सांस्कृतिक और दार्शनिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक, शैक्षिक, कलात्मक आदि शीर्षकों में बाँटा जा सकता है ।

साहित्यिक एवं भाषा के सम्बन्धी निबन्धों के अन्तर्गत माधवनजी के लेखक एवं ग्रन्थों की परिचयात्मक आलोचना सम्बन्धी निबन्ध, साहित्य-सेवा, कवियों और साहित्यकारों का कर्तव्य, राष्ट्रभाषा हिन्दी की आवश्यकता आदि विचारणीय है ।

माधवनजी हिन्दी को भारतीयों की आम भाषा के रूप में मानने को हमें आह्वान देते हैं । हम स्वतंत्र हैं । स्वतंत्र भारत केलिए स्वतंत्र देशीय भाषा की भी आवश्यकता है । अब भी अंग्रेज़ों के पीछे चलना या उनकी संस्कृति और भाषा का अनुकरण करना वे गलत समझतेहैं । अंग्रेज़ी में गर्व करनेवालों को माधवनजी घृणाभरी दृष्टि से देखते हैं । हमारेलिए हमारी भाषा है, संस्कृति है । ये चीजें अन्य यूरोपीय भाषा और संस्कृति से श्रेष्ठ हैं । इसके अलावा हम भारतीयों को एक सूत्र में बाँधने का काम हिन्दी ही कर सकती है । उन्हीं के शब्दों में "हिन्दी भारत के राष्ट्रीय जागरण की, भारतीय स्वतंत्रता की मानिनी बेटी है ।"[1] कन्याकुमारी से काश्मीर तक के लोगों केलिए हिन्दी ही एक भाषा है । माधवनजी द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी पर जोर देते हुए अनेक निबन्ध लिखे गये हैं । "हिन्दी आन्दोलन" नामक पुस्तक का लक्ष्य ही यह है । इसके अलावा "आरती" नामक निबन्ध संग्रह के "हिन्दी विश्वभाषा", "अनादर अपने ही घर में" अपने ही लोगों द्वारा", "भारती", "उषा" नामक निबन्ध संग्रह के "समाधान" "अनलशलाका" के "हिन्दी का राष्ट्रीय तात्पर्य, "अरब समुद्र में बहुत पानी है" "भूखे जनता ही गुलामी को निमंत्रण देती है" आदि निबन्ध राष्ट्रभाषा हिन्दी की आवश्यकता, उसका महत्व आदि पर ज़ोर देते हैं ।

माधवनजी अपने निबन्धों में एक साहित्यकार का कर्तव्य, उसका स्थान आदि का संकेत करते हैं । साहित्यकार को जन-सेवा या जनोद्धारण को देखकर ही साहित्य-सृष्टि करनी चाहिए। माधवनजी के मत में देश के कार्य-संचालन केलिए अन्य राजनीतिज्ञ लोगों से बढकर उचित

---

1. हिन्दी आन्दोलन - आनन्दशंकर माधवन, पृ.166

साहित्यकार ही हैं । लेकिन आज साहित्यकार की हालत भी दयनीय है । सभी क्षेत्रों में उसकी अवगणना ही होती है । देश को अज्ञानान्धकार से विज्ञान के प्रकाश की ओर लाने का प्रयत्न उसे करना चाहिए । साहित्यकार की प्रत्येक लेखनी के अन्तराल में भारत की आज सर्वत्र व्याप्त इस जडता को, इस पतित अधार्मिक भावना को, इस अपवित्र उलटी विचारगति को उखाड़ कर फेंकने और तत् स्थान पर ज्ञान, प्रेम, सत्य और शक्ति की स्थापना करने का व्यग्र प्रयास जब नज़र आयेगा तभी साहित्यकार का कर्तव्य पूर्ण माना जाएगा ।

निराला, महादेवी वर्मा, खलिल जिब्रान आदि महाकवियों पर अपना विचार प्रस्तुत करने को भी माधवनजी ने कोशिश की है । निराला एक श्रेष्ठ साहित्यकार थे । लेकिन माधवनजी के मत में उनको अपनी श्रेष्ठ साहित्य-सृष्टि के आधार पर उचित स्थान नहीं मिला । विद्रोही कवि निराला पर हुई इस अवगणना को माधवनजी सह नहीं सकते हैं । "आरती" के "इन्सान ज़िन्दाबाद मुहब्बत ज़िन्दाबाद", "हिसाब", "उषा" के "साहित्य साधना के आधार", "साहित्य की कुछ समस्यायें", "क्योंकि वह व्यस्त था", "उसे समय नहीं था", "हृदयधरातल", "महादेवी के अतिरहस्यमय व्यक्तित्व का विश्लेषण", "खलिल जिब्रान", "कथा साहित्य", "मेरा परिचय", "अनलशिखा के "प्राच्य भारती", "प्राच्य भारती की बातें", "निराला का महान प्रस्थान" "व्यक्ति महिमा ही काव्य-सिद्धि का परिचय है", "अविगत गति कछु कहत न आवें" आदि माधवनजी के अच्छे साहित्यिक निबन्ध हैं ।

माधवनजी की राय में हिन्दुस्तान संसार का सबसे श्रेष्ठ देश और हिन्दुस्तानी संसार भर में सबसे उँचे दर्जे का होशियार और ज्ञानी है । लेकिन अब भारत की स्थिति ऐसी नहीं है । माधवनजी इसलिए अपने देश को देवमन्दिर बनाने के उद्यम में हैं ।

बडे खेद की बात है कि अब भारतीय अपनी जिम्मेदारियाँ नहीं समझते हैं । साम्प्रदायिकता का विष और जाति का पिशाच हमारे माथे का विकार है । भाषा समस्या हमारे मस्तिष्क का रोग है । प्रान्तवाद भी हमारे दिमाग की उपज है । सम्पूर्ण माथा दर्द करानेवाली समस्यायें हमने स्वयं उपजायीं । इस प्रकार की समस्याओं को हल करने केलिए माधवनजी अपनी तूलिका चलाते हैं । राष्ट्रभाषा भी इसकेलिए उपयोगी चीज़ है । "हिन्दी आन्दोलन", "आरती", "उषा", "अनलशलाका", "बृहत्तर भारती" आदि निबन्धों में माधवनजी का देश-प्रेम ही द्रष्टव्य है ।

माधवनजी ने अपने निबन्धों में शिक्षा को बहुत महत्व दिया है । जनतांत्रिक राज्य व्यवस्था की सफलता जन शिक्षण और जन-चारित्र्य पर अवलम्बित रहती है । इसलिए इस व्यवस्था के अधीन शिक्षा को अत्यधिक महत्व देना चाहिए । प्राचीन शिक्षा पद्धति को माधवनजी बहुत सम्मान भरी दृष्टि से देखते हैं । हमारी शिक्षा पद्धति में हमारी संस्कृति और दर्शन को प्रधानता देने केलिए माधवनजी आह्वान देते हैं । अद्वैत वेदान्त दर्शन के आधार पर जाति श्रेणी विहीन शिक्षा पद्धति माधवनजी चाहते हैं । इस स्वप्न-साक्षात्कार केलिए माधवनजी ने मन्दार विद्यापीठ की स्थापना की "उषा" के "क्या जाने भाईमेरा भी आखिर क्या हाल होगा", "शिक्षा की भारतीय मान्यतायें", "शिवधाम" आदि निबन्ध शिक्षा से सम्बन्धित है ।

शंकराचार्य की इस भूमि में जन्म लिए प्रत्येक व्यक्ति में दर्शन का प्रभाव पड़ना आश्चर्य की बात नहीं है । माधवनजी भी इससे भिन्न नहीं हैं । माधवनजी के निबन्धों में माधवनजी के दर्शन, तत्व-चिन्तन आदि की गहरी ज्ञान-राशि इसी हेतु हम देख सकते हैं ।

भारतीय संस्कृति अन्य विदेश राष्ट्रों की संस्कृति से अलग है । इसकी महानता माधवनजी अच्छी तरह जानते हैं । हमारी नष्ट-प्राय आर्षभारत संस्कृति को पुनरुज्जीवित करने का प्रयास ही माधवनजी अपने प्रत्येक निबन्ध द्वारा करते हैं । यूरोपीय संस्कृति का अनुकरण करनेवाले भारतीयों को माधवनजी परिहास भरी दृष्टि से देखते हैं । यह अन्धानुकरण हमारी गुलामी का परिचायक है । हमको हमारी स्वतंत्रता और संस्कृति, हमारी भाषा, आचारण, वेष-भूषा, रहन-सहन आदि में गर्व रखना चाहिए । राष्ट्रीय स्वतंत्रता से मात्र स्वतंत्रता का अर्थ सार्थक नहीं होता है । इसलिए भारतीय संस्कृति की महिमा को समझकर हमको आगे बढना चाहिए । माधवनजी के दर्शन और संस्कृति से सम्बन्धित निबन्ध हैं - "आरती" के "स्वर्ग-सुख", "वसुधैव कुटुम्बकम्", "शांति का पथ", सूर्य स्मरण ही स्वयं सूर्य होने का उपाय है", "युद्ध-यज्ञ", "उषा" का "भारतीय संस्कृति की सीमारेखाएं "अनलशलाका" के "भारत कथा का प्रारंभ", "भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य बन्ध", "लाइलाज", "स्वन्त: सुखाय", "कवित्व का रहस्य", और "बृहत्तर भारती" आदि ।

माधवनजी हमारे राजनैतिक अधस्थिति में वेदना अनुभव करते कई निबन्धों में इस वेदना का स्वर गूँज उठता है । "कांग्रेस" नामक संस्था अपना कर्तव्य भूल गयी । अधिकार प्राप्ति के बाद कांग्रेस अपना आदर्श त्यजकर अब अपने-अपने कार्य केलिए वे सत्ता का इस्तेमाल करती हैं । राजनीति और राजनैतिक दलों के बीच के झगडे के कारण देश बर्बाद होता जा रहा है । इस प्रकार देश के राजनैतिक गतिविधियों को प्रकाशित करनेवाले माधवन-जी के निबन्ध हैं - "आरती" के "वह राग अभी भी बाकी है", "अनलशलाका" का "राजनीतिक दल" आदि ।

भारतीय दर्शन का अभिन्न अंग है आध्यात्मिकता । माधवनर्ज के मत में आध्यात्मिकता से तात्पर्य मूर्तिपूजा, जपमाला जपना, मन्दिर जाना, मंत्र जपना आदि से नहीं बल्कि परमसत्ता की खोज या सत्य का दर्शन करने के प्रयत्न से है । माधवनजी की "आरती" का "एक बिहारी लड़की ने मुझे पत्र लिखा", "उषा" का "गांधी धर्म से मैं ने क्या सीखा", "अनलशलाका" के "कारज की ज्योति जले", "भारत किस ओर", "हिंसा अहिंसा", "हिन्दू प्रपंच" आदि निबन्धों में इस आध्यात्मिकता की झलक देखी जा सकती है ।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भारत में सर्वत्र हिन्दू-मुस्लीम संघर्ष बहुत ज़बरदस्त रूप में रूढमूल हो गया । इस धार्मिक विरोध, जाति-प्रथा आदि का संकेत माधवनजी के कई निबन्धों में है ।

इस प्रकार माधवनजी के निबन्धों के विषयगत विश्लेषण से हमको मालूम होता है कि माधवनजी के निबन्ध विविध आयामी विषयों पर लिखे गये हैं ।

शैली के आधार पर माधवनजी के निबन्धों का वर्गीकरण

माधवनजी के निबन्ध विचारात्मक हैं । इनमें आत्मपरक या निजात्मक, भावात्मक, हास्य-व्यंग्यात्मक, आध्यात्मचिन्तनपरक और आलोचनात्मक एवं उपदेशात्मक निबन्ध आते हैं ।

माधवनजी के प्राय: सभी निबन्ध आध्यात्मिक, दार्शनिक साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि विषयों पर आधारित हैं । इन निबन्धों का गंभीर अध्ययन, मनन, चिन्तन व अनुभव की आवश्यकता है ।

इसमें तार्किकता की प्रधानता एवं बुद्धित्व की प्रमुखता मिलती है । "आरती", "उषा", "अनलशलाका", आदि निबन्ध संग्रह और "हिन्दी आन्दोलन" "बृहत्तर भारती", "शिवधाम" आदि निबन्ध भी विचारात्मक हैं ।

माधवनजी के कुछ निबन्धों में स्वानुभूति और कल्पना प्रमुख स्थान रखती है । माधवनजी की प्रतिछाया इन निबन्धों में प्राप्त है । और कुछ निबन्धों में हमेको अन्तरानुभूति के तीव्र भावों तथा भावुकता का सच्चा चित्रण मिलता है । हार्दिक सुख-दु:ख, आनन्द-विलास, अच्छा-बुरा आकर्षण-विकर्षण, ममत्व-आक्रोश का स्पष्ट चित्रण इन निबन्धों में है ।

वर्तमान भारत की हालत को अर्थात् राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक अधिस्थिति आदि पर माधवनजी ने अपने निबन्धों में हास्य-व्यंग्यात्मक शैली में अंकन किया है । "अनलशलाका" के कई निबन्धों में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है । कुछ निबन्ध आध्यात्मिक चिन्तन और तत्व-चिन्तन से कूट-कूट कर भरे हुए हैं ।

माधवनजी के कुछ निबन्ध आलोचनात्मक ढंग से लिखे हुये हैं । कुछ निबन्धों में उपदेशात्मक शैली भी देखी जा सकती है । शैली वैभिन्य के रहते हुए भी माधवनजी की निबन्ध शैली मुख्यतया विचारात्मक ही है ।

माधवनजी के निबन्धों के विषय की दृष्टि से विवेचन

हमने देखा कि माधवनजी का प्रत्येक निबन्ध गहरे चिन्तन - मथन के लायक है । इसलिए इन निबन्धों में प्रतिपादित हर विषय का विस्तार से अध्ययन आवश्यक है ।

साहित्यिक निबन्ध

साहित्य से सम्बन्धित माधवनजी के निबन्धों में साहित्यकार से तात्पर्य क्या है ? साहित्यकार का कर्तव्य क्या है ? साहित्य क्या है ? समाज केलिए साहित्य कैसे उपयोगी होगा ? आदि आदि अनेक विषयों पर विचार किये गये हैं ।

माधवनजी की राय में जो पुरुष-रत्न देशोपयोगी कार्य करता है वह साहित्यकार है । उस देशोपयोगी कार्य को साहित्य कह सकते हैं । उस यज्ञ कार्य में जिन नर-नारियों ने श्रमयोग दिया उन सबों को हम साहित्यानुरागी कह सकते हैं । माधवनजी का मन्तव्य है कि साहित्यकारिकता से तात्पर्य सिर्फ लिखना नहीं । मानसिक और शारीरिक कार्य ही साहित्य का आधार है । मानव ही साहित्य का विषय है, उसे परमेश्वर के पास पहुँचा देना ही साहित्य का लक्ष्य है और इस कार्य में जो भी लगे हुए हैं अहर्निश पागल हैं, उन्हें हमें साहित्यिक मानना ही पड़ेगा चाहे वह लिखे या न लिखे । जनमानस की दयनीय स्थिति का इलाज करना ही साहित्यकार का प्राथमिक कर्तव्य है । माधवनजी की राय में देश की सभी समस्याओं पर साहित्यकार की राय आवश्यक है । देश राजनीतिज्ञों का प्राइवेट प्रोपर्टी नहीं है । "एक भारतीय कवि की जिम्मेदारी और प्रधानता, ज्ञान-चेतना और कर्तव्य बोध, तपोबल और कर्मकुशलता देश के प्रधानमंत्री से भी कोटी गुना अधिक रहनी चाहिए ।" रूसी क्रांति और फ्रांसीसी क्रांति के जिम्मेदार वहाँ के साहित्यकार रहे हैं । अर्थात् जनता की प्रज्ञा जगा देना ही साहित्य का कार्य है ।

।· उषा - आनन्दशंकर माधवन, पृ·67

संसार की सारवस्तु सत्य है । सत्य का अनुशीलन करना हमको चाहिए । इसलिए माधवनजी कहते हैं कि लेखक का महत्वपूर्ण केन्द्रीय न भाषा रही है, न पात्र रहे हैं, न कथा ही । लेखक जो चाहता है, ठीक उसीको पहले पकड़ने चाहिए, तभी किसी रचना की कीमत समझ में आयेगी । इसकेलिए साहित्यकार को खुले मैदान में आकर सम्पूर्ण विश्व को सामने रखकर सोचने और कार्य करने की आदत सीखनी चाहिए । माधवनजी जीने की क्रिया को ही कविता या साहित्य साधना कहते हैं । साहित्यकारों की ज़िन्दगी में प्रेरणा देने का काम ही अन्य साहित्यिक पुस्तकें करती है ।

माधवनजी की राय में लेखक की चतुरता पाठक को गिरफ्तार करके किताब में रखने में है । पाठक को प्रेरणा देने, उन्हें शक्ति देने, उन्हें अच्छा बनाने में और सफलता प्र दान करने में ही लेखक का रचना वैभव है । जनमानस में उदात्त परिवर्तन लाना ही, उनकी सामूहिक विचार गति और भाव शैली में उत्कर्षशील सक्रियता लाना ही साहित्य का लक्ष्य होना चाहिए । उपयोगितावाद ही एकमात्र नारा रह गया है । मनुष्य और देश को सद् दिशा देने केलिए सद् साहित्य की आवश्यकता पड़ती है । "मनुष्य में देवत्व को प्रतिष्ठित कराना, देवत्व को अनुशीलन कराना - उसके क्रूर या जड़ स्वभाव को नवनीत सदृश मुलायम करना, उसमें प्रेम का अमृत रस भरना - यहीं पर उस दिव्य कलम की ज़रूरत पड़ती है ।"[1]

माधवनजी की राय में प्रत्येक साहित्यकार आदर का पात्र है । इसका कारण यह है कि साहित्य साधना सबसे कठिन तपस्या है । लेकिन दु:ख की बात यह है कि आज साहित्यकार को समाज में उचित स्थान नहीं मिलता है । उसके प्रति अवगणना का स्वर सब कहीं देखा जा सकता है । निराला का उदाहरण माधवनजी इस संबन्ध में प्रस्तुत करते हैं । निराला महान साहित्यकार थे फिर भी उनके जीवन-काल में उनको उचित स्थान नहीं मिला । अब साहित्यकार से अधिक उच्च स्थान राजनीतिज्ञों को प्राप्त है । लोग उन राजनीतिज्ञों को सम्मान भरी दृष्टि से देख रहे हैं । लेकिन

संसार के सबसे माननीय व्यक्ति के रूप में माधवनजी साहित्यकार को ही मानते हैं । क्योंकि समाज में क्रान्ति लाने केलिए इन लोगों की देन सराहनीय है । एक और दिलचस्प बात है, आजकल हिन्दी साहित्य में दो वर्ग बन गये हैं - नये और पुराने । नये लोग पुराने लोगों का परिहास करते हैं । लेकिन माधवनजी, साहित्यकार के सबसे श्रेष्ठ समालोचक के रूप में पाठक को मानते हैं । इसलिए परिहास या प्रशंसा करने का अधिकार पाठकों को ही प्राप्त है ।

इस प्रकार माधवनजी साहित्य के लक्ष्य, साहित्यकार की समस्यायें आदि हमारे सामने अपने निबन्धों के द्वारा प्रस्तुत करते हैं ।

लेखक एवं ग्रन्थों की परिचयात्मक आलोचना सम्बन्धी निबन्ध

माधवनजी कुछ लेखकों या साहित्यकारों या कुछ ग्रन्थों का परिचय अपने निबन्धों द्वारा देने का प्रयास करते हैं । निराला, महादेवी वर्मा, खलिल जिब्रान आदि महान साहित्यकारों की व्यक्ति महिमा और साहित्यिक श्रेष्ठता को बहुत रुचि के साथ उन निबन्धों में व्यक्त किया गया है ।

निराला हिन्दी साहित्य मंडल के रजत नक्षत्र हैं । फिर भी उनको हमने उचित स्थान नहीं दिया । माधवनजी इसमें बहुत दु:खी होते हैं । वे कहते हैं कि हमने निराला को सही इज्जत नहीं दी । उस परमेश्वर प्रतिनिधि सुकुमार गायक को हम लोगों ने रगड़ डाला । लेकिन निराला इसमें भी वैकुण्ठ सुख अनुभव करते हैं । "अनलशलाका" के "निराला का महाप्रस्थान" और "व्यक्ति महिमा ही काव्य-सिद्धि का

परिचायक है" में निराला का व्यक्तित्व और अवगणना के बारे में माधवनजी अपने विचार स्पष्ट करते हैं । "राम-राज्य की आधारशिला राजनीति से नहीं, सत् साहित्य के ज़रिये ही संभव है ।" यह बताना भी निराला जीवन का लक्ष्य रहा है ।

माधवनजी महादेवी के अति व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हैं । महादेवी की कवित्व-साधना समस्त भारतीय जन-जीवन की जड़ता और विपरीत गति - तत्व के विरुद्ध उस आजन्म पूजारिन की विद्रोह भावना है । अपमानित, शोषित और दीर्घकाल से तिरस्कृत और पीड़ित पड़ी नारी प्रतिभा की वह खुली ललकारहे । महादेवी के द्वारा स्त्री की ताकत और प्रतिभा प्रकट होती है । उनकी कविता की करुण रस-धारा जड़ और पाषाण वस्तुओं को भी द्रवित कर सकती है । इसलिए माधवनजी उन धन्य कवयत्री को सम्मान भरी दृष्टि से देखते हैं ।

आर्षग्रन्थों के बाद माधवनजी पर सर्वाधिक प्रभाव डालनेवाले एक साहित्यिक मानिषी हैं खलिल जिब्रान । खलिल जिब्रान कवि, कथाकार चित्रकार एवं दार्शनिक थे । सूक्तियाँ लिखने में उन्हें कमाल हासिल था । जीवन-दर्शन सम्बन्धी उनका सबसे विख्यात ग्रन्थ "प्रोफट" है ।

हम देखते हैं माधवनजी ने अपने पसन्द के कवियों और साहित्यकारों के बारे में अपने अभिमत सुस्पष्ट करने के उद्देश्य से निबंध विधा का सहारा लिया है और वह माध्यम सफल रहा है ।

---

1. अनलशलाका - आनन्द शंकर माधव, पृ·277

साहित्यिक सेवा

माधवनजी हिन्दी भाषा और साहित्य के अनन्य सेवक हैं । माधवनजी की साहित्य सेवा के उदाहरण हैं उनके निबन्ध, उपन्यास, कहानियाँ, कविता, भूक्तियाँ, जीवन-दर्शन सम्बन्धी पुस्तकें आदि । इसके अलावा उन साहित्य सेवक ने "प्राच्य भारती" नामक एक पत्रिका का सम्पादन कार्य भी किया । "प्राच्य भारती" द्वारा वे पाठकों को साधना और तपस्या में अतुल प्रतिभा सम्पन्न बनाना चाहते हैं । हिन्दी की उन्नति केलिए उनके पत्र विशेष योगदान देते हैं । "प्राच्य भारती" मन्दार विद्यापीठ में स्थापित हिन्दी निर्माण परिषद् की मासिक मुखपत्रिका है । इसके प्रकाशन केलिए उन्होंने याचना करके धन इकट्ठा किया । लेकिन पैसा के अभाव के कारण यह पत्रिका बन्द हो गयी । इस "प्राच्य भारती" के बारे में माधवनजी ने निबन्ध भी प्रकाशित किए ।

भाषा-सेवा

आनन्द शंकर माधवन दक्षिणी है । फिर भी वे हिन्दी भाषा के सेवकों में अग्रगण्य हैं । अपना जीवन, भाषा के उन्नमन केलिए मात्र बिताने को दृढ निश्चयी हैं माधवनजी । वे अपने देश की उन्नति केलिए भाषा की आवश्यकता पर ज़ोर देते हैं । स्वतंत्र देश को स्वतंत्र भाषा भी होनी चाहिए । हिन्दी को एक साधारण भाषा के रूप में मानने का माधवनजी आदेश देते हैं ।

अपने लेख "हिन्दी आन्दोलन" में माधवनजी हिन्दी प्रचार को एक आन्दोलन के रूप में स्वीकार करते हैं । माधवनजी भाषा में सिर्फ भाषा का

प्रश्न मात्र देखते नहीं हैं । इसमें जीवन की सारी समस्यायें मिली हुई हैं । इसलिए सबको मिलकर हिन्दी का प्र चार और उद्धार करना चाहिए । "हिन्दी का प्रश्न कुछ आलसी साहित्यकारों द्वारा कोलाहल मचाने का विषय नहीं है, प्रत्युत प्रत्येक भारतीय केलिए सोचने और समझने का, जीवन और मरण का प्रश्न है[1] ।"

भारत को एक सूत्र में बाँधने केलिए हिन्दी की सेवा सराहनीय है । दक्षिणी और उत्तरी लोगों केबीच सम्पर्क जोडने केलिए हिन्दी आवश्यक है । भारतीयों को स्वतंत्र अस्तित्व या स्वतंत्र संस्कृति रखने की आवश्यकता है । "हिन्दी कोई भाषा नहीं, वह तो नवजात भारत-स्वतन्त्रता है, वह नवजात भारत-राष्ट्रीयता है[2] ।" माधवनजी इस प्रकार हिन्दी की या भारत की जय बोलते हैं ।

भारतीय संस्कृति की कुछ विशिष्ट बातों पर भी माधवनजी प्रकाश डालते हैं । भारतीय संस्कृति में धर्म और कला का विशेष स्थान होता है । माधवनजी की राय में भारतीयों की जैसी सुन्दर पारिवारिक जीवन-व्यवस्था, विचार-पद्धतियाँ, शिष्टाचार-परम्परायें, आतिथ्य-सत्कार, धर्मबोध, आध्यात्मिक अनुष्ठान, सार्वजनिक मान्यतायें, गुरु-शिष्य-सम्बन्ध, जन-सेवाकार्य आदि दुनिया में अन्यत्र नहीं हैं । भारतीय संस्कृति के अनुसार हिंसा से तात्पर्य किसी की उन्नति को रोकना, पढने नहीं देना, हतोत्साह करना, बेइज्जत करना, परिहास करना आदि है । भारतीय संस्कृति यह घोषणा करती है कि कोई भी व्यक्ति परिस्थितिजन्य उथल-पुथल की जूठन नहीं है । माधवनजी इसपर ज़ोर देते हैं कि विश्व-संकट से मानवता को भारतीय संस्कृति ही बचा सकती है । यह संस्कृति मानव को भगवान से मिल जाने का ही उद्बोधन करती है । इस संस्कृति में मानवता के सभी प्रकार के कार्य और विचार समाविष्ट हैं ।

---

1. हिन्दी आन्दोलन - आनन्द शंकर माधवन, पृ.1
2. अनलशलाका - आनन्द शंकर माधवन, पृ.24

भारतीय संस्कृति में ऋषियों केलिए एक महान स्थान होता है । माधवनजी अपने निबन्धों में ऋषियों की साधना और तपस्या को सम्मान भरी दृष्टि से देखते हैं । इसीलिए कि ये ऋषि भारतीय संस्कृति के जन्मदाता थे ।

माधवनजी इस प्रकार अपने निबन्धों द्वारा हमारी संस्कृति का अवलोकन करके इसकी महानता पर संकेत करते हैं । वे कहते हैं - इस महान भारतीय संस्कृति को पुन: जागृत करना हमारा ही कर्तव्य है । हर [redacted] भारतीय को भारतीय संस्कृति का अध्ययन करना चाहिए । मात्र इससे हमारे मन में भारत के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो जायेगी । हमारी संस्कृति के अध्ययन से अनेक विदेशी लोग आकृष्ट होकर यहाँ आये हैं और आ रहे हैं ।

माधवनजी अपने निबन्धों में संस्कृति के साथ दर्शन को भी अंकित करते हैं । शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन को आधार शिला बनाकर माधवनजी ने कई निबन्ध लिखे हैं । हमारा नारा "वसुधैव कुटुम्बकम्" रहा है । लेकिन आज यह देश नाना प्रकार के उच्च-नीच भाव, जातिवाद, प्रांतवाद, साम्प्रदायिकता, परनिन्दा, शोषण, बेईमानी, स्वार्थ, भ्रष्टाचार आदि अनगिनत क्षुद्र और पतित बीमारियों से बुरी तरह ग्रसित है । इसलिए माधवनजी अद्वैत वेदान्त दर्शन के आधार पर समाज रचना करने को सब संभव क्षेत्रों से और सब संभव सूरत से काम करने की आवश्यकता पर ज़ोर देते हैं । साहित्य, कला, राजनीति, धर्म, शिक्षा, खेल सभी मार्गों को इसी लक्ष्य प्राप्ति केलिए प्रयोग में तभी लाया जा सकेगा कि जनता इसका अनुशीलन करना आरंभ कर दे, अनजाने में ही वह अनन्त तेजोमय दैवी सत्ता है और इसलिए वह प्रत्येक मानव के साथ एक रूप है । माधवनजी की राय में इस प्रकार का अनुशीलन ही समाज से जाति, भाषा, प्रान्त आदि से उत्पन्न वैमनस्य को तथा स्वार्थ,

लोभ, भय, शोषण, भ्रष्टाचार आदि विपरीत शक्तियों को मूल से नष्टकर सकेगा । यह अनुष्ठान जनता को "वसुधैव कुटुम्बकम्" की ओर ले भी जा सकता है । वस्तुत: भारत का स्टेट फिलोसफी से तात्पर्य उस प्रेरणा स्रोत से है जो हमारे सारे ही अनुष्ठानों की प्राणवायु बनने जो पूर्णत: युक्तिसंगत और वैज्ञानिक है, जिसके साथ मतभेद संभव है ।[1]"

अद्वैत वेदान्त दर्शन के महान तेजस्वी सत्य के आधार पर भारत में एक विश्वविद्यालय खडा करने का स्वप्न माधवनजी में उत्पन्न हुआ । उस स्वप्न के साक्षात्कार केलिए माधवनजी ने मन्दार विद्यापीठ की स्थापना की । लेकिन आज के भारतवासी सद् कार्यों को, सद्विचारों को और सद् पुरुषों को पहचानते नहीं हैं ।

माधवनजी की प्रत्येक लेखनी के अंतराल में तत्काल भारत में सर्वत्र व्याप्त जड़ता को, पतित अधार्मिक भावना को, अपवित्र उलटी विचारगति को उखाड़कर फेंकने और तत् स्थान पर ज्ञान, प्रेम, सत्य और शक्ति की स्थापन करने का व्यग्र प्रयास नज़र आता है । उनका उद्देश्य है कि भारतीय जनता अद्वैत वेदान्त दर्शन के केन्द्रीय तत्व गाथा का अनुशीलन करना प्रारंभ करे ।

आध्यात्मिक

माधवनजी आध्यात्मिक शक्ति पर भरोसा रखनेवाले मनीषी आध्यात्मिक अनुष्ठान में भारतीय धर्म सदा ज़ोर देता है । सभी धर्म ईश्वर प भरोसा करके ईश्वर प्राप्ति केलिए पूजा-पाठ, आराधना, व्रत आदि करने का आह्वान देता है । लेकिन माधवनजी इस प्रकार का बाह्य-प्रकटन पसन्द

---

1. आरती - आनन्द शंकर माधवन, पृ.246

नहीं करते हैं । परमसत्ता की खोज आवश्यक है और परमेश्वर प्राप्ति आवश्यक है । माधवनजी परमेश्वर प्राप्ति को जीवन का महत्वपूर्ण लक्ष्य मानते हैं । उनके शब्दों में उसका रूप देखिए - "उदात्त सत्य की ओर स्वयं उठने और अपने देशवासियों को भी उठाने से बढकर कोई आध्यात्मिक कार्य संभव नहीं है ।"

माधवनजी की राय में इस पाषाण युग को मुलायम करने की शक्ति इस दैवीक संस्कृति को है । इसलिए इस युग में हमको आध्यात्मिकता या दैविक शक्ति पर ज़ोर देकर इसका अनुष्ठान करने का आह्वान माधवनजी देते हैं ।

धार्मिक

माधवनजी के निबन्धों में धर्म के बारे में अनेक स्थानों में परामर्श रहता है । माधवनजी भारत में उपजे हुये अनेकधर्मों को नहीं चाहते हैं भारत में उत्पन्न कई धर्मों के कारण, यहाँ हमेशा धार्मिक झगडे उपस्थित होते हैं यहाँ जातिजन्य समस्यायें अनेक होती हैं । मानव के सामने अब दो ही दिशा साफ नज़र आ रही है या तो सर्वनाश या आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण अद्वैत समाज की स्थापना । माधवनजी की राय में धर्म सामूहिक अनुष्ठान केलिए ही नहीं है, व्यक्तिगत उत्थान केलिए भी है । आध्यात्मिकता को अपने चारित्र्य में प्रकाशित करने केलिए माधवनजी आह्वान देते हैं । कलियुगी ब्राह्मण के जैसे पौरोहित्य आदि करना लज्जाजनक है । जब कोई मूर्ति, चित्र आदि की पूजा करने और उसकी महिमा गाने लग जाता है, तभी समझना चाहिए पतन के बीज बोये जा रहे हैं । माधवनजी इसलिए अपने निबन्धों में एक जाति श्रेणी विहीन अद्वैत समाज की रचना करना चाहते हैं ।

राजनैतिक

आज के राजनैतिक दलों के लोगों को समाज में कोई स्थान नहीं है । अधिकार प्राप्ति केलिए वे कोई भी निम्न स्तर का काम करने केलिए तैयार हैं । लेकिन भारतीय राजनीति एक ज़माने में सद्पुरुषों और मेधावियों का कर्मक्षेत्र और त्याग क्षेत्र रहा है । आज राजनीतिज्ञों के सम्पर्क में आने पर यह देखा जा सकता है कि सर्वत्र कलह और निम्नता का ही परिचय मिलता है ।

कांग्रेस की स्थिति देखिए । कांग्रेस का आरंभ सद् लक्ष्यों से हुआ । कांग्रेस के आदिकाल में उसके सभी कार्यकर्ता महानपूजारी थे । उन प्रात: स्मरणीय पूजारियों के अद्वितीय श्रद्धा - नैवेद्य के फलस्वरूप वह संस्था उन्नति के पथ पर बढने लगी, उसमें शक्ति आने लगी । मगर आज उसमें पूजारी न रहा, सबके सब पण्डे बन गये । तरह तरह के परस्पर विरोधी विचारवालों को भी जब से कांग्रेस में नेतृत्व मिलने लगा तब से निरन्तर उसका क्षय भी होता गया, होता जा रहा है । नतीजा यह हुआ कि अच्छे-अच्छे तपे-तपाये पुराने कांग्रेसियों का नेतृत्व और उनकी प्रतिष्ठा इस संस्था में नहीं रही, उनका बोलबाला समाप्त होता गया और वे इससे अलग होते गये । संस्था उन लोगों के हाथ में चली गयी जिनमें न तो देश प्रेम रहा न कोई त्याग-तपस्या रही । उनमें न कोई दृष्टि चेतना रही न कोई सिद्धान्त या चारित्र्य रहा । माधवनजी ने इन सब बातों पर अपने निबन्धों द्वारा प्रकाश डाला है ।

माधवनजी की राय में भारत का महत्व राजनीतिक न रहकर सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक और कलात्मक रहा है । अब देश में मेधावी प्रतिभा सम्पन्न ज्ञानी तपस्वियों के रहते हुए भी देश अपूज्य शासित और धूर्त संचालित है । माधवनजी केलिए इसपर वेदना है । नेहरूजी रसातल

देश को ऊपर उठा लाये थे । अब जनता धूर्तों, चोरों और अवसर-पूजारियों से त्रस्त पड़ी है । अधिकारी वर्ग अपनी अपनी बातों पर लीन होकर शासनरत रहते हैं । आम जनता पर कुछ भी ध्यान नहीं रखते हैं । राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी और विश्वव्यवस्था सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाना और उन्हें सुचारू रूप से चलाना प्रधानमंत्री का कर्तव्य है । लेकिन अब सब अधिकारी वर्ग इसके विरुद्ध है । आज प्रधान मंत्रि और अन्य अधिकारी वर्ग अपने ही दल के लोगों के पारस्परिक कूट, कलह और निम्नता से उत्पन्न विषमताओं को सुलझाने के श्रम में हैं ।

इस प्रकार माधवनजी आज की राजनैतिक गति-विधियों पर अपने निबन्धों द्वारा प्रकाश डालते हैं । कहीं कहीं उनकी वाणी व्यंग्य से लदी होती है तो आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि अब राजनीति एक पेशा बन गई है, सेवा नहीं ।

शैक्षिक

माधवन जी अपने निबन्धों में शिक्षा को गणनीय स्थान देते शिक्षा पाना, शिक्षा देना आदि बहुत महत्वपूर्ण कार्य हैं । संसार के सबसे महान पुरुष ज्ञानवान पुरुष है । इसलिए माधवनजी ज्ञान हासिल करने का आह्वान देते हैं ।

माधवनजी के मत में शिक्षा का अपना अर्थ और स्वरूप है । आदमी को अच्छा बनाने से बढकर शिक्षा का दूसरा लक्ष्य संभव नहीं है । अच्छे से तात्पर्य सत्यान्वेषी, सच्चरित्र, ईमानदार, भगवत् संस्कृति के प्रतिनिधि कार्यकर्ता आदि से है । जहाँ गुरु और शिष्य दोनों मिलकर सामूहिक रूप से इस प्रकार सत्यान्वेषण करते हैं और ज्ञान-साधना करते हैं उसे ही सही अर्थ में शिक्षणालय कहा जा सकेगा । प्यार प्रेम समझना ही शिक्षा का उद्देश्य है,

सर्वशक्ति सम्पन्न विचारों का दर्शन करना ही शिक्षा का लक्ष्य है । जिनके बल पर आदमी पशु से देवता बन जाता है । शिक्षित लोग ज्ञान हासिल करके, उस ज्ञान के तेज से जनता को ज्योतिर्मय करना चाहिए ।

माधवनजी शिक्षा और विद्या दोनों दो भिन्न अनुष्ठान के रूप में मानते हैं । किसी भी कार्य को सीखना विद्या है - जैसे मोटर चलाना, चिकित्सा करना, कारखाने खडे करना आदि । "शिक्षा का तात्पर्य उस आन्तरिक साधना से है जिसके ज़रिये मानव अपनी भीतरी ज्योतिर्मय सत्ता के प्रकाश को स्वयं सदा और सर्वथा अनुभव कर सकें और फिर उसे अपने कार्यों में और दृष्टिकोण में व्यावहारिक रूप देकर प्रकाशित कर सकें।"[1]

माधवनजी, अध्यापक का कर्तव्य और लक्षण भी बताते हैं । अध्यापक का प्राथमिक कार्य अपने छात्रों में ज्वलन्त महत्वाकांक्षायें, निर्भयता, विषय लालसा, जिज्ञासा, कार्यशीलता, त्याग-सन्नद्धता, परिपूर्णता को प्राप्त करने की पागल तड़प, उसे अपने कार्य में प्रतिष्ठित करने का अनवरत प्रयास आदि सारे गुणों को जगाकर उनके अन्तस्थल को प्रकाशशील कर देना है । अध्यापन कार्य से बढकर दूसरा कोई पुण्य कार्य और परमेश्वर का प्रिय कार्य इस संसार में नहीं है । भारतीय संस्कृति का मेरुदण्ड ही गुरु-शिष्य संबन्ध है

माधवनजी के मत में जनमानस शिशु सदृश है । उसे बराबर दिशा निर्देश मिलते रहना चाहिए, बराबर प्रेरणा और बल मिलते रहना चाहिए कि वह आगे बढे और क्रियाशील बने । माधवनजी की राय में शिक्षा अद्वैत समाज की रचना केलिए उपयुक्त है । माधवनजी ने इस लक्ष्यपूर्ति केलिए मन्दार विद्यापीठ की स्थापना की । शिक्षा के लक्ष्य और शिक्षा के महत्व के बारे में माधवनजी "शिवधाम" नामक निबन्ध में बतातेहैं ।

---

1. उषा - आनन्द शंकर माधवन, पृ.197

इस प्रकार माधवनजी ने शिक्षा की आवश्यकता और उसकी महानता पर अपने कई निबन्धों द्वारा नए विचार अभिव्यक्त किए हैं ।

कलात्मक निबन्ध

शास्त्रीय संगीत का उपासक माधवनजी अपने निबन्धों में शास्त्रीय संगीत को प्रमुख स्थान देते हैं । लेकिन अर्थहीन, सारहीन, सिनिमा गीतों को माधवनजी पसन्द नहीं करते हैं । इसके बदले शास्त्रीय संगीत के एक-एक तन्तु पर माधवनजी अपने निबन्धों द्वारा प्रकाश डालते हैं ।

माधवनजी नाद, शब्द और अभिनय इन तीनों के संयुक्त प्रयोग को ही पूर्ण संगीत कहते हैं । माधवनजी के मत में राग का तात्पर्य ही प्यार है और प्यार एकात्मकता का ही दूसरा नाम है और गायन सिर्फ पवित्र आत्माओं से ही संभव है । माधवनजी कलाकार को देश का प्राण और गौरव मानते हैं । उनकी राय में "कलाकार वे थे जिसने अपने दिमाग में प्रथम बार अपने कल्पना-जगत में मोटर की सृष्टि की और उसे वहाँ चला भी दिया[1] ।"

कला को माधवनजी अपनी संस्कृति के अंग मानकर इसकी उपासना करते हैं । वह सत्यं, शिवं, सुन्दरम् का रूप है । इसलिए संगीत और कला को माधवनजी मानवों को एक सूत्र में बाँधने की चीज़ मानते हैं ।

---

1. अनलशलाका - आनन्द शंकर माधव, पृ.24।

अन्य कुछ निबन्ध

उपर्युक्त विषयों के अलावा माधवनजी के निबन्धों में युद्ध, समाज में स्त्रियों की प्रतिष्ठा, अकर्मण्यता, गाँधी-धर्म, विनोबा भावे का भूदान यज्ञ, भोजन समस्या, सन्तान नियंत्रण आदि विषय भी है ।

भारत को पाकिस्तान और चीन के साथ युद्ध करना पड़ा । माधवनजी इसमें कोई गलती नहीं देखते हैं । वे युद्ध को धर्म मानते हैं । इस कारण सत्य केलिए या धर्म की स्थापना केलिए हमको युद्ध करना ही पड़ता है । संसार में हमेशा युद्ध करना ही पड़ता है । संसार में हमेशा युद्ध उपस्थित होने की संभावना है । पाकिस्तान, चीन आदि देशों का आक्रमण भारत पर जब चाहे हो सकता है । इसलिए युद्ध की तैयारियाँ करने का आह्वान माधवनजी अपने कई निबन्धों द्वारा देते है ।

समाज में स्त्रियों की काफी प्रतिष्ठा अब तक नहीं हुई है । माधवनजी इस बात पर बहुत दु:खी होते हैं । उनके कई निबन्धों में इसकी झलक देखी जा सकती है । भारतीयों की अकर्मण्यता पर भी उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं । भारत के लोग प्रयासशील नहीं है । वे सिर्फ बेकार बैठकर जीवन बिताने के इच्छुक हैं । इसीतरह माधवनजी अपने निबन्ध "गाँधी धर्म से मैं ने क्या सीखा" में गाँधी धर्म की खूबियों के बारे में भी इशारा करते हैं । गाँधी धर्म में प्रेम ही सर्वोच्च न्याय है और सेवा ही सर्वोच्च धर्म है । इस प्रकार के सद् आदर्शों से गूढगुम्फित गाँधी धर्म से माधवनजी प्रभावित हो गये थे ।

भूदान, शान्ति सेना, सर्वोदय आदि का लक्ष्य और महत्व माधवनजी के "ग्रामदान-गंगा" में व्यक्त किया गया है । गांधीजी के विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों का सार भी यही है । गांधीजी का एकमात्र कानून प्रेम है और एकमात्र धर्म सेवा है । सर्वोदय तत्व की अन्तर्निहित सूक्ष्म योजना समूचे विश्व को एक सूत्र में समेटना है भारतीकरण करना है । भू-दान यज्ञ का शाश्वत महत्व मानव में सात्विक ज्ञान की रोशनी जागृत और प्रज्वलित करना है । माधवनजी ने इन विषयों का उचित परिचय दिया है ।

भोजन समस्या के बारे में भी माधवनजी अपने निबन्ध "खाद्य-समस्या" में संकेत करते हैं । माधवनजी सन्तान-नियंत्रण से सम्बन्धित अपना मत "सन्तान-नियंत्रण" नामक निबन्ध में प्रकट करते हैं । उनको सन्तान नियंत्रण केलिए कृत्रिम मार्गों का प्रयोग और प्रचार अत्यन्त भद्दा लगता है । कृत्रिम सन्तान नियंत्रणों की अपेक्षा माधवनजी विवाह की उम्र बढाना अधिक हानिहीन मानते हैं ।

देश-प्रेम

माधवनजी के निबन्धों के अध्ययन से एक आम तत्व पर हम पहुंच सकते हैं । वह है देश-प्रेम । भाषा-समस्या, साहित्यिक निबन्ध, शैक्षिक निबन्ध, दार्शनिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक आदि सब प्रकार के निबन्ध का सार-तत्व या तो देश के प्रति प्रेम है या एक अद्वैत समाज की सृष्टि है । माधवनजी का "बृहत्तर भारती" एक सीमारहित भारत वर्ष का स्वप्न है । हमारे देश की भाषा की तथा जन-समूहों की सेवा, भारत वर्ष की गौरव गाथा को संसार के समक्ष प्रज्वलित करना भी माधवनजी के निबन्धों का लक्ष्य है देश-प्रेमी माधवनजी एक उपदेशक के रूप में, एक सुधारवादी के रूप में उनके

निबन्धों में विराजित हैं । भारत वर्ष को संसार का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र घोषित करने और हमारी भाषा हिन्दी को विश्वभाषा के रूप में मानने केलिए आवश्यक मुद्दे माधवनजी अपने निबन्धों के द्वारा प्रस्तुत करते हैं । माधवनजी सर्वत्र किसी का अनुकरण किये बिना अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को या अपने मत क अपने निबन्धों में व्यक्त करते हैं ।

माधवनजी के निबन्धों का शैलीगत विवेचन

यह सम्पूर्ण दृश्य जगत् मनुष्य के मन में कुतूहल भर देता है । यह कुतूहल मनुष्य में आत्म प्रसार या आत्म प्रकाशन की इच्छा को जन्म देता है । यह इच्छा आंगिक चेष्टाओं अथवा वाक्य व्यवहार से समाज के सम्मुख प्रकट होती है । उसी की अभिव्यक्ति सुन्दर है या कटु, इस सन्दर्भ में मनुष्य अनुकूल निर्णय सुनना रुचिकर मानता है । वह सहज ही जिज्ञासु है कि उसकी अभिव्यक्ति प्रशस्त हो । अभिव्यक्ति को उदात्तता देने का यह बोध साहित्य में चमत्कार उत्पन्न करने की प्रक्रिया को शैली कहा जाता है ।

शैली की दृष्टि से देखने पर माधवनजी के निबन्ध केवल विचारात्मक कोटि के ही हैं । यद्यपि उनके विचारात्मक निबन्धों में यथा प्रसंग कहीं कहीं भावात्मक, हास्य-व्यंग्यात्मक, आत्मपरक या निजात्मक आदि शैलियों के दर्शन भी होते हैं । किन्तु मुख्य रूप से उन्होंने अपने गंभीर विषय प्रधान, विचारात्मक निबन्धों में विवेचनात्मक, व्याख्यात्मक, आलोचनात्मक प्रयोग किया है । हास्य-व्यंग्यपूर्ण शैली के सशक्त प्रयोग से यही आभासित होता है कि उनमें व्यंग्यात्मक निबन्ध लिखने की भी अद्भुत क्षमता थी । उनके निबन्ध विचारात्मक निबन्धों का चरमोत्कर्ष उपस्थित करते हैं ।

अब हम पहले विचारात्मक निबन्धों के गुण-धर्म पर प्रकाश डालेंगे, फिर यह सिद्ध करेंगे कि माधवनजी के निबन्ध विचारात्मक हैं या नहीं

विचारात्मक निबन्धों में विश्लेषण, विवेचन और तर्क का सहारा अधिक लिया जाता है । वे मुख्यत: मस्तिष्क की उपज होते हैं । उनमें बौद्धिक पक्ष प्रबल होता है । "शुद्ध विचारात्मक निबन्धों का चरम उत्कर्ष वहीं कहा जा सकता है, जहाँ एक-एक पैराग्राफ में विचार दबा-दबाकर कसे गये हो और एक-एक वाक्य किसी सम्बद्ध विचार खण्ड को लिए हो[1]।" विचारात्मक निबन्धों का दूसरा आदर्श है विचारों की मौलिकता । इनमें विषय गंभीर और स्थायी होना चाहिए । उनमें लेखक के व्यक्तित्व का पूर्ण प्रकाशन होना चाहिए ।

"उच्च कोटि के विचारात्मक निबन्धकार में विषय के विश्लेषण और पर्यालोचन में वैज्ञानिक की सी यथार्थता, सूक्ष्मता और सतर्कता तथा तत्वचिंतक की - सी गंभीरता के साथ - साथ भावों को प्रेरित करने केलिए अनुकूल वातावरण उत्पन्न करने, संवेदना लाने और व्यक्तित्व की व्यंजना करने में साहित्यिक की पूरी सहृदयता भी होनी चाहिए[2]।" विचारात्मक निबन्ध में यह महत्व की बात है कि पाठक कहीं गहन विचार वीथियों में ही सिर टकराता न रहे, उसमें स्थान-स्थान पर सरस भाव-स्रोत भी होना चाहिए । इसके साथ भाषा की पूर्ण शक्ति इन निबन्धों में होनी चाहिए । स्वाभाविक अलंकरण, व्यंग्य-विनोद, लाक्षणिक प्रयोग, मुहावरे आदि विभिन्न साधनों द्वारा भाषा को प्रभावोत्पादक तथा रोचक बनाना चाहिए ।

विचारात्मक निबन्धों की मुख्य दो शैलियाँ बतायी जाती हैं

---

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास - रामचन्द्र शुक्लजी, पृ.509
2. निबन्धकार रामचन्द्र शुक्ल - प्रो. कृष्णदेव झारी, पृ.23

व्यास शैली और समास शैली। लेखक को चाहे इनमें से कोई शैली अपनानी चाहिए। लेकिन उसकी रचना में स्पष्टता का गुण होना बहुत आवश्यक है। विचारों की स्पष्टता, उनका स्वाभाविक क्रम, आवृत्ति तथा सुगमता आदि बातें भी विचारात्मक निबन्धों को सफल बनानेवाली बात होती है।

उपर्युक्त कसौटी पर माधवन जी के निबन्ध खरे उतरते हैं। संघटित विचारों की परम्परा उनके प्रत्येक निबन्ध में पायी जाती है। उन्होंने सदैव एक विचार को दूसरे विचार से सम्बद्ध रखने का प्रयत्न किया है। विचारों की परम्परा उनके निबन्धों में कहीं भी टूटी हुई - सी लक्षित नहीं होती। जहाँ कहीं लेखक अपने निबन्धों में इधर उधर अपनी दृष्टि दौडाता है चाहे वह किसी सामाजिक अनुभूति से सम्बन्धित हो, अथवा साहित्यिक समस्या या व्यक्तिगत रुचि-अरुचि हो - वह रहता सदैव अपने विषय के साथ ही है। "हिन्दी-आन्दोलन" नामक माधवनजी के निबन्ध में धर्म, राजनीति, संगीत, शिक्षा, साधु आदि पर चोटें करते पाये जाते हैं। परन्तु यहाँ भी लेखक ने अपने विषय को पुष्ट और स्पष्ट करने के उद्देश्य से ही इन धारणाओं को प्रकट किया है। वे इस सारे विवेचन से यही दिखाना चाहते हैं कि "सभी विघ्नबाधाओं को काटकर, सारे विरोधी प्रदर्शनकारियों को शर्मिन्दा करके, इस अनादर, अपमान, तिरस्कार और गरीबी के महागर्त से भारत भाग्यलक्ष्मी हिन्दी अवश्य ही उठेगी और वह इतने ज़ोर से उठेगी कि संसार के सभी प्रकार के देशों से उसकी रचनाओं के अध्ययन केलिए यहाँ छात्र - छात्रायें आयेंगे, उनकी भाषाओं में इस के ग्रन्थ अनूदित होंगे और भारतवासी इसकी विश्व-विख्यात गरिमा देखकर प्रसन्नता और अभिमान से फूले न समायेंगे।"[1]

---

1. हिन्दी आन्दोलन - आनन्द शंकर माधवन, पृ.178

माधवनजी के निबन्धों में विचारों की गूढगुंफित परम्परा भी खूब पायी जाती है । विचारों की ऐसी श्रृंखला, जिसमें पाठक की बुद्धि उत्तेजित होकर कुछ सोचने केलिए बाध्य हो जाय । यह माधवनजी के निबन्ध में सर्वत्र पायी जाती हैं । "आरती" के निबन्ध "सूर्य -स्मरण ही स्वयं सूर्य होने का उपाय है" को लीजिए । "कमजोरों को मच्छड़ भी आँखें दिखायेंगे" इस विचार को स्पष्ट करते हुए आगे के वाक्यों में कितने ही विचार साथ साथ प्रकाशित करते गए हैं, किस प्रकार एक विचार दूसरे विचार को जन्म देता है - यह द्रष्टव्य है । "हम प्रत्येक व्यक्ति अपने को ही देश समझें, अपने में स्वामी विवेकानन्द के जैसा व्यक्तित्व निर्माण करें तो उससे बढकर देश केलिए उसकी सुरक्षा सम्बन्धी कोई अनुष्ठान नहीं हो सकता । पूजा नैवेद्य चढ़ाना या कीर्तन करना नहीं, पूज्य जैसे बन जाना है । राम के भक्त को राम जैसे बनने का भीतरी अनुष्ठान करना चाहिए - यही पूजा है । एक विवेकानन्द की पुण्य-भूमि समझ यहाँ अध्ययन करने के उद्देश्य से अभी भी आते हैं । यहाँ सैकडों विवेकानन्द खडे हो जायें, सैकडों नलन्दा खडी हो जायें तो ये चीनी अपने रायफिल और बन्दूक सब दूर फेंक फिर ह्वेनसांग और फाहियान के रास्ते खोजेंगे ।"[1]

माधवनजी के निबन्धों में व्यक्त विचार उनके अपने हैं । ये निबन्ध उनके अन्त: प्रयास से निकली विचारधारा का परिणाम है, उनकी बौद्धिक जागरूकता के परिचायक है, यह उनका अपना बुद्धि-विलास है । किसी का अनुकरण इनकी रचना में नहीं पाया जाता है । निबन्धों में संस्कृति, दर्शन, शिक्षा, साहित्य, भाषा, आध्यात्मिकता आदि का प्रतिपाद होता है । वास्तव में इन सबका अन्तरार्थ देश-प्रेम ही है । प्रत्येक निबन्ध विषय का प्रतिपादन सूक्ष्मता और गहराई के साथ किया गया है ।

माधवनजी के निबन्धों में उनका तत्वचिंतक और विचारक का व्यक्तित्व तो मिलता ही है साथ ही एक सहृदय साहित्यकार की सत्ता भी सर्वत्र विद्यमान है । उनके व्यक्तित्व की अमिट छाप उनके प्रत्येक निबन्ध

1. आरती - आनन्द शंकर माधवन, पृ.249

पायी जाती है । भावों या मनोविकारों पर लिखे गये निबन्धों में तो उनका व्यक्तित्व बहुत स्पष्ट और खुलकर आया है । व्यक्तिगत घटनाओं और प्रसंगों से जैसे "आवाज़ दो हम एक हैं, - हम एक हैं", "मेरा परिचय", "एक पत्र", "प्राच्य भारती", आदि से उन्होंने अपनेपन की छाप अपने निबन्धों में लगाई है ।

माधवनजी की भाषा सरल है । लेकिन वे स्वयं भी कहते हैं "मेरी प्रत्येक लेखनी के अन्तराल में भारत की आज सर्वत्र व्याप्त इस जडता को इस पतित अधार्मिक भावना को, इस अपवित्र उलटी विचार गति को उखाड़ के फेंकने और तत् स्थान पर ज्ञान, प्रेम, सत्य और शक्ति की स्थापना करने का एक व्यग्र प्रयास नज़र आयेगा । मेरी इस तड़प के कारण मेरी भाषा कहीं तीखी, कटु और व्यंग्यपूर्ण भी हो जाती है ।"[1]

माधवनजी उच्च कोटि के विचारात्मक निबन्ध - लेखक ही हैं । प्रत्येक विषय में उनकी पहुँच अत्यन्त सूक्ष्म और गंभीर है । उनके निबन्ध उनके विस्तृत अध्ययन, चिंतन और मनन के प्रतिफलन हैं । उनकी शैली में दृढता और बल है । उन्होंने बडे सबल और प्रभावात्मक ढंग से अपने विचा को दृढता से व्यक्त किया है । हिन्दी साहित्य को उनपर, उनके निबन्धों प विशेष गर्व होना चाहिए ।

---

1. आरती - आनन्द शंकर माधवन, पृ.149

माधवनजी के निबन्धों की क्रान्तिकारी भावनायें

माधवनजी के उच्च कोटि के विचारात्मक निबन्धों के द्वार उनके व्यक्तित्व चित्र की विविध रेखायें स्पष्ट होने के साथ एक दूसरा पक्ष भी उभरता है, वह मनुष्य के आन्तरिक जीवन-परिवर्तन से संबद्ध है । अत: भारतीय संस्कृति के अनुरूप है । महात्मा गाँधीजी के आदर्शों पर चलते हुए वे राष्ट्रीय पुनर्जागरण की एक परिकल्पना करते हैं जिसकी क्रियात्मक अभिव्यक्ति यत्र-तत्र उनकी रचनाओं में हुई है । "हिन्दी आन्दोलन", "अनलशिखा" "आरती", "उषा", आदि पुस्तकों में यह व्यक्त किया गया है ।

इस दृष्टिकोण का सम्बन्ध मुख्यत: भारत के राष्ट्रीय, सामाजिक, वैयक्तिक एवं साहित्यिक जीवन के साथ है । लेखक की धारणा है कि देश का समग्र विकास केवल किसी एक समस्या के समाधान पर निर्भर नहीं विदेशी राज्य समाप्त होने का तात्पर्य यह नहीं कि हमें पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो गई, हमें तो आन्तरिक गुत्थियाँ सुलझानी होंगी, तभी वास्तविक स्वतंत्रता मिल पाएगी । माधवनजी के विचारों में सर्वत्र इसी क्रान्तिकारी भावना के दर्शन होते हैं ।

कुछ विशिष्ट निबन्धकारों से तुलना - माधवनजी का स्थान

माधवनजी के निबन्धकार की यथासंभव संपूर्ण विशेषताओं का प्रकाशन हम कर चुके हैं । विचार सम्पन्नता, शैली कौशलता, सौष्ठव आदि की दृष्टि से माधवनजी का स्थान उच्च ही है । एक दक्षिणी निबन्धकार की परिधि में रखकर उसका स्थान हमको निर्णय करना चाहिए । वास्तव में माधवनजी के निबन्धों के जैसे विचारात्मक गंभीर निबन्ध बहुत ही कम लिखे गये हैं, जिनमें बुद्धि और हृदय का, विषय और व्यक्तित्व का सामंजस्य हो ।

विचारात्मक निबन्ध लेखकों में सर्वोपरि स्थान शुक्लजी को है उनके अधिकांश निबन्धों में बिलकुल मस्तिष्क ही मस्तिष्क रहता है । उन्होंने ही सर्वप्रथम हिन्दी निबन्ध को प्रौढता के उच्च सोपान पर चढाया । हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्य विचारक डॉ॰ नगेन्द्र, नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ॰ देवराज, बाबू गुलाबराय, डॉ॰ हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, आदि के निबन्ध भी इस कोटि के हैं । इन सब निबन्धों में भी चिंतन का वैयक्तिक गूढ प्रयास मिलता है ।

महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी के पहले विचारात्मक निबन्धकार माने जाते हैं । लेकिन शुक्लजी की तरह पाठक को मानसिक-श्रम साध्य नूतन बौद्धिक उपलब्धि उनके निबन्धों से नहीं होती । द्विवेदीजी ने भाषा, साहित्य, इतिहास, जीवनचरित, विज्ञान, भूगोल, दर्शन आदि अनेक विषयों को अपनाया । निबन्धकार बाबू श्यामसुन्दर दास के निबन्धों में निबन्धकार की भावुकता का प्राय: अभाव है । लेकिन उनका विषय चयन भी सीमित ही है । विभिन्न विचारात्मक विषयों में पाण्डित्य, सूक्ष्म चिंतन, शैली का मधु-रस और मुग्धकारी सहृदयता भर देना हज़ारी प्रसाद द्विवेदीजी की सामान्य विशेषता है । साधारण विषयों के निबन्धों में भी अपने पाण्डित्यपूर्ण विचारक व्यक्तित्व की आभा विकीर्ण कर देना उनकी एक विशेषता है । इसके अतिरिक्त गवेषणात्मकता, विषय की विविधता, आत्मीयता, पाठक से सीधा ममतापूर्ण सम्बन्ध ऐतिहासिक सांस्कृतिक चेतना उनकी एक अलग विशेषता है । "विषय-क्षेत्र की व्यापकता की दृष्टि से, गहन गुंफित विराट विचारधारा और मौलिक चिन्तन-मनन की दृष्टि से और भाषा-शैली के वैशिष्ट्य और व्यक्तित्व की सबलता की दृष्टि से जैनेन्द्रजी के निबन्ध उच्च कोटि के विचारात्मक निबन्ध है ।"[1] डॉ॰ नगेन्द्र भी विचारात्मक निबन्ध लेखकों में एक हैं ।

---

1. निबन्धकार रामचन्द्र शुक्ल - प्रो॰ कृष्णदेव झारी, पृ॰198

उपर्युक्त निबन्धकारों से माधवनजी की तुलना करने पर यह सिद्ध होता है कि अपने निबन्धों में माधवनजी भी किसी से कम नहीं है । माधवनजी ने विविध विषयों को अपनाया । उनके निबन्धों में मौलिकता और व्यक्तित्व भी उभर आये हैं । माधवनजी ने अपने निबन्धों में अपना पाण्डित्य विचारात्मक शैली में प्रस्तुत करके सहृदयों में मधु-रस भर दिया । इसलिए माधवन जी का नाम हिन्दी के श्रेष्ठ निबन्धकारों के बीच में अवश्य अक्षुण्ण रहेगा ।

अध्याय - पाँच

आनंद शंकर माधवन जी द्वारा रचित जीवनियाँ

अध्याय - पाँच

आनन्द शंकर माधवन द्वारा रचित जीवनियाँ

जीवनी साहित्य का उद्भव और विकास

हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं में "जीवनी" भी समर्थ साहित्य को प्रदान करने में सक्षम सिद्ध हुई है । जीवनी का उद्भव अभिनव नहीं है, प्राचीन काल में ही हो चुका था । महापुरुषों के जीवन का विवरण ही जीवनी है; ऐसी रचनायें प्राचीन काल से उपलब्ध होती हैं । बाणभट्ट ने "हर्षचरितम्" का प्रणयन कर संस्कृत जीवनी साहित्य को दिशा प्रदान की थी । हिन्दी साहित्य में जीवनी-विधा पाश्चात्य प्रभाव से नयी दिशा ग्रहण करने में समर्थ हुई है ।

जीवनी

जीवनी केलिए संस्कृत साहित्य में "जीवनम्", "चरित्रम्" आदि शब्द प्रयुक्त किये गये हैं । भारतेन्दु युग में इस विधा केलिए जीवनी शब्द का प्रयोग शुरू हुआ । पाश्चात्य साहित्य में जीवनी केलिए "बयोग्राफी" शब्द का प्रयोग ड्राइडन ने सर्वप्रथम किया । "आक्सफोर्ड डिक्सनरी में जीवनी (बयोग्राफी) की व्याख्या इस प्रकार की गई है - **"The history of the lives of an individual man as a branch of literature".**[1]

विशिष्ट व्यक्ति का जीवन विवरण ही जीवनी है । क्योंकि जीवनी में विराट् व्यक्तित्व का अंकन आवश्यक होता है । व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं - शिक्षा, स्थिति, स्तर, वैयक्तिकगुण, सामाजिक, राजनीतिक व शैक्षणिक क्रिया-कलापों तथा प्रमुख घटनाओं का प्रकाशन जीवनी में होना आवश्यक है ।

जीवनी दो प्रकार की होती हैं - जीवनी और आत्मकथा । जीवनी की तरह आत्मजीवनी का केन्द्र भी व्यक्ति है । लेकिन लेखक आत्मकथा में अपनी ही जीवनी व्यक्त करते हैं । इसमें लेखक स्वयं चरित्रनायक होता है । इसमें लेखक अपनी समस्त मनोवृत्तियों का सहज भाव से चित्रण करता है तथा भोगा हुआ अनुभव आत्मकथा के माध्यम से व्यक्त करता है । "अपनी कथा ही आत्मकथा है । अपने जीवन के सन्दर्भ में लेखक बिना किसी संकोच अथवा श्लाघा के घटनाओं और विचारों को आत्मकथा में व्यक्त करता है[2]।"

---

1. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ.95
2. वही, पृ.104

भारतेन्दुयुगीन जीवनी साहित्य

आधुनिक युग से पूर्व जीवनी साहित्य का अपना कोई विशिष्ट अस्तित्व नहीं है । भारतेन्दु युग में जीवनी साहित्य-लेखन का आरंभ हुआ । इस युग में राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक व साहित्यिक व्यक्तियों पर जीवनियाँ लिखी गई है । कार्तिक प्रसाद खत्री, देवी प्रसाद मुंसिफ, काशीनाथ खत्री और लाला जगबहादुर मल इस युग के महत्वपूर्ण जीवनी लेखक हैं । कार्तिक प्रसाद खत्री ने मीराबाई का जीवनचरित, महाराज विक्रमादित्य का जीवन चरित्र, अहल्याबाई का जीवन चरित, कविवर बिहारीलाल, सूरदास आदि के जीवनी-ग्रन्थों की रचना की । मुंसिफ ने महाराणा मानसिंह, कछवाहावाले अमीर का जीवनचरित, राजा मालदेव का जीवन-चरित, श्री· रणधीर महाराजा प्रतापसिंह, हिन्दुपति महाराजा उदयसिंहजी आदि की जीवनियाँ, श्री· जसवन्त सिंह गजसिंधोत का जीवनचरित आदि ग्रन्थों का प्रणयन कर भारतेन्दु की परम्परा को आगे बढ़ाया । इस युग की अन्य जीवनीपरक कृतियाँ निम्नलिखित हैं - कालिदास जयदेव, रामानुज, शंकराचार्य, नेपोलियन बोनापार्ट, दयानन्द आदि पर रचित हैं । आत्मकथा के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द सरस्वती की आत्मकथा अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति है ।

द्विवेदीयुगीन जीवनी साहित्य

द्विवेदीयुग में जीवनचरित की सरिता में बाढ आ गयी । द्विवेदी इस क्षेत्र में अपनी लेखनी से सक्रिय योगदान दिया । "सकविरञ्जकीर्तन" तथा "प्राचीन पण्डित और कवि" नामक पुस्तकों में प्राचीन और नवीन साहित्यकारों के सम्बन्ध में जीवनचरितात्मक निबन्ध द्विवेदीजी ने लिखा । शिवानन्दन सहाय ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, गोस्वामी तुलसीदास, बाबू साहब प्रसाद सिंह, चैतन्य महाप्रभु, मीराबाई आदि के जीवनचरितों की रचना की

जमनादास का "संजीवनी चरित्र", रामविलास शारदा का "आर्य धर्मेन्द्र जीवन", महर्षि लज्जाराज शर्मा का "विक्टोरिया का चरित्र", किशोरीलाल गोस्वामी का "नन्हेंलाल गोस्वामी", रूप नारायण पाण्डेय विरचित "गोरांगा चरितम्", परमानन्द स्वामी का "बुद्ध", सूर्यकुमार वर्मा प्रणीत, "मुगल सम्राट अकबर" आदि बीसवीं शती के प्रथम दशक में प्रकाशित जीवनी ग्रन्थ हैं ।

द्वितीय दशाब्दी में उदयनारायण तिवारी कृत "सम्राट जार्ज पंचम का जीवनचरित", द्वारिका प्रसाद शर्मा रचित "भीष्मपितामह", "आदर्श महामानव और आदर्श महिलायें" (प्रथम भाग), "साकटीस महात्मा", ललिता प्रसाद शर्मा प्रणीत "विदुषी स्त्रियाँ" (दो भाग), केदारनाथ पाठक रचित "लक्ष्मण द्विवेदी" आदि जीवनियाँ प्रकाशित हुई ।

1913 ई॰ में महादेव गोविन्द रानडे (रामनारायण मिश्र), 1917 ई॰ में राजा राममोहन राय (पद्मानन्दन प्रसाद मिश्र), भगवान बुद्धदेव (काशीनाथ) राजा राममोहन राय (शिवनारायण द्विवेदी) आदि जीवन चरितों का प्रकाशन हुआ। सुरेन्द्रनाथ तिवारी कृत "वेदइ मेक्समूलर", विश्वंभरनाथ रचित "अब्राहम लिंकन", रामदुलार लाल भार्गव प्रणीत "द्विजेन्द्र-लाल राय", मथुरा प्रसाद दीक्षित रचित "नादिर शाह", "शिवव्रतलाल कृत "महात्मा विदुर", सुखसम्पतराय भण्डारी कृत "जगदीश चन्द्र बासु" आदि भी 1921 से 1923 के बीच प्रकाशित हुए हैं ।

द्विवेदी-युग में सभी प्रकार के जीवनचरितों की सृष्टि हुई है जहाँ धार्मिक और दार्शनिक व्यक्तियों पर जीवनचरितों की रचना हुई, वहीं ऐतिहासिक और राजनैतिक विभूतियों के जीवन को भी चरित-लेखन का विषय बनाया गया है । साहित्यकारों के जीवन पर जीवनचरित लिखने की प्रवृत्ति का प्रचलन भी हो चला था ।

हिन्दी जीवनी-साहित्य और प्रेमचन्द-युग :

प्रेमचन्दयुग भारत का संघर्षरत युग है । इसलिए इस युग की साहित्य-सृष्टियों में भी इसकी झलक देखी जा सकती है । "प्रेमचन्द युगीन जीवनी-साहित्य देश की संघर्षशील जिजीविषा, उसकी कर्मप्रचेष्टाओं और अभिव्यक्तियों को सही ढंग से प्रतिबिम्बित करता है, राष्ट्र की आन्तरिक ऊर्जा तथा बहिरंग कर्म संकुलता और बेचैनी को मुखर करता है, व्यक्ति के उद्दीपन और आलम्बन को उकेरता है, व्यक्ति के माध्यम से समाज के मनस्तत्व के गठन, विप्लव, रिक्तता, अन्तर्मन्थन, अभिरूपण और समायोजन को चित्रित करता है[1]।"

मुंशी प्रेमचन्द ने "हंस" के प्रकाशन के माध्यम से हिन्दी जीवनी साहित्य को दिशा प्रदान की । जीवनी साहित्य के क्षेत्र में "हंस" का आत्मकथाङ्क एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है । प्रसादजी ने "आँसू" काव्य में कविता के रूप में अपनी आत्मकथा ही लिखी है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने "प्रेमधन की छायास्मृति" शीर्षक से संस्मरण लिखा है । लाला सीताराम, विनोदशंकर व्यास, भाई परमानन्द, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक, गया प्रसाद शास्त्री "श्रीहरि" तथा ठाकुर दत्त शर्मा की रचनायें आत्मकथात्मक हैं ।

प्रेमचन्दयुगीन आत्मकथा साहित्य में सर्वप्रथम योगदान पं॰ रामप्रसाद "विस्मिल" ने किया जो अपने आभ्यन्तर सत्य और जीवन की अन्विति में सर्वथा विशिष्ट है । बालकृष्ण शर्मा "नवीन" से लिखी गई आत्मकथा सजीव, सप्राण, गतिशील, प्रबुद्ध और संभावनामय है । आत्मकथा के क्षेत्र में अम्बिका प्रसाद वाजपेयी का उल्लेख बडे गौरव के साथ किया जाता

---

1. हिन्दी-जीवनी साहित्य : सिद्धान्त और अध्ययन - डा॰ भगवान शरण भरद्वाज, पृ॰153

"मेरी आत्मकहानी" डॉ॰ श्यामसुन्दर दास की आत्मकथा है । महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने अपनी आत्मकथा "मेरी जीवनयात्रा" नाम से चार खण्डों में लिखी है ।

सत्यदेव विद्यालंकार कृत "स्वामी श्रद्धानन्द" स्वामीजी का सुविस्तृत और प्रामाणिक चरित है । इन्द्रवेदालंङ्कार ने प्रिंस बिस्मार्क का सुविस्तृत जीवनचरित लिखा था । "चैतन्य चरितावली"की रचना श्रीमत्प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने पाँच खण्डों में की ।

सुमनजी प्रेमचन्दयुग के जीवनी-साहित्य स्रष्टाओं में महत्वपूर्ण स्थान के अधिकारी हैं । उन्होंने लोकमान्य तिलक, मोतीलाल नेहरू, महामना मालवीय, लाला लजपतराय, महात्मागाँधी, जवहरलाल, मुहम्मद अली, विट्ठल भाई और वल्लभ भाई पटेल की जीवनियाँ लिखी हैं । इस प्रकार प्रेमचन्द-युग में अनेक जीवनी ग्रन्थों की सृष्टि हुई है ।

आधुनिक काल की जीवनियाँ

स्वातंत्र्य काल में हिन्दी जीवनी-साहित्य में आशातीत समृद्धि के दर्शन होते हैं । गणेश प्रसाद वर्णी, वियोगी हरि, यशपाल, आचार्य चतुरसेन, सेठ गोविन्ददास, उग्र, पृथ्वीसिंह "आज़ाद", राहुल सांकृत्यायन, डॉ॰ देवराज, डॉ॰ हरिवंशराय बच्चन, डॉ॰ वृन्दावनलाल वर्मा, अशोक कुमार आदि ने अपने जीवन के अतीत को शब्द-बद्ध किया है । ऋषि जैमिनी कौशिक "बरुआ" ने "माखनलाल चतुर्वेदी : एक जीवनी"में राष्ट्रकवि के जीवन का हृदयरंजक अंकन किया है । अमृतराय रचित "प्रेमचन्द : कलम का सिपाही" इस काल का एक उत्तम जीवनचरित है । चरितनायक के जीवन को क्रमबद्ध रूप में उपन्यस्त करने में अमृतराय ने अपने समग्र कौशल का उपयोग किया है । सुश्री शान्ति जोशी की साहित्य रचना है "सुमित्रानन्दन पन्त जीवन और

एक आत्मकथाकार के रूप में बच्चनजी की सफलता असंदिग्ध है । "क्या भूलूँ क्या याद करूँ" और "नीड का निर्माण फिर" आत्मकथा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं । डॉ॰ वृन्दावनलाल वर्मा का जीवनादर्श भारतीय संस्कृति का वह पूत सन्देश है जिसने अनन्त काल से समस्त संसार को उदात्त जीवन की प्रेरणाओं और कर्तृत्व को समझने केलिए दृष्टि प्रदान करता है । "मेरी जीवनगाथा" पी॰ गणेश प्रसाद वर्णी द्वारा औपन्यासिक शैली में प्रणीत आत्मकथा है ।

डॉ॰ श्यामप्रसाद मुकर्जी भारतीय राजनीति के सशक्त हस्ताक्षर थे । प्रो॰ बलराज मधोक ने "श्यामप्रसाद मुकर्जी : एक जीवनी" में अनेक सम्पूर्ण व्यक्तित्व को शब्दों में निबद्ध करने की चेष्टा की है । "लोहिया" भारतीय राजनीति के सर्वाधिक क्रुद्ध नेता डॉ॰ राममनोहर लोहिया का जीवनचरित है । जिसके लेखक हैं ओंकार शरद् । "गोविन्द वल्लभ पन्त : एक जीवनी" एक ऐसी ही कृति है जो अपने रचयिता की कलात्मक क्षमताओं के विषय में पाठक के मन में एक आश्वस्ति जगाती है ।

सर्वप्रथम रतनलाल बंसल ने "सरदार भगतसिंह" की रचना की और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भगतसिंह के बलिदान का मूल्यांकन किया । "अमर शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद" प्रसिद्ध क्रान्तिकारी विश्वनाथ वैशम्पायन द्वारा कामाण्डर इन-चीफ पं॰ चन्द्रशेखर आज़ाद के सम्बन्ध में लिखा गया जीवनचरित है

एक और वर्ग हिन्दी के जीवनी-साहित्य का है - अनूदित जीवनियाँ । पिछले कुछ वर्षों में मराठी, बंगला, अंग्रेज़ी, फ्रेंच आदि देशी-विदेशी भाषाओं से अनेकों जीवनियाँ अनूदित होकर हिन्दी में आयी हैं ।

इनमें प्राय: महात्मा गाँधी, जवहरलाल नेहरू आदि वर्तमान नेताओं की जीवन-गाथाओं पर ही अधिक बल दिया गया है । इन सबसे हिन्दी साहित्य को निश्चय ही समृद्धि मिली है ।

आधुनिक युग में पाश्चात्य टेकनीक से प्रभावित होकर जीवनी साहित्य ने नयी दिशा प्राप्त की । आज हिन्दी के जीवनी-साहित्य भण्डार भर जाने पर भी उसमें लेखक द्वारा तटस्थ रहकर सहानुभूति और समानुभूति द्वारा जीवन की प्रत्यक्ष प्रस्थापिका जीवनियाँ कम ही लिखी गयी देखती है । ये जीवनियाँ विषय और परिमाण की दृष्टि से सम्पन्न और समृद्ध हैं । लेकिन शैली की दृष्टि से अभी भी कोई खास नवीनता या उपलब्धि नहीं कही जा सकती है ।

हिन्दी जीवनी साहित्य के क्षेत्र में आनन्द शंकर माधवन की देन भी सराहनीय है । माधवनजी ने विश्व के अनेक महान दार्शनिकों, चिन्तकों और कवि व्यक्तित्वों पर लिखा । अपनी आत्मकथा अंकित कर उन्होंने हिन्दी आत्मकथा साहित्य की भी श्रीसमृद्धि की ।

माधवनजी के जीवनीग्रन्थों का परिचय

माधवनजी ने अपनी जीवनियों में कुछ पाश्चात्य दार्शनिकों का जीवन-दर्शन खींचा है । उन्होंने "सुकरात", "प्लेटो", "अरिस्तु" आदि युनानी दार्शनिकों पर पुस्तकें लिखी हैं । उन्होंने पश्चिम के बेकण, स्पिनोजा, कांत, हेगल, स्कोपनहोवर, स्पेंसर, बेर्गसन, क्रोचे, संतयाना, रसेल आदि दार्शनिकों और चिंतकों पर "अक्षय लेखनी" नामक पुस्तक लिखी है । इसके अतिरिक्त उन्होंने फ्रांस के महान साहित्यकार "तालटायर" पर एक पुस्तक लिखकर समाज पर साहित्यकार के प्रभाव पर प्रकाश डाला है । इन जीवनियों के अलावा "प्रथम याम" नामक आत्मकथा का प्रणयन भी माधवनजी ने किया । यह माधवनजी की अपनी आत्मजीवनी है ।

प्रथम याम

माधवनजी को आत्मजीवनी लिखने का कोई लक्ष्य नहीं है । लेकिन एक किशोरी छात्रा के आग्रहपूर्ण जिद्द पर उन्होंने इसका प्रणयन किया वास्तव में माधवनजी की यह अपूर्ण आत्मजीवनी "प्रथम याम" माधवनजी की विधवा माँ कार्तिका की कहानी ही है । कार्तिका भारतीय माँ का प्रतिरूप है । आदर्श भारतीय माँ अपने सन्तान केलिए मरने को भी तैयार है उसकेलिए अपनी सन्तान अपना सर्वस्व है । पतिविहीन कार्तिका, अपना पुत्र माधवन केलिए एक माँ ही नहीं, बल्कि सर्वस्व भी है । अपने पुत्र केलिए अनेक कठिनाइयाँ वह सहन करती है । समाज में ही नहीं, स्कूल में भी अपने पुत्र का अपमान वह सह नहीं सकती । अपने पुत्र को चरित्रवान बनाने केलिए वह बहुत कोशिश करती है । माधवन की सभी उन्नतियों का हेतु माँ ही है । जब माधवन को समाज में इज्जत प्राप्त होने लगी तब वह प्रेममयी माता की खुशी का अन्त नहीं है । माधवन की प्रथम कहानी अखबार में पढते ही वह बेचारी माँ आनन्द समुद्र में डूब गयी । अपने पुत्र की ताकत पर वह गर्व करने लगी ।

कार्तिका की इच्छा यह थी कि अपने पुत्र को एक वकील बनना चाहिए । मगर मेट्रिक पास करने के बाद कालेज में भेजने को उसके पास धन नहीं था । कभी भी अपने पुत्र से अलग होना वह पसन्द नहीं करती थी । पुत्र की "हिन्दी शिक्षा" वह सन्देह की दृष्टि से देखती थी । उसकी शंका थी कि पुत्र हिन्दी पढने के बाद ज़रूर उत्तर भारत जायेगा । इसलिए वह बहुत मुसीबतें सहकर अपने पुत्र को एक स्कूल में अध्यापक का काम दिलाने केलिए दो सौ रुपये देती है । लेकिन माधवन किसी भी नौकरी में सन्तुष्ट नहीं था । अन्त में माधवन के काशी जाने का निर्णय सुनकर माता प्रज्ञाहीन बन जाती है ।

माधवन की बिदाई का समय बहुत मर्मभेदक है । वह ममतामय माँ हृदय पीडा से टूट जाती है और पगली बन जाती है । उस माँ की हृदय व्यथा देखिए - "मैं ज्यों ही दस कदम आगे बढा तो वह फिर उन्मादिनी जैसी मेरे पीछे दौड़ती आयी और फिर एकदम विक्षुब्ध जैसी ठाकुरजी की ओर देखने लगी । एक क्षण में वह पागलों की जैसी उसकी ओर दौड पड़ी । मैं खडा देखता रहा । अम्मा जाकर ठाकुरजी की तस्वीर के समक्ष गिर पड़ी ।[1] माता के मन में यह विश्वास है कि अपना पुत्र कभी वापस नहीं आयेगा ।

"प्रथम याम" से हम माधवनजी की माता की गरिमा समझ सकते हैं । मातृहृदय का परिचय प्रस्तुत करना और उसकी गहराई नापना कठिन कार्य है । माँ का हृदय कितना कोमल, स्निग्ध और गहरा है । वह आकाश जैसा चौडा है । स्त्री केलिए माँ बनने से बढकर भाग्य अन्य नहीं है । माँ से तुलना करने पर पिता का महत्व नगण्य है ।

बचपन में हम जो चीज़ सीखते सुनते हैं उसका असर ज़िन्दगी भर रह जाता है । बालक-बालिकाओं में जो सहजात दिव्य संस्कार है उनको विकसित करने कराने का वातावरण माता-पिता को ही उपस्थित करते रहना चाहिए । माधवनजी की राय में माता-पिता से बढ़कर गुरू कोई नहीं है ।

माधवन को अपनी माता से बढ़कर कोई आत्मीय देवता नहीं है । उसके चरित्र-निर्माण का कारण ही उसकी माँ है । लेकिन उस माँ को त्यागकर वह घर से निकलता है । इसका कारण भी वह बताता है ।

---

1. प्रथम याम - आनन्द शंकर माधवन, पृ.363

"मुझमें सदा से यह धारणा बलवती रही है कि व्यक्तित्व ही सबसे महत्वपूर्ण है, बाद परिवार, फिर समाज, राष्ट्र, मानवता, परमेश्वर आदि है । मुझे व्यक्ति महिमा ही व्यवस्था-सौन्दर्य का कारण-तत्व दिखाई देता है । स्त्री जाति की भीतरी समस्याओं और दुखों का कौन हिसाब लगाता । अम्मा लोग व्यर्थ ही अपनी संतानों केलिए मरती है । कौन बेटा ऐसा है जो उसकी अम्मा के निकट जीवन भर बैठकर सेवा करता ? हम मामूली धक्कों के प्रभाव में आकर अपने प्रियजनों के सभी गुणों को भी कभी कभी भूलने लग जाते हैं ।[1]"

माधवनजी अम्मा के स्नेह समुद्र में डूबकर उस प्यार की गहराई को नापने केलिए बहुत प्रयास करते हैं । लेकिन उसमें वे हार गये । माता के बारे में माधवनजी का कथन देखिए - "दुनिया की सभी चीज़ें थोडी बहुत समझ में आ जाती हैं । पर मुझे आज तक मातृत्व क्या चीज़ है ? समझ में नहीं आयी है । मैं ने बेईमान पत्नी को, बेईमान बहन को, बेईमान बेटी को देखा है बहुत देखा है । पर आज तक मैं ने अपनी संतान के प्रति एक बेईमान माँ को नहीं देखा है । संसार में सचमुच अगर कहीं परमेश्वर वास करता है तो वह माँ के हृदय में ही ।[2]" माधवनजी हर व्यक्ति की माता में परखने का आह्वान देते हैं । पूर्णरूप से माता का गुण-गान करने और लिखने केलिए वह असमर्थ है । भारतीय मातायें उस प्रकार श्रेष्ठ और परमोन्नत पद पर हैं । "भारत में जो कुछ भी सार है, हम लोगों की ये मातायें ही तो । भारतीय संस्कृति मातृत्व में केन्द्रित रहती है कितनी निर्मल, निस्वार्थ और भोली हमारी भारतीय मातायें । क्या हम उनके स्नेह को कभी भूल सकते ? उस ऋण से कभी मुक्त हो सकते ? हम वस्तुत:

---

1. प्रथम याम - आनन्द शंकर माधवन, पृ.
2. वही, पृ.35

अपने समस्त पापों की पूँजी के साथ उन्हीं की स्नेहरूपी नाव में बैठकर ही तो इस संसाररूपी महासमुद्र को पार करने के उपाय ढूँढ रहे हैं । यह सत्य हमें एक निमिष मात्र केलिए भूलना नहीं चाहिए ।"

माता के गुण-गान करने के साथ-साथ बालक तथा गुरु एवं शिष्य की अगणित समस्याओं से ओतप्रोत है "प्रथम याम" । बडे बनने की आकांक्षा माधवन के हृदय में एक अग्निकुंड के सदृश्य बाल्यकाल से ही धधकती रही है । किन्तु प्रारंभिक साथी-सहपाठी एवं अध्यापकों द्वारा अपमानित एवं परिहसित किये जाने तथा मूर्ख - कमज़ोर एवं डरपोक घोषित किये जाने के कारण उनका व्यक्तित्व क्षीण एवं कुंठित होता गया । माधवन बचपन में रोना और हँसना ही जानता था । इस प्रकार जब वह निराश-हताश होकर रहता था तब रंगय्यर नामक गुरु माधवन की रक्षा केलिए आये । उनके प्रभाव से उसके जीवन में बहुत परिवर्तन आये है । रंगय्यर साहब की दृष्टि में अच्छा गुरु वह है जो लड़कों के हाथ पकड़कर उन्हें परमेश्वर की विभूतियों से साक्षात्कार करा देता है । अपने गुरु से प्रेरणा पाकर माधवनजी विजय हासिल करने लगे । उन्होंने कहानी लिखना भी शुरू किया ।

उपर्युक्त बातों से एक बालक का मनोविज्ञान भी माधवनजी हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं । एक बालक की बेइज्जत होने से वह फिर भी कमज़ोर बन जाता है । बालकों को मार्ग निर्देश और ममतापूर्ण प्रेरणा की आवश्यकता होनी चाहिए । माधवन का जीवन चरित इसका स्पष्ट दृष्टान्त

---

1. प्रथम याम - आनन्द शंकर माधवन, पृ.374

माधवनजी ने इस प्रकार अनेक समस्यायें अपनी आत्मजीवनी के द्वारा हमारे सामने प्रस्तुत की है । इस में लेखक ने अपना आत्मानुभव, आत्मानुचिंतन एवं आत्मानुभूति का संगम करा दिया है । माधवनजी के जीवन की कुछ घटनायें पढते समय सहृदय पाठकों की आंखें गीली हो जाती हैं । उच्च शिक्षा की लालसा से माधवन ने कितने लोगों से सहारा मांगा । लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ । उसी प्रकार माता-पुत्र की बिदाई का क्षण कितना वेदनाजनक है । यह भी उनके शब्दों ने अभिव्यक्त किया है । भाषा, शैली, आत्मकथा, निर्वहण आदि कई दृष्टि से देखने पर "प्रथम याम" हिन्दी आत्मकथा साहित्य केलिए एक वरदान ही सिद्ध होगा ।

सुकरात

यह रचना माधवनजी की प्रसिद्ध जीवनियों में एक है । "सुकरात" के द्वारा सुकरात के जीवन और उसके चिन्तन को पाठकों के समक्ष लेखक ने उपस्थित किया है । "सुकरात" में सुकरात के समय के ग्रीस की स्थिति, सुकरात का जीवन तथा उनकी राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं विविध मान्यतायें आदि का परिचय है । सुकरात के सम्बन्ध में ये जानकारियां प्लेटो, अरस्तु और सेनोफन की रचनाओं में प्राप्त विवरणों के समान है । इन लोगों की रचनाओं को आधार बनाकर ही माधवनजी ने "सुकरात" की जीवनी तैयार की थी ।

माधवनजी सुकरात को समझने केलिए तत्कालीन ग्रीस का परिचय देते हैं । ग्रीस की तत्कालीन परिस्थिति ही सुकरात के व्यक्तित्व निर्माण में काम आयी । ग्रीस की संस्कृति सूर्य किरणों जैसे चारों ओर फैलने लगी । ग्रीस संस्कृति का प्रभाव और फैलाव उन दिनों श्रेष्ठतम धर्मबोध के आधार पर रहा है । राष्ट्रों का दूषित राजनीतिक

दृष्टिकोण उस समय के ग्रीसी विज्ञजनों में ज़रा भी नहीं रहा था । दूर दूर के देशों के साथ भी व्यापार आदि करके ग्रीस सम्पन्न बना, सशक्त बना, ज्ञान विज्ञान में श्रेष्ठतम स्थान भी प्राप्त किया, पर कहीं भी उपनिवेश स्थापित करने की उसने चेष्टा नहीं की । प्रभुताधीन देशों की जनता के साथ सदा उन्होंने समानता का व्यवहार किया । वे अपनी सांस्कृतिक गरिमा को अनुभव करते थे । लेकिन अहंकार की भावना उनमें ज़रा भी नहीं थी । इस कारण 750 बी·सी· से 350 बी·सी· तक ग्रीसी जनता की कार्यशक्ति अद्भुत रही ।

आरंभ में ग्रीस में राजा का शासन था । और राजा मनमाना कार्य भी करे तो लोग उसे चुपचाप सह लेते थे । पर धीरे धीरे लोगों में जागरण आने लगा । इसी बीच व्यापारी नेताओं का भी प्रभाव अत्यधिक बढ गया । फलत: जनसाधारण में तीन दल बन गये, राजा के श्रेष्ठत्व को माननेवाले, जनसाधारण के प्रतिनिधि लोग और व्यापारियों के प्रभावाधीन लोग । इन तीनों में व्यापारी नेता लोग ही मेधाशक्ति के धनी थे । इन लोगों के अथक प्रयास के कारण ही ग्रीसी जनता में उत्कर्ष और जागरण का वातावरण तैयार होने लगा था । इस बीच लोगों ने स्वेच्छाचारी शासकों से नाना प्रकार के कष्ट भोगे । दु:खी शोषित लोगोंने तब सचेत और संघटित होकर राजसत्ता को उखाड़कर फेंक दिया और तत्स्थान पर जनसाधारण की सार्वभौम सत्ता को घोषित किया । कालक्रम में एथिनियन प्रजातंत्र नाममात्र का प्रजातंत्र रह गया । ग्रीस का पतन होता गया जो फिर आज तक वह ऊपर उठ नहीं सका ।

उपर्युक्त उथल पुथल के बीच एथेंस में सुकरात का उदय हुआ । वे एक ऐसे व्यक्ति थे, जो युद्ध नेताओं, राजनीतिज्ञों कवियों आदि से सब प्रकार से श्रेष्ठ और सशक्त थे । "वे मानव मानस को एक उद्दीप्त स्वस्थ स्वच्छन्द सुन्दर दिशा देने में, मानव की समझ को जाग्रत प्रज्वलित और

प्रकाशित करने में, सत्य और ज्ञान की ओर उसे उन्मुख करने में, धूर्त राजनेताओं प्रपंची विद्वानों, स्वार्थी प्रशासकों से गरीब जनता को मुक्ति दिलाने में जितना सशक्त सेवाकार्य उसने किया, उतना मानवता के इतिहास में आज तक और किसी ने भी नहीं किया, यह निर्विववाद सत्य है।"

सुकरात का जन्म बी॰सी॰ 469 में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उसे एथेंस से अगाध प्रेम था। एक एथीनियन नागरिक होने के नाते देश के बहुत सारे कार्य भी उसने किये। उसके जीवन के आरंभ के चालीस बरस में कुछ भी उल्लेखनीय घटनायें नहीं रही हैं। राजनीति में उसने कभी रुचि नहीं दर्शायी। पर अन्त में तब उसमें थोड़ा बहुत रस दर्शाने लग गया था। उस ज़माने में लोग सुकरात को ग्रीस के सबसे बड़े ज्ञानी के रूप में माने जाने लगे। ग्रीस में सभी क्षेत्रों में गड़बड़ी, अराजकता और मनमानापन फैला हुआ था। एक शुद्ध युक्ति संगत वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक गरिमा ही ग्रीस को अब इस दुर्दशा से बचा सकता था। तब लोगों ने एक उद्धारक का सारा गुण सुकरात पर देखा। सुकरात भी इन सब कारणों से जनसाधारण की समझबूझ को जाग्रत और सशक्त कर देना अपनी जिम्मेदारी समझने लग गया

सुकरात ने स्वयं कोई अपनी विचारधारा मज़बूती से जनमानस के सामने पेश करना आवश्यक नहीं समझा। उनकी राय में प्रत्येक महत्वपूर्ण शब्द का जैसे सत्य, स्वतंत्रता, शासन, शिक्षा, कला आदि का अर्थ और परिभाषायें स्वयं खोजकर निकालना मनुष्य का कर्तव्य है। समस्त गंभीर समस्याओं का समाधान वे अपने श्रोताओं से ही चाहते थे। अन्वेषक के जीवन को उसने सर्वश्रेष्ठ माना। पुरानी सड़ी परम्पराओं और अन्धविश्वासों को उधाड़कर फेंक देने केलिए जनता को उन्होंने आह्वान दिया। एक दार्शनिक दृष्टिकोण रखकर ग्रीस के उन्नयन केलिए वे जन-साधारण को ज्ञान देते रहे।

सुकरात के जीवन के सन्ध्याकाल में ग्रीस में महान संघर्ष छिड़ हुआ था । प्रजातंत्र के पक्षपाती एक तरफ और राजशाही के पक्षपाती दूसरी तरफ । इन दोनों के बीच सुकरात को सत्य, धर्म, ज्ञान और गुण की पताका को आकाश उठाये रखना था । वह अपने इस प्रयत्न में राजशासकों की धूर्तता, पाप, बेईमानी, मूर्खता आदि की तीव्र समालोचना करने लगा । शासक लोग कहने लगे प्रशासनिक व्यवस्था को कायम करने की दिशा में यह सुकरात बहुत बड़ा बाधक है । इसलिए 399 बी·सी· में विषपान कराकर सरकार ने उसके प्राणों का हरण कर लिया था । उन लोगों ने सुकरात पर अभियोग किया कि सुकरात अधार्मिक है, वह देवताओं पर आस्था नहीं रखता, वह रातदिन एथेंस के युवकों को भ्रष्ट मार्ग पर आरूढ कराते हुए सरकार के खिलाफ उन्हें भड़काता है इत्यादि । उस महान पाप का नतीजा यह हुआ कि ग्रीस का सर्वनाश ही हो गया और वह स्पार्टीवालों के अधीन आ गया ।

माधवनजी "सुकरात" में सुकरात का जीवन-दर्शन और सुकरात के जीवन की एक-एक घटना को उल्लिखित किया है । हिन्दी साहित्य क्षेत्र में इस ग्रीक दार्शनिक का जीवन-चरित और दार्शनिक की विचार-धारायें प्रकट करने केलिए किये गये माधवनजी का प्रयास ज़रूर सराहनीय है । यह माधवनजी का एक सफल जीवनी है ।

प्लेटो

"प्लेटो" नामक पुस्तक प्लेटो का एक संक्षिप्त परिचय है । यह एक जीवनी से अधिक प्लेटो के सिद्धान्तों का परिचयात्मक ग्रन्थ है । क्योंकि इसमें अधिकांश प्लेटो के दर्शन और उनकी विचारधारायें हैं । प्लेटो के जीवन-दर्शन खींच डालने में माधवनजी ने अक्षरश: विजय प्राप्त की है ।

माधवनजी ने सुकरात, प्लेटो और अरस्तु के दर्शन की खूब चर्चा की । प्लेटो की ज्ञानपिपासा के शमन करने में उनके गुरू सुकरात जिम्मेदार थे । इसीप्रकार अरस्तु के गुरु प्लेटो भी शिष्य में ज्ञान की ज्वाला ही प्रज्वलित की थी । सुकरात, प्लेटो और अरस्तु के जन्म से ग्रीस की प्रतिष्ठा बहुत बढ गयी थी ।

"प्लेटो" के प्रारंभ में सुकरात के सम्बन्ध में भी कुछ बातें हैं तत्पश्चात् प्लेटो के व्यक्तित्व और विचारों से परिचय कराया गया है । प्रजातंत्र, अभिभावकवाद, पारिवारिक जीवन, न्याय-अन्याय, सम्पत्ति सीमा आदि के सम्बन्ध में प्लेटो के आदर्श विचारों को इसमें प्रस्तुत किया गया है ।

ग्रीस एक ज़माने में मानव संस्कृति का केन्द्र रहा है । जब जिस संस्कृति का प्रभाव जाग्रत हो जाता है तब समस्त संसार उस देश की ओर अभिमुख होने लगता है और उस देश से प्रेरणायें लेने लगता है । उन देशवासियों का अनुकरण और अनुगमन भी शुरू होता है । ग्रीस में दार्शनिक खोज पहले वस्तुतत्व से आरंभ हुई । उस ज़माने में ग्रीस से अनेकों ज्ञानी लोग विदेशों में गये और सर्वत्र वे अपनी विद्वत्ता और चारित्र्य का प्रभाव फैलाकर ग्रीस की यशोपताका फहराने में सफल हुए । सुकरात और उनके शिष्यों के बीच दिन रात जो चर्चा होती थी वही आज की यूरोपीय संस्कृति का आधार बनी है । सुकरात की बातचीत और भाषणों के मूल्यों के कारण उनकी इतनी ख्याति फैल गयी कि लोगों ने मुक्त कण्ठ से उन्हें ग्रीस का सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी कहा । दर्शन की महिमा-गरिमा को सर्वोपरी फहराये रखने के प्रयत्न में सुकरात शहीद हो गये ।

प्लेटो की ज़िन्दगी का आरंभ उस दिन से हुआ है जिस दिन उनकी मुलाकात सुकरात से हो गयी । सुकरात की मृत्यु का प्लेटो पर बहुत गहरा असर पड़ा । वे सोचने लगे - प्रजातन्त्र के चलते ही सुकरात को ज़हर पीना पडा, प्रजातन्त्र नाना प्रकार के ऐबों, कमज़ोरियों और

विपरीतताओं से भरा है और उसमें ज्ञानियों का सम्मान और शासन संभव नहीं है । इसी बीच प्लेटो ने समझा कि अपनेलिए एथेन्स सुरक्षित स्थान नहीं रह गया । इसलिए प्लेटो ईजिप्त की ओर निकल पड़े । ईजिप्तवालों का विचार था कि ग्रीस के लोग इतने सुसंस्कृत और परिपक्व नहीं हैं कि समाज केलिए स्वस्थ नैतिक परम्पराओं और नियम कानूनों का प्रणयन कर सके । ईजिप्त के इन धर्माचार्यों का कथन प्लेटो के दिल में असर कर गया । अपने "यूटोपिया" नामक ग्रन्थ की रचना के समय ईजिप्त के अपने अनुभवों ने उन्हें बहुत दूर तक प्रभावित किया और मसाले प्रदान किये । कुछ लोगों का कहना है कि वे भारत में भी आये थे और गंगा के किनारे में साधना में लीन योगी और साधु पुरुषों से भी शिक्षा ग्रहण की थी ।

प्लेटो दार्शनिक भी थे और कलाकार भी । उनको व्यंग्य और परिहास करने की आदत थी । शुद्ध गप्पें भी उन्हें बहुत ही प्रिय रही हैं । कथोपकथन वे इस दृष्टि से लिखते थे कि उस समय की साधारण जनता केलिए वह आकर्षक, ग्राह्य एवं शिक्षाप्रद हो । अनेक त्रुटियों के रहते हुये भी उनकी रचनायें खास करके "डायलोग" और "रिपब्लिका" साहित्य और दर्शन के क्षेत्र में संसार केलिए अमर और कालजयी निधियां हैं ।

इस प्रकार माधवनजी ज़रूर प्लेटो की जीवनी द्वारा ग्रीस की कला और दर्शन पर प्रकाश डालने में सफल हुए । प्लेटो जैसे महान दार्शनिक और साहित्यकार के सम्बन्ध में लिखना भी गरिमामयी बात है । हिन्दी साहित्य जगत् में इस प्रकार के उद्यम विरले ही हुए हैं । इसलिए यह पुस्तक ज़रूर हिन्दी साहित्य भंडार की एक अक्षय निधि सिद्ध होगी ।

अरिस्तु

आनन्द शंकर माधवन ने अपनी किताब "अरिस्तु" में दार्शनिक अरस्तु के दर्शन और उनकी जीवनी का चित्र खींचा है । यह अरस्तु का सामान्य परिचय मात्र नहीं है, बल्कि माधवनजी के इस दृढ निश्चय का परिणाम भी है कि यहाँ के छात्रवृन्द और युवक समुदाय यह जाने समझे कि एक ज़िन्दगी में उस अद्भुत पुरुष ने कितनी बड़ी साधना की और सफलतायें प्राप्त कीं । अरस्तु प्लेटो के शिष्य थे । अरस्तु के भी शिष्य अनेकों हुए । पर कोई भी गुरु के अनुरूप साधक सिद्ध नहीं हुआ । इस तरह सुकरात से आरंभ हुई वह गुरु शिष्य परम्परा अरस्तु के साथ समाप्त हो गयी । अरस्तु के बाद उस मार्के का कोई महापुरुष ग्रीस में फिर प्रकट नहीं हुआ । विश्वविख्यात 'डेमास्तनीस और सिकन्दर भी उनके ज़माने के महात्मा लोग हैं । अरस्तु के बाद ग्रीस यथार्थ में पिछड़ गया ।

अरस्तु का जन्म मेज़िडोनियो के स्टागीरा शहर में बी·सी· में हुआ था । अरस्तु प्लेटो के पास अठारह बीस वर्ष तक रहे और दर्शन शास्त्र का अध्ययन करते रहे । यूरिपीडेस के बाद पुस्तकें संग्रह करने के कार्य में अरस्तु ने ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया । पुस्तकों का वर्गीकरण सम्बन्धी कार्य संसार में सर्वप्रथम अरस्तु ने ही चालू किया था ।

अरस्तु ने वक्तृत्व कला का प्रशिक्षण देने केलिए एक विद्यालय भ खोला था । तदुपरान्त वे उस समय के राजा का गुरु बन गया । इसके बाद मेज़िडोनिया के राजा फिलिप ने अपने पुत्र अलेक्सांडर को शिक्षा प्रदान करने हेतु अरस्तु को निमंत्रण दिया । इस निमंत्रण से अरस्तु की ख्याति और प्रतिष अत्यधिक बढ गयी । अरस्तु दार्शनिक क्षेत्र में और सिकन्दर राजनीतिक क्षेत्र में विश्व विजय करके अपनी अपनी अक्षय प्रशस्ति फैलाई । उस समय की

राजनीतिक गतिविधि के साथ जनों की मानसिक स्थिति भी बहुत अशांत रही थी । फिर भी उस अशांति के बीच से गुज़रते हुए भी उन्होंने अलौकिक रचनाओं का प्रणयन किया । जनता केलिए अरस्तु की रचनायें दुरूह और कठिन लगती थीं । मगर प्रतिभा सम्पन्नों केलिए वे बौद्धिक आनन्द का वह अक्षय स्त्रोत रहता आया है । विज्ञान और दर्शन अरस्तु के प्रिय विषय रहे हैं । उनका विश्वास था - देश की समृद्धि, ऐश्वर्य, ताकत और विजय श्रेष्ठतम ज्ञान हासिल करने से ही संभव है ।

यूरोप में तर्कशास्त्र का उदय अरस्तु से आरंभ हुआ । यूरोपीय विज्ञान अरस्तु का ऋणी रहता है । दर्शन में अरस्तु की खास देन है "सिलोगिज़्म" । प्राणी विज्ञान में अरस्तु की देन अतुलनीय है । सौन्दर्य-शास्त्र और कला के सम्बन्ध में भी अरस्तु का विचार बिलकुल मौलिक और सैद्धान्तिक रहे हैं । अरस्तु की राय में शिक्षितों का शासन ही प्रजातंत्रीय शासन से हर दृष्टि से बेहतर है और आदर्श सरकार की स्थापना निस्सन्देह मध्य वर्ग से ही संभव है । मानव मानस को परिष्कृत करने केलिए शायद अरस्तु से अधिक किसी ने कुछ नहीं किया । 322 बी·सी· में अरस्तु की मृत्यु हो गयी ।

माधवनजी की यह पुस्तक अरस्तु के गरिमामय जीवन में सम्पूर्ण प्रकाश डालने केलिए उपयोगी रही है । निस्सन्देह माधवनजी के इस सफल प्रयत्न को हिन्दी पाठक हृदयंगम करेंगे ।

वालटायर

यह ग्रंथ फ्रांस के महान लेखक वालटायर से सम्बन्धित लघु विवरण है । इसमें वालटायर की साहित्य सेवा का परिचय प्रस्तुत है ।

लेकिन उस साहित्य-सेवा के साथ वालटायर के असाधारण महत्व को दर्शाने का प्रयत्न भी है । उस समय के फ्रांस के जनजागरण का मुख्य कारण वालटायर का साहित्य ही है । अपनी साहित्य सृष्टि के कारण उनको अनेक कठिनाइयाँ सहनी पड़ीं । वे अधिकारियों के सामने एक अत्याचारी सिद्ध हुए । लेकिन जनसाधारण के सामने एक महात्मा थे । उस समय तानाशाही के विरुद्ध अपनी साहित्य कृतियों के द्वारा उन्होंने आवाज़ उठायी । यह एक साहित्यकार की लघु उपलब्धि नहीं है ।

माधवनजी वालटायर के साहित्यिक योगदान से बहुत संतुष्ट है । वालटायर की कलम में इतनी ताकत थी कि उससे वे अपने ज़माने के अनेकानेक सर्वश्रेष्ठ महारथियों को अपनी कलम की नोक से निष्प्राण और परिहास के पात्र बना डालते थे और अनेक नगण्यों को आकाश में उठा देते थे । उनके व्यक्तित्व का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू उनकी अतिशय महान मेधाशक्ति रहा है । वालटायर ने संघर्षमय जीवन को वास्तविक जीवन माना था । इसलिए समाज के शोषकों, प्रमादियों और सब प्रकार के ढोंगियों से वालटायर नाना प्रकार से युद्ध करते रहे । अन्धविश्वास, शोषण, भ्रष्टाचार, पाप, झूठ आदि शक्तियों से एक अद्भुतीय योद्धा जैसे वे अनवरत युद्ध करते रहे सामन्त युग से फ्रांस को खींचकर मध्यवर्ग के हाथ में उसे सुपुर्द कर देने केलिए वाल्टायर और रूसो के ही हाथ सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहे हैं ।

वालटायर का जन्म पेरिस में 1694 में हुआ । उनके माता-पिता सुखी और समृद्ध परिवार के थे । बाल्य से ही वालटायर में कविता लिखने की आदत थी । जब से वालटायर ने लिखना आरंभ किया तब से उनको परिहास और अपमान भी सहना पडा । कई बार वे गिरफ्तार किये गये और उनका निष्कासन भी हुआ । इसलिए कई दिनों तक उन्हें इंग्लेंड में रहना पड़ा ।

वाल्टायर के ग्रन्थों की खूबी यह थी कि उनकी कथा के पात्र व्यक्ति न होकर विचार, भाव, आदर्श आदि होते थे । उनके उपन्यास में घटनायें बात करती थीं न कि पात्र । धर्म के पाखंडियों पर वे व्यंग्य भी करते थे । उन्होंने गणतंत्र के बारे में यही कहा था कि गणतंत्र में राष्ट्रीय एकता असंभव है, गृह-युद्ध की संभावना हमेशा बनी रही है और गणतंत्र छोटे-छोटे राज्यों केलिए ही अधिक उपयुक्त है ।

माधवनजी ने वालटायर और रूसो की तुलना भी अपनी पुस्तक में की है । इस लघु पुस्तक में वालटायर की जीवनी प्रकाशित करने का माधवनजी का लक्ष्य यही दीखता है कि दुनिया या जनता साहित्य की अतुल्य शक्ति समझे । लघु ग्रन्थ होते हुए भी वालटायर के जीवन की प्राय: सभी प्रमुख घटनाओं और आदर्शों को इसमें लेखक दर्शाने में समर्थ हुए हैं । इसमें वालटायर के व्यक्तित्व, साहित्य सृष्टि आदि सम्यक रूप से माधवनजी उद्घाटित करते हैं ।

अक्षय लेखनी

"अक्षय लेखनी" पश्चिम के दस अक्षय यशस्वी महारथियों का जीवन परिचय है । बेकण, स्पिनोजा, कांत, हेगल, स्कोपनहोवर, स्पेंसर, बेगर्सन, क्रोचे, संतयाना और रसेल के चिन्तन और वैयक्तिक जीवन आदर्श ही इसमें वर्णित है । उन लोगों की जीवन परिस्थितियों और विचारों को बहुत आकर्षक ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत कर जीवनीपरक लेखों का प्रणयन ही लेखक कर रहे हैं ।

अरस्तु के समकालीन थे सिकन्दर । उनकी मृत्यु के साथ ग्रीस का पतन होने लगा । सिकन्दर ग्रीस की संस्कृति संसार भर फैलाना चाहते थे । लेकिन पूरब की संस्कृति के सामने ग्रीस की संस्कृति टिक नहीं लेती है । पूरबी संस्कृति की मुख्य कड़ी आध्यात्मिकता है । माधवनजी की राय में इस आध्यात्मिकता के कारण ही पूरब देश के सामने ग्रीस के लोगों कर्मशक्ति पराजित होती है । ग्रीस में अनेक दार्शनिक जन्मे । जब रोम के लोगों ने ग्रीस को जीत लिया तो अपने साथ ग्रीस की दार्शनिक विचारधाराओं को भी वे लोग रोम लेते गये । फिर रोम का भी नाश हुआ । उसके बाद यूरोप का जागरण आरंभ हुआ । उस जागरण के हेतुभूत महामानवियाँ ही "अक्षय लेखनी" के विषय हैं ।

1. फ्रान्सीस बेकण

1561 में लन्दन शहर में फ्रान्सीस बेकन का जन्म हुआ । उनके पिताजी महारानी एलिसबेथ के अधीन उच्च कर्मचारी थे । कालेज की शिक्षा छोड़ने के बाद उन्होंने अरस्तु की दार्शनिक विचारधारा का अध्ययन किया । लेकिन वे अरस्तु की विचारधाराओं से संतुष्ट नहीं थे । बेकण की राय में दर्शन का प्रतिभा सम्पन्न विचारकों के दिमागी आनन्द का विषय न होकर समस्त मानवता के उत्कर्ष और विजय के रास्ते ढूँढ निकालने का उपाय होना अनिवार्य है ।

बेकण महत्वाकांक्षी थे । 1583 में वे पार्लमेंट सदस्य चुने गये । उनकी दिलचस्पी राजनीति में नहीं थी । दर्शन का चिन्तन-मनन ही उन्हें पसन्द था । बेकण ने राजनीति और दर्शन के संबंध में कई पुस्तकों कीं

रचना की । वस्तुत: वे सत्यान्वेषी थे । सभी चीज़ों को अन्वेषण द्वारा समझने का उन्होंने उपदेश दिया । उनकी राय में शासक को भी दार्शनिक होना ज़रूरी है । बेकण की महान अभिलाषा थी कि विज्ञान और वैज्ञानिक कार्यों का सामाजीकरण कर दे । उसमें वे सफल भी हुए ।

यूरोप के पुनर्जागरण के जबरदस्त वक्ता फ्रान्सीस बेकण को भारतीयों से परिचित कराना ही माथुरजी के इस लेख का उद्देश्य था जिसको उन्होंने भली भाँति निभाया ।

2. स्पिनोजा

यहूदियों को दीर्घकाल तक जो अपमान और तकलीफें सहनी पड़ी थीं । उसका दर्द बाल्यावस्था में ही स्पिनोजा में हुआ था । वह रात-दिन अपनी जाति की दीन-हीन स्थिति पर विचार करते हुए धर्म मन्दिर में ही अपना समय बिताते रहे । लेटिन भाषा के ज़रिये वह यूरोप के प्राचीन और मध्ययुगीन विचारधारा से पूर्ण रूप से अवगत हो गये । उनको यहूदी धर्म और ईसाई धर्म में कुछ भी तात्त्विक भेद दिखाई नहीं दिया । उनके ख्याल में लोगों की गलत धारणाओं और मूर्खताओं के कारण ही दोनों में भिन्नता दिखाई देती थी ।

स्पिनोजा ने प्रत्येक विषय पर बड़ी गंभीरता से सोच विचार किया । जीसस को महानतम और श्रेष्ठतम मानव विभूति मानने को वे तैयार नहीं हुए । स्पिनोजा का दर्शन जीवन से प्यार करने का है, दुनिया से प्यार करने का है । उन्होंने अनेक पुस्तकों का प्रणयन किया । उन्हीं रचनाओं के कारण से आधुनिक युग के विशिष्टतम दार्शनिक माने जाते हैं ।

यहूदियों के पतन के समय उनके उद्धारक के रूप में आये उन महामानवी स्पिनोजा का परिचय हमको माधवनजी देते हैं । अवश्य यह हिन्दी पाठकों को स्पिनोजा के सम्बन्ध में जानने और समझने का सफल प्रयास है ।

3. कांत

उन्नीसवीं सदी की सबसे प्रबल विचारधारा यूरोप में इमानुवेल कांत की रही है । इस असाधारण प्रतिभा सम्पन्न विभूति ने अपनी रचनाओं द्वारा पूरे यूरोप की तन्द्रा को तोड़ दिया था और उसे जगाकर खड़ा किया था ।

कांत साधारण दर्जे से सैद्धान्तिक विचारों द्वारा ऊपर उठे थे अपनी रचनाओं के द्वारा श्रेष्ठतम विचारक का स्थान उन्होंने प्राप्त किया । यद्यपि उनका प्रिय विषय तत्वमीमांसा रहा है फिर भी उन्होंने भूगोल, खगोल, आकाश, नाना प्रकार के ग्रह, भूकम्प, अग्निपर्वत, हवा आदि अनेकों विषयों पर महत्वपूर्ण रचनायें प्रदान की हैं । उन्होंने धर्म के नाम पर समाज में और जनमानस में व्याप्त नाना प्रकार के अन्धविश्वासों और मूर्खतापूर्ण परम्परा और मान्यताओं के खिलाफ बहुत अधिक लिखा । कांत के सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ का नाम है "क्रिटिक" ।

यद्यपि कांत के कई निष्कर्षों को आज के विचारक नहीं मानते हैं, फिर भी दुनिया केलिए उनकी देन अद्वितीय है । यह निर्विवाद रूप से कह सकते हैं कि कांत के बाद जितने भी विचारक यूरोप में हुए सभी अपनी अपनी विचारधारा केलिए कांत के ऋणी रहे हैं ।

माधवनजी तत्व चिन्तक, विचारशील एवं भावसम्पन्न मनीषी

4· हेगल

हेगल का जन्म 1770 में स्टुटगार्ट नामक कस्बे में हुआ । उसके पिता राज कर्मचारी थे । हेगल उनके पिता के प्रयत्न से एक होनहार छात्र के रूप में आगे बढे । हेगल ने पूरे मनोयोग के साथ ग्रीस साहित्य का अध्ययन किया । उन्होनें कहा कि जर्मनी को अपनी सभी अच्छाई केलिए ग्रीस का ऋणी रहना चाहिए ।

हेगल फ्रांसीसी क्रांति के महान आराधक और समर्थक थे । हेगल को कांत का सशक्त और योग्य उत्तराधिकारी माना है । माधवनजी हेगल के विचारों और साहित्यिक रचनाओं का परिचय इस लेख में देने का प्रयास करते हैं ।

5· स्कोपनहोवर

उन्नीसवीं सदी में यूरोप में अनेक निराशावादी कवि पैदा हुए । इसके साथ अनेक निराशावादी विचारक भी थे । स्कोपनहोवर उन निराशावादी विचारकों में प्रमुख हैं । उसकी राय में दुनिया में दु:ख और नैराश्य के अलावा कुछ भी नहीं है । अच्छे दिनों की आशा करना मूर्खता है

स्कोपनहोवर का जन्म डाँट्जिग में 1788 ई· में हुआ । पारिवारिक और वातावरण की संस्कृति के कारण उनमें व्यापारी स्वभाव और मनोवृत्ति आ गयी थी । मगर नियति ने उन्हें दार्शनिक बना दिया उनका जीवन एकाकीपन में रहा । इसलिए निराशावादी और शंकालू स्वभाव के बने ।

स्कोपनहोवर ने कई पुस्तकें लिखीं । उनकी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक थी "द वेर्ल्ड आस विल आनड ऐडिया" । उनकी राय में आदमी का सार वस्तुत: उसकी इच्छाशक्ति है । यह इच्छाशक्ति है । यह इच्छाशक्ति ही उसकी क्रियाशक्ति है । इसलिए आदमी का सब कुछ इच्छाशक्ति ही है । इच्छा पूर्ति केलिए जो संघर्ष हम करते हैं, उसीमें तो हमारे सारे दुख हैं । स्कोपनहोवर के महत्व को दर्शाने के साथ साथ माधवनजी स्कोपनहोवर की मुर्खताओं और कमज़ोरियों को भी दिखाना अपना कर्तव्य मानते हैं ।

6. स्पेंसर

यूरोप में जब औद्योगिक क्रांति आरंभ हुई थी इसी बीच स्पेंसर का जन्म डेरबी में हुआ था । इसलिए इंग्लैंड के बौद्धिक जागरण ने हेरवर्ट स्पेंसर को अत्यधिक प्रभावित किया । उन्होंने प्राणी विज्ञान और विकासवाद में दिलचस्पी लेना शुरू किया । उनका प्रिय विषय बना विकासव उस विषय के गंभीर अध्ययन करने केलिए पुस्तकों का सहारा न लेकर प्रकृति निरीक्षण उनके अध्ययन का माध्यम बना । इस प्रकार डारविन के पहले भी स्पेंसर ने विकासवाद पर विचार किया था ।

स्पेंसर सचमुच अपने ज़माने के सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक थे । उन्होंने अनेक साहित्य रचनायें प्रस्तुत कीं । स्पेंसर कांत की विचारधाराओं के बिलकुल उलटे विचारों के पोषक थे ।

माधवनजी ने इंग्लैंड के सर्वश्रेष्ठ दार्शनिकों में अग्रगण्य स्पेंसर की जीवनी बहुत कुशलतापूर्ण और स्वाभाविक ढंग से हम पाठकों के सामने रखी है ।

7· बेर्गसन

बेर्गसन का जन्म पेरीस में 1859 में हुआ । पहले वे वैज्ञानिक विषयों के पीछे लट्ठू थे । गणित और पदार्थ विज्ञान में उसने प्रवीणता हासिल की । मगर बाद में वे धर्म मीमांसा के पूजारी हुए और अंत में दर्शनशास्त्र के अध्ययन में तल्लीन हो गये । वे भौतिकवादी थे । हर वस्तु के अन्वेषण करने पर उनका कथन है कि अन्त में भौतिकवाद पर ही पहुँचते हैं । बेर्गसन ने वस्तुतत्व और मनस्तत्व, सृजनपरक विकास, दर्शन के तौर तरीके, नैतिकता और धर्म पर गंभीर अध्ययन किया ।

बेर्गसन की एक लोकप्रिय पुस्तक है - "माटेर्स आनड मेम्मरी" माधवनजी उसको आधुनिक दार्शनिकों की दुनिया में सर्वाधिक आदरणीय और लोकप्रिय विभूति मानते हैं ।

8· क्रोचे

बेनर्डिक्टो क्रोचे इटालियन थे । उनकी धर्मचेतना सौन्दर्याराधक के रूप में रही है । उन्होंने सौन्दर्य को सनातन सत्य कहा ।

माधवनजी कुल मिलाकर क्रोचे के बहुमुखी व्यक्तित्व पर आकृष्ट होते हैं । क्रोचे मूलत: दार्शनिक से अधिक साहित्यकार थे, कला मर्मज्ञ थे, इतिहासवेत्ता थे, सौन्दर्यशास्त्री थे ।

9· संतयाना

माधवनजी अमेरिका के तत्ववेत्ताओं को भी अपने लेखों में स्थान देना उचित समझते हैं । इसी कारण अमेरिकन होते हुए भी यूरोप के तत्वचिन्तकों और दार्शनिकों के साथ संतयाना को भी प्रस्तुत करते हैं । दर्शन संतयाना का प्रिय विषय रहा । दर्शन सम्बन्धी उनका प्रथम निबन्ध था - "द सेन्स आफ ब्यूटी" । उन्होंने पाँच खण्डों में "द लाइफ आफ रीसन" लिखा था । इस रचना के पाँच खण्डों ने संतयाना को विश्व विख्यात बना दिया ।

10· रसल

बरेट्रोड रसल का नाम विश्व के दार्शनिक जगत् में दूसरे विश्वयुद्ध के समय उभर आया । उन्होंने विश्व को सर्वनाश की ओर पागलों जैसे द्रुतगति से अग्रसर होते देखा । उनके विचार शान्ति सम्बन्धी थे । उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं - "द प्रोब्लम्स आफ फिलोसफी", "अवर क्नोलड्ज आफ द एक्स्टेनल वेल्ड", "द अनालिसस ऑफ मैन्ड", "मिस्टिसिम् आन्ड लोजिक" ।

माधवनजी की "अक्षय लेखनी" विश्व के महान तत्ववेत्ताओं के गुण-गणों का आकर है । वे तत्ववेत्ता पहले दर्जे के दार्शनिक थे । धर्म पर उन्होंने अपने अपने मत प्रकट किये थे । उन्होंने लोगों केलिए सत्यान्वेषण करने का आह्वान दिया । उन्होंने ज्ञान हासिल करने का आदेश दिया । इन लोगों की साहित्यिक सृष्टियाँ यूरोप के नवजागरण केलिए काम आयीं । सूक्ष्म रूप से देखें माधवनजी समान स्वभाववाले पश्चिम के कुछ महान लोगों का परिचय ही "अक्षय

द्वारा देते हैं । कई प्रकार की त्रुटियाँ और अपूर्णताओं के रहते हुए भी इन लघु जीवनियों द्वारा उन महान लोगों का सामान्य परिचय हिन्दी साहित्य जगत् केलिए एक सफल योगदान ही सिद्ध होगा ।

आत्मकथा के रूप में "प्रथम याम" का विश्लेषण

आत्मकथा जीवन का साक्षात् स्वकथन है । इसमें साहित्यकार स्वयं को पुनरूपलब्ध करता है । इसलिए आत्मकथा का विशिष्ट गुण है यथार्थता । पण्डित पद्मलाल पुन्नलाल बख्शी के मत में "आत्म-परीक्षा के द्वारा ही इसमें अपने जीवन की यथार्थता प्रकट होती है । ऐसी आत्मकथाओं में हृदय की सच्ची लालसा व्यक्त होती है । उसमें हमारा अपना विचार रहता है । उसमें हमारी सच्ची अनुभूति रहती है । उसमें हम आत्म-प्रतिष्ठा या आत्मश्लाघा केलिए प्रयास न कर अपने जीवन को यथार्थ रूप में प्रदर्शित करने का प्रयत्न करते हैं ।[1]"

इस दृष्टि से देखने पर "प्रथम याम" माधवनजी की बाल्यावस्था का यथार्थ चित्रण ही है । बाल्यावस्था में अपने भोगे हुए प्रत्येक अनुभव का वे बहुत वास्तविक ढंग से व्यक्त करने की चतुराई प्रकट करते हैं । किशोरावस्था में एक औरत के शरीर के अवयवों को अपने मित्रों से जानने की जो उत्सुकता उनमें थी उसको वे हूबहू प्रकट करते हैं । एक माता का प्यार, गुरु की प्रेरणादायिनी व्यवहार आदि ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक सत्य के समकक्ष होते है माधवनजी तथ्यों को पवित्र मानकर यथार्थ की रक्षा करते हैं । इसका हर पात्र, घटना , तथ्य - निश्चय आदि की वास्तविकता सराहनीय है । हर तथ्य की निष्पक्ष प्रस्तुति भी होती है ।

---

1. मेरी अपनी कथा, पृ·43

उपर्युक्त तथ्यों के अतिरिक्त आत्मकथा का एक शाश्वत तत्व है - देश, काल और वातावरण । परिस्थिति, देश, काल आदि व्यक्ति के व्यक्तित्व पर प्रभूत प्रभाव पड़ता है । केवल भौगोलिक परिदशायें ही व्यक्ति पर अपनी छाप नहीं छोड़ जातीं, वरन् सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, साहित्य सम्बन्धी, नैतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ भी मनुष्य के व्यक्तित्व को आकार देती हैं । माधवनजी के "प्रथम याम" में देश, काल आदि की व्यंजना गहरे सर्जनात्मक स्तर पर होती है । धर्म - निरत माँ की सुनाई ऐतिहासिक और पौराणिक कहानियाँ माधवनजी पर बहुत प्रभाव डालती है । उसके अलावा उस समय आज़ादी का आन्दोलन और हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचार करने का आन्दोलन आदि चल रहा था । इसलिए माधवनजी की प्रतिक्रिया इसके अनुकूल ही रही । उन्होंने हिन्दी पढना आरंभ किया और हिन्दी प्रचार में भाग लिया ।

भाषा और शिल्प भावों का परिधान है । परिधान व्यक्ति को व्यक्त करने का कार्य करता है, उसकी प्रकृति प्रवृत्ति की व्यंजना प्रदान करती है । माधवनजी ने अपने भीतर बहुत संघर्ष करके अपने व्यक्तित्व के अनुरूप भाषा और शिल्प का निर्धारण किया । "आत्मकथाकार को जिस भाषा की तालाश रहती है उसमें औचित्य, प्रांजलता, धारावाहिकता, व्यंजना-वैपुल्य, लोकधर्मिता तथा प्रसवधर्मिता आदि अपेक्षित होती है ।"[1] माधवनजी की आत्मकथा भी इसके अनुरूप ही है । उसकी भाषा जन-सामान्य के निकट होते हुए भी सूक्ष्म से सूक्ष्म मनोभावों की उद्वाहिका होती है । शिल्प निजी और विशिष्ट है । इसमें कल्पना और संयम का विलक्षण सामंजस्य होता है, चित्रात्मकता और बिम्ब योजना रहती है, साथ ही तरलता और तटस्थता का समन्वय भी रहता है । मन के संवेदनों को मूर्त करने का विशिष्ट गुण इनमें है ।

---

1. हिन्दी-जीवनी साहित्य सिद्धान्त और अध्ययन - डॉ. भगवान भारद्वाज, - पृ.66

"आत्मकथा के ताने-बाने की बुनावट में भावना-कल्पना और अनुभूति का पर्याप्त अंश रहता है।[1]" इस प्रकार माधवनजी अपनी आत्मकथा में अपने संपूर्ण अतीत का मनश्चक्षुओं के माध्यम से भावना ही कराती है, कल्पना सारे अतीत को साभिप्राय अन्विति प्रदान करती है और समस्त कलात्मक उपकरणों में अभीष्ट अनुपात बिठाती है। उनके भावों में कहीं विस्तार होता है, कहीं तीव्रता होती है और कहीं सूक्ष्मता रहती है।

निष्कर्षत: माधवनजी का यह प्रयास इसलिए और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि इसमें हास्यास्पद घटनाओं को भी ईमानदारी के साथ उल्लेख कर दिया गया है। प्रकाशक शीलव्रत की ओर से लिखित भूमिका से यह व्यक्त होता है कि प्रथम याम एक साथ कहानी, उपन्यास और नाटकीय कला है। यह भाषा तथा वर्णन-शैली में सजे-संवरे है। माधवनजी वास्तव में इसके द्वारा अपनी माता और गुरुजनों से अपना ऋण चुकाते हैं।

<u>जीवनीकार के रूप में माधवनजी की सफलता</u>

जीवनी के तत्वों को सम्मुख रखकर माधवनजी की जीवनियों का विश्लेषण करना आवश्यक है।

विशिष्ट व्यक्ति का जीवन-विवरण ही जीवनी है, क्योंकि जीवनी में विराट् व्यक्तित्व का अंकन आवश्यक है। इस दृष्टि से देखने पर माधवनजी की जीवनियाँ सफल शतश: सिद्ध होती हैं। ग्रीस के महान दार्शनिक सुकरात, अरस्तु, प्लेटो, फ्रांस के महान साहित्यकार वाल्टायर और पश्चिम के कुछ श्रेष्ठ तत्वचिन्तकों और साहित्यकारों की जीवनियाँ उन्होंने लिखे वे सभी विशिष्ट व्यक्ति ही हैं।

---

1. हिन्दी जीवनी साहित्य सिद्धान्त और अध्ययन - डॉ॰ भगवान भरद्वाज, - पृ॰ 84

"जीवनी में बाह्य और आन्तरिक पक्षों का अंकन होता है - यह चित्रांकन कलात्मक होता है । विशिष्ट व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रकाशन करना ही जीवनी का उद्देश्य है । व्यक्ति के विभिन्न पहलुओं - शिक्षा, स्थिति, स्तर, वैयक्तिक गुण, सामाजिक, राजनीतिक व शैक्षणिक क्रियाकलापों तथा प्रमुख घटनाओं आदि के प्रकाशन से जीवनी को मनोवैज्ञानिक रूप प्रदान किया जाता है[1]।" माधवनजी ने अपनी जीवनियों में व्यक्तियों का बाह्य और आन्तरिक पक्षों का अंकन किया है । प्रत्येक व्यक्ति की सूरत से लेकर उसके हर विषय से सम्बन्धित मत तक वास्तविकता के साथ उनकी जीवनियों में व्यक्त किया गया है । उदाहरण केलिए सुकरात की सूरत का वर्णन देखिए "वह इतना बदसूरत था कि लोग आश्चर्य से उसकी ओर देखा करते थे । बहुत ही बडा गोलाकार सिर, अत्यधिक चौडा ललाट प्रदेश, दोनों आंखें मानो दो गढे में हो इतना अधिक वह ललाट से डूबी हुई प्रतीत होती थी, नाक बेहिसाब चिपटा हुआ, नासिकारन्ध्र बहुत ही बडा, अत्यधिक मोटा ओंठ, मोटा नाटा शरीर, पेट उभरा, हाथ पैर छोटे छोटे ऐसा बीभत्स रूप उसका था कि कोई भी उसकी ओर देखे बगैर रह नहीं जाता था[2]।"

उपर्युक्त बाह्य विवरण के साथ ही उन महान लोगों की एक-एक विचारधारा को व्यक्त करने को भी माधवनजी प्रयास करते हैं । उन महात्माओं की शिक्षा, स्तर, वैयक्तिक गुण, सामाजिक, राजनीतिक व शैक्षणिक क्रिया-कलापों तथा प्रमुख घटनाओं का स्पष्ट परिचय भी माधवनजी ने अपनी जीवनियों में दिया है । हम माधवनजी की जीवनियों के द्वारा यह समझ सकते हैं कि उनकी अभिरुचि व्यक्ति विशेष के जीवन को अभीष्ट अथवा अनभिप्रेत आकृति में ढालनेवाले तत्वों तक सीमित नहीं, अपितु व्यक्ति

---

1. जीवनी उद्भव और विकास - उमेश शास्त्री
2. सुकरात - आनन्द शंकर माधवन, पृ.13

अपने कर्तृत्व की गरिमा से सामाजिक जीवन को कितना आन्दोलित, सक्रिय, उद्दीप्त तथा गतिशील बनाता है, उस विधेयात्मक प्रभाव को तौलना भी माधवनजी की जीवनियों का लक्ष्य है ।

माधवनजी की जीवनियों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उन्होंने महान व्यक्तियों के पारिवारिक या व्यक्तिगत जीवन के वर्णन से अधिक उन व्यक्तियों के जीवन-दर्शन या समाज की ओर किये गये सद् प्रवृत्तियों पर अधिक बल दिया गया है ।

सच्ची जीवनी के तात्विक गुणों के आधार पर देखने से माधवनजी की जीवनियां पूर्ण रूप से सफल नहीं कही जा सकती है । कहीं घटनाओं का वर्णन या विवरण अस्पष्ट और असंघटित भी है । कुछ महात्माओं के कुछ साहित्यिक सृष्टियों के बारे में कहकर कुछ कृतियों के बारे में वे मौन रहते हैं । इस प्रकार कुछ त्रुटियां भी इनमें देखी जा सकती हैं ।

इन त्रुटियों के रहते हुए भी माधवनजी का यह प्रयास ज़रूर जीवनी साहित्य केलिए और हिन्दी पाठकों केलिए अक्षय देन ही है । इन ग्रीक दार्शनिकों और पश्चिम के दार्शनिकों और सत्यान्वेषकों के बारे में जानना बहुत महत्वपूर्ण कार्य है । इसलिए जीवनी साहित्य क्षेत्र में माधवनजी का योगदान अवश्य महत्वपूर्ण स्थान रखेगा ।

अध्याय - छः

माधवन जी की अन्य रचनाएँ

अध्याय - छः

माधवनजी की अन्य रचनायें

माधवनजी ने उपन्यास, कहानी, निबन्ध, जीवनी आदि के अलावा अन्य अनेक प्रकार की रचनायें प्रस्तुत की हैं । उनमें "उपनिषद्सार", "मानवीयम्", "माधव-निदान", "गीतातत्व", "वर्षा" आदि प्रमुख हैं । एक ओर "उपनिषद्सार" और "गीतातत्व" आध्यात्मिक रचनायें हैं तो दूसरी ओर "मानवीयम्" पूर्णतया नैतिकता पर आधारित रचना है; जबकि "माधव-निदान" जीवन और जगत् से सम्बन्धित सब प्रकार की समस्याओं केलिए निदान है । लेकिन सूखे या तपे मन की प्यास मिटाने केलिए माधवनजी की "वर्षा" में वर्षा बरस रही है । माधवनजी के ये ग्रन्थ बहुत लोकोपयोगी हैं । इसलिए इनका विश्लेषण और अध्ययन आवश्यक है ।

आध्यात्मिक ग्रन्थ

आध्यात्मिक साधना भारतीय जीवन की प्रमुख धारा रही है उससे हम भाग नहीं सकते हैं । उसमें ही हमारी महानता और श्रेष्ठत्व निहित है । हमें अपने जीवन में उस जीवनधारा को और भी प्रज्वलित करना चाहिए । हमारे विकास और उत्थान केलिए और हमारे राष्ट्रजीवन को ज्योतिर्मय करने केलिए यही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है । इस मार्ग की उपलब्धियाँ सर्वतोमुखी हैं और सभी विभूतियाँ इसके प्राप्य हैं ।

भारतीय जीवन की प्रमुख धारा आध्यात्मिक साधना है तो भारतीय जीवन के आधार यहाँ के धर्मग्रन्थ हैं । इनमें प्रमुख हैं - वेद, उपनिषदें, गीता आदि । इन चीज़ों को ठीक तरह से समझे और तदनुकूल बरते बगैर हम भारतीय कहने लायक नहीं रह जायेंगे । अतीत का अध्ययन भविष्य को रूप देने में सहायक सिद्ध होगा । अतीत से भविष्य की ओर एक विशाल राजपथ ही खुला हुआ है । हमें भविष्य को अतीत से भी बेहतर बनाने की ओर कार्य करने की ज़रूरत है ।

ऊपर कथित लक्ष्यों के आधार पर हिन्दी में "उपनिषद्सार" और "गीतातत्त्व" का प्रणयन माधवनजी ने किया । माधवनजी ने समझा कि आज की स्थिति में हमको अन्य देशों केलिए मार्गदर्शक होना चाहिए । इसकेलिए धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन अनिवार्य है । इस वैज्ञानिक युग में भी इन ग्रन्थों के पठन-पाठन की आवश्यकता पर माधवनजी ज़ोर देते हैं ।

उपनिषद्सार

उपनिषद्कारों का दृष्टिकोण पूर्णतया आध्यात्मिक रहा है । एक चीज़ प्रमुख रूप से सभी उपनिषदों में है - मनुष्य मूल रूप में परमेश्वर की ही अखण्ड तेजस्वी ज्योति सत्ता का अंश रूप है । इस बात को समझाने और अनुशीलन कराने केलिए ही इन सारे उपनिषदों का प्रणयन हुआ है । इन विचारों से प्रेरणा और संबल पाकर मानव अनादि काल से जीना मरना सीखते रहे हैं । जिन्होंने अपने तप और साधना के द्वारा इस सत्य का पता चलाया और फिर उसे मानव मात्र को समझाने के प्रयास में अपनी संपूर्ण शक्ति और समय का भी व्यय किया उनके प्रति हमें अत्यंत कृतज्ञ रहना चाहिए

उपनिषदें मानवीय इतिहास की ज्योति-शिखायें हैं जो आज भी मानव को दिशाबोध करा रही है । उपनिषदों के विस्तृत अध्ययन से यह सिद्ध होगा कि आधुनिक काल में उपनिषद् के समान अच्छे धार्मिक ग्रन्थ दूसरे नहीं हैं ।

उपनिषदों का प्रणयन एक ही व्यक्ति द्वारा एक ही समय पर नहीं हुआ है । समय समय पर विभिन्न ऋषियों द्वारा आश्रमों में इनके प्रणयन हुए हैं । प्राचीनतम उपनिषदें ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उनका आधार और उद्गम वेद है । बाद में जितनी उपनिषदें लिखी गयीं सभी देवी-देवताओं पर आधारित है । उपनिषदें अनेक हैं । मगर शंकर और रामानुज ने जिन उपनिषदों का भाष्य लिखा है और जिक्र किया है उन्हें ही हमें महत्वपूर्ण उपनिषदें समझनी हैं ।

माधवनजी ने साधारण जनमानस में उपनिषदों का सार पहुँचाने की दृष्टि से "उपनिषद्सार" का प्रणयन किया । यह पुस्तक ईश, कठ, केन, प्रश्न - इन चार उपनिषदों का सार है । समस्त उपनिषदों में ये चार उपनिषदें प्रमुख है । इसलिए इन चारों पर माधवनजी का लक्ष्य

माधवनजी आध्यात्मिक जीवन और नैतिक मूल्यों पर ज़ोर देनेवाले व्यक्ति हैं । वे आर्ष भारत संस्कृति के उपासक हैं । हमारे नैतिक मूल्यों की च्युति में माधवनजी को बहुत दु:ख होता है । भारतीय अब यान्त्रिक युग की धारा में पड़कर हमारी नैतिकता आध्यात्मिक विचारधारा आदि भूलते जा रहे हैं । ये धारायें भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ अंश हैं और ये विशिष्ट धारायें हमको दूसरे देशों से अलग भी करती हैं । इन महान मूल्यों को वैज्ञानिक युग के पागल लोगों के बीच पुनर्जागृत करने के उद्देश्य से माधवनजी ने "उपनिषद्सार" की रचना की है ।

"उपनिषद्सार" के चार उपनिषदों में जीवन की खोज ही मूल्य विषय है । माधवनजी इसके द्वारा पाठकों में जानने की तीव्र इच्छा जगाना चाहते हैं और सत्य को खोजने की इच्छा पैदा करना चाहते हैं । मानव को सदा ढूँढना चाहिए, टटोलना चाहिए । माधवनजी यह नहीं चाहते हैं कि कोई उपनिषदों के भीतर बन्द पड़ा रहे । माधवनजी चाहते हैं कि हम इनके अध्ययन से ऐसी स्थिति में आवें और नये उपनिषदों की सृष्टि कर पायें । जो हमारी आवश्यकताओं और समस्याओं के निदान स्वरूप हों ।

माधवनजी ने ईश, कठ, केन, प्र श्न इन चार उपनिषदों के हर श्लोक का सार तत्व सरल भाषा में जन-साधारण को ग्रहण करने लायक शैली में "उपनिषद्सार" में प्रस्तुत किया है । संस्कृत भाषा में लिखित उपनिषदों को समझना आम जनता केलिए मुश्किल है । इसलिए उनकी व्याख्यायें और पुनर्व्याख्यायें जन भाषाओं में हो तभी उनका लाभ साधारण जन उठा पायेंगे । यह उद्देश्य इस व्याख्या में मुखरित है ।

गीतातत्व

आज हम सब अपने अपने कर्मक्षेत्र में कराह रहे हैं । लेकिन हमें कर्तव्य सुझाने केलिए कोई नहीं रहा । कराहनेवाले लोगों को कालसीमा तोड़कर भगवान श्रीकृष्ण से अर्जुन को दिये गये उपदेश आज भी सहायक हैं, शांतिप्रद हैं । इसलिए हमें "भगवद्गीता का अध्ययन सम्यक रूप से करना चाहिए । इस लक्ष्य की पूर्ति करने हेतु "भगवद्गीता" का सार माधवनजी "गीतातत्व" के शीर्षक से प्रस्तुत करते हैं । साथ ही हमें लेखक धीरज बंधाते हैं कि सन्देह के बिना सद्कर्म करके, जनोपयोगी बनें ।

सभी प्रतिभायें और सिद्धियां धर्म की स्थापना केलिए ही प्रयुक्त होती हैं । सर्वत्र अन्याय, अत्याचार और अधर्म फैल रहे थे और उन्हें सुधारने और सही मार्ग पर लाने के सभी उपाय असफल होगा तो युद्ध केलिए पांडवों को तैयार होना पड़ा था । इसलिए युद्ध ही वह आखिरी दवा है जिससे अधर्म का क्षय संभव है ।

संपूर्ण भारतवर्ष आज अर्जुन की मानसिक स्थिति में आकर विषादयोग में पड़कर कराह रहा है । उसको कुछ सूझता नहीं कि क्या किया जाए और क्या नहीं । यहाँ कीचकों, शकुनियों, जयद्रथों और दुर्योधनों का खुला और निर्भीक तांडव चल रहा है । कितनी द्रौपदियों के बाल खुल रहे हैं और वस्त्रापहरण हो रहे हैं । भारत को फिर से गीता सुनने और उसके तत्वों के अनुशीलन करने की आवश्यकता आ गयी है । यहाँ के नये भीमार्जुनों केलिए ही माधवनजी का "गीतातत्व" है । सुषुप्ति में लीन इन भीमार्जुनों को जगाकर अपना परिचय सभी नये शकुनियों, कीचकों और दुर्योधनों को देना चाहिए । अपनी विभूतियों के प्रकाशन के सभी श्रम युद्ध ही हुए ।

क्योंकि यह धर्म दुष्ट दमन केलिए है, अज्ञानान्धकार को मिटाने केलिए है । यहाँ युद्ध सिर्फ शस्त्र चलाना नहीं । प्रतिभा जगाना, सिद्धियाँ हासिल करना आदि लक्ष्य भी इसमें निहित है ।

माधवनजी की राय में मानव मात्र केलिए गीता का एकमात्र सन्देश है योग । यह अनुष्ठान की चीज़ है, करके देखने की चीज़ है । पर इस योग के विभिन्न रूप प्रकट हुए हैं - भक्ति-योग, कर्म-योग, ज्ञान-योग, राज-योग आदि । माधवनजी यहाँ एक और योग जोड़ देते हैं - युद्ध-योग । उनकी राय में युद्ध-योग में सभी योग शामिल है । लक्ष्य प्राप्ति केलिए जो संघर्ष है वही तो युद्ध है । उनके मत में सर्वत्र सभी में युद्ध विद्यमान है । हमें इसलिए निरन्तर युद्ध ही करना पड़ता है । हम सबको योद्धा बनना चाहिए "योद्धा ही ब्रह्मांड विजय करेगा, विश्व व्यवस्था करेगा, साहित्य सृजन करेगा, कलात्मक अनुष्ठान करेगा, कवि, साधु, शिक्षक, शासक, योगी, सन्त नेता आदि भी सही अर्थ में बन सकेगा ।" लेखक की राय में गीता दिव्य योद्धा जीवन का ही प्रतिपादन करती है ।

माधवनजी भारत का नवनिर्माण चाहते हैं । वे भारत को खड़ा करने और उनके भीतर सुषुप्तावस्था में पडे भीमार्जुन तत्व को जगाकर ही दम लेना चाहते हैं । माधवनजी की राय में महाभारत संग्राम के फिर एक बार यहाँ मचने की आवश्यकता है । इस घोर युद्ध में दुर्योधन, दुश्शासन, शकुनि, कीचक आदि नामावशेष हो जाएंगे । इसीको समझाने केलिए माधवनज हमारे सामने अपना "गीतातत्व" रखते हैं ।

---

1. गीतातत्व - आनन्द शंकर माधवन, पृ.77

ललित कोमल पदावली में लिखित माधवनजी का "गीतातत्व" इस कलियुग भारत केलिए ज़रूर फल दायक पुस्तक है । यह ग्रंथ असन्तुष्ट, निष्क्रिय, घबड़ाये हुए लोगों को कर्मनिरत स्थितप्रज्ञ आदि बनने का मार्ग बना देगा ।

नैतिक ग्रन्थ - "मानवीयम्"

भारत के या संसार के नैतिक मूल्यों की च्युति माधवनजी के मन में वेदना पैदा करती है । माधवनजी अपने साहित्य ग्रन्थों द्वारा इसको विराम करने का प्रयास करते हैं । "मानवीयम्" उनके इस प्रयत्न की प्रतीक है । इसको "आधुनिक गीता" कहने में कोई गलती नहीं है । इसका हर वाक्य हमें जगाता है इसमें नयी स्फूर्ति पैदा करता है । हमको कर्मनिरत बनाकर कार्य करने को उद्यत करने की क्षमता इसमें है । "भगवद्गीता" अर्जुन को मार्गनिर्देश देने केलिए रचित है तो "मानवीयम्" भारत के दु:ख में पडे लक्ष्यहीन होकर इधर उधर भटकनेवालों केलिए दिशा निर्देश है । या भारतीयों को जागृत कराने का उपाय ही है "मानवीयम्" । "गीता" में जिसप्रकार साधना, योगज्ञान, कर्मयोग, स्थितप्रज्ञता, ज्ञान, कर्म, त्याग, ब्रह्म, प्राण, मन आदि की बातों की ओर संकेत है उसी प्रकार "मानवीयम्" में भी इन बातों का नया प्रतिपादन है ।

"मानवीयम्" के अध्ययन से हमको ज्ञात होता है कि यह पुस्तक तत्वचिन्तन, दार्शनिक विचारधारा आदि का भण्डार है । इन तत्वचिन्तन और दार्शनिक विचारधाराओं से हमको माधवनजी नैतिक मूल्य ही प्रदान करते हैं । माधवनजी के "मानवीयम्" के कुछ विचारणीय भागों को देखिए । "आनन्द चाहनेवाले आनन्द की ही खोज करें कि

तह किसमें है तब वे धीरे धीरे धन, यश, स्त्री, सन्तान आदि को त्याग करके और आगे की ओर खोज चालू रखेंगे तो अन्त में अपनी ही आत्मा में उसे पायेंगे । आनन्द के बारे में भी यही सत्य है कि जिनकी जैसी साधना उनकी वैसी ही सिद्धि[1]।" "आनन्द" एक दार्शनिक तत्व है । जीवन के परमोत्कृष्ट सुख या सन्तोष का उच्च पद है आनन्द प्राप्ति । इस "आनन्द" पर पहुँचने केलिए इस संसार के विधाता या परमेश्वर को खोजकर, उसपर पहुँचना और उसको असल में जानने का प्रयत्न अनिवार्य है । इस में माधवनजी की दार्शनिक विचारधारा का लक्ष्य और व्याख्यायित नव्य रूप देखा जा सकता है ।

"व्यर्थ चिन्ता और बेज़रूरत बात सोच सोचकर मन को परेशान करना मूर्खता है । अकसर आदमी इसीप्रकार की परेशानियाँ मोल लेते रहते हैं[2]।" इन शब्दों में माधवनजी नैतिक मूल्यों का अनावरण करते हैं । "वैराग्य ही मुक्ति और सुख है । विषय से वैराग्य हो जाना ज्ञान प्राप्ति का परिचय है । विषय में आसक्ति अज्ञान का प्रताप है[3]।" यही उनका कथन है । इस प्रकार अनेक दर्शन सम्बन्धी तत्व और नैतिक मूल्यों के निदर्शनों से संपूर्ण है माधवनजी का "मानवीयम्" । और एक दो उदाहरण उससे लीजिए - "बुद्धि में नानात्व का आना ठीक नहीं है । आत्मा में सतत उसका एकाग्र लक्ष्य रहे । साथ-साथ प्राण भी स्थिर रहे, साधना भी अनवरत चले, तभी कुछ हासिल हो सकेगा[4]।" "अपनी आत्मा की ओर अभिमुख हो जाना, उसीका अनुसन्धान और साक्षात्कार करना यही भक्ति है[5]।" "आत्म-जीवन ही अमरत्व है । लौकिक जीवन क्षण भंगुर है, नश्वर है । सबको जाना ही

---

1. मानवीयम् - आनन्द शंकर माधवन, पृ.96
2. वही, पृ.100
3. वही, पृ.101
4. वही, पृ.110
5. वही, पृ.143

पड़ता है । यह स्थिति देखकर ही शंकर ने जगत् को मिथ्या कहा । यहाँ कुछ भी स्थायी नहीं है । स्थायी तत्व आत्मा है । आत्मदेव को प्राप्त करने से ब्रह्म साक्षात्कार संभव है । ब्रह्म ही सत्य है ।[1]" इस प्रकार के अनेक सिद्धान्त "मानवीयम्" में हम देख सकते हैं ।

सही अर्थ में "मानवीयम्" भारतीयों केलिए मार्गदीपक ही है । माधवनजी भारतीयों पर अपनी आर्ष संस्कृति पुनर्जागृत करने का प्रयास ही इसके द्वारा करते हैं । यह ग्रन्थ गहन है इसलिए मंथनीय भी है ।

चिकित्सा पद्धति - माधव निदान

प्राचीन काल के आयुर्वेदाचार्य माधव ने एक निदान ग्रंथ लिखा है जो "माधवन निदान" नाम से प्रसिद्ध है । वह चिकित्सा सम्बन्धी एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है । लेकिन माधवनजी का "माधव निदान" जीवन से और जगत् से सम्बन्धित सब प्रकार की समस्याओं केलिए निदान स्वरूप है । माधवनजी के शब्दों में इस भव्य रचना का उद्देश्य देखिए - "मेरी उम्मीद है थके मांदे और हारे गिरे साधकों और नैराश्य में पडे कराहनेवाले आर्तों केलिए यह पुस्तक अवश्य बाल पोथी बनेगी[2]।" कुल मिलाकर 357 पृष्ठों में 1449 चिकित्सा पद्धति या मानव मस्तिष्क को जगानेवाले औषध इसमें हैं ।

इस पुस्तक के सम्बन्ध में माधवनजी का एक अभिमत विचारणीय है - "अपने को ढूँढने के प्रयत्न में ही मेरी यह रचना तैयार हो गयी

---

1. मानवीयम् - आनन्द शंकर माधवन, पृ.153
2. माधव निदान - आनन्द शंकर माधवन, भूमिका

इसे लिखते लिखते मैं स्वयं एक नया आदमी बन गया । मेरी सैकड़ों हज़ारों कमज़ोरियां, दुर्वृत्तियां और प्रमाद इसे लिखते लिखते गायब हो गये । इसलिए मैं कहूँगा - लिखना अपने को सुधारने की एक बहुत ही सफल साधना है। लेखनी आपको अपनी आत्मा से सीधे-अभिमुख करा देगी । मुझे स्वयं भी मेरी यह पुस्तक प्रेरणा देती है और मैं दंग हूँ मैं ने इतनी अच्छी अच्छी बातें कहां से लिख डालीं । रोजाना सोने के पहले मैं इस पुस्तक के किसी एक दो वाक्य को पढ लेता हूँ और उसीपर चिन्तन मनन करते हुए सो जाता हूँ । परिस्थितिजन्य सांसारिक शक्तियों से तब मैं अपने को मुक्त कर पाता हूँ । कभी-कभी दिन भर इनमें से किसी एक विचार पर सोचते हुए रमता रह जाता हूँ । परिस्थितिजन्य सांसारिक शक्तियों से तब मैं अपने को मुक्त कर पाता हूँ । कभी कभी दिन दिन भर इनमें से किसी एक विचार पर सोचते हुए रमता रह जाता हूँ ।"

"माधव निदान" ज़रूर ज्ञान प्राप्त करने में सहायक है । समस्त समाज को साधनाशील बनाने योग्य है । एक-एक व्यक्ति को जगाने केलिए या ऊँचा उठाने केलिए योग्य है । माधवनजी का लक्ष्य अज्ञानियों को ज्ञानपिपासु बना देना है । इसके साथ यह हमको ईश्वर के ज्योतिर्मय किरणों को समझने की प्रेरणा भी देता है । हमको संसार के सर्वश्रेष्ठ महापुरुषों में अग्रगण्य बनाने या हमको देवता बनाने इच्छुक हैं माधवनजी । माधवनजी की राय में इसीसे हम परमेश्वर के सर्वप्रिय प्रतिनिधि बन उसकी योजना को अज्ञानियों को ज्ञानी बनाने के यज्ञ को चरितार्थ कर सकेंगे । संसार को आगे की ओर बढना है तो प्रतिभाओं और साधकों को उत्तरोत्तर विकास और समृद्धि प्राप्त करनी होगी । अथवा अतीत से बेहतर सृजन वर्तमान और भविष्य के रहे । तभी तो देश और जाति उन्नति कर पायेगी । माधवनजी का "माधव-निदान" ऐसे ही नव्य सिद्धान्तों का आकलन है ।

---

1. माधव निदान - आनन्द शंकर माधवन, भूमिका

"माधव-निदान" में लेखक के जीवन के अनेकों अनुभवों का सार नयी पीढी को चेतावनी देने केलिए अभिव्यक्त होता है । इसका लक्ष्य पाठक का मनोरंजन करना नहीं है, बल्कि उसमें इहलौकिक और पारलौकिक जीवन का परिमार्जन और परिशोधन है । वह मानव प्रकृति को उसके विभिन्न सामाजिक और आध्यात्मिक सम्बन्धों में समझता बूझता है । जब उसके मन में किसी सम्बन्ध का एक विशेष कोण सामने आता है तो उसे वह बहुत कुछ निष्कर्षात्मक रूप में सामने रखता है । कुछ उदाहरण और देखिए - "सूर्यदेव से ही सर्वोदय भी संभव है । समाज में जब तक सूर्य पुरुष का प्रादुर्भाव नहीं होगा तब तक समाज का उत्कर्ष नहीं होने का । यह सूर्य पुरुष हमारे भीतर सोये पडे हैं । करो प्रभातभेरी कि वह जगकर सबों के उदय का मार्ग दर्शावे[1]।" "अनगणित अणुओं से बने इस शरीर को योगी अपनी प्रचण्ड इच्छा शक्ति के बल पर निमिष मात्र में ही अनगणित अणुओं को संग्रह करके फिर सशरीर प्रकट भी हो सकते हैं[2]।" इस प्रकार अनुभवों से ली हुई बातों को माधवनजी ग्रहण करके अपनी तूलिका से शब्दरूप देकर भारतीयों केलिए समर्पित करते हैं इस महान ग्रन्थ द्वारा ।

माधवनजी सब प्रकार के ऐहिक रोगों के निवारण मार्ग भी हमको बता देते हैं । "श्रम ही सब प्रकार के रोगों केलिए निराकरण और इलाज है[3]।" इसके अतिरिक्त अनेक रोगों का मुक्ति मार्ग हमको देते हैं । आगे वे कहते हैं - "उत्कट श्रम और तत्सम्बन्धी विजय लालसा, महत्वाकांक्षा और तेज शरीर में व्याप्त विविध किस्म के कीटाणुओं के नाशक सिद्ध होंगे[4]।" "आदमी को तीन-चार घंटे से अधिक सोने की ज़रूरत नहीं है । आदमी को

---

1. माधव निदान - आनन्द शंकर माधवन, पृ.147
2. वही, पृ.184
3. वही, पृ.315
4. वही, पृ.315

बेहतरीन भोजन करना चाहिए, शीघ्रगामी यानों की व्यवस्था अपने पास रखें, धन उत्पादन सम्बन्धी काम प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, अवश्य करना चाहिए । एक दिन भी, एक क्षण भी धन उत्पादन काम से मुक्त न रहे । सात्विक तरीकों से धन का उत्पादन सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक अनुष्ठान है । कोई भी इस कार्य से अलग न रहें । ऐसे धन उत्पादन सम्बन्धी कार्य से अलग रहना सबसे बडा पाप है । ऐसा जीवनहीन और निम्न जीवन है । माँ बाप का धन अपना धन नहीं है, स्वयं कमाया धन ही अपना है । उत्पादक के रूप में ही साधु को जीना चाहिए । सबसे बडा साधु किसान है, सबकेबड़ा सात्विक धन कृषि उपजा अन्न है । ..... भीख और चोरी दोनों एक ही किस्म के काहिलों और अकर्मण्यों के धन्धे हैं ।[1] इस प्रकार शरीर केलिए, बुद्धि केलिए और जीविका केलिए चिकित्सा पद्धति माधवनजी "माधव-निदान" द्वारा हमें देते हैं ।

वर्षा

माधवनजी का ग्रन्थ "वर्षा" भी विषय और शैली की दृष्टि से "माधव-निदान" से समानता रखती है । इस संसार से सम्बन्धित प्राय: सभी विषयों पर इस पुस्तक के द्वारा प्रकाश डाला गया है । कुल मिलाकर 307 पृष्ठों की वर्षा 2135 मुक्तिचिन्तनपरक सूक्तियाँ, उपदेश, लोक तत्व, तत्व-चिन्तन, छोटी-छोटी कहानियाँ आदि से भरी हुई है ।

---

1. माधवन-दिान - आनन्द शंकर माधवन, पृ·315

गरमी से आकुल जीवजाल वर्षा की प्रतीक्षा में है । जब वर्षा आती है तब प्रकृति संतुष्ट बन जाती है । पेड-पौधे नये उमंग के साथ पुनर्जीवन पा लेते हैं । गरमी से उत्पन्न प्रकृति की प्यास वर्षा के पानी से मिट जाती है । सभी जीवजाल जीने की इच्छा प्रकट करते हैं । अर्थात् वर्षा के कारण सतत परिवर्तन जनमानसों में और जीवजालों में आता है ।

माधवनजी की "वर्षा" भी लोगों के मानस को वर्षा जैसे परिवर्तन लाने योग्य है । मनुष्य को सद्मार्ग बता देकर जीने केलिए आशा लोगों के मन में "वर्षा" उत्पन्न करती है । सद् मार्ग के बिना या सद् उपदेश के बिना कराहनेवाले लोगों केलिए मार्गदीपक है माधवनजी की "वर्षा" ।

"वर्षा" में माधवनजी इस संसार से सम्बन्धित अनेक बातें बताते हैं । तीखा और व्यंग्य भरा स्वर इसमें है । उदाहरण देखिए - "वेदव्यास सूट नहीं पहनता था, सूरदास अंग्रेज़ी नहीं जानता था, न तुलसीदास ही पी-एच·डी· था[1]।" उनकी यह बात चिन्तन-मनन करने योग्य ही है । एक और उदाहरण देखिए - "दुष्यन्त ने एक ही बार गान्धर्व विवाह किया था - शकुन्तला के साथ । मगर आजकल के पुरुष सैकडों के साथ कर लेते हैं । दुष्यन्त ने शकुन्तला से उत्पन्न अपनी संतान को राजगद्दी दी थी । मगर आजकल के पुरुष अपने उस प्रकार की सन्तान को पहचानते भी नहीं[2]।" यह आज के भ्रष्टाचारियों की ओर फेंका हुआ तीर है ।

इस समाज को दुष्ट लोगों से बचाने का उपदेश माधवनजी देते हैं । देखिए - "हे सद्-पुरुषो, देश को रावणों, दुश्शासनों और शकुनियों बचाना है तो कमर कसकर मैदान में उतर आओ जैसे हनुमान, अर्जुन, अभिमन्यु आदि उतरे थे[3]।"

1· वर्षा - आनन्द शंकर माधवन, पृ·120

2· वही, पृ·288

3· वही, पृ·307

माधवनजी स्त्री का महत्व दिखाने केलिए अनेक उदाहरण "वर्षा" में देते हैं । स्त्री, पुरुष से अनेक गुना श्रेष्ठ है । लेकिन हमारे समाज में उसको गुलाम जैसे मानते हैं । स्त्री प्यार की मूर्ति है । वह पूज्यवस्तु है । वह संसार भर में प्यार की अमृत वर्षा करती है । माधवनजी की राय में स्त्री से बढकर प्यार कोई नहीं दे सकता कोई नहीं समझ सकता ।"[1]

"वर्षा" अनेक तत्व-चिन्तन से कूट-कूटकर भरी हुई है । एक उदाहरण देखिए - "लोहे को तेल या पानी मुलायम नहीं कर सकते । यह कार्य आग ही से संभव है ।"[2]

माधवनजी की "वर्षा" ज़रूर इस संसार के अनेक साधारण या लोकतत्वों पर प्रकाश डालने योग्य है । इस अमृतवर्षा के पानी में स्नान करके या पानी पीकर पाठकों को आनन्दमय जीवन बिताने की प्रेरणा मिलती है । अन्त में माधवनजी यह कहकर "वर्षा" समाप्त करते हैं कि "आधी रात बीत गयी तो कवि ने अपनी कलम नीचे रखते हुए कहा-हे मेरे आत्मप्रिय पाठक, तुम्हारे उस उर्वरा हृदय-कानन में मन्दाकिनी बहे, कल्पवृक्ष उगें, पारिजात खिले, अमृत वर्षा हो - मेरी इस अति कोमल प्रसून-तूलिका की अहर्निश साधना इसी एक मात्र साध्य-साक्षात्कार केलिए ही रही है ।"[3]

माधव-निदान और वर्षा की शैली

शैली की दृष्टि से विचार करने पर हमें "माधव-निदान" और "वर्षा" में लघु-कथाओं, सूक्तियों, सिद्धान्त-वाक्यों तथा अत्यन्त छोटे-

---

1. वर्षा - आनन्द शंकर माधवन, पृ.152
2. वही, पृ.97
3. वही, पृ.307

छोटे निबन्धों के दर्शन होते है । इनमें माधवनजी की चिन्तन शक्ति देखी जा सकती है । इस प्रकार के लेखन अपेक्षाकृत कठिन कार्य है, क्योंकि इसके लिखने केलिए प्रतिभा और पाण्डित्य ही नहीं, साधना,कला और अनुभव की आवश्यकता होती है । यह गागर में सागर भरने के समान है । इनमें धार्मिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक आदि प्राय: सभी विषयों को आत्मसात् किया गया है । लेकिन सरल भाषा में लिखित छोटी-छोटी सूक्तियों का रसास्वादन किसी भी श्रेणी का पाठक कर सकता है । इस प्रकार की गद्य विधा हिन्दी साहित्य क्षेत्र में दुर्लभ है । इसलिए माधवनजी का यह नया उद्यम हिन्दी साहित्य जगत् केलिए अमूल्य देन है ।

निष्कर्ष

"उपनिषद्सार", "गीतातत्व", "मानवीयम्", "माधव-निदान", "वर्षा" इन पाँच पुस्तकों के अध्ययन से आध्यात्मिकता, नैतिक मूल्यों की सुरक्षा, भारतीय संस्कृति का पुनर्जागरण आदि कुछ आम विशेषता इनमें हम देख सकते हैं ।

इन पाँच ग्रन्थों में माधवनजी भारतीयों को आर्ष संस्कृति या हमारे पुरातन आचार-विचारों को पुनर्जागृत करने की कोशिश करते हैं । ईश्वर पर भरोसा या ईश्वर की खोज और इस पर आनन्द देखना आदि अनादि काल से भारत में हुआ था । अब वैज्ञानिक माया में पड़कर अधिकांश लोग इधर-उधर भटकते हैं । उनकेलिए सुख और शांति नहीं है । इसलिए इस विषादयोग से मुक्ति देने केलिए या मनुष्य की रक्षा करने का प्रयास इन ग्रन्थों में होता है । माधवनजी की राय में इस का एकमात्र उपाय ईश्वर पर आस्था रखना है । इसलिए माधवनजी "उपनिषद्सार", "गीतातत्व" आदि आध्यात्मिक ग्रन्थों का सार हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं । इसके साथ माधवनजी भारत में नैतिक मूल्यों की सुरक्षा भी चाहते हैं ।

नष्टप्राय में पहुँची हुई भारतीय संस्कृति का पुनर्जागरण भी माधवनजी चाहते हैं । इन ग्रन्थों के द्वारा हमको ज्ञानी लोग बनवाना ही माधवनजी का लक्ष्य है । ज्ञानी होने के नाते हमें निरन्तर यह अनुभव करना है कि समस्त पृथ्वी ही भारत है यानी भारत की सीमा क्षितिज है, विश्व मानवता के प्रति सर्वाधिक जिम्मेदारी हमारे ऊपर है, हमें ही इस विश्व के अधिष्ठाता शासक, संचालक आदि बनने हैं । हमारी दिव्य संस्कृति यह दिव्य मिजाज ही विश्व संस्कृति होने योग्य है, इसके लिए हम महान विश्व पुरुष, महान विश्व विभूति बनने और अलौकिक प्रतिभावान बनने का आह्वान माधवनजी हमको देते हैं । इस तरह विश्व के उद्धार केलिए सर्वाधिक प्रयत्न करना ही विश्व पर आधिपत्य स्थापित करने की हमारी साधना बनेगी । यह भारतीय राजनीति बने, यही भारतीय आध्यात्म साधना का मर्म रहे । भारत की सनातन संस्कृति यही है ।

माधवनजी हमको संसार के सर्वश्रेष्ठ महापुरुषों में अग्रगण्य बनने का आदेश अपने ग्रन्थों द्वारा देते हैं । हमीं को संसार को आगे की ओर बढाना चाहिए । अतीत से बेहतर ऋषि और बेहतर व्यवस्था और बेहतर सृजन वर्तमान में भी हो और भविष्य में भी हो यही उनकी कामना है । तभी तो देश उन्नति करेगा । यही माधवनजी का सन्देश है ।

अध्याय - सात

उपसंहार

अध्याय - सात

उपसंहार

आनन्द शंकर माधवन की रचनाओं के सम्यक अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि हिन्दी साहित्य को और हिन्दी भाषा को माधवनजी का योगदान अक्षय ही है । हिन्दी भाषा और साहित्य को सुसम्पन्न और श्रीसमृद्ध करने के उद्देश्य से उन महान केरलीय मुनिश्रेष्ठ ने बीहार में रहकर साहित्य साधना की और अब भी ज़ारी रहती है । माधवनजी ने हिन्दी साहित्य की प्रत्येक विधा को अपनी कलम की वस्तु बना दिया । कविता, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, जीवनी, अन्य विविध रचनायें आदि लिखकर माधवनजी ने हिन्दी साहित्य में अमृत रस की वर्षा की ।

हिन्दी को माधवनजी का योगदान

1. सांस्कृतिक योगदान

भारत की संस्कृति अन्य देशों की संस्कृति से तुलना करने पर कई गुना अधिक श्रेष्ठ है । भारत के पुराने ऋषि श्रेष्ठों की साधना द्वारा

ां उपजी हुई आर्षभारत संस्कृति संसार के समस्त देश सम्मान भरी दृष्टि देखते हैं और पढते हैं । इस विशिष्ट संस्कृति के प्रबल वक्ता हैं · आनन्द शंकर माधवन ।

आनन्द शंकर माधवन जी की प्राय: सभी पुस्तकों में भारतीय स्कृति का समर्थन किसी न किसी प्रकार देखा जा सकता है । भारतीय स्कृति की आज की दयनीय हालत में माधवनजी बहुत दु:खी होते हैं । ज के युवक अँग्रेज़ी सभ्यता के पीछे पागल हैं । उनके ख्याल में यूरोपीय स्कृति कई दृष्टि से श्रेष्ठ है । इसलिए वे अँग्रेज़ों के वेष का, भाषा का, ति-रिवाज़ का अन्धानुकरण करते हैं । सचमुच यह अन्धानुकरण भारतीयों पतनगर्त में डालने का मार्ग है । भारतीय स्त्रीजन भी अँग्रेज़ी फैशन के च्छुक हैं । इसीलिए वे भारतीय स्त्री धर्म भूल जाती हैं । इस प्रकार की महिला का उत्तम दृष्टान्त है माधवनजी की "एणाक्षी" नामक पट-कथा "रजनी" । इसके बिलकुल विपरीत मिजाज की या भारतीय स्त्रीत्व का क है "एणाक्षी" की नायिका "एणाक्षी" । माधवनजी भारत के युवकों को रतीय संस्कृति के विशिष्ट अंगों को स्वीकार करके भारत की इज्जत बढाने आह्वान देते हैं ।

आध्यात्मिक विचारधारा भारतीय संस्कृति का प्रमुख अंग । ईश्वर पर भरोसा करके सत्यपथ की खोज करने का आदेश माधवनजी रचनाओं में देखा जा सकता है । भारतीय संस्कृति के अनुसार साधु लोगों लिए समाज में उच्च स्थान है । पुराने ज़माने में साधु लोगों ने अपनी ज्ञान-धना और तपस्या के फलस्वरूप कई अद्भुत शक्तियाँ हासिल की थीं । इसलिए वास्तव में सम्मान के पात्र हैं । माधवनजी अपने उपन्यासों में साधुओं का गान करते हैं । लेकिन आज के धोखेबाज़ साधुओं का मज़ाक भी वे ते हैं ।

भारतीय संगीत के उन्नायक हैं माधवनजी । भारतीय संस्कृति का और एक नाम है भारतीय संगीत । माधवनजी की प्राय: समस्त कृतियों में भारतीय संगीत की महानता का या भारतीय संगीत के एक-एक तन्तु का यशोगान देखा जा सकता है । उनके उपन्यास और पट-कथा का प्रत्येक पात्र भारतीय गान विधा के अनन्य उपासक ही हैं । आज सिनेमा गीतों को श्रेष्ठ माननेवाले लोगों को माधवनजी परिहासभरी दृष्टि से देखते हैं माधवनजी सिनेमा गीतों को अर्थहीन मानते हैं । इसकी ओर व्यंग्यास्त्र भेजने को माधवनजी नहीं भूले ।

माधवनजी की राय में शिक्षा पाना और शिक्षा देना एक महत्वपूर्ण बात है । सुशिक्षित व्यक्ति संसार को समझने तथा इस सांसारिक समस्याओं को सुलझाने की कुशलता प्राप्त करता है । माधवनजी भारतीय सभ्यता से पूर्ण शिक्षा पद्धति को ही मानते हैं । इस लक्ष्य को चरितार्थ करने केलिए माधवनजी ने"मन्दार विद्यापीठ" की स्थापना की । इसका लक्ष्य जातिश्रेणि विहीन एक अद्वैत समाज की स्थापना है । "शिवधाम" नामक एक और शिक्षा संस्था की स्थापना भी उन्होंने इसी लक्ष्य से की ।

माधवनजी पुराने ज़माने के गुरु-कुल सम्प्रदाय के वक्ता हैं । गुरु और शिष्य दोनों को एक साथ रहकर पढाना और पढना चाहिए । गुरु को कर्मफल या इनाम में न ध्यान रखकर, शिष्य की ज्ञान पिपासा को जगाना चाहिए । यही उनका यथार्थ शिक्षा सम्बन्धी लक्ष्य है ।

माधवनजी की साहित्यिक रचनायें तथा शिक्षा संस्थायें भारती संस्कृति का पथप्रशस्त करने योग्य है । उनका जीवन ही इसका दृष्टान्त है । भारत के ऋषि श्रेष्ठों के जैसे भिक्षाटन करके धन जमाकर शिक्षा संस्थाओं का संचालन उन्होंने आरंभ में किया ।

भावात्मक एकता में माधवनजी का योगदान

माधवनजी में बचपन से ही हिन्दी पढने की बहुत लालसा थी । इसलिए मेट्रिक पास होने के बाद उन्होंने हिन्दी सीखना शुरू किया । केरल छोड़ने के बाद गाँधीजी से प्रभावित होकर गाँधीविचारधारा को उन्होंने अपना लिया । वे पैदल चलकर भारत भर घूमे । तब भारतीय जनता को और उनके रीति-रिवाज़ों को भली भाँति समझने का अवसर उनको मिला । उनमें यह आशय प्रबल हो रहा था कि भारत को राष्ट्रीय स्वतंत्रता के साथ, भाषा में, संस्कृति में भी स्वतंत्र होना चाहिए । उन्होंने हिन्दी को हमारी राष्ट्रभाषा के रूप में और सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया

माधवनजी अपनी रचनाओं में भावात्मक एकता पर बल देते हैं संपूर्ण देश की सामूहिक प्रगति उसी समय संभव है जबकि संपूर्ण देशवासी इस देश को अपना देश और देश की प्रगति को अपनी प्रगति समझें तथा वर्तमान राजनैतिक एवं सामाजिक समस्याओं पर विशाल हृदय खोलकर गंभीरता से विचार करें । इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब भी देश में एकता का विशेषकर भावात्मक एकता का, अभाव रहा तभी देश का किसी न किसी रूप में अहित हुआ । किन्तु अब पुन: वैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न नहीं होंगी, ऐसी आशा की जा सकती है, फिर भी हमें प्रगति पथ पर निरंतर आगे बढते रहना है, एतदर्थ भावात्मक एकता का होना अत्यावश्यक है ।

भावात्मक एकता केलिए कई अन्य साधन हो सकते हैं, किन्तु उनमें प्रबल एवं सशक्त साधन एकमात्र भाषा ही है । भाषा मनुष्य को मनुष्य के निकट लाने केलिए है, दूर करने केलिए नहीं । आज एक ऐसी भाषा के प्रचार एवं प्रसार की आवश्यकता है जिसके द्वारा भारत की साधारण जनता के हृदय तक पहुँचा जा सके । भारत में कई सौ बोलियाँ हैं और कई भाषायें

प्रचलित हैं और सभी भाषाओं को अपनी अपनी प्रगति का पूरा अधिकार है, किन्तु कोई एक भाषा सबकी संपर्क भाषा हो, इसके लिए माधवनजी "हिन्दी" को वह मान्य पदवि देते हैं । जिस प्रकार एक ध्वज, एक सिक्का, एक संविधान राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है, उसी प्रकार हिन्दी को भी राष्ट्र की एकता का प्रतीक बननी चाहिए । भावात्मक एकता तभी संभव है जब संपूर्ण देशवासी उसे स्वीकार कर लें । माधवनजी का "हिन्दी आन्दोलन" नामक पुस्तक एवं अन्य कई निबन्धों में यह आवाज़ गूँज उठती है ।

साहित्यिक योगदान

साहित्यिक क्षेत्र में माधवनजी का योगदान विशेष उल्लेखनीय है । अनेक सारगर्भित कवितायें, उच्च आदर्शों से भरे हुए उपन्यास, उपदेशात्मक लघु कहानियाँ, विचारात्मक निबन्ध, आत्मजीवनी, साहित्यकारों और दार्शनिकों की जीवनियाँ, चिन्तन-मथन करने योग्य अनेक सूक्तियों से भरी हुई अमूल्य पुस्तकें और आज के लोगों केलिए मार्गदर्शक आध्यात्मिक ग्रन्थ आदि लिखकर माधवनजी ने साहित्य को श्रीसमृद्ध बनाया ।

उपन्यास के क्षेत्र में उनका योगदान स्तुत्यर्ह है । "अनामंत्रित मेहमान" और "प्रसववेदना" (दो भाग), माधवनजी के विशालकाय उपन्यास हैं ये उपन्यास शिल्पविधि और विषय की दृष्टि से अनुपम हैं । "एणाक्षी" और "पुरुषार्थी" नामक दो पट-कथाओं की चयन भी उन्होंने की । पट-कथायें हिन्दी साहित्य में विरल हैं । इसलिए ज़रूर ये पट-कथायें हिन्दी साहित्य को समृद्ध करनेवाली सिद्ध हुई हैं ।

"प्रसून पंथ" नामक पुस्तक इकतीस कहानियों का संग्रह है । ये कहानियाँ उपदेशात्मक हैं । ये छोटी छोटी कहानियाँ हिन्दी को और हिन्दी के पाठकों को वरदान स्वरूप हैं ।

माधवनजी ने अनेक प्रकार के निबन्ध लिखे हैं । कई विषयों पर लिखे गये उनके विचारात्मक निबन्ध चिन्तन-मनन करने योग्य हैं । उन्होंने पश्चिम के कुछ दार्शनिकों और साहित्यकारों के जीवन-दर्शन, हमारे सामने कई जीवनी ग्रन्थों द्वारा प्रस्तुत किया । अपनी अपूर्ण आत्मजीवनी लिखकर उन्होंने आत्मजीवनी के क्षेत्र में भी अमिट छाप छोड़ दी ।

कुछ आध्यात्मिक ग्रन्थ जैसे "भगवद्गीता", "उपनिषद्" आदि का सार लिखकर साधारण जनमानस को जगाने का प्रयास भी माधवनजी ने किया है । जीवन और जगत् से सम्बन्धित अनेक समस्याओं का परामर्श करके एक विशेष शैली में मुक्तिचिन्तनपरक सूक्तियाँ लिखकर माधवनजी ने हिन्दी के उपासकों को मानसिक आनन्द प्रदान किया । कविता के क्षेत्र में भी उनकी देन सराहनीय है ।

उपर्युक्त साहित्य सृष्टियों के अलावा उनकी साहित्य सेवा पत्र सम्पादन में भी व्याप्त है । "अद्वैत समाज", "मन्दार स्पीक्स" आदि मासिक पत्रिकाओं का सम्पादन भी उन्होंने किया ।

राजनैतिक योगदान

आज की राजनीति अस्त-व्यस्त है । राजनीति के क्षेत्र में कितनी कुरीतियाँ जहरीली सर्प के समान समाज को काटती हैं । अनेक राजनीतिक दल यहाँ होते हैं । ये दल अपने अपने अधिकार स्थापित करने केलि

लालायित हैं । राज्य की सुरक्षा या राज्य की भलाई वे नहीं चाहते हैं । छोटे-छोटे स्थान के लोगों से लेकर प्रधान मंत्री तक अपने लाभ केलिए यहाँ शासनचक्र चलाते हैं । पुराने ज़माने में "कांग्रेस" नामक संस्था ने उच्च आदर्शों को लेकर जन्म लिया । लेकिन आज "कांग्रेस" नाम कहना भी लज्जा की बात रह गयी है । माधवनजी अपनी तूलिका से राजनीति की गतिविधियों का इशारा करके राजनैतिक क्षेत्र में एक नव-जीवन लाने का प्रयास करते हैं ।

कई दृष्टियों से देखने पर विविध क्षेत्रों में अर्थात् सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में माधवनजी का योगदान बिलकुल स्तुत्यर्ह है ।

हिन्दी साहित्य में उनका स्थान

हमने देखा कि माधवनजी ने हिन्दी साहित्य की प्राय: सभी शाखाओं पर अपनी अमिट छाप छोड दी । उनकी ये अमर साहित्यिक कृतियाँ अर्थात् उपन्यास, कविता, कहानी, जीवनी, निबन्ध, विविध शैली के निबन्ध आध्यात्मिक ग्रन्थ आदि हिन्दी साहित्य जगत् में उनको माननीय स्थान देने योग्य हैं ।

अहिन्दी साहित्यकार को हिन्दी साहित्य जगत् में अब तक उचित स्थान नहीं मिला है । लेकिन माधवनजी अहिन्दी साहित्यकार हैं तो भी उनकी विविध विधाओं में लिखी गई महत्वपूर्ण रचनाओं के कारण हिन्दी साहित्य जगत् में ज़रूर उनको उचित स्थान मिलेगा ।

साहित्यिक रचना में उनकी मौलिकता

माधवनजी की साहित्यिक रचना में उनकी मौलिकता हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं । किसी का अनुकरण किये बिना अपनी रचनाओं में अपना व्यक्तित्व एवं अपना मत व्यक्त करने को आदर्शवादी माधवनजी तैयार हुये थे । आज भारत में उपस्थित संपूर्ण समस्या को अपनी रचनाओं के द्वारा वे प्रकट करते हैं ।

माधवनजी ने साहित्यिक क्षेत्र की नूतन विधाओं पर भी अपनी तूलिका चलाई । इसका सर्वोत्तम उदाहरण हैं "माधव-निदान", "वर्षा" आदि ग्रंथ । इन ग्रन्थों की शैली विशेष प्रकार की है । छोटी-छोटी लघु कहानियाँ, सूक्तियाँ, निबन्ध आदि इसमें होते हैं । प्रत्येक सूक्ति में प्रत्येक अर्थ निहित है । इस प्रकार की साहित्यिक विधा हिन्दी में विरल ही है । यह हिन्दी को माधवनजी का एक मौलिक योगदान है । उसी प्रकार उपन्यास के क्षेत्र में पट-कथा का प्रणयन कर उन्होंने एक नयी साहित्यिक रीति को रूपायित किया । उपन्यास से अधिक वार्तालाप इन पट-कथाओं में होता है और यह दृश्य प्रधान भी है ।

जीवनी के क्षेत्र में माधवनजी ने कुछ पाश्चात्य दार्शनिकों और साहित्यकारों का जीवन दर्शन प्रस्तुत कर उन लोगों की जीवनियों का अंकन किया और उन महारथियों के जीवन सिद्धान्तों का परिचय भी दिया । ये जीवनियाँ हिन्दी पाठकों को उन महान दार्शनिकों, चिन्तकों और साहित्यकारों के बारे में जानने का अच्छा अवसर देती हैं ।

माधवनजी की रचनाओं में लोकमंगल की भावना

माधवनजी प्रांतवाद, जातिवाद आदि के कट्टर विरोधी हैं जातिवाद भारतीयों को नाश की ओर पहुँचाता है । हम हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी मानव हैं, भारतीय हैं । यहाँ एक ही जाति है, वह है मनुष्य । मनुष्य से निर्मित अनेक जातियाँ हमको एक दूसरे से झगड़ा करने केलिए ही सहायक सिद्ध होंगी । इसलिए हमको जातिवाद, प्रांतवाद आदि छोड़ देना चाहिए । माधवनजी के सभी रचनाओं में यह सन्देश हम देख सकते हैं ।

भारत की सीमा को क्षितिज हमें मानना चाहिए । हमारी संस्कृति तब विदेश में पहुंचेगी । हम भारतीयों को सभी देश का मार्गद्रष्टा होना चाहिए । असमत्व अराजकता, उत्पीड़न, युद्ध, भय, आदि में पड़कर कराह रहनेवाले संसार के सब लोगों केलिए हमको निर्देशक होना चाहिए इसकेलिए हमें भारतीयों को पहले एक सूत्र में बाँधना चाहिए । हमारे देश पर, भाषा पर, हमारी संस्कृति पर हमको गर्व करना चाहिए । हमारी आर्ष संस्कृति सबसे श्रेष्ठ संस्कृति है । उस संस्कृति को छोड़कर हमको विदेशी संस्कृति के पीछे न भाग जाना चाहिए ।

माधवनजी हमको हमारी संस्कृति की, भाषा की रक्षा करने का आह्वान देते हैं । इससे हमारी भावात्मक एकता बढ़ेगी । एकता ही भारत की प्रगति की प्रतीक सिद्ध होगी । तब भारत अन्य देश का मार्गदर्शक बन जाती है ।

माधवनजी की रचनाओं में आध्यात्मिकता की झलक है । इस वैज्ञानिक युग में लोग ईश्वर को भूलते हैं । लेकिन माधवनजी की राय में हमारे सब दु:खों और समस्याओं का निवारण करने केलिए ईश्वर पर हमको

आस्था रखनी चाहिए । उनकी राय में इस कलियुग में भी ईश्वर ज़बरदस्त रूप में सब कहीं व्याप्त है । माधवनजी हमको आनन्दमय जीवन बिताने केलिए ईश्वर को समझने को और उसकी खोज में निकलने का आह्वान देते हैं । संपूर्ण लोकमंगल केलिए आध्यात्मिकता ज़रूर एक उपाय ही है ।
इस तरह लोकमंगल की अनेक भावनाओं से ओतप्रोत हैं माधवनजी की रचनायें ।

❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀

परिशिष्ट

P.O. [illegible]
[illegible]
૧૬.૩.૮૬

[illegible],

[illegible]

[illegible]

[illegible] student [illegible]

[illegible] challenge [illegible]

[illegible] submit [illegible]

[illegible]

[illegible]

૧૬.૩.૮૬

p. o. [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible],

[illegible]

ग्रन्थ सूची

ग्रन्थ - सूची

श्री· आनन्द शंकर माधवन की कृतित्व-सारणी

1·	अनामंत्रित मेहमान	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1961
2·	अक्षय लेखनी	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1982
3·	अनलशलार्का	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, द्वितीय संस्करण - 1970
4·	अस्तु	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1981
5·	आरती	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर,जिला, बिहार, प्रथम संस्करण, 1968
6·	उपनिषद्सार	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1981
7·	उषा	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1960
8·	एणाक्षी	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1982
9·	गीतातत्व	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1975

10.	पुरुषार्थी	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1985
11.	प्रथम याम	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1965
12.	प्रसववेदना (भाग - 1)	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1967
13.	प्रसववेदना (भाग - 2)	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1967
14.	प्रसूनपंथ	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1965
15.	प्लेटो	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1976
16.	बृहत्तर भारती	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1973
17.	माधव निदान	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1970
18.	मानवीयम्	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1976
19.	वर्षा	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1976
20.	वाल्टेयर	अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1982

21· शिवधाम — अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1982

22· सुकरात — अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण 1981

23· हिन्दी आन्दोलन — अमरावती प्रकाशन, भागलपुर जिला, बिहार, प्रथम संस्करण - 1970

सहायक ग्रन्थ

24· आधुनिक हिन्दी साहित्य को अहिन्दी लेखकों का योगदान — डॉ· विलास गुप्त, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी-1, प्रथम संस्करण

25· आधुनिक हिन्दी उपन्यास और मानवीय अर्थसत्ता — नवल किशोर, प्रकाशन संस्थान, प्रथम संस्करण 1977

26· इतिहास दर्शन — डॉ· बुद्ध प्रकाश, हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश, द्वितीय संस्करण 1968

27· उपनिषद् भाष्य — गीता प्रेस, गोरखपुर, पाँचवाँ संस्करण 1973

28· कहानी का रचना-विधान — जगन्नाथ शर्मा, हिंन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, द्वितीय संस्करण 1961

29· कहानी-कला, विकास और इतिहास - डॉ·श्रीपति शर्मा त्रिपाठी, प्रकाशक नन्द किशोर एण्ड सन्स, प्रथम संस्करण 1962

30. केरलीयों की हिन्दी के देन — जी. गोपीनाथन
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6,
प्रथम संस्करण 1973

31. केरल संस्कृति — एन. वेंकटेश्वरन

32. तुमने कहा था — नागार्जुन
वाणी प्रकाशन, दिल्ली-7
प्रथम संस्करण 1980

33. दक्षिण में हिन्दी प्रचार आन्दोलन का समीक्षात्मक इतिहास — पी.के. केशवन नायर
हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ
प्रथम संस्करण 1963

34. दर्शनशास्त्र का परिचय — जार्ज टामस व्याहट पैट्रिक
अनुवादक : उमेश्वर प्रसाद मालवीय
हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,
चण्डीगढ ।

35. नवनीत निबन्ध — प्रो. जगमोहन मिश्र
किताब महल, इलाहाबाद

36. प्रेमचन्दोत्तर कहानी साहित्य — डॉ. राधेय श्याम गुप्त
विमल प्रकाशन, जयपुर, प्रथम
संस्करण 1970

37. प्रेमचन्द और जनवादी साहित्य की परम्परा — डॉ. कुंवरपाल सिंह
भाषा प्रकाशन, नयी दिल्ली
प्रथम संस्करण

38.	भारतीय दर्शन (भाग - 1)	डॉ. राधाकृष्णन अनुवादक - नन्द किशोर गोविल राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली ।
39.	भारतीय दर्शन (भाग - 2)	वही
40.	भारतीय संस्कृति के आधार	श्री. अरविंद प्रकाशक - श्री. अरविंद सोसाइटी, पॉंडिचेरी-1, प्रथम संस्करण-1968
41.	भारतीय शैक्षणिक विचारधारा	के. जी. सैयदैन मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, प्रथम संस्करण 1969
42.	भारतीय संस्कृति	शिवदत्त ज्ञानी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
43.	भारत का इतिहास	मूल सम्पादक - डॉ. ईलियट एवं डाउसन, अनु. डॉ. मथुरालाल शर्म शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा प्रथम संस्करण 1968
44.	भारतीय संस्कृति का प्रवाह	इन्द्र विद्यावाचस्पति भारतीय साहित्य मन्दिर, दिल्ली
45.	भारत का सांस्कृतिक इतिहास	हरिदत्त वेदालंकार आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, तीसरा संस्करण 1962

46. भारतीय साहित्य कोश — डॉ. नगेन्द्र
नाशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली

47. भाषा और संस्कृति — भोलानाथ तिवारी
प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

48. मानव और संस्कृति — श्यामाचरण दुबे
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

49. मानव, संस्कृति तथा समाज — सम्पादक हेरी एल. शेपीरो
हिन्दी अकादमी, भोपाल,
प्रथम संस्करण - 1971

50. राष्ट्र भाषा हिन्दी समस्यायें और समाधान - देवेन्द्रनाथ शर्मा
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,
द्वितीय संस्करण 1966

51. राष्ट्रभाषा हिन्दी का स्वरूप-विधान - डॉ. रामेश्वर मिश्र,
भारतीय ग्रन्थ निकेतन, प्रथम संस्करण
1975

52. राष्ट्रभाषा शिक्षण — एस. राजप्पन नायर
प्रकाशक हिन्दी साहित्य भण्डार,
लखनऊ

53. वेदों में भारतीय संस्कृति — पं. आद्यादत्त ठाकुर
हिन्दी समिति, लखनऊ प्रथम
संस्करण 1967

54. शिक्षा और संस्कृति — डॉ. रामानन्द तिवारी
प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।

55.	श्री·आनन्दशंकर माधवन - एक विरल व्यक्तित्व	सम्पादक - आनन्द प्रिय उत्तम प्रकाशक - डॉ·जाकिर हुसैन न - औपचारिक एवं अनवरत शिक्षण संस्थान, पटना ।
56.	श्रीमद् भगवद्गीता	शंकरभाष्य हिन्दी अनुवाद सहिती अनुवादक : हरिकृष्णदास गोयन्दका गीताप्रेस, गोरखपुर, ग्यारहवाँ संस्करण ।978
57.	संस्कृति का चार अध्याय	रामधारी सिंह दिनकर उदयाचल, पटना, तृतीय संस्करण ।९
58.	साहित्यिक निबन्ध	राजनाथ शर्मा विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा सप्तम संस्करण ।963
59.	साहित्य में सत्य तथा तथ्य	अरुण एम·ए· आत्माराम एण्ड सन्स
60.	संस्कृति की परिभाषा	डॉ· धर्मपाल मैनी साहित्य रत्नमाला कार्यालय, वाराणसी ।
61.	साहित्य का वैज्ञानिक विवेचन	डॉ· गणपति चन्द्र गुप्त नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-6 प्रथम संस्करण ।97।
62.	साहित्यिक निबन्ध	डॉ· सुषमारानी गुप्ता सूर्य-प्रकाशन, दिल्ली द्वितीय संस्करण ।985

63. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी : वस्तु विकास एवं शिल्प-विधान — एम॰एल॰ मेहत्ता, प्रगति प्रकाशन, आगरा-3, प्रथम संस्करण 1984

64. हिन्दी का आधुनिक साहित्य — सत्यकाम वर्मा, भारती साहित्य मन्दिर, द्वितीय संस्करण

65. हिन्दी उपन्यास-साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ॰रमेश तिवारी, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद-2, प्रथम संस्करण 1972

66. हिन्दी उपन्यास में वर्ग-भावना — प्रतापनारायण टंडन, लखनऊ विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण 1956

67. हिन्दी-उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास - डॉ॰ प्र तापनारायण टंडन, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ, द्वितीय संस्करण 1964

68. हिन्दी उपन्यास सिद्धांत और अध्ययन - सम्पादक महेन्द्र और मक्खनलाल शर्मा, साहित्य-रत्न भण्डार, आगरा, प्रथम संस्करण 1963

69. हिन्दी उपन्यास का परिचयात्मक इतिहास - डॉ॰प्र तापनारायण टंडन, विवेक प्रकाशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण 1967

70. हिन्दी-उपन्यास : पृष्ठभूमि और परम्परा - डॉ॰बदरीदास, ग्रन्थम, रामबाग, कानपूर, प्रथम संस्करण 1966

71. हिन्दी-उपन्यास की शिल्पविधि का विकास - डॉ. श्रीमती ओम शुक्ल
अनुसन्धान प्रकाशन, कानपूर,
संस्करण 1964

72. हिन्दी उपन्यास डॉ. सुषमा धवन
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम
संस्करण, 1961

73. हिन्दी उपन्यास (ऐतिहासिक अध्ययन) - सरस्वती मन्दिर, वाराणसी

74. हिन्दी उपन्यासों का शिल्पगत विकास - डॉ. उषा सक्सेना
शोधसाहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रथम संस्करण 1972

75. हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास - अयोध्यासिंह उपाध्याय
हरिऔध, किताब महल,
इलाहाबाद ।

76. हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास - राजेन्द्र सिंह गौड
साहित्य भवन, इलाहाबाद,
प्रथम संस्करण 1956.

77. हिन्दी साहित्य समस्यायें और समाधान - डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त
अशोक प्रकाशन, दिल्ली-6
प्रथम संस्करण 1961

78. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - उमेश शास्त्री
देवनागर प्रकाशन, जयपूर,
प्रथम संस्करण 1978

79. हिन्दी साहित्य का इतिहास — श्री. रामचन्द्र शुक्ल
नागरी प्र चारणी सभा, काशी,
सोलहवाँ संस्करण 1968

80. हिन्दी भाषा आन्दोलन — लक्ष्मीचन्दी, हिन्दी साहित्य
सम्मेलन, प्रयाग तृतीय संस्करण, 1967

81. हिन्दी का गद्य-साहित्य — डॉ. रामचन्द्र तिवारी
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
द्वितीय संस्करण 1968

82. हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास — लक्ष्मीनारायण लाल,
साहित्यभवन, इलाहाबाद,
तृतीय संस्करण 1967

83. हिन्दी साहित्य में निबन्ध और निबन्धकार — डॉ.गंगा प्र साद गुप्त
जीत मल्होत्रा, प्रथम संस्करण 1971

84. हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप में विकास — डॉ. शिवराज वर्मा
आत्माराम एण्ड संस

85. हिन्दी गद्य के विविध साहित्य रूपों का उद्भव और विकास
डॉ. ब्रजरत्न लक्ष्मण कोतमिरे
किताब महल, इलाहाबाद

86. हिन्दी साहित्य को हिन्दीतर प्रदेशों की देन — डॉ. मालिक मोहम्मद
राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली,
पहला संस्करण 1977

87. हिन्दी जीवनी-सिद्धान्त और अध्ययन — डॉ. भगवान शरण भारद्वाज
परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद,
प्रथम संस्करण 1978

88. हिन्दी भाषा विकास और विश्लेषण- डॉ. चन्द्रभान रावत
सरस्वती प्रकाशन मन्दिर

89. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद त्रिभुवन सिंह
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी
तृतीय संस्करण 1961

90. हिन्दी निबन्ध डॉ. शिवप्रसाद सिंह
कश्यप प्रकाशन, कलकत्ता,
प्रथम संस्करण 1968

91. हिन्दी निबन्ध की विभिन्न शैलियाँ - डॉ. मोहन अवस्थी
सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद,
प्रथम संस्करण 1969

92. हिन्दी कहानी के आधार स्तंभ डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र
प्रकाशक - अनिल मेहता,
प्रथम संस्करण 1975

93. हिन्दी भाषा तथा साहित्य उदयनारायण तिवारी
राजकमल प्रकाशन, पाँचवाँ संस्करण

94. हिन्दी गद्य की प्रवृत्तियाँ नलिनविलोचन शर्मा,
प्रभाकर माचवे आदि
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

95. हिन्दी उपन्यास साहित्य ब्रजरत्न दास
प्रकाशक हिन्दी साहित्य कुटीर,
बनारस, प्रथम संस्करण 1959

96. हिन्दी कहानी : एक अन्तरंग श्री. उपेन्द्रनाथ अश्क
नीलाम प्रकाशन, इलाहाबाद

अंग्रेज़ी पुस्तकें

97. An Introduction to Personality Study
R.B. Cattell, Edition, 1950

98. Development of Personality
Udaya Shankar

99. India and World Civilization Volume - 1
D.P. Singhal, Rupa & Co., 1972

100. India and World Civilization Volume - II
D.P. Singhal, Rupa & Co., 1972

101. Life and the Culture of the Indian People
K.A. Neelakanthan Sasthri &
G. Srinivasachari
Allied Publishers, Second Edition
1974

102. Personality The Psychology of personality
Bernad Not Cult
Edition 1953

103. Personality and problem of Adjustment
Kimball Young
Second Edition 1962

104. Psychology — Noraman, L.

105. Studies in Indian Cultural History Vol. I
P.K. Gode
Vishwashwar and Vedic Research
Institute, Hoswarpur, 1961

106. The Vedic Age — R.C. Majundar
Fifth Edition 1971

107. Upanishads — C. Rajagopalachari
Bharathiya Vidya Bhavan,
Third Edition, 1973.

मलयालम पुस्तकें

108· तेल्लुविलिक्कल् प्रतिकरणङ्ङल् — एन·वी· कृष्णवारियर
करन्ट बुक हाउस, प्रथम संस्करण 198

109· श्रीमद्भगवद्गीता — पी· शेषाद्री
यूनिवेर्सिटी आफ ट्रावनकोर,
ट्रिवान्ड्रम ।

110· पत्र-पत्रिकायें

1·	गगनांचल	अक्तूबर 1984
2·	ज्योत्सना	नवम्बर 1983
3·	ज्योत्सना	अप्रेल 1985
4·	नया प्रतीक	फरवरी 1978
5·	प्रकर	
6·	भाषा	दिसम्बर 1984
7·	भाषा भारती	अप्रेल-जून 1984
8·	नयी धारा	
9·	राजभाषा भारती	अक्तूबर-दिसम्बर 1983
10·	सरस्वती	दिसम्बर 1978
11·	सम्मेलन पत्रिका	नवम्बर 1983
12·	सम्मेलन पत्रिका	(राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन)
13·	हिन्दुस्तानी	अप्रेल-जून 1984